एक ही दुनिया

ONE WORLD



वेंडेल एल. विल्की

एक ही दुनिया

वेन्डेल एल० विल्की

अनुवादक

प्रोफेसर जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

संचयिनी · कलकत्ता

प्रकाशक—

संचयिनी

२४, स्ट्रान्ड रोड, कलकत्ता।

प्रथम हिन्दी संस्करण—१९४५
मूल्य—३॥)

—मुद्रक—

के. बी. अप्पाराव

मेट्रोपोलिटन प्रिन्टिंग एण्ड पब्लिशिंग हाउस लि०,

९०, लोअर सरकुलर रोड,

कलकत्ता।

विषय-सूची

समर्पण—

MAJOR RIHARD T. KIGHT, D.F.C.

को

जिन्होंने

The Gulliver नामके विमानका संचालन किया—

जिस विमान द्वारा हम लोगोंने दुनियाका भ्रमण किया "अत्यन्त खराब मौसम तथा मार्गमें मंडराते हुए शत्रु विमानोंके बावजूद भी इस कठिन और दुरूह कार्यको सुनिश्चित समयमें तथा बिना दुर्घटनाके" आश्चर्यजनक सफलताके साथ पूर्ण करनेके लिये युद्ध विभागने जिनको २४ नवम्बर १९४२ में "Oak Leaf Cluster" से विभूषित किया।

और

The Gulliver के उन समस्त क्लान्तिहीन एवं कुशल नावीकगण

Captain Alexis Klotz, Co-Pilot
Captain John C. Wagner
Master Sergeant James M. Cooper
Technical Sergeant Richard J. Barrett
Sergeant Victor P. Minkoff
Corporal Charles H. Reynolds

को



स्व० वेन्डेल विल्की

Mrs Wilkie के सौजन्य से

वक्तव्य

मि० वेन्डेल विल्की की सुप्रसिद्ध पुस्तक One world का यह हिन्दी अनुवाद पाठकोंके सामने उपस्थित है। सन् १९४३ के अप्रिल महीनेमें पहले-पहल यह पुस्तक प्रकाशित हुई थी और इसके बाद मई महीनेके अन्दर ही इसकी १,९९०,००० प्रतियाँ समाप्त हो चुकी थीं। इसके बाद अब तक इसके कितने ही संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इससे ही इस पुस्तक की लोकप्रियताका अनुमान किया जा सकता है। संसारके विभिन्न देशोंकी शिक्षित जनताने जितनी उत्कण्ठा एवं आग्रहके साथ इस पुस्तकको पढ़ा था उतने आग्रहके साथ आधुनिक कालमें और किसी पुस्तकको नहीं। विश्वव्यापी रूपमें इस पुस्तकका प्रचार एवं प्रभाव हुआ था।

इसका कारण यह है कि मि० विल्कीने अपने इस भ्रमण वृत्तान्तमें युद्धोत्तर कालमें जाति, वर्ण, धर्म निर्विशेष संसारके समस्त निपीड़ित, अनुन्नत एवं पराधीन जातियोंके लिये पूर्ण राजनीतिक एवं आर्थिक स्वाधीनताका तथा उनके सामानाधिकारका दावा मित्र पक्षकी सम्मिलित शक्तियोंके सामने बड़ी दृढ़ता और साहसके साथ पेश किया है। उन्होंने बार-बार इस बातपर जोर दिया है कि अमेरिकाको केवल ब्रिटेन और रूसके साथ ही नहीं बल्कि चीन और एसियाके अन्य राष्ट्रोंके साथ युद्धकालमें तथा युद्धकालके बाद भी समानताके आधारपर हार्दिक सहयोग-भाव धारण करते हुए युद्धमें जयी होनेकी चेष्टा करनी चाहिये और इस प्रकार स्थायी

विश्वशान्तिकी नींव सुदृढ़ करनी चाहिए। मि० विल्कीने अपनी इस पुस्तकमें जिस उदार मतवाद, व्यापक दृष्टिकोण एवं नैतिक साहसका परिचय दिया है उससे उनकी प्रसिद्धि एक मानवप्रेमी अन्तर्राष्ट्रीय राज-नीतिक पुरुषके रूपमें विश्वव्यापी हो गयी थी। अपने देश अमेरिकाके प्रति उनके हृदयमें अगाध प्रेम था। किन्तु उनके इस देशप्रेम और राष्ट्रीयताने उन्हें अन्धा नहीं बना दिया था। राष्ट्रीयताकी चरम परिणति वे अन्त-र्राष्ट्रीयता और विश्वमानवतामें समझते थे। यही विश्वमानवता और साम्य एवं स्वाधीनताके आधारपर विभिन्न राष्ट्रोंके पारस्परिक सहयोग द्वारा विश्वशान्ति की प्रतिष्ठा, मि० विल्कीके जीवनका एकमात्र भावादर्श था। अपने इसी भावादर्शको मि० विल्की युद्धोत्तर कालमें चरितार्थ होते देखना चाहते थे। उनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि इस अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगका नेतृत्व उनका स्वदेश अमेरिका ग्रहण करे, क्योंकि अमेरिका की ओर संसारकी समस्त निपीड़ित एवं शृङ्खलित जातियों की दृष्टि लगी हुई है।

राष्ट्रपति रूजवेल्टके व्यक्तिगत प्रतिनिधिके रूपमें मि० विल्कीने निकट पूर्व, रूस और चीनका भ्रमण सन् १९४२ में किया था। संसारके विभिन्न युद्धक्षेत्रों, समरनायकों और उन सब देशों की जनताके मनोभाव तथा आशा-आकाँक्षाओंका प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करनेके लिये उन्होंने टर्की, मिश्र, फिलस्तीन, इराक, इरान, रूस, सोवियेट मध्य एशिया, साइबेरिया और चीनका भ्रमण किया। अपनी इस यात्रामें उन्हें, स्टालिन, जनरल च्यांग-काई-शेक तथा उनकी पत्नि मादम च्यांग-काई-शेक, मिश्र, इराक, इरान टर्की आदि देशोंके प्रधान मंत्रियों, अनेक विशिष्ट राजनीतिज्ञों, तथा जन-नेताओं और जनसाधारणसे प्रत्यक्ष रूपमें मिलने और वार्त्तालाप करने का सुयोग प्राप्त हुआ। एशियाके अनुन्नत पराधीन एवं अर्ध-पराधीन देशोंकी जनतामें जो एक नूतन जागरण, भावादर्श एवं

राष्ट्रीय भावना उद्दीपित एवं सक्रिय हो रही है उसकी प्रत्यक्ष अभिज्ञता उन्होंने प्राप्त की। अपनी इस अभिज्ञताका विशद वर्णन उन्होंने भ्रमण-वृत्तान्तके साथ-साथ इस पुस्तकमें किया है और युद्धोत्तर कालमें विश्व-शान्तिकी प्रतिष्ठाके लिये किस प्रकारकी योजना सफल हो सकती है इसका भी उल्लेख उन्होंने पूर्ण आन्तरिकताके साथ किया है।

भारतवर्षको छोड़ कर निकट पूर्व और सुदूर पूर्वके प्रायः सभी देशोंका भ्रमण मि० विल्कीने किया था। भारतवर्षका भ्रमण उन्होंने क्यों नहीं किया उस सम्बन्धमें उन्होंने अपनी इस पुस्तकमें इतनी ही कैफियत दी है कि राष्ट्रपति रूजवेल्टने उन्हें भारतकी यात्रासे विरत रहनेके लिये विशेष रूपसे अनुरोध किया था। फिर भी उनकी पुस्तकमें भारतके सम्बन्धमें यत्र-तत्र जो उक्तियां पायी जाती हैं उनसे यह स्पष्ट है कि भारतवर्ष उनके ध्यानसे ओझल नहीं हुआ था।

मि० विल्की आज नहीं रहे। ८ अक्टूबर सन् १९४४ को समग्र जगतने दुःखके साथ उनके अचानक देहावसानका निदारुण सम्वाद सुना। केवल अमेरिकाके ही नहीं बल्कि पृथ्वी भरके असंख्य नर-नारियोंने इस महामना मानवप्रेमीके प्रति अपने हृदयकी मूक श्रद्धा समर्पित की। जिस महान आदर्शका उन्होंने प्रचार किया था वह आदर्श करोड़ों मनुष्यों-के मनप्राणको तब तक अनुप्राणित करता रहेगा जब तक संसारमें मि० विल्कीके उस आदर्शके आधारपर विश्वशान्तिकी प्रतिष्ठा नहीं होगी।

जिस समय मि० विल्कीने अपने इस भ्रमणवृत्तान्तको लिपिबद्ध किया था उस समयसे लेकर अब तक महायुद्ध की गति विधि और अन्तर्राष्ट्रीय परि-स्थितिमें अप्रत्याशित परिवर्त्तन हो चुके हैं। जर्मनी सम्पूर्ण रूपसे पराजित होकर मित्र शक्तियों द्वारा अधिकृत हो चुका है। जर्मनीके कवलसे मुक्त युरोपके विभिन्न देशोंकी राजनीतिमें द्रुत गतिसे परिवर्त्तन हो रहे हैं।

एक ओर यह सब हो रहा है और दूसरी ओर विजयी राष्ट्रोंके कर्णधार पृथ्वीके विभिन्न राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंको लेकर सान फ्रान्सिसको सम्मेलनमें विश्वशान्ति एवं सुरक्षा की समस्यापर विचार कर रहे हैं। सम्मेलनका अधिवेशन अब समाप्त होनेको है। किन्तु उसके अब तकके कार्य्योंसे यह आशा सुदृढ़ नहीं होती कि विश्वशान्ति एवं विश्वव्यापी राजनीतिक एवं आर्थिक स्वाधीनताके लिये मि० विल्की ने अपनी इस पुस्तमें जो उदार मनोभाव प्रकट किये हैं उनके अनुसार युद्धोत्तर जगतका, उसके नूतन विश्वविधानका निर्माण होने जा रहा है। फिर भी मि० विल्कीका मतवाद और उनका आदर्श चिरकाल तक नूतन युगके जनसाधारणको विश्वशान्ति की प्रतिष्ठाके लिये उज्ज्वल दीपशिखाकी तरह मार्ग-प्रदर्शन करता रहेगा।

इस पुस्तकके अनुवादमें मेरे सुहृद तथा सहयोगी अध्यापक श्रीयुत रामगोविन्द श्रीवास्तवने परामर्श आदि देकर अनेक प्रकारसे मेरी जो सहायता की है, उसके लिये मैं अपनी आन्तरिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। पुस्तकमें आये हुए विदेशी नामोंके उच्चारणमें तथा बहुत से अमेरिकन अंगरेजीके मुहाविरोंका भाषानुवाद करनेमें सम्भव है कि त्रुटियाँ रह गयी हों। एतदर्थ विज्ञ पाठकोंसे करबद्ध क्षमा प्रार्थी हूँ।

अन्तमें मैं 'संचयिनी'के उत्साहि स्वत्वाधिकारीयोंको भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिनके उद्योगसे मि० विल्की की इस प्रसिद्ध पुस्तकका हिन्दी अनुवाद "एक ही दुनिया" हिन्दी संसारके सामने उपस्थित है। इसके पढ़नेसे हिन्दी भाषा भाषी पाठकोंमें अगर अन्तर्राष्ट्रीय विषयोंकी ओर कुछ भी दिलचस्पी बढ़ी तो इतनेसे ही हम अपने परिश्रमको सार्थक समझेंगे।

मिथिला कालेज, दरभङ्गा
ज्येष्ठ-पूर्णिमा २००२

जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

प्रस्तावना

आज युद्धके कारण तथा अन्य कारणोंसे समाचारोंके ऊपर सेन्सरका कड़ा पहरा बैठा दिये जानेसे अमेरिका एक ऐसा अवरुद्ध नगर जैसा बन गया है, जिसके चारों तरफ ऊँची-ऊँची दीवारोंका घेरा डाल दिया गया है और उनसे होकर बाहरी दुनियामें घटित होनेवाली घटनाओंका हाल हमें सुनानेके लिये बीच-बीचमें कोई राजकर्मचारी आ जाया करता है। मैं इन दीवारोंके घेरेसे बाहर रहा हूँ; और मुझे यह मालूम हुआ है कि इस घेरेके अन्दर रहनेवालोंको बाहरकी बातें जैसी मालूम पड़ रही हैं, ठीक वैसी ही वे बातें नहीं हैं।

इस युद्धके बीचमें ही मुझे आकाश-मार्गसे दुनियाकी परिक्रमा करने, एक दर्जनसे अधिक राष्ट्रोंके सैकड़ों लोगोंको देखने और उनके साथ बातचीत करने तथा संसारके बहुतसे नेताओंके साथ घनिष्ट रूपमें मिलने-जुलनेका मौका मिला था। यह एक ऐसा अनुभव था, जो इने-गिने ही साधारण नागरिकोंको प्राप्त हुआ था, और उन नेताओंमें से तो किसीको भी नहीं। इस अनुभवसे मुझे कुछ नये और अत्यावश्यक विश्वास प्राप्त हुए, जिनसे मेरे कुछ पुराने विश्वास और भी पुष्ट हो गये। और मेरे ये नूतन विश्वास केवल मानवीय आशायें ही नहीं हैं। उनका आधार न तो कोरा आदर्शवाद है और न वे अस्पष्ट ही हैं। मैंने स्वयं जो कुछ देखा और अनुभव प्राप्त किया था, उसपर तथा ऐसे महत्वपूर्ण किन्तु अज्ञातनामा स्त्री-पुरुषोंके विचारोंके ऊपर मेरे वे

विश्वास निर्भर करते हैं, जिनकी वीरता और त्याग उनके विश्वासोंको सार्थकता एवं जीवन प्रदान करते हैं।

इस पुस्तकमें मैंने यथासम्भव निरपेक्ष भावसे अपने कुछ अनुभवोंको लिपिबद्ध करनेकी चेष्टा की है। किन्तु उन अनुभवोंसे जिन परिणामोंपर मैं पहुँचा हूँ, उनका उल्लेख भी मैंने उसी तरह निरपेक्ष भावसे किया है या नहीं, इसमें मुझे सन्देह है।

इस यात्रामें मेरे साथी थे एक प्रसिद्ध पुस्तक-प्रकाशक गार्डनर (माइक) काउल्स और एक अनुभवी पत्र-संवाददाता तथा संपादक जोसेफ बार्नेस। दोनों ही मेरे मित्र और सफरके लिये बहुत उपयुक्त साथी हैं। इस पुस्तककी सामग्री तैयार करनेमें दोनोंने बड़ी उदारतापूर्वक मेरी सहायता की है। यद्यपि मेरा यह विश्वास है कि वे मेरे बहुतसे परिणामोंसे सहमत होंगे, फिर भी उन परिणामोंकी इस अभिव्यक्तिके लिये वे किसी प्रकार भी उत्तरदायी नहीं हैं।

संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाकी नौसेनाके कप्तान पाल पिल और स्थल-सेनाके मेजर ग्राण्ट मेसन अपने-अपने विभागके प्रतिनिधिकी हैसियतसे मेरे साथ गये थे। अपने विशेष ज्ञानके कारण इन लोगोंने मुझे बहुत ही उपयोगी परामर्श प्रदान किये। मेरे दलके सभी लोग तथा वायुयान-चालक मेरे समान रूपसे सहायक तथा आनन्ददायक सहयात्री थे। मैं अपने धीरवृत्त एवं आकर्षक व्यक्तित्ववाले वायुयान-चालक मेजर काइटकी, वायुयान-चालनमें उनके आश्चर्यजनक कौशलके लिये, विशेष रूपसे प्रशंसा करता हूँ। और मेरा यह विश्वास है कि मेरी इस सराहनासे सभी लोगोंको सन्तोष होगा।

न्यूयार्क
२ मार्च, १९४३

वेन्डेल विल्की

एल अलामीन

यह एक चार इंजिनवाला बमवर्षक वायुयान था, जिसपर सवार होकर मैं न्यूयार्कसे २६ अगस्त १९४२ को दुनियाकी सैर करने निकला था। मेरी इच्छा केवल दुनिया देखनेकी ही नहीं, बल्कि युद्ध और उसके विभिन्न मोर्चों, उसके संचालकों और युद्धरत देशोंके सर्वसाधारण जनको देखने और उनसे परिचित होनेका भी था। रवाना होनेके ठीक ४९ दिन बाद १४ अक्टूबरको मैंने यात्रासे लौटकर मिन्नीपोलिस मिन्नीसोटामें भूमिपर अवतरण किया। मैंने विश्वकी परिक्रमा की थी उसकी उत्तरी अक्षरेखाओंमें नहीं, जहाँकी परिधि छोटी है, बल्कि उस मार्गसे होकर, जो विषुवत्‌रेखाको दो बार अतिक्रमण करता है।

मैंने कुल मिलाकर ३१,००० मीलकी यात्रा की थी। इस आँकड़े-पर जब मैं दृष्टि डालता हूँ, तो मैं स्वयं प्रभावित और प्रायः विस्मित जैसा हुए बिना नहीं रहता। मेरी इस यात्राका विशुद्ध प्रभाव जो मेरे मनपर पड़ा है, वह यह नहीं है कि सुदूर देशोंका मैं भ्रमण कर आया हूँ, बल्कि यह कि उन सब देशोंके निवासी हमारे कितने समीपस्थ हैं। दुनिया आज बहुत छोटी हो गयी है और उसके अन्दरके विभिन्न देश पूर्णतया एक दूसरेपर अवलम्बित हैं, इस सम्बन्धमें मेरे मनमें कभी कोई सन्देह रहा भी हो, तो वह इस यात्रासे बिलकुल दूर हो गया।

सबसे बढ़कर विलक्षण बात तो यह है कि इस विशाल दूरीको पूरा करनेमें हमें आकाशमें कुल १६० घंटे रहना पड़ा था। हम लोग यात्राकालमें आमतौरसे प्रतिदिन आठसे दस घंटे तक आकाशमें उड़ा करते थे।

इसका अर्थ यह हुआ कि यात्रामें जो कुल ४९ दिन लगे, उनमें तीस दिन अन्य उद्देश्योंके साधनमें भूमिपर व्यतीत हुए। एक देशसे दूसरे देश, या एक महादेशसे अन्य महादेशमें जानेमें जो शारीरिक श्रम हुआ, वह उस श्रमसे कठिन नहीं था, जो श्रम अमेरिकाके किसी व्यापारीको अपने कारबारके लिये यात्रा करनेमें उठाना पड़ता है। असल बात तो यह है कि अब दुनियाकी सैर करना इतना आसान हो गया है कि मैंने मध्य-साइबेरियाके एक महान् गणतंत्र राज्यके राष्ट्रपतिसे यह वादा किया था कि सन् १९४८ के किसी सप्ताहके आखिरी दिनमें एक दिनकेलिये शिकार खेलने वहाँ उड़कर पहुँचूँगा और मुझे उम्मीद है कि मैं इस वादेको पूरा करूँगा।

अब संसारमें कोई ऐसी जगह नहीं रह गयी है, जिसे हम दूर कह सकें। इस यात्रासे मैंने यह सीखा है कि सुदूर-पूर्वके करोड़ों मनुष्य हमारे उतने ही सन्निकट हैं, जितना तेजसे तेज दौड़नेवाली ट्रेनोंसे लास एंजेल्स न्यूयार्कके सन्निकट है। इसलिये मेरा यह विश्वास हो गया है कि भविष्यमें सुदूर-पूर्वके देशोंका सम्बन्ध जिन समस्याओंके साथ होगा, उन समस्याओंके साथ हमारा सम्बन्ध भी उतना ही घनिष्ठ होगा, जितना कैलिफोर्नियामें रहनेवाले लोगोंकी समस्याओंका सम्बन्ध न्यूयार्कवालोंके साथ है। भविष्यमें हम जो कुछ सोचेंगे, उसका सम्बन्ध केवल देश-विशेषको लेकर नहीं, बल्कि समग्र विश्वके साथ होगा।

अगस्तके अन्तमें जब कि हम लोग मिस्रकी राजधानी कैरोके मार्गमें थे, हमें बुरे समाचार सुननेको मिले। कानो, निगेरियामें आमतौरसे लोग अटकल लगा रहे थे कि जनरल रोमेलकी अग्रगामी सेनाको कुछेक मीलकी दूरी तय करके अलेकजेन्ड्रिया पहुँचनेमें कितने दिन लगेंगे। खारतूम तक पहुँचते-पहुँचते तो इस खबरने कुछ-कुछ आतंक-जैसा

रूप ग्रहण कर लिया था। कैरोमें कुछ यूरोपियन लोग अपना बोरा-बसना बाँधकर मोटरसे दक्षिण या पूर्वकी ओर भागनेकी तैयारी कर रहे थे। इस समय मुझे राष्ट्रपति रूजवेल्टकी चेतावनीका स्मरण हो आया। वाशिंगटनसे विदा होनेके पूर्व उन्होंने मुझसे कहा था कि संभव है कि मेरे कैरो पहुँचनेके कबल ही वह जर्मनोंके कब्जेमें आ जाय। हमने इस तरहकी कहानियाँ भी सुनीं कि नील नदीकी घाटीमें उसकी अन्तिम रक्षापंक्तिको छिन्नभिन्न करनेकेलिये नात्सी सैनिक पेराशूटसे वहाँ उतरे हैं। लोगोंमें आमतौरसे यह विश्वास फैल गया था कि ब्रिटिश आठवीं सेना मिस्रको बिलकुल खाली करके फिलस्तीन और दक्षिणकी ओर सुडान और केनियामें हट जानेकेलिये तैयार हो रही है।

स्वभावतः मैंने इन सब खबरोंको रोकनेकी कोशिश की। और इसकेलिये कैरो दुनियाकी सबसे खराब जगह है। किन्तु वहाँ अच्छे लोग भी थे। मिस्रमें संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाके दूत अलेकजेण्डर कर्क भविष्यके सम्बन्धमें यद्यपि आशावान नहीं थे; किन्तु उनके साथ काफी देर तक बातचीत करके मैंने जाना कि युद्धकी क्षण-क्षणमें बदलनेवाली स्थितिको काबूमें रखनेकेलिये जो महान कौशल दिखलाया जा रहा है और वहाँ जो कुछ हो रहा है, उसका उन्हें विस्तृत ज्ञान है, और अपने इस ज्ञानको छिपानेकेलिये ही उन्होंने जानबूझकर नैराश्य धारण करनेका बहाना किया है। कैरोमें और लोग भी थे, जो स्थितिकी ठीक-ठीक जानकारी रखते थे। इनमें एक थे मिस्रके धीर और हँसमुख प्रधानमंत्री नहस पाशा, जिनमें हास्य एवं जीवनके रसास्वादनकी मात्रा इतनी अधिक थी कि मैंने उनसे कहा कि यदि वह अमेरिका आयें और किसी पदकेलिये उमीदवार हों, तो निस्सन्देह वह एक जबर्दस्त प्रतिद्वन्द्वी सिद्ध होंगे।

किन्तु शहरमें अफवाहों और आतंकजनक समाचारोंको लेकर बड़ी सरगर्मी थी। सड़कोंपर इधर-उधर आते-जाते हुए अफसर और सैनिक लोग बराबर दिखायी पड़ते थे। समाचारोंपर सेन्सरका कड़ा पहरा होनेसे युद्धके सम्बन्धमें जो सब समाचार अंगरेजोंकी ओरसे भेजे जाते थे, उनके प्रति अमेरिकन संवाददाताओंका रुख सन्देह और अविश्वाससे भरा हुआ होता था। यद्यपि रेगिस्तान—जहाँ लड़ाई हो रही थी—वहाँसे एकसौ मीलसे अधिक दूर नहीं था, फिर भी आध घंटेके अन्दर ही आपको युद्धकी घटनाओंको लेकर कमसे कम एक दर्जन भिन्न-भिन्न प्रकारके बयान सुननेको मिलते।

ऐसी स्थितिमें जब मुझे एल अलामीनमें युद्धके मोर्चेका साक्षात् परिचय प्राप्त करनेका निमंत्रण जनरल मॉन्टगोमरीसे मिला, तो मैंने बड़ी उत्सुकतासे इसे स्वीकार किया। माइक काउलेस् और मेजर जनरल मैक्सवेल—जो उस समय मिस्रमें अमेरिकन सेनाके अध्यक्ष थे—के साथ मैंने कैरोसे रेगिस्तानी सड़कसे होकर युद्धके मोर्चेपर जानेके लिये मोटर द्वारा प्रस्थान किया।

कैरोमें ही मैंने अपनेलिये एक फरासीसी दूकानसे खाकी वर्दी खरीद ली थी और वहीं रेगिस्तानके युद्धमें काम आने लायक बिछावन भी हम लोगोंने माँग लिये थे।

जनरल मॉन्टगोमरी मुझे अपने सदर दफ्तरमें मिले। उनका वह सदर दफ्तर भूमध्यसागरके उपकूलमें बालूके टीलोंके बीच छिपा हुआ था। वह समुद्र-तटके इतना सन्निकट था कि दूसरे दिन प्रातःकाल उन्होंने तथा जनरल अलेकजेण्डर और मैंने समुद्रके उस आश्चर्यजनक नील-हरित् जलमें स्नान किया। उनके उस सदर दफ्तरमें चार अमेरिकन फौजी गाड़ियाँ थीं, जो चन्द गजोंकी दूरीपर बालूके टीलोंके बीच अलग-अलग

दुश्मनोंकी नजरसे बचनेके लिये रखी हुई थीं। इनमें एकमें जनरलने मानचित्र और लड़ाईके नकशे रख छोड़े थे। एकमें उन्होंने अपने सोनेका प्रबन्ध कर दिया। तीसरी गाड़ीमें उनका अंगरक्षक रहता था और चौथीमें खुद वह, जबकि वह मोर्चेपर नहीं होते थे।

किन्तु ऐसा बहुत कम ही होता था। जब मैं मिस्रमें था, जनरल मॉन्टगोमरीके व्यक्तित्वका मुझपर गभीर प्रभाव पड़ा था। उनका व्यक्तित्व नमनीय होनेके साथ-साथ अभंगुर, विद्वज्जनोचित, कठोर और अत्यन्त उत्साहपूर्ण है। उनके चरित्रकी सबसे बढ़कर उल्लेखनीय बात है अपने कार्य्यके प्रति उनकी प्रगाढ़ आसक्ति। कैरोमें वह कदाचित् ही रहा करते थे। साधारणतः वे मोर्चेपर ही अपने आदमियोंके साथ रहा करते थे। मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह जनरल मैक्सवेल तक को नहीं जानते थे—जो कई सप्ताहोंसे मध्य-पूर्वमें अमेरिकन सेनाओंके अध्यक्ष रूपमें रह रहे थे। जब हम लोग उनके सदर मुकामपर पहुँचे, उन्होंने मुझे अलग ले जाकर पूछा, "यह अफसर आपके साथ कौन हैं?" मैंने उत्तर दिया, "जनरल मैक्सवेल।" और फिर उन्होंने पूछा, "जनरल मैक्सवेल कौन हैं?" मैं जनरल मैक्सवेलका परिचय उन्हें दे ही रहा था, जबकि वह स्वयं वहाँ आ पहुँचे, और तब मैंने दोनोंका परस्पर परिचय कराया।

हम लोग अपनी गाड़ियोंसे अभी उतरे भी नहीं थे, जब कि जनरल मॉन्टगोमरीने युद्धका पूरे विवरणके साथ वर्णन करना शुरू कर दिया। युद्ध अन्तिम अवस्थाओंसे होकर गुजर रहा था, और यह पहला ही अवसर था, जब कि जर्मन जनरल रोमेलकी अग्रगति बिलकुल रोक दी गयी थी। युद्धकी ठीक-ठीक खबर अभी तक कैरो नहीं पहुँची थी और न पत्र-संवाददाताओंको ही इस सम्बन्धमें कुछ बताया गया था। जनरलने

हम लोगोंको युद्धका पूरा ब्यौरा क्रमसे बताया, और जो कुछ हुआ था, उसका यथार्थ वर्णन करते हुए यह भी बताया कि क्यों वह इसे एक बहुत बड़ी विजय समझ रहे हैं, जबकि उनकी सेनायें बहुत दूर आगे नहीं बढ़ सकी थीं। किन्तु इस युद्धमें एक बड़े पैमानेपर दोनोंके बीच शक्तिकी परीक्षा हुई थी। यदि इस परीक्षामें अंगरेज चूक जाते, तो चन्द दिनोंके अन्दर ही रोमेल कैरोमें पहुँच गया होता।

रेगिस्तानी युद्धकी रणनीति एवं कौशलके सम्बन्धमें यह मेरा पहला सबक था। इस प्रकारके युद्धमें दूरीका कुछ भी महत्व नहीं होता। गतिशीलता और आग्नेयास्त्रोंकी प्रधानता ही सब कुछ समझी जाती है। पहले तो यह बात मेरी समझमें ही नहीं आई कि जनरल क्यों बार-बार इस बातको शान्त भावसे दुहरा रहे हैं कि "मिस्र बचा लिया गया है।" शत्रु अभी तक मिस्रके अन्दर मौजूद था और उसकी सेनायें अपने स्थानसे नहीं हटी थीं। शुरूमें युद्धके सम्बन्धमें अंगरेजोंके जो दावे थे, उनको लेकर कैरोमें जो सन्देह प्रकट किया जा रहा था, उसका मुझे स्मरण हो आया। किन्तु जिस गाड़ीमें जनरल मॉन्टगोमरीके मानचित्र और युद्धक्षेत्रके नकशे टंगे हुए थे, उसे छोड़नेके पहले ही मैंने रेगिस्तानी युद्धके सम्बन्धमें बहुत-कुछ जान लिया था, और उन्होंने मुझे यह भी विश्वास दिलाया था कि मिस्रपर अब कोई खतरा नहीं रहा। उनके इस पूर्ण विश्वासके पीछे एक ब्रिटिश अफसर और भद्र पुरुषका सदा साथ देनेवाला आत्म-विश्वास ही नहीं है, बल्कि इसके अलावा और कुछ है।

अमेरिकाके बने हुए टैंकोंकी जनरल मॉन्टगोमरीने बड़े ही उत्साहपूर्ण शब्दोंमें प्रशंसा की। ये टैंक अभी अलेक्जेण्ड्रिया और पोर्ट सैदके बन्दरगाहोंपर काफी संख्यामें पहुँचने ही लगे थे। उन्होंने अमेरिकाकी बनी हुई आपसे आप चलनेवाली टैंकमार तोपोंकी भी बड़ी तारीफ

की। इन तोपोंकी बदौलत ही यह प्रमाणित होने लगा था कि टैंककी अग्रगतिको भी रोका जा सकता है।

जनरल मॉन्टगोमरीके समस्त कथनोंका मध्यबिन्दु उनका यह विश्वास था कि रेगिस्तानके युद्धमें आरम्भमें अंगरेजोंकी जो पराजय पर पराजय हुई थी, उसका कारण था टैंकशक्ति, गोलन्दाज सेना और हवाई शक्तिका पर्याप्त रूपमें एकीकरण नहीं होना। जनरल मॉन्टगोमरीने मुझे बताया कि उनके सदर मुकाममें उनकी आकाश-सेनाका एक अफसर उनके साथ रहता है, और वायुयान, टैंक और गोलन्दाज सेनाके बीच पूर्ण एकीकरण होनेके कारण ही पिछले कई दिनोंके अन्दर रोमेलकी अग्रगतिको निश्चयात्मक रूपसे रोकना संभव हुआ है। उनका अन्दाज था कि अभी हालमें जो युद्ध समाप्त हुआ था, उसमें जर्मनोंके कुल १४० टैंक नष्ट हुए थे, जिनमें करीब आधे बहुत ही ऊँचे दर्जेके थे। इसके विपरीत अंगरेज-पक्षके कुल ३७ टैंक नष्ट हुए थे। उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की कि आकाश-सेनाकी श्रेष्ठता कायम करनेमें जिस प्रकार वह समर्थ हुए हैं, उसी प्रकार स्थल-सेनाके सम्बन्धमें भी वह अपनी श्रेष्ठता कायम करनेमें समर्थ होंगे।

उस संध्याको हम लोगोंने जनरल मॉन्टगोमरीके मेसमें रात्रिका भोजन किया। उनके साथ उनके बड़े अफसर जनरल सर हेराल्ड अलेकजेण्डर भी थे। जनरल अलेकजेण्डर उस समय मध्य-पूर्वके समस्त ब्रिटिश सैन्य दलोंके प्रधान सेनापति थे। इनके सिवा मध्य-पूर्वकी अमेरिकन आकाश-सेनाके सेनापति मेजर-जनरल लिविस एच ब्रेरटन और उनके अंगरेज सहयोगी सर आर्थर टेडर भी उस भोजमें शामिल हुए थे। हवाई सेनापति सर आर्थर टेडर, जिनके साथ कैरोमें भी मेरी मुलाकात हुई थी, एक बड़े ही प्रसन्नवदन एवं हृदयग्राही प्रकृतिके सैनिक हैं।

उनका मुखमण्डल शान्त एवं कोमल तथा कण्ठस्वर मधुर है। वह जब कभी युद्ध-सम्बन्धी किसी कार्य-साधनकेलिये मरुभूमिकी यात्रा करते हैं, बराबर अपने साथ जल-चित्र लिये चलते हैं। वह एक विमान-वीर एवं चिन्ताशील व्यक्ति हैं।

उस रातको ब्रेरटन और टेडर संग्रामके भविष्यके सम्बन्धमें बात-चीत करते रहे। और उन लोगोंकी बातचीतसे ऐसा नहीं मालूम होता था कि उसमें कोरी प्रगल्भता या दम्भ हो। भूमध्यसागरका मार्ग संयुक्त-राष्ट्रोंके जहाजोंके आवागमनकेलिये फिर खुल जा सकता है, इसकी संभावनापर उन दोनोंका पूर्ण विश्वास था। वे इस बातपर सहमत थे कि ऐसा तभी हो सकता है, जब कि रोमेलको बेंगाजीसे पश्चिमकी ओर खदेड़ दिया जाय। उनका खयाल था कि ऐसा होनेपर ही हम लोग मिस्रमें और उससे भी आगे पूर्वकी ओर अपनी सैन्यशक्तिको अधिकाधिक रूपमें शक्तिशाली बना सकेंगे। इस प्रकार हमारी सेनायें समुद्रके जहाजी मार्गोंसे होकर अफ्रिकाके उपकूल तक विस्तृत हो जायँगी और उनकी रक्षाकेलिये हमारे लड़ाकू विमान जिब्राल्टर, माल्टा, बेंगाजी और फिलस्तीनके विशाल अमेरिकन हवाई अड्डोंपर काफी तादादमें मौजूद होंगे। उन्होंने इस बातके सम्बन्धमें भी विचार किया कि यदि बेंगाजी अंचलपर संयुक्त-पक्षका अधिकार कायम रह जाय, तो बड़े पैमाने पर इटलीपर बमवर्षा करना बहुत-कुछ संभव हो सकता है।

अनेक विषयोंके सम्बन्धमें यह बातचीत चलती रही। एक अंगरेज अफसरने तो मुझे यह भी बताया कि अंगरेजी फौजमें पाखानेको 'हाउस आव लार्डस्' (The House of Lords) नामसे अभिहित किया जाता है। किन्तु जनरल मॉन्टगोमरी सिवा युद्धके मोर्चेके और किसी विषयपर ज्यादा बातचीत करना नहीं चाहते थे। वह बड़ी नम्रताके साथ

दूसरे विषयोंकी बातचीतको सुनते रहते और एक-दो मिनटके अन्दर ही उस प्रसंगको बदलकर रेगिस्तानी युद्धपर ले आते। कुछ देरके बाद हम दोनों खीमेसे चलकर उस गाड़ीके पास पहुँचे, जहाँ मेरेलिये सोनेका प्रबन्ध किया गया था। पहले उन्होंने इस बातकी अच्छी तरह जाँच कर ली की मेरे लिये सोनेका जो स्थान निर्दिष्ट है, वह ठीक तो है, और तब हम दोनों उसी गाड़ीको सीढ़ियोंपर बैठ गये और वहाँसे समुद्रका दृश्य देखने लगे। चाँदनी रातमें समुद्रके ऊपर श्वेत फेणयुक्त लहरोंका उठना और गिरना वहाँसे अच्छी तरह देखा जा सकता था। इसके साथ ही पीछेकी ओर कुछ दूरीपर हम रोमेलकी पीछे हटनेवाली सेनाओंके विरुद्ध संयुक्त-पक्षकी तोपोंके गर्जन सुन रहे थे। इस समय मॉन्टगोमरीको अपने अतीत जीवनकी स्मृतियाँ याद आ रही थीं। उन्होंने अपने बाल्य-जीवनकी चर्चा की और यह भी बताया कि संसारके विभिन्न भागोंमें उन्होंने अनेक वर्षों तक अंगरेजी फौजके साथ काम किया है। जबसे वर्त्तमान युद्ध आरम्भ हुआ है, वह बराबर इस बातके प्रयत्नमें लगे रहे हैं कि मुल्की और फौजी अफसरदोनोंके मनमें, यह भाव भर दिया जाय कि युद्धमें हम लोगोंकी मनोवृत्ति आत्म-रक्षामूलक न होकर अपने सम्बन्धमें निश्चयात्मक होना आवश्यक है।

"मि० विल्की, इन जर्मनोंको परास्त करनेका एकमात्र यही उपाय है" उन्होंने मुझसे कहा। "इनको चैन लेनेका मौका कभी देना ही नहीं चाहिये। ये जर्मन बड़े अच्छे सैनिक होते हैं। ये पेशेवर सैनिक हैं।"

रोमेलके सम्बन्धमें पूछनेपर उन्होंने मुझसे कहा, "वह एक सुशिक्षित एवं कुशल सेनापति है। मगर उसमें एक कमजोरी है। वह अपने

रणकौशलकी पुनरावृत्ति करता रहता है। और इसी बातको लेकर मैं उसे परास्त करने जा रहा हूँ।"

इसके बाद वे वहाँसे चलनेकेलिये उठे, और मेरे प्रति सुख-शयनकी कामना प्रकट की। चलते समय उन्होंने यह भी कहा, "सोनेके पहले मैं बराबर कुछ-न-कुछ पढ़ लिया करता हूँ।" और फिर कुछ दुःखित भावसे उन्होंने मुझे बताया कि उनके पास कुछ ही किताबें हैं। असल बात तो यह थी कि जो कुछ उनकी सांसारिक संपत्ति थी, सब उनके साथ ही रहती थी। इंगलैण्ड छोड़नेके कुछ समय पहले उन्होंने अपने सामान और अपनी पुस्तकें—जो उनके जीवन-भरकी संग्रह थीं—डोवरके एक गोदाममें जमा कर दी थीं।" "जर्मनोंने अपने एक हवाई हमलेमें उस गोदामको नष्ट कर डाला।" यह भी उन्होंने कहा।

दूसरे दिन हम लोगोंने युद्धके मोर्चेका परिभ्रमण किया, और वहाँ अपनी आँखोंसे मैंने झुंडके झुंड टैंक और गोलन्दाज सैन्य दल, लड़ाकू-वायुयानोंके अड्डे और मोर्चेपर रिक्त स्थानोंकी पूर्तिकेलिये सैन्यदलोंके पृथक्-पृथक् शक्तिशाली संगठन देखे। रेगिस्तानकी लड़ाई जिस प्रकार छिट-फुट ढंगसे हुआ करती है, उसमें उपर्युक्त प्रणालीपर ही युद्धके मोर्चेका गठन किया जाता है। एक बार फिर मैं यह देखकर बहुत प्रभावित हुआ कि जनरल मॉन्टगोमरीको अपने कार्य्यका बहुत ही गंभीर एवं सांगोपांग ज्ञान है। चाहे छोटा दल या बड़ा सैन्यदल हो, ब्रिगेड या रेजिमेन्ट हो, या पैदल सेनाका सदर मुकाम हो, उन्हें सैन्यदलोंके विस्तार और टैंकोंके अवस्थानका जितना विस्तृत ज्ञान था, उतना उस अफसरको भी नहीं था, जिसके अधीन ये सब सैन्यदल थे। यह बात भले ही कुछ बढ़ा-चढ़ाकर कही गयी जैसी प्रतीत हो, किन्तु है यह अक्षरशः सत्य। अपने कार्य्यका सांगोपांग ज्ञान प्राप्त करनेका उनका आग्रह सचमुच विस्मयजनक था।

हम लोगोंने दर्जनों जर्मन टैंकोंका—जो उस मरुभूमिमें इधर-उधर बिखरे पड़े थे—निरीक्षण किया। अंगरेजी फौज द्वारा वे पकड़े गये थे और मॉन्टगोमरीके हुक्मसे गोलेसे उड़ा दिये गये थे। उन टूटे-फूटे टैंकोंके ऊपर चढ़कर जब हम लोग उनकी देखभाल कर रहे थे, जनरल ने खाद्य-पदार्थोंके बक्सोंको खोलकर उनमें से अंगरेजोंके खाद्य-पदार्थोंके जले हुए अवशिष्टांशोंको मुझे दिखाया। तोबरुककी लड़ाईमें अंगरेजी पक्षके ये खाद्य-पदार्थ जर्मनोंके हाथ लगे थे। "आप देखते हैं, विल्की, ये शैतान जर्मन हम लोगोंके खाद्य-पदार्थोंपर गुजर कर रहे थे। किन्तु अब फिर वे ऐसा नहीं कर सकेंगे। कम-से-कम इन टैंकोंका व्यवहार तो वे हमारे विरुद्ध फिर कभी करने नहीं पायेंगे।"

जब तक हम लोग युद्धके मोर्चेका परिभ्रमण करते रहे, अंगरेज-पक्षको तोपें लगातार गोले दाग रही थीं और ब्रिटिश तथा अमेरिकन वायुयान रोमेलकी पीछे हटनेवाली फौजोंको परेशान कर रहे थे। इसका बदला लेनेकेलिये जर्मन लोग दल-के-दल अपने लड़ाकू विमान भेज रहे थे, जो ब्रिटिश गोलन्दाजोंपर बड़ी तेजीसे जल्दी-जल्दी हमला कर रहे थे। बीच-बीचमें हम लोग जहाँ-तहाँ अपने सिरके ऊपर स्वच्छ आकाशमें किसी आहत वायुयानको आग और धुयेंके चक्राकारमें पृथिवीकी ओर चक्कर खाते हुए देखते थे। कभी-कभी हम लोग वायुयान-चालकों को—जो भाग्यवश जलते हुए वायुयानोंसे ठीक समयपर निकल आये थे—छतरियोंको दक्षिणी वायुके मन्द-मन्द झोंकेमें भूमध्यसागरके ऊपर तैरते हुए पाते थे।

मोर्चेपर जो सैनिक थे, उनमें हमने अंगरेज, आस्ट्रेलियन, न्यूजीलैण्ड-वासी, कनाडावासी, दक्षिण-अफ्रिकावासी और करीब तीस अमेरिकनोंकी एक कंपनीको देखा। यह अमेरिकन कंपनी एक छोटी-सी टैंकवाहिनी

थी, जो अमेरिकासे युद्धकी यथार्थ अवस्थाओंकी शिक्षा प्राप्त करनेकेलिये वायुयानों द्वारा भेजी गयी थी। मैंने प्रत्येक अमेरिकन सैनिकसे बात-चीत की। वे अमेरिकाके अठारह भिन्न-भिन्न राष्ट्रोंसे आये हुए थे। वे भले-चंगे मालूम पड़ते थे और संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका लौट जानेकेलिये अपनी अभिलाषा साफ-साफ प्रकट कर रहे थे। अमेरिकाकी एक घुड़दौड़का अन्तिम परिणाम जाननेकेलिये उन्होंने बड़ी उत्कण्ठाके साथ मुझसे प्रश्न पर प्रश्न पूछने शुरू कर दिये। ये लोग अभी फौरन युद्धसे वापस आये थे और फिर एक घंटेके अंदर वहाँ लौट जानेकी उम्मीद कर रहे थे। किन्तु वे लोग झूठ-मूठ डींग हाँकनेवाले वीर नहीं थे। वे लोग सबल शरीर-वाले चतुर अमेरिकन नौजवान थे और आश्चर्यके साथ यह पूछ रहे थे कि कब फिर वे स्वदेश लौटकर अपने परिचित स्थानोंको देखेंगे।

दोपहरका भोजन करनेकेलिये हम लोग एक फौजी डिवीजनके सेनापतिके सदर मुकामपर ठहरे। यहाँ फौजी गाड़ियोंका एक दूसरा दल था। भोजनमें सैण्डविच (मांसयुक्त रोटी) के साथ-साथ मक्खियाँ भी थीं। मोर्चेपर सैनिकोंको ये मक्खियाँ उसी प्रकार तंग करती थीं, जिस प्रकार जर्मन। वे आपके मुँह, कान और नाकमें घुस जायँगी। रेगिस्तानी युद्धमें खासकर ये बड़ी दुःखदायिनी होती हैं; किन्तु इनका अस्तित्व उतना ही सत्य है, जितना फ्रान्सकी खाइयोंमें कीचड़का होना। बहुतसे अफसरोंने इस बातकी शिकायत की कि बालूके छोटे-छोटे कण बराबर उड़-उड़कर उनके मुँह और देहमें भर जाते हैं। इन बालूके कणोंके मारे मशीनोंके कल-पुर्जे भी बहुत जल्दी खराब हो जाया करते हैं। एक उड़ाकेने मुझे बताया कि मरुभूमिकी जलवायुमें साधारण ढंगके वायुयानके इंजन बहुत थोड़े समय तक चालू रहते हैं। मिस्रमें जहाँ कहीं मैं गया, मैंने अंग्रेज और अमेरिकन वायुयान-इंजीनियरोंको

इंजिनके फिल्टरकी जटिलताओंके सम्बन्धमें बातचीत करते पाया।

जनरल मॉन्टगोमरीके सदर मुकामपर जब हम लौटकर आये, उन्होंने जो कुछ मैंने देखा और सुना था, उसका संक्षेपमें वर्णन किया। युद्धकी स्थिति सर्वथा उनके अनुकूल है, और जो युद्ध अभी-अभी विजयके रूपमें समाप्त हुआ है, उसका रेगिस्तानी युद्धके परिणामकी दृष्टिसे बहुत बड़ा महत्व है, इस बातको स्पष्ट करनेमें उन्होंने किसी प्रकारका संकोच नहीं किया

"इस युद्धके परिणाम-स्वरूप टैंकों और वायुयानोंके सम्बन्धमें मेरे पक्षकी श्रेष्ठता स्थापित हो चुकी है। पूर्वी भूमध्यसागरके पारसे युद्धके सामान मँगानेमें रोमेल बिलकुल असमर्थ हो गया है, क्योंकि युद्धके सामान लेकर जर्मनोंके जो जहाज चलते हैं, उनमें प्रति पाँच जहाजोंमें चारको अंगरेजोंकी आकाश-सेना नष्ट कर डालती है। ऐसी स्थितिमें मुझे इस बातका पूर्ण निश्चय है कि अन्तमें मैं रोमेलको बिलकुल नष्ट कर डालूँगा। अभी जो युद्ध समाप्त हुआ है, उसमें इस बातकी भलीभाँति परीक्षा हो चुकी है।"

दोनों पक्षके कितने टैंक नष्ट हुए थे और उनके पास अभी कितने टैंक बचे हुए थे, इस सम्बन्धके आँकड़े मैंने देखे थे। शत्रु-पक्षकी जो भीषण क्षति हुई थी, उसे मैंने स्वयं अपनी आँखोंसे देखा था। युद्धके सामानोंकी सुलभ्याके सम्बन्धमें मुझे इससे पहले जो सूचना मिली थी, उसका उन्होंने पूर्ण समर्थन किया। अलेकजेण्ड्रिया बन्दरकी पूर्व दिशामें इस समय भी अमेरिकन जहाजोंसे सामान उतारे जा रहे थे।

उन्होंने मुझसे एक अनुरोध किया। वह अनुरोध यह था कि मिस्र, उत्तर-अफ्रिका और मध्यपूर्वकी जनतामें युद्धके सम्बन्धमें पराजयकी

भावना फैली हुई है। बार-बार अंग्रेजोंकी पराजय होनेसे बहुतसे लोगोंको यह विश्वास हो गया है कि मिस्रपर जर्मनोंका अधिकार होने जा रहा है। इस प्रकारकी भावनाओंके फैलनेसे अंग्रेजोंकी प्रतिष्ठा नष्ट हो चुकी है। और इस प्रतिष्ठा-हानिके फलस्वरूप हमारे पक्षके गुप्त सन्धान-विभागके कार्य्यमें बाधा पड़ती है और शत्रुपक्षको सहायता मिलती है। रोमेलकी अग्रगतिको उन्होंने रोक दिया था सही; किन्तु वह इस बातकेलिये उत्कण्ठित थे कि रोमेल तब तक मरुभूमिमें अपनी सेनाको लेकर पीछेकी ओर हटना शुरू न करे, जब तक कि अमेरिकाके तीनसौ जनरल शेरमन टैंक—जो अभी अभी पोर्टसैद बन्दरगाहमें उतारे गये हैं—युद्धमें काम करने न लग जायें। उनका अनुमान था कि इसमें लगभग तीन सप्ताह लगेंगे। उन्होंने हिसाब करके बताया कि यदि वह युद्धके परिणामके सम्बन्धमें सार्वजनिक रूपमें कोई घोषणा करें, तो यह संभव है कि रोमेल जल्दी-जल्दी पीछे हटना शुरू कर दे। इसलिये उनका खयाल था कि यदि मेरी ओरसे कोई गैरसरकारी घोषणा इस सम्बन्धमें हो जाय, तो रोमेल इससे यह नहीं समझेगा कि अंग्रेजोंकी ओरसे शीघ्र कोई आक्रमण होनेवाला है, और इसके साथ ही किसी सरकारी विज्ञप्तिकी अपेक्षा मेरी इस घोषणाका मिस्र, अफ्रिका और मध्य-पूर्वकी जनताके मनोभावपर भी बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

मैंने स्वयं जो कुछ देखा और सुना था, उससे मुझे पक्का विश्वास हो गया था कि जनरल मॉन्टगोमरीने जो सफलता प्राप्त की थी, उसके महत्व का वर्णन वह बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कर रहे थे। इसलिये उनकी जैसी इच्छा थी उसके अनुसार कार्य्य करनेमें मुझे प्रसन्नता हुई।

उन्होंने अपने सदर मुकाममें समाचारपत्र-प्रतिनिधियोंको बुलाया, और मैंने उन्हें उसी भाषामें—जिसकी शब्दावलीको हम दोनोंने पहले ही

निश्चित कर ली थी, युद्धके परिणाम बताये। "मिस्र बचा लिया गया है। रोमेलका आगे बढ़ना रुक गया है और नात्सियोंको अफ्रिकासे निकाल बाहर करनेका काम शुरू हो गया है।"

अंगरेजोंकी ओरसे यह पहला ही शुभसंवाद था, जो पत्र-प्रतिनिधियों को एक लम्बे अर्सेके बाद सुननेको मिला था। इससे पहले बहुत बार वे धोखा खा चुके थे और अब सतर्क बन गये थे। उनकी दृष्टिमें अभी तक युद्ध-पंक्ति भंग नहीं हुई थी, रोमेल अब भी नील नदीसे कुछ ही मील के फासलेपर था। और जहाँ हम लोग उस समय थे, वहाँसे त्रिपोलीका मार्ग दूर और कुछ-कुछ खामखयाली जैसा मालूम पड़ता था, जब कि केरो का मार्ग उनकी तुलनामें बहुत ही कम दूर था।

उस दिन तीसरे पहर मैंने बहुतसे संवाददाताओंके चेहरेपर एक प्रकारका शिष्टतापूर्ण सन्देहका भाव देखा। युद्धके सम्बन्धमें भविष्य-वाणी करनेवाले समर-नायकोंसे वे काफी परिचित हो चुके थे। कार्य्य संपन्न करनेवाले समर-नायकोंके सम्बन्धमें उनका अनुभव नहींके बराबर था।

मॉन्टगोमरीके सदर मुकामसे मैं एक छोटेसे जर्मन वायुयानपर उड़ा। यह वायुयान जर्मनीके गुप्त संधान-विभागका था। इसका कमरा बिलकुल शीशेका बना हुआ था, जिससे इसपर सवार व्यक्ति सब दिशाओंमें अच्छी तरह देख सकता था। वायुयान बहुत नीचेसे होकर युद्धक्षेत्रके ऊपर उड़ते हुए अमेरिकन और ब्रिटिश वायुयान-अड्डेपर पहुँचा। वायुयानके चालक थे वायुयान-वीर टेडर।

अड्डेपर हमने सैकड़ों अमेरिकन और ब्रिटिश उड़ाकोंको देखा। इनमेंसे कुछ अभी तुरन्त युद्धक्षेत्रसे लौटे थे और कुछ अभी रवाना हो रहे थे। दूसरे लोग बिलकुल शान्त भावसे एक दूसरेको अपने-अपने

अनुभव सुना रहे थे, या वायु और मौसमके सम्बन्धमें आलोचना कर रहे थे। कुछ उद्विग्न भावसे मैंने पूछा कि उस दिन सुबहको भूमध्यसागर की ओर जिन नौजवानोंको छतरियोंके साथ शून्यमें तैरते हुए मैंने देखा था, उनका क्या हुआ? वे पहचाने नहीं जासके ; मगर वहाँके अफसरने मुझसे कहा : "आश्चर्यकी बात तो यह है कि उनमें कितने ही वायु-वेग द्वारा ताड़ित होकर फिर अपने स्थानपर लौट आयेंगे। कुछ तो शत्रुकी सैन्यपंक्तियोंके पीछे गिरेंगे, कुछ समुद्रमें और कुछ मरुभूमिमें। किन्तु अपने बुद्धि-कौशल एवं स्वावलम्बनकी बदौलत उनमें जितने लौटकर अपने सदर मुकामपर पहुँच जाते हैं, वह कम आश्चर्यजनक नहीं है।"

वहाँ मैंने कितने ही अमेरिकन उड़ाकोंके साथ बातचीत की। उनके मनका भाव भी मैंने वैसा ही पाया, जैसा कि मैंने उन अमेरिकन सैनिकोंमें पाया था, जिन्हें मैंने मरुभूमिमें देखा था। इसके बाद मैं और मार्शल टेडर उड़कर अलेकजेन्ड्रिया पहुँचे। बीचका यह समय मुझे यह याद दिलानेके लिये था, कि यह युद्ध उतना सीधा, उतना रूढ़ और वस्तुतः उतना सरल नहीं है, जितना बालू या टैंक या तोपोंकी लम्बी साफ नलें, जिन्हें मैं देखता आ रहा था।

आज भी मेरे मनमें अलेकजेन्ड्रियाकी दो यादगारियाँ ज्योंकी त्यों बनी हुई हैं। पहली है वहाँके बन्दरगाहके हतभाग्य बेड़ेके अध्यक्ष रेन गाडफ्रे के साथ मेरा दीर्घ वार्त्तालाप। शहरके सब स्थानोंसे जिनके जहाज देखे जा सकते थे, उन जहाजोंके पश्चाद्भाग किनारेपर थे, शेष भाग ढँके हुए थे। उनको चलानेकेलिये तेल बहुत कम रह गया था। फिर भी वे बिलकुल बेकाम नहीं हुए थे। अब भी उनमें आघात करनेकी शक्ति बची हुई थी। किन्तु वही मारणयंत्र जिनके निर्माणमें फ्रांसके किसानोंने अपनी कमाईकी बचतें पानीकी तरह बहायी थीं और फ्रांसीसी



मिश्रमें—स्व० प्रेसीडेन्ट रूजवेल्टके व्यक्तिगत प्रतिनिधि मि० विल्की कैरोके नजदीक वहाँके मजदूरोंसे बातें कर रहे हैं उनके दाहिने ओर मध्यपूर्वकेअमेरिकाके कमान्डर मेजर जनरल एल० मेक्सवेल।

U.S.O.W.I. की सौजन्यसे

इंजीनियरों और नाविकोंने अपना बुद्धि-कौशल लगाया था, आज अकर्मण्य, पंगु एवं अवज्ञात बने हुए थे। और फ्रांस अब भी नात्सियों द्वारा पराभूत एवं पददलित हो रहा था। उनकी उपस्थिति इस बातकी दुःखपूर्ण याद दिला रही थी कि यह युद्ध अब भी घबराहटमें डालनेवाला एक गन्दा काम है, जिसमें बहुतसे लोगों और जनसमूहोंने किसी पक्षका अवलम्बन नहीं किया है।

एडमिरल गाडफ्रे अच्छी अंगरेजी बोलते थे। उनसे मिलकर और बात-चीत करके मैं बहुत प्रभावित हुआ। वह मुझे एक ऊँचे दर्जेके सुयोग्य फ्रांसीसी अफसर प्रतीत हुए। जिन अंगरेज अफसरोंने उनके साथ मेरा परिचय कराया था, उन्होंने भी उनके सम्बन्धमें मेरे विश्वासकी पुष्टि की। फ्रांसमें जो घटनायें घटी थीं, उनसे वह अत्यन्त व्यथित हो रहे थे। नौ-सेनाके एक सीधे-सादे पदाधिकारीके अनुशासन-क्षेत्रसे बाहर युद्धके सम्बन्धमें उनकी शिक्षा नहींके बराबर थी। सन् १९४० के जूनके बाद ब्रिटिश नौ-सेनाने फ्रांसीसी जहाजोंके विरुद्ध जो कार्रवाइयाँ की थीं, उनसे वे स्पष्टतः गम्भीर रूपमें चिढ़े हुए-से जान पड़ते थे। मगर अमेरिकाके प्रति उन्होंने विशेष रूपमें मैत्री-भाव प्रकट किया और उसकी विजय-कामना की। यद्यपि मुझसे उन्होंने कहा कि जब तक मार्शल पेताँ जीवित हैं, तब तक उनके आदेशोंके अनुसार ही कार्य्य करूँगा, फिर भी उन्होंने अपने तथा अपने नाविकोंके जो मनोभाव प्रकट किये, उनसे यह स्पष्ट था कि वे अमेरिकन फौजोंके वहां पहुँचनेकी आशा कर रहे थे, और उनकी बातोंसे मुझे यह भी मालूम हो गया कि यदि अमेरिकन फौज वहाँ पहुँचेगी, तो उनका बेड़ा नाममात्रके लिये ही उसका प्रतिरोध करेगा।

एडमिरल गाडफ्रे तथा उत्तर-अफ्रिकाके अन्य फ्रांसीसी अफसर सैनिकों और नाविकोंके साथ बातचीत करनेके बाद मैंने इन सब बातों

पर सोलहो आना विश्वास कभी नहीं किया कि ऐडमिरल डारलांसे सम्बन्ध स्थापित किये बिना यदि हम लोग सीधे अमेरिकनके रूपमें वहां पहुँचते तो बहुत सम्भव था कि हमें क्षतिग्रस्त होना पड़ता। इस प्रकारकी कथाओं पर—जो न तो प्रमाणित की जा सकती हैं और न अप्रमाणित, और जो बड़ी तत्परताके साथ किसी राजनीतिक चालका समर्थन करती हैं—मैंने बराबर सन्देह किया है।

अलेकजेण्ड्रियाकी मेरी दूसरी यादगारी उस रातमें ऐडमिरल हारवूडके यहां भोजन करना है। दक्षिण-अमेरिकाके समुद्रमें जर्मन युद्ध-जहाज 'ग्रेफ स्पी' (Graf Spee) के विरुद्ध 'एक्सटर' का जो ऐतिहासिक संग्राम हुआ था, उसके विजयी वीर सेनापति एडमिरल हारवुड ही थे। इस समय आप पूर्वी भूमध्यसागरमें ब्रिटिश नौ-सेनाके अध्यक्ष हैं। उन्होंने इस भोजमें नौ-सेना विभाग और अलेकजेण्ड्रियाके राजनीतिक अथवा विदेशी राष्ट्रोंके दूत-विभागके अपने अन्य दस साथियोंको भी निमंत्रित किया था। शुरूमें हम लोगोंने युद्धके विषयमें उसी प्रकार अनासक्त और बहुत-कुछ निर्लिप्त भावसे आलोचना की, जिस प्रकार सारे संसारमें युद्धकी आलोचना युद्धमें संलग्न अफसरों द्वारा की जाती है। इसके बाद हमारे वार्तालापका प्रसंग राजनीतिकी ओर मुड़ा। ये सब ब्रिटिश साम्राज्यके अनुभवी और सुयोग्य शासक हैं। मैंने भविष्यके सम्बन्धमें और खासकर उपनिवेशके भविष्यके सम्बन्धमें और पूर्वकी अनेक जातियोंके साथ हम दोनों राष्ट्रोंके सम्मिलित सम्बन्धके विषयमें इनके मतामत क्या हैं, यह जाननेकी चेष्टा की।

और जो कुछ मुझे मिला, वह यही था कि ये सब रडयार्ड किपलिंगके ही सगे भाई हैं और साम्राज्यवादके सम्बन्धमें इनके जो विचार हैं, उनमें सिसिल रोडस् जैसे साम्राज्यवादीकी उदारता तकके लिये भी स्थान नहीं

है। मैं यह जानता था कि लंडनके और सारे ब्रिटिश प्रजातन्त्रके विज्ञ अंगरेज इन सब समस्याओंको लेकर बहुत-कुछ माथा-पच्ची कर रहे हैं, और उनमें से अनेक कोई ऐसी युक्ति ढूँढ़ निकालना चाहते हैं, जिसमें जो 'ट्रस्टीशिप' अर्थात् पिछड़ी हुई जातियोंपर शासन करनेकी जिम्मेदारी की दकियानूसी धारणाकी अपेक्षा स्वायत्त शासनकी ओर आगे ले जाय। किन्तु सब अफसरोंको—जो लंडन द्वारा निश्चित नीतिके अनुसार ही कार्य करते हैं—इस बातकी कोई धारणा ही नहीं है कि दुनिया बदल रही है। यह सच है कि उनकी दृष्टिमें भी अंगरेजोंकी उपनिवेशसम्बन्धी शासन-नीति दोषशून्य नहीं है; किन्तु मुझे ऐसा जान पड़ा कि उनमेंसे किसीने इस विषयपर कभी इस रूपमें विचार ही नहीं किया है कि उपनिवेशोंकी शासन-नीतिमें कोई परिवर्तन हो सकता है या उनमें किसी प्रकारका सुधार किया जा सकता है, उनमें अधिकांशने अटलाण्टिक चार्टरको पढ़ा था; किन्तु उसे पढ़कर उनके मनमें यह कभी खयाल नहीं आया कि उससे उनकी जीवन-यात्रा-प्रणालीपर या उनके विचारपर कोई असर पड़ सकता है। उसी सन्ध्याको मेरे मनमें यह विश्वास उत्पन्न हुआ और तबसे यह बराबर सुदृढ़ ही होता गया है कि युद्धक्षेत्रमें गौरवोज्ज्वल विजय प्राप्त करके ही हम इस विश्वव्यापि महायुद्धमें विजयी नहीं होंगे, बल्कि वास्तविक विजय प्राप्त करनेकेलिये हमें ऐसे नूतन मनुष्योंका प्रयोजन है, जो प्राच्य जातियोंके साथ हमारे जो सम्बन्ध-साधन हैं, उनमें नूतन भावों को भर सकें। बिना ऐसा किये जो सन्धि होगी, वह दूसरी क्षणिक सन्धि या युद्धविरतिके सिवा और कुछ नहीं हो सकती।

दूसरे दिन हम लोग मोटरसे कैरो वापस आये। वहाँ राजा फारूक और उनके प्रधान-मंत्रीके साथ और बादमें मिस्रके अंगरेज राजदूत सर माइल्स लैम्पसनके साथ बहुत देर तक हम लोगोंकी बातचीत होती रही।

अंग्रेज राजदूत सर माइल्स लैम्पसन ही व्यावहारिक दृष्टिसे मिस्रके वास्तविक शासक हैं। मार्गमें हम लोग प्राचीन और नवीन दृश्योंके एक विचित्र संमिश्रणसे होकर गुजरे। एक ओर देशी सवारोंसे युक्त ऊँटोंकी लम्बी पंक्तियाँ, जिनपर नील नदीकी घाटियोंकी पैदावार लदी हुई थी, और दूसरी ओर आधुनिक ढंगकी बोझ ढोनेवाली मोटरगाड़ियाँ, जो लड़ाकू वायुयानोंको खींचकर मरम्मतकेलिये केरो ले जाया करती थीं। और इसके साथ ही हम दूरसे sphinx (स्फिक्स) और पिरामिडों (विशाल स्तम्भसमूह) को बराबर देख सकते थे, जो हमें मिस्रके प्राचीन गौरवको याद दिला रहे थे।

मध्य-पूर्व

केरोसे लेकर तेहरान तक हम वाणिज्य—मार्गों और उन नगरोंके ऊपरसे होकर उड़े, जो हमारी सभ्यताकी प्राचीनतम वस्तुओंमें से हैं और जो इतिहासके हजारों वर्षकी विविधता एवं वैषम्यको कायम रखे हुए हैं। नील नदीकी घाटीमें सिंचाईके पम्पोंके चारों तरफ अविराम चक्कर लगानेवाले भैंसे, जिनकी आँखोंपर पट्टी लगी हुई थी, ऐसे मालूम पड़ रहे थे, मानों मशीनोंकी मरम्मतकेलिये जो बड़े-बड़े अमेरिकन डिपो खुले हुए थे, उनसे उनका कोई मतलब ही नहीं हो। पुराने शहर जेरूसलेमकी गन्दी गलियोंमें खेलते हुए दुबले-पतले बच्चे, बेरूतके हवाई अड्डेपर नौजवान फ्रांसीसी सैनिक, बगदादके एक कम्बलके कारखानेमें काम करनेवाले दस सालकी बालक-बालिकायें, तेहरानके बाहर बड़े-बड़े

बैरकोंमें रहनेवाले पोलैण्डके शरणार्थी—जिस भूभागको हम मध्य-पूर्व कहते हैं, उसका यही प्रथम चित्र हमारे सामने उपस्थित हुआ। यह चित्र असमानताओं का द्योतक और साथ ही भ्रम उत्पन्न करनेवाला भी था।

आकाशमें उड़ते समय, बीच-बीचमें, जहाँ वायुयान ठहरता है, उस-पर सवार मुसाफिरको इस बातका मौका मिलता है कि जिस भूमिपर से होकर वह उड़ रहा है, उसका नकशा वह अपने मनमें अंकित कर ले। बेरूतसे लीडा, लीडासे बगदाद और फिर वहाँसे तेहरान तक हम लोगोंकी काफी लम्बी उड़ान थी, जिसमें हम अपने लिखित यादगारोंका एक दूसरेसे मिलान कर सकते थे और अपने अनुभवोंको क्रमबद्ध कर सकते थे। ईरानसे सोवियट रूसकेलिये रवाना होनेके पहले मैंने कुछ ऐसे तात्का-लिक एवं प्रयोजनीय प्रश्नोंके उत्तर अपने मनमें निश्चित कर लिये थे, जो मध्य-पूर्वके सम्बन्धमें मेरे मनमें उठे थे।

पहली बात तो यह थी कि मुझे यह पक्का विश्वास हो गया था कि मध्य-पूर्वकी ये सब जातियाँ हमारे विरुद्ध न होकर अधिकतर हमारे पक्षमें ही थीं। इसका एक कारण यह भी था कि अमेरिका यहाँसे बहुत दूर था, और इन सब जातियोंपर उसका किसी प्रकारका नियंत्रण नहीं था। और ये कारण अवश्य ही महत्वपूर्ण कहे जा सकते हैं—खासकर इस वजहसे कि ईरानमें जर्मनीकी लोकप्रियता अब भी बनी हुई थी। इसके अलावा अमेरिकाके युद्धमें शामिल होनेसे बहुतसे लोगोंको यह विश्वास हो गया था कि सामयिक रूपमें भले ही युद्धकी गतिमें विपर्य्यय दिखायी पड़े, किन्तु अन्ततः संयुक्त-पक्षकी ही विजय होगी। दूसरे शब्दोंमें यों कह सकते हैं कि मध्य-पूर्वकी ये सब जातियाँ, जो सिकन्दरके बहुत पहले से ही एकके बाद दूसरे विजेताओं द्वारा पराभूत होती आ रही हैं, विशुद्ध व्यावहारिक दृष्टिसे किसी विषयपर विचार करनेकी कलामें बहुत-कुछ

निपुण हो गयी हैं, और बारबार विजित होकर भी जीवित रहनेकी जो उनमें स्वाभाविक क्षमता उत्पन्न हो गयी है, उससे युद्धका परिणाम स्पष्ट होनेके पूर्व ही विजयी पक्षको चुन लेनेमें भी वे समर्थ होती हैं ।

दूसरी बात यह थी कि मुझे इस बातका पका विश्वास हो गया था कि जिन सब स्थानोंमें मैं गया था, प्रायः सर्वत्र एक प्रकारकी फेणिल उन्मादना काम कर रही थी । चाहे यहाँका कोई राष्ट्र कितनी ही कठोर तटस्थ नीतिका अवलम्बन क्यों न करे, किन्तु इस भूभागमें जो लोग बसते हैं, उनपर युद्ध-जनित गम्भीर एवं प्रचण्ड परिवर्तनोंका जो प्रभाव पड़ रहा है, उसे वह रोक नहीं सकता । गत दस शताब्दियोंके अन्दर यहाँके लोगोंके जीवनमें जितना परिवर्तन हुआ है, उसकी अपेक्षा कहीं अधिक परिवर्तन आगामी दस वर्षोंमें उनके जीवनमें होगा ।

तीसरी बात यह है कि मुझे इस बातकी कोई गारण्टी नहीं मिली कि इन जातियोंके जीवनमें जो परिवर्तन होंगे, वे हम लोगोंके पक्षमें ही होंगे । पश्चिमके राजनीतिक मतवादोंका जो जादू था, उसका प्रभाव अब बहुतसे मुसलमान, अरब, यहूदी और ईरानियोंके मनपर पहलेके समान नहीं रह गया है । वे उनमें अब उग्रभावसे दोष ढूँढ़ने लग गये हैं । प्रायः एक पीढ़ीसे इन जातियोंने हम लोगोंको परस्पर लड़ते हुए बहुत निकटसे देखा है, और हमारे विश्वासोंकी मूल भित्तिपर सन्देह प्रकट किया है । हर जगह मैंने ऐसे विनम्र किन्तु सन्दिग्ध-चित्त मनुष्योंको पाया, जिन्होंने अपनी समस्याओं एवं कठिनाइयोंके सम्बन्धमें मेरे प्रश्नोंके उत्तर, हम लोगोंकी निजकी जो समस्यायें एवं कठिनाइयाँ हैं, उनके सम्बन्धमें शिष्ट किन्तु व्यंग्यपूर्ण प्रश्नों द्वारा दिये । अमेरिकामें विभिन्न जातियोंको लेकर जो अनुचित व्यवस्था फैली हुई है, उसके सम्बन्धमें बहुधा प्रश्न पूछे जाते थे । मेरा विश्वास है कि जिस किसी सरकारी अफसरसे मैंने बातचीत की

सभीने फ्रांसकी विसी-सरकारके साथ हम लोगोंके सम्बन्धपर आश्चर्य प्रकट किया। अरब और यहूदी इस बातको जाननेकेलिये उत्सुक थे कि स्वतन्त्रताके सम्बन्धमें हम लोग जो उद्गार प्रकट कर रहे हैं, उनका अर्थ नूतन एवं विस्तृत रूपमें प्रभाव-क्षेत्र कायम करना तो नहीं है। क्योंकि लेबानन, सिरिया और फिलस्तीनमें आदेशानुवर्ती अञ्चल (Mandated areas) का अर्थ उन लोगोंकेलिये, चाहे वह सही या गलत हो, एक प्रकारका विदेशी उत्पीड़नके सिवा और कुछ नहीं था।

मध्य-पूर्वमें जहाँ कहीं मैं गया मैंने दरिद्रता और गन्दगीकेसाथ-साथ लोगोंको शिल्प-विज्ञानमें बहुत पिछड़ा हुआ पाया। मैं यह जानता हूँ कि इन लोगोंके सम्बन्धमें इस प्रकारकी एक टिप्पणी करनेवाला प्रत्येक अमेरिकन इस अभियोगकेलिये अपनेको उत्तरदायी बनाता है कि वह जहाँ कहीं जाता है, अपने यहाँके स्नानागारको नहीं भूलता। किन्तु जेरूसलममें मैंने पहले-पहले इस बातको समझा कि किस प्रकार इतनी बड़ी संख्यामें दूसरे अमेरिकन लोग सचमुच यह भावना लेकर वहाँ गये हैं कि बाइबिलके जमानेमें उन्हें फिर लौट चलना है। और सचमुच वे बाइबिलके जमानेमें लौट रहे थे, क्योंकि दो हजार सालके अन्दर वहाँ बहुत कम परिवर्तन हुआ था। आधुनिक आकाश-मार्ग, तेलकी पाइप लाइन, पत्थरोंसे पटी सड़कें या नल द्वारा पानी ले जानेका कौशल भी उनके उस जीवनकी सतहके ऊपर एक पतली तह-जैसा था, जो जीवन असलियतमें अब भी वैसा ही सरल एवं कठोर बना हुआ था, जैसा कि उस समय था, जिस समय आजके पश्चिमका अस्तित्व तक नहीं पाया जाता था। इसके अपवाद विशेष रूपमें केवल वहीं पाये जाते थे, जहाँ विश्व यहूदी धर्म-आन्दोलनके तत्त्वावधानमें कृषि, उद्योग-धन्धे तथा संस्कृतिके क्षेत्रोंमें उन्नति हुई थी, अथवा जहाँ अरब लोगोंने, जैसे बगदादमें, कुछ अंश तक स्वायत्त शासन प्राप्त किया था।

मुझे ऐसा मालूम हुआ कि इन सब देशोंके अधिवासियोंको विभिन्न रूपोंमें और विभिन्न परिमाणमें चार चीजोंकी जरूरत है। उन्हें अधिक शिक्षाकी जरूरत है। उनकेलिये विशेष रूपमें स्वास्थ्य-सुधार-सम्बन्धी कार्य होने चाहिये। आधुनिक ढंगके उद्योगधन्धोंकी उन्हें विशेष आवश्यकता है। और उन्हें अधिक सामाजिक मर्यादा एवं आत्म-विश्वास होना चाहिये, जो स्वतंत्रता एवं स्वराज्यसे ही प्राप्त होते हैं।

नील नदीके मुहानेकी ओर यात्रा करते हुए कोई भी व्यक्ति इस बात को महसूस किये बिना नहीं रह सकता कि मिस्रवासियोंके जातीय पौरुष—जो ऐतिहासिक परम्परासे उन्हें प्राप्त है—का इनमें पुनः संचार करनेके लिये शिक्षा कितना बड़ा साधन सिद्ध हो सकती है। इस देशमें कितने ही स्कूल खुल चुके हैं; अमेरिकनों और अंगरेजोंने इस कार्यमें उनकी सहायता की है; मैं मिस्रवासियोंसे मिला, जिनमें राजा फारूक और प्रधान मंत्री नहस पाशासे लेकर इंजीनियर और डाक्टर तक शामिल थे; संसार में कहीं भी ये लोग शिक्षितके रूपमें पहचाने जायँगे। फिर भी मिस्रमें या सारे मध्य-पूर्वमें, सिवा टर्कीके, कहीं भी किसीने वहाँके किसी देशी विद्यालयके प्रति जातीय गौरवका भाव मुझसे प्रकट नहीं किया। अगर किसी विद्यालयको देखनेकेलिये किसीने मुझसे आग्रह भी किया, तो वह एक बालिका-विद्यालय था, जो एक अमेरिकन महिला द्वारा चलाया जा रहा था। उक्त महिला विशेष नैराश्यके बीच भी पिछले तीस सालसे मिस्रके अनाथ बच्चोंको शिक्षित बनानेका प्रयत्न कर रही है।

मेरी जहाँ कहीं भी अभ्यर्थना हुई, सर्वत्र पाशा लोगोंसे मेरी मुलाकात हुई। इनमें बहुतोंने विदेशी लड़कियोंसे शादी की है। ये पाशा लोग बड़े ही मिलनसार और आनन्दी पुरुष होते हैं। सार्वजनिक उद्यानोंमें इनकी मूर्त्तियाँ भरी पड़ी हैं। ओटोमन साम्राज्यके समयसे ही 'पाशा'

उपाधि प्रचलित है। पहले यह उपाधि सेनानायकों और प्रान्तीय शासकोंको दी जाती थी, जो साम्राज्यकी विशेष रूपमें सेवा किया करते थे। अब यह एक सम्मान-प्रदर्शनसूचक उपाधिके रूपमें रह गई है, जो राजा द्वारा प्रदान की जाती है। जब कभी कोई पाशा बाहर निकलता है, मिस्रवासी उस विशिष्ट व्यक्तिके सम्मानमें लाल कालीन फैला देते हैं, क्योंकि उसके पास इतना अर्थ होता है, जिससे वह भाड़ेपर अपने लिये इस प्रकारके सम्मान-प्रदर्शनका प्रबन्ध करा सकता है।

किन्तु जब मैंने अपने एक मेजमानसे, जो मिस्रका एक तरुण पत्रकार था, यह प्रश्न किया कि क्या कोई व्यक्ति महत्वपूर्ण पुस्तक लिखकर मिस्रमें पाशा हो सकता है, तो उसने उत्तर दिया—"मैं समझता हूँ, शायद हो सकता है; किन्तु मिस्रमें प्रायः कोई व्यक्ति पुस्तक लिखता ही नहीं।"

"क्या चित्रकारी करके आप लोग पाशा हो सकते हैं?" मैंने पूछा।

"हो क्यों नहीं सकते; मगर यहाँ कोई चित्रकारी नहीं करता।"

"क्या कभी कोई महान् आविष्कारक पाशा बना है?" और एक बार फिर मुझे वही उत्तर मिला—"जहाँ तक मुझे मालूम है, फरोहोंके बादसे हम लोगोंके देशमें कोई महान् आविष्कारक पैदा नहीं हुआ।"

मैं मिस्रमें इतने दिनों तक नहीं रहा, जिससे इस सांस्कृतिक बन्ध्यापनके समस्त कारण मुझे ज्ञात हो सकें। मिस्रके सबसे बड़े नगर कैरोकी—जहाँ संसार-भरके लोग पाये जाते हैं—शिक्षा एवं संस्कृतिपर विदेशियोंका प्रभुत्व होना भी उसकी सांस्कृतिक बन्ध्यापनका कुछ अंश तक कारण हो सकता है। यह प्रभुत्व उसी प्रकारका है, जिस प्रकारका प्रभुत्व वहाँके थोड़ेसे पाशा लोगोंका मिस्रकी उपजाऊ भूमिपर है। और पाशाकी उपाधि इन लोगोंने राजनीतिक कार्योंकी बदौलत नहीं, बल्कि अपने धनकी बदौलत प्राप्त की है।

किन्तु सबसे बड़ा कारण जान पड़ता है मध्यवित्त श्रेणीका संपूर्ण अभाव। समग्र मध्य-पूर्वमें धनी जमींदारोंकी संख्या बहुत थोड़ी है और इनकी सम्पत्ति बहुत-कुछ पैतृक है। मैं इस वर्गके कितने ही लोगोंसे मिला और किसी भी राजनीतिक आन्दोलनसे—सिवा उसके कि जिसका सम्बन्ध खास उनकी पद-मर्यादाको कायम रखनेसे था—उन्हें बहुत-कुछ उदासीन पाया। खानाबदोश उपजातियोंके अलावा भी वहाँकी अधिकांश जनता संपत्तिहीन एवं दरिद्र है। प्राचीन पुरोहिततंत्रके आचार-विचारों द्वारा भीषण रूपमें उनका जीवन शासित हो रहा है, और वे लोग बड़ी गन्दी अवस्थाओंमें रहा करते हैं। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि सृष्टि करनेकी शक्ति एवं प्रेरणा उन लोगोंमें नहीं होती, जिनके पास अत्यधिक होता है अथवा कुछ नहीं होता। मध्य-पूर्वमें इन दोनोंके बीचकी वस्तु नहींके बराबर है।

फिर भी आश्चर्य तो तब लगता है, जब हम इन सब देशोंमें भी उत्तेजना, तथा यहाँकी चिरकालिक निश्चेष्ट जनतामें अन्धकारमें अपना मार्ग टटोलने तथा जीवनकी गतिको सीमित करनेवाले धार्मिक अनुष्ठानों एवं आचारोंके प्रति अवज्ञाका भाव पाते हैं। प्रत्येक नगरमें मुझे अशान्त, सतेज एवं बुद्धिमान नवयुवकोंका एक ऐसा छोटा दल दिखाई पड़ा, जो उस गण-आन्दोलनके विशेष ज्ञानसे परिचित था, जिस आन्दोलन द्वारा रूसमें विप्लव संघटित हुआ था। ये लोग इस प्रकारके गण-आन्दोलनकी विशेषताओंके सम्बन्धमें चर्चा किया करते थे। हम लोगोंके गणतांत्रिक शासनके विकासका इतिहास भी वे जानते थे। मेरी जो उनके साथ बातचीत हुई, उससे मुझे ऐसा लगा कि वे अपने मनमें इस बातको तौलकर देख रहे हैं कि उनकी प्रगाढ़ एवं उन्मत्तप्राय महत्त्वाकांक्षाओंकी पूर्त्ति किस मार्ग द्वारा होनी चाहिये। रूस और चीनकी

तरह इस भूभागमें भी सर्वत्र मुझे अत्युग्र राष्ट्रीयताकी बढ़ती हुई भावना दिखलायी पड़ी। मेरे जैसे व्यक्तिके लिये, जो यह विश्वास करता है कि विश्व-शान्तिकी एकमात्र आशा इस प्रकारकी राष्ट्रीयताकी विपरीत दिशामें है, अवश्य ही यह भावना विरक्तिजनक थी।

मैंने ठीक इसी प्रकारका असन्तोष, क्षुधा एवं अधीरता इराक, लेबानन और ईरानमें भी पायी, और उसी तरह सरकारी अफसरों में भी समस्याको समझनेमें समयानुकूल सतर्कताका अभाव पाया, यद्यपि इन सब देशोंके प्रधान-मंत्री और परराष्ट्र-विभागके मंत्री जानकार और सुयोग्य व्यक्ति हैं।

बेरुत, तेहरान और कैरोमें अमेरिकनोंने विद्यालय खोलकर और चलाकर वहाँके अधिवासियोंकी सहायता करना आरम्भ कर दिया है। ये सब विद्यालय सब लोगोंकेलिये खुले हुए हैं। बेरुतमें मैंने वहाँके अमेरिकन विश्वविद्यालयके सभापति बेयार्ड डाजके साथ उनके उद्यानमें चायपान किया। उसी दिन मैं युद्धनिरत फ्रांसीसियोंके नेता जनरल डी गाले से, उनके एक दूसरे प्रतिनिधि जनरल जार्ज कैटराक्स और ब्रिटिश मंत्री मेजर-जनरल एडवर्ड लुइ स्पीयर्ससे मिला। इनमें प्रत्येकके साथ मैंने सीरिया और लेबाननके भविष्यके सम्बन्धमें बातचीत की। किन्तु मेरे इस कथनमें जरा भी अत्युक्ति नहीं कि इन सब प्रदेशोंके भविष्यके सम्बन्धमें डा० डाजने मुझे जितनी आशा और विश्वास दिलाया, उतना और सब लोगोंने मिलकर भी नहीं।

फिर भी जनरल डी गालेसे मेरी जो मुलाकात हुई थी, उसे मैं कभी नहीं भूलूँगा। बेरुतके हवाई अड्डे पर वह मुझसे मिले। वहाँ रंगीन वर्दी पहने हुए गार्ड और बैंड द्वारा मेरा स्वागत किया गया और फिर जल्दीसे कई मील साथ ले चलकर मुझे उस मकानमें पहुँचाया

गया, जहाँ जनरल रहा करते थे। वह एक सफेद रंगका बहुत बड़ा मकान था, जो चारों तरफ बाकायदा बगीचेसे घिरा हुआ था। वहाँ हरएक मोड़पर पहरेवाले मेरा अभिवादन करते थे। जनरलके खानगी कमरेमें हम घंटों बातचीत करते रहे। उस कमरेके हरएक कोनेमें, हरएक दीवारपर नेपोलियनकी मूर्त्तियाँ और तसवीरें लगी हुई थीं। चाँदनी रातमें भोजनके समय देर तक हम लोगोंका वार्त्तालाप चलता रहा।

सीरिया और लेबाननपर किसका प्रभुत्व होना चाहिये, इस बातको लेकर जनरलका अंगरेजोंके साथ जो संघर्ष उस समय चल रहा था, उसका वर्णन करते हुए अक्सर वह नाटकीय ढंगसे बोल उठते थे, "मैं अपने सिद्धान्तोंका बलिदान नहीं कर सकता और न उनके सम्बन्धमें कोई समझौता कर सकता हूँ।" "जोन आफ आर्ककी तरह"—उनके अंगरक्षकने इतना और उसमें जोड़ दिया। जब मैंने युद्धनिरत फ्रांसीसी (Fighting French) आन्दोलनके सम्बन्धमें अपनी दिलचस्पीका जिक्र किया, तो उन्होंने फौरन मेरे कथनमें संशोधन करते हुए कहा—"युद्धनिरत फ्रांसीसी कोई आन्दोलन नहीं है। वे लोग फ्रान्स ही हैं। फ्रान्स और उसके पास जो कुछ बच गया है, उसके हमीं लोग अवशिष्ट उत्तराधिकारी हैं।" जब मैंने उन्हें यह स्मरण दिलाया कि राष्ट्रसंघके अधीन सीरिया एक आदेशप्राप्त (mandated) क्षेत्र है, तब उन्होंने कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ। किन्तु मैं उसे एक थातीके रूपमें अपने अधिकारमें रखे हुए हूँ। मैं उस आदेशकी समाप्ति नहीं कर सकता और न किसीको वैसा करने दूँगा। ऐसा तभी हो सकता है, जब कि फ्रांसमें फिर कोई सरकार कायम हो। संसारके किसी भी स्थानमें मैं फ्रांसीसियोंका एक भी हक छोड़नेकेलिये तैयार नहीं हूँ। किन्तु, चर्चिल और रूजवेल्टके साथ बैठकर मैं इस बातपर विचार करनेकेलिये बिलकुल

तैयार हूँ कि जर्मन और उनके सहयोगियोंको फ्रांससे निकाल बाहर करनेमें अस्थायी रूपमें फ्रांसके प्रदेशों और उसके अधिकारोंसे किस प्रकार सहायता ली जा सकती है।" "मि० विल्की," आगे चलकर उन्होंने कहा, "कुछ लोग इस बातको भूल जाते हैं कि मैं और मेरे साथी-संगी फ्रांसका प्रतिनिधित्व करते हैं। वे लोग स्पष्टतया फ्रांसके गौरवपूर्ण इतिहासका खयाल नहीं करते। उसका वह गौरव क्षणिक रूपमें जो निष्प्रभ हो गया है उसीपर उनका ध्यान जाता है।"

इसके बाद लेबाननके एक उच्च अधिकारीके साथ मैं बातचीत कर रहा था। उस समय फ्रांसीसी और अंगरेजोंके बीच सीरिया और मध्य-पूर्वपर नियंत्रण रखनेकेलिये जो संघर्ष चल रहा था, उसी प्रसंगको लेकर हमारी वह बातचीत थी। मैंने उनसे पूछा, "आपकी सहानुभूति किस तरफ है?" उन्होंने उत्तर दिया, "दोनों ही मेरे लिये समान रूपमें नैसर्गिक विपद हैं।" चाहे जिस शक्तिका नियंत्रण हो, इसमें सन्देह नहीं कि मध्य-पूर्वके बुद्धिजीवी-वर्गको आदेशप्राप्त क्षेत्र (mandates) और उपनिवेशोंकी पद्धतिमें नहींके बराबर विश्वास रह गया है।

बेरूतसे मैं जेरूसलेम गया। प्राचीन और नवीनका वैषम्य जितना यहाँ नाटकीय रूपमें दिखाई पड़ा, उतना और कहीं नहीं। बहुत दूर आकाश में द्रुत गतिसे उड़ते हुए अपने उस आधुनिक वायुयानकी खिड़कियोंसे हम स्वच्छ वायुमें नीचेकी ओर उन पहाड़ियोंकी—जिनपर किसी समय लेबाननके देवदारु वृक्ष खड़े थे—मृतक सागर, गैलिली सागर, जोर्डन नदी, ओलिव्स पहाड़ और गेथ सिमेनके उद्यानको देख सकते थे।

जेरूसलेममें मैं फिलस्तीन और ट्रैन्सजोर्डनके सुयोग्य ब्रिटिश रेजिडेण्ट हाई कमिश्नर सर हेराल्ड मैक माइकेलका मेहमान था। उन्होंने मुझे पुराना शहर दिखलाया और असीम धैर्यके साथ प्रसन्न चित्तसे समझाकर

बताया कि एक उपनिवेश और एक आदेशप्राप्त (मैण्डेटेड) क्षेत्र में क्या भेद है, हालाँकि इस भेदको समझना एक अमेरिकनके लिये सहज नहीं है।

किन्तु जेरुसलेमके अमेरिकन कान्सल जनरल लावेल सी० पिन्कर्टनके प्रबन्धसे मैं फिलस्तीनकी समस्याओंकी वास्तविक जटिलताओं का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करनेमें समर्थ हुआ। यहूदी और अरब लोगोंके जितने परस्पर-विरोधी दल थे, उन सबके प्रतिनिधियोंको उन्होंने एक-एक करके अपने अतिथि-सेवापरायण घरमें लाकर उपस्थित कर दिया, और जो बार्नेस, मीकी कावेल्स तथा मैं उनके साथ दिन-भर वार्त्तालाप करते रहे। उस अञ्चलके ब्रिटिश सैन्यदलोंके सेनानायक मेजर-जनरल डी० एफ० मेकानल, सर हेराल्डके शासन-विभागके चीफ-सेक्रेटरी रावर्ट स्काट, यहूदी एजेन्सीके राजनीतिक विभागके सुयोग्य एवं बुद्धिमान प्रधान अफसर मोशे शेरटाक, सर हेराल्डके दफ्तरके अरब मेम्बर रुही बे अब्दुल हादी, यहूदी धर्मके रिविजनिष्ट दल—जो सारे देशपर यहूदियोंका दावा करता है—के प्रधान डा० एरिह ऐल्टमैन, और अरब वकील तथा राष्ट्र-वादी नेता अवनी बे अब्दुल हादी—जो सारे देशपर अरबोंका दावा करते हैं—वहां उपस्थित हुए थे। सबोंने अपनी-अपनी बातें हमें सुनायीं।

तमाम दिन उन लोगोंकी बात सुननेके बाद मैं इस नतीजेपर पहुँचा कि इस जटिल समस्याका एकमात्र समाधान उसी प्रचण्ड रूपमें हो सकता है, जिस रूपमें सोलोमनका हुआ था। किन्तु इसके बाद मैं हदा-साह की संस्थापिका मिस हेनरियेटा गोल्डसे उनके छोटेसे सादी ढंग से सजे हुए कमरेमें मिलने गया। मैंने उनसे दिन-भरकी अपनी मुलाकात, सर हेराल्ड माइकेलके साथ बातचीत और अपनी घबराहट और उसका उत्तर पानेकी उत्कण्ठाका जिक्र किया। मैंने उनसे पूछा कि क्या आप इस

बातको सच मानते हैं कि कुछ विदेशी शक्तियाँ जान-बूझ कर यहूदी और अरब लोगोंके बीच कलहका उत्तेजन दे रही हैं, ताकि उनका नियंत्रण बना रहे।

उन्होंने कहा, "दुःखके साथ मुझे कहना पड़ता है कि यह सत्य है।" इसके बाद उन्होंने मुझसे कहा, "मि० विल्की, यह समस्या मेरे साथ बहुत वर्षोंसे लगी हुई है। जब तक इसका समाधान नहीं हो जाता, मैं सुखपूर्वक अमेरिका में नहीं रह सकती। संसारमें दूसरा कोई भी उपयुक्त स्थान नहीं है, जहाँ यूरोपके निपीड़ित यहूदियोंको शरण मिल सके। और चाहे हम लोग कितनी ही इस बातकी इच्छा करें, फिर भी यहूदियोंके प्रति किये जानेवाले उत्पीड़नका अन्त आपके या मेरे जीवन कालमें नहीं होने जा रहा है। यहूदियोंके लिये कोई जातीय वासभूमि अवश्य होनी चाहिये। मैं एक कट्टर यहूदी धर्मावलम्बिनी हूँ, किन्तु मैं यह नहीं मानती कि यहूदियों और अरब लोगोंकी आशा-आकांक्षाओंमें अनिवार्यतः वैर-भाव है। यहाँ जेरुसलेममें मैं अपने यहूदी बन्धुओंसे यह अनुरोध करती रहती हूँ कि वे इस प्रकारके सहज कार्य करें, जिससे मनुष्य-मनुष्यमें भेद-भाव मिट जाय। मैं प्रत्येक यहूदीसे यह साग्रह अनुरोध करती हूँ कि वे कुछ अरबवासियोंके साथ मैत्री-सम्बन्ध स्थापित करके अपनी जीवन-यात्रा-प्रणाली द्वारा उन्हें असन्दिग्ध रूपमें यह दिखा दें कि हम लोग विजेताके रूपमें या विध्वंसकके रूपमें यहाँ नहीं आये हैं, बल्कि इस देशके परम्परागत जीवनके एक अंशके रूपमें। और यह देश मानसिक भावावेग एवं धार्मिक दृष्टिसे हमारी वासभूमि है।

उन्होंने मुझे बताया कि उनका विश्वास है कि शिक्षा-प्रचार द्वारा यह सम्भव हो सकता है। और यद्यपि वह इस समय लगभग अस्सी वर्षकी वृद्धा हैं, फिर भी बहुतसे यहूदी फार्म और यहूदी व्यवसायोंमें उन्होंने

जो कार्य किये हैं और उनके सम्बन्ध में जो बातें उन्होंने मुझे बतायीं, वे यौवनोचित उत्साह एवं सजीवतासे परिपूर्ण थीं।

शायद ऐसा विश्वास करना वास्तविकतासे बहुत दूर होगा कि अरबों और यहूदियोंका यह जटिल प्रश्न—जिसका आरम्भ प्राचीन इतिहास और धर्मसे होता है, और जिसके साथ गम्भीर अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति और राजनीति जड़ित है, शुभ कामना एवं सरल न्यायपरता द्वारा हल हो सकता है। किन्तु उस दिन देर तक अपराह्णमें वहाँ बैठा हुआ, जब कि सूर्य खिड़कियोंसे होकर चमक रहा था, और उस महिलाके बुद्धिविशिष्ट अनुभूतिसंपन्न मुखमण्डलको प्रोद्भासित कर रहा था, मैं कम-से-कम क्षण-भरके लिये यह अवश्य सोचने लगा कि कौन कह सकता है कि परिपक्व एवं निःस्वार्थ ज्ञानवाली वह महिला अन्य सभी महत्त्वाकांक्षी राजनीतिज्ञोंकी अपेक्षा अधिक नहीं जानती हों।

मध्य-पूर्वमें सर्वत्र शिक्षाकी समस्याके साथ-साथ दूसरी समस्या है चिकित्सा एवं सार्वजनिक स्वास्थ्यकी। इन सब देशोंमें आप चाहे जहाँ भ्रमण करें, आपको बराबर रोग एवं महमारीका ज्ञान होता रहेगा। और इन जातियोंका भविष्य तब तक सुनिश्चित नहीं हो सकता, जब तक कि उनके स्वास्थ्य एवं जीवनी शक्तिकी उन्नति करनेकेलिये दृढ़संकल्प रूपमें प्रयत्न नहीं किया जाय।

शिक्षाकी तरह रोग एवं स्वास्थ्यके क्षेत्रमें भी कुछ देशी लोगोंने और चन्द विदेशियों और खासकर अमेरिकनोंने दिखला दिया है कि इस दिशामें कहाँ तक कार्य किया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्रके सेना-विभागकी ओरसे मिस्र, फिलस्तीन या ईरानमें मैंने मलेरिया रोगके निवारणकेलिये किये गये कार्योंका जो रेकर्ड देखा, वह इतना महत्त्वपूर्ण था कि युद्धके बाद उनके सम्बन्धमें जानकारी होनेपर लोग

चकित हो जायेंगे। पर्देदार खिड़कियाँ, डबल दरवाजे, नौकरोंकी अच्छी तरह देखभाल, गन्दे पानीके निकासके लिये नाला, मच्छड़ोंसे बचनेके लिये बूट, जूता और मसहरी—ये सब ऐसी वस्तुयें हैं, जिनका मध्य-पूर्वके लोगोंके मनपर प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। आखिर मलेरियाको कोई थोड़े ही पसन्द करता है।

इन सब देशोंमें सार्वजनिक स्वास्थ्यमें ज्यों-ज्यों सुधार होता जायगा, उसके परिणाम इतने आकर्षक होंगे कि उनका उल्लेख चिकित्सा-विज्ञानकी किसी पुस्तकमें नहीं मिल सकता। क्योंकि स्वास्थ्य-सुधार के लिये जो उपाय काममें लाये जाते हैं, वे कारगर तभी हो सकते हैं, जब कि उनका रूप सार्वजनीन हो। रोग तो किसी व्यक्ति विशेषके लिये ही नहीं होता। मृत्यु-संख्यामें ह्रास तथा अधिकाधिक सबल जीवनके लाभोंसे ज्यों-ज्यों सर्वसाधारण स्त्री-पुरुष परिचित होते जायँगे, त्यों-त्यों इस विषयकी ओर उनकी दिलचस्पी बढ़ती जायगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

हमारे दल जैसे निरीक्षण करनेवाले विदेशियोंके लिये सोनेका प्रबन्ध अवश्य ही ऐसा नहीं था कि उसे आदर्श-स्वरूप कहा जा सके। जेरूसलेम में, जहाँ मैं सर हेराल्ड मैकमाइकेलका अतिथि था, मेरे पलंगपर कोई मसहरी नहीं थी। हाँ, पासकी एक टेबुलपर मच्छड़ भगानेकी बत्ती रखी हुई थी। उन्होंने मुझे बताया कि यह बत्ती रात-भर धीरे-धीरे मनोरम रूपमें जलती रहती है, जिससे मच्छड़ोंसे बचनेमें सहूलियत होती है। बगदादमें, जहाँ हम लोग अतिथियोंके लिये खासकर बने हुए प्रासादमें ठहरे थे, रात-भर बिजलीके पंखे चलते रहे। यह प्रासाद स्वीडनके राजकुमारके रहनेके लिये कई साल पहले बनाया गया था। येरुतमें जनरल कैटरासके वासस्थानपर हम लोगोंके बिछावनपर आनेके पहले सीरियन लड़कोंने मच्छड़ भगानेके यंत्रके

साथ कमरोंमें प्रवेश किया और उन्हें अच्छी तरह साफ कर दिया। आप मच्छड़ोंकी समस्याको यों उनसे बचनेके उपायोंको देखकर उतना नहीं जान सकेंगे, जितना उनका मूलोच्छेद करनेकी क्रियाको देखकर। ये मच्छड़ उड़नेवाले कीड़े-जैसे बड़े-बड़े होते हैं। इनको फँसानेके लिये जो फन्दे लगाये जाते हैं, उनसे ये भाग निकलते हैं। आप इन्हें सुबहमें अपनी बाँहपर बैठे हुए पायेंगे, और उस समय आपको उन सब उपदेशों और चेतावनियोंका स्मरण हो आयगा, जिनका उल्लेख आपको न्यूयार्कसे बगदाद तक पग-पगपर मिला था।

किन्तु सार्वजनिक स्वास्थ्य-समस्याका मूल कारण है जनताकी दरिद्रता। नील नदीके घोंघों द्वारा एक प्रकारका रोग वहाँ फैलता है, जिसके कारण मिस्रमें भयंकर रूपमें जननाश होता है। मिस्रवासी नील नदीमें और उसकी शाखा नहरोंमें स्नान करते हैं और उनका जल पीते हैं, जिससे वे रोगग्रस्त होकर अत्यन्त दुर्बल बन जाते हैं और उनकी जीवनी शक्ति क्षीण हो जाती है। किन्तु रोगकी यह समस्या नदीसे घोंघोंको दूर कर देने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके साथ ही मिस्रवासियोंके लिये साफ पीनेके पानीका प्रबन्ध करना भी आवश्यक है।

सभी उष्ण-प्रधान देशोंमें ट्रैकोमा (आँखकी एक प्रकारकी बीमारी) से छोटे-छोटे बच्चोंकी आँखें अन्धी हो जाती हैं। कैरो, जेरुसलेम और बगदादकी सड़कोंपर हम लोगोंको इसका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ। चाहे कितनी ही डाक्टरी देखभाल की जाय और प्रतिषेधक उपाय क्यों न काममें लाये जायँ; मगर जब तक लोगोंकी जीवन-प्रणाली इस प्रकारकी न हो जाय, जिसमें ये मच्छड़ अवाञ्छनीय बन जायँ, तब तक इस नेत्ररोगका संपूर्ण मूलोच्छेद नहीं हो सकता। इसके लिये पर्याप्त रूपमें घरोंका और उन्हें ठंढा रखने तथा मच्छड़ोंसे बचाये रखनेका

अवश्य होना चाहिये। व्यापक रूपमें लोगोंके स्वास्थ्य खराब होनेका आतंकजनक दृष्टान्त हम लोगोंको ईरानकी राजधानी तेहरानमें देखनेको मिला। शहरमें पीनेका पानी सड़कोंकी बगलमें होकर खुली नालियों द्वारा पहुँचाया जाता है। लोग इसमें स्नान करते हैं और अपने कपड़े धोते हैं, और फिर इसी पानीको पम्प द्वारा ऊपर अपने वासस्थानपर ले जाते हैं और उसका व्यवहार पीने और रसोई बनानेमें करते हैं। उनके यहाँ एक कहावत चली आती है कि सात बार उलट-फेर होनेपर पानी आप-से-आप शुद्ध हो जाता है। इस कहावतपर विश्वास करके भले ही ये लोग शान्त बने रहें; मगर हैजा, मलेरिया, आँव और पानी द्वारा फैलनेवाले एक दर्जन अन्य रोगोंसे यह कहावत उनकी रक्षा नहीं करती। तेहरानमें जितने बच्चे पैदा होते हैं, उनमें प्रति पाँचमें केवल एक ६ सालकी उम्र तक जीवित रह जाता है।

यह कहना बहुत सहज है, जैसा कि कुछ लोगोंने मुझे कैरो और जेरुसलेममें कहा था कि "यहाँके देशी लोग जैसी उनकी जीवन-प्रणाली है, उससे अच्छी जीवन-प्रणाली नहीं चाहते।" किन्तु यह एक ऐसा तर्क है, जिसका प्रयोग सर्वत्र शताब्दियोंसे उन लोगोंकी उन्नतिके विरुद्ध होता चला आया है, जो सब प्रकारकी सुविधाओंसे वंचित होते हैं, और इस तर्कका प्रयोग करनेवाले वे ही लोग होते हैं, जो अपनी अवस्थासे सन्तुष्ट होनेके कारण वस्तुस्थितिको कायम रखना चाहते हैं। किन्तु सभ्यताके इतिहाससे इस बातका पता चलता है कि इस प्रकारकी आर्थिक अवस्थाओंकी सृष्टि, जिनमें जिनके पास कुछ नहीं है या बहुत थोड़ा है, वे भी अपनी दशाको उन्नत कर सकें एक ऐसा कार्य है, जिससे किसी वर्गकी स्वार्थहानि न होकर समग्र समाजका कल्याण-साधन होता है। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मध्य-पूर्वमें शिक्षा एवं स्वास्थ्य दोनोंकी सभी उन्नति

हो सकती है, जब कि लोगोंकी जीवन-यात्रा-प्रणाली उन्नत हो, और जीवन-यात्रा-प्रणालीको उन्नत बनानेके लिये आधुनिक ढंगके व्यवसाय और कल-कारखानोंका प्रचार आवश्यक है।

इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि यहाँके लोगोंकी रहन-सहनमें उन्नति होनेसे संसारके खरीद-बिक्रीके बाजारोंकी वृद्धि होगी ; क्योंकि मध्य-पूर्व एक विशाल एवं शुष्क स्पञ्ज (एक प्रकारका जलशोषक सामुद्रिक पदार्थ) के समान है, जो अपरिमित परिमाणमें नाना प्रकारकी वस्तुओं और कार्योंको सोख लेनेके लिये तैयार है। इसलिये इन लोगोंकी जीवन-प्रणालीको समुन्नत बनानेके लिये प्रोत्साहन प्रदान करनेमें व्यावहारिक लाभ है। किन्तु इस समस्याका सामना क्यों किया जाय, इसके लिये उससे भी बढ़कर एक प्रबल और अत्यावश्यक कारण है। और वह यह है कि इस समय इन सब जातियों और जिस दुनियामें वे रहती हैं, उसके बीच सामंजस्यका भाव नहीं होनेसे संघर्षकी संभावना निरन्तर बनी रहती है, जिससे यह संघर्ष ही आगे चलकर फिर दूसरे युद्धका मूल कारण हो सकता है।

स्पष्ट बात तो यह है कि यदि हम इस भूभागके जैतूनके कुंजवनों, कपासके खेतों और तेलके कूपोंको ज्यों-का-त्यों छोड़ दें, तो हमें उक्त सामंजस्यके भावकी चिन्ता नहीं करनी पड़े—कम-से-कम अभीके लिये। किन्तु हमने उन्हें ज्यों-का-त्यों नहीं छोड़ा है। हमने अपने भावों और आदर्शोंका वहाँ प्रचार किया है, और अपने सवाक्चित्रों और रेडियोको, अपने इंजीनियरों और व्यवसायियोंको, अपने वायुयान-चालकों और सैनिकोंको मध्य-पूर्वमें भेजा है। इसलिये उसके परिणामसे अब हम भाग नहीं सकते।

असलमें इसका परिणाम यह हुआ है कि वहाँकी प्राचीन जीवन-प्रणाली अब असामयिक एवं निष्फल बन गयी है। कैरोसे चन्द मीलकी

कुँएपर मैंने कुछ मिस्री बालकोंको, जिनकी उम्र दस सालकी भी नहीं होगी, बहुत पुराने ढंगके पम्पसे सिंचाईके गड्ढेमें जल भरते देखा। ये लड़के बड़े सीधे-सादे दिखायी पड़ते थे; किन्तु बहुत समय तक वे वैसा नहीं रहेंगे। मिस्रका इंग्लैण्डके साथ मैत्री-सम्बन्ध होनेपर भी एक अयुद्ध-संलग्न (Non-belligerent) राष्ट्रके रूपमें उसकी विचित्र स्थिति है। फिर भी युद्धमें किस पक्षकी विजय होगी, इस सम्बन्धमें उसकी उदासीनता उतनी ही स्पष्ट है, जितनी एक स्वतंत्र राष्ट्रकी हो सकती है। किन्तु इसमें बिलकुल ब्रिटेनका ही दोष नहीं है। मुझे ऐसा मालूम होता है कि ब्रिटिश और हम अमेरिकनोंने अपने दायित्वोंकी जिस रूपमें उपेक्षा की है, उसके साथ इस प्रश्नका घनिष्ठ सम्बन्ध है।

मुझे ऐसा लगता है कि मध्य-पूर्वके लोगोंको बीसवीं शताब्दीके यंत्र-युग एवं व्यवसाय-युगमें लानेकी समस्या उन्हें राजनीतिक स्वायत्त शासन प्रदान करनेके प्रश्नके साथ घनिष्ठ रूपमें संबद्ध है। इन सब देशोंमें बहुत से पाश्चात्य देशवासियोंसे मेरी मुलाकात और बातचीत हुई थी और उन सबोंने मुझे ऐसे कई कारण बताये—जो उनकी दृष्टिमें समुचित थे—जिन की वजहसे अधिकांश अरब लोग अब भी बाबा आदमके जमानेमें रह रहे हैं। ये कारण थे अरबवासी युवावस्थामें ही मरना पसन्द करते हैं, उनपर लगाये गये इस अभियोगसे लेकर इस कथन तक कि उनका धर्म उन्हें इतना धन संग्रह करनेसे निषेध करता है, जिससे वे अपनी जीवन-यात्रा-प्रणालीमें आवश्यक सुधार कर सकें। मेरे खयालसे ये कारण अधिकांशमें निरर्थक हैं। जिन अरबवालोंको मैंने देखा है, उनमें किसी को भी इस बातका अनुभव करनेका मौका दीजिए कि वे अपने देशका शासन-कार्य आप चला रहे हैं, और तब आप देखियेगा कि जिस दुनियामें वे रहते हैं, उसे किस प्रकार बदल डालते हैं।

मध्य-पूर्वके प्रसंगमें स्वाधीनता या स्वराज्यकी जो चर्चा की जाती है, वह इतनी अनियंत्रित होती है कि उससे एक अमेरिकनको वास्तविक तथ्यतक पहुँचनेमें सहायता नहीं मिलती। एक ओर तो वे लोग हैं, जो इन जातियोंको स्वाधीनता या स्वराज्य प्रदान करनेके विरुद्ध हैं। उनका कहना है कि यदि इन सब जातियोंको अपना शासन आप करनेके लिये एकाएक स्वतंत्र कर दिया जाय, तो इसका परिणाम होगा अव्यवस्था एवं विशृंखलता। दूसरी ओर जो लोग इन्हें स्वाधीनता प्रदान करनेके पक्षपाती हैं, वे मध्य-पूर्वमें पाश्चात्य देशवासियोंके प्रभावका बड़ा ही कलुषित चित्र चित्रित करते हैं, और उस प्रभावको एकमात्र साम्राज्यवादी शोषणके सिवा और कुछ नहीं बताते। किन्तु वहाँ फ्रांस, ब्रिटेन और अमेरिकावालोंके वाणिज्य-विस्तारसे जो प्रचुर लाभ हुए हैं, उन्हें वे भूल जाते हैं।

दार्शनिक एवं वास्तविक सत्य दोनोंके बीचमें है। मैंने बहुत कम ऐसे अरब या यहूदी या मिस्रवासी या ईरानीको पाया, जो यह चाहता हो कि पश्चिमवाले वहाँसे बोरिया-बसना बाँधकर फौरन चले जायँ। उनमें अधिकांश कोई ऐसी सुव्यवस्थित क्रमबद्ध योजना चाहते हैं, जिसके अनुसार ब्रिटेन और फ्रान्स उन्हें अपने देशके शासनमें निश्चित रूपसे अधिकाधिक भाग प्रदान करें।

मुझे उनकी यह अभिलाषा काफी युक्ति-संगत मालूम होती है। इराक जैसे देशमें तो मेरा ख्याल है कि उनकी इस अभिलाषाकी सहज ही पूर्ति की जा सकती है। इराक जैसा देश संसारमें शायद ही और कोई हो, जो औपनिवेशिक स्थितिसे मेण्डेटेड क्षेत्रको प्राप्त हुआ और फिर पारिभाषिक दृष्टिसे एक स्वतंत्र और एकाधिपत्य-विशिष्ट राष्ट्र (Sovereign state) बना। मुझे यह देखनेका मौका मिला था कि उसका वह एका-

धिपत्य इस समय भी अंगरेज़ोंकी आवश्यकताओं द्वारा सीमाबद्ध है ; किन्तु वे आवश्यकतायें सामरिक हैं और उनका सम्बन्ध युद्धमें जय प्राप्त करनेसे है।

इराकमें जो लोग मुझे मिले, वे भले मालूम हुए। वहाँके शासक शाह अब्दुल इलाहने बगदादमें नक्षत्रखचित आकाशके नीचे मेरे सम्मानमें जो राजकीय भोज दिया था, उसे मैं आजीवन नहीं भूलूँगा। एक विस्तृत घाससे भरी चौरस ज़मीनमें एक सुन्दर कालीनपर खड़े होकर वह अतिथियोंका अभिवादन कर रहे थे। दूसरे कालीनोंपर उनके पास ही उनके सरदार लोग खड़े थे। उनमें कुछ लबादा और पगड़ी पहने हुए थे, जिनमें अर्थ-विभागके मंत्री और व्यवस्थापिका सभाके अध्यक्ष भी शामिल थे। अपनी सुन्दर रेगिस्तानी पोशाक और लम्बी दाढ़ीके कारण वह स्थानीय श्रद्धा-भक्तिहीन विदेशियोंमें 'ईश्वर'के नामसे परिचित हैं। दूसरे लोग यूरोपियन पोशाकमें थे। मुझे मालूम हुआ कि प्रायः प्रत्येक मंत्रीने शासनके प्रत्येक विभागका कार्य किसी-न-किसी समयमें सँभाला है।

"ताशोंकी एक छोटी गड्डीके साथ" एक इराकी मित्रने मुझसे कहा—"आपको इन्हें बराबर एक स्थानसे दूसरे स्थानमें बदलते रहना चाहिये।"

दो दिनोंके बाद फिर एक भोज इराकके प्रधान-मंत्री नूरी उर्फ़ सैद पाशाने मेरे आगमनके उपलक्ष्यमें दिया। वह एक छोटे कदके व्यक्ति हैं, जिनके चेहरेसे तीक्ष्ण बुद्धि एवं जिज्ञासाका भाव टपकता है। उनके जैसा चतुर बुद्धिवाला मनुष्य मुझे बहुत कम ही मिला है। उनके पूर्ववर्त्ती प्रधान-मंत्री रशीद अली अल गैलानी थे, जो जर्मनों द्वारा प्रधान-मंत्रीके पदपर प्रतिष्ठित किये गये थे। अंगरेज़ोंने शक्ति प्रयोग करके उन्हें पदच्युत कर दिया और उनके स्थानपर सन् १९४१ में वर्त्तमान प्रधान-मंत्री नूरीको नियुक्त किया। नूरी इंग्लैण्डके अयुद्ध-संलग्न (Non-belligerent) सहयोगी

राष्ट्रके रूपमें इराकका शासन-कार्य चला रहे हैं। युद्धमें शामिल होनेकी उनकी प्रबल इच्छा थी, और बादमें चलकर वह शामिल हो भी गये। बगदादके ब्रिटिश मंत्री सर किनाहन कार्नवालिस एक दूसरे कच्चे कदके सुयोग्य एवं शान्त प्रकृतिके अंगरेज साम्राज्य-निर्माता हैं, जिनसे मध्य-पूर्वमें बराबर मेरी मुलाकात होती रही। निस्सन्देह वे एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिनकी बातोंको प्रधान-मंत्री सदा पाशा आदरके साथ ध्यान-पूर्वक सुना करते हैं। किन्तु मैं ताड़ गया कि नूरी एक वास्तवबादी व्यक्ति हैं, और वह ब्रिटिश नियंत्रणसे सिद्धान्तके रूपमें सम्पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करनेकी बातको लेकर किसी विवाद-रूपी दलदलमें नहीं फँसेंगे। वह इस बातको अच्छी तरह जानते हैं कि वास्तव रूपमें सर्वप्रथम एक आधुनिक एवं स्वतन्त्र अरब-राष्ट्र कायम करनेके लिये जो संग्राम वह चला रहे हैं, उस संग्राममें समय उनके पक्षमें है।

नूरीका भोज मध्य-पूर्वका एक अलिफलैला जैसा चित्र था। हम लोगोंने बगदादके दृश्योंको देखनेमें सारा दिन व्यतीत किया। उसकी विचित्र शिया मसजिद जिसकी स्वर्णचूड़ायें आकाशकी ओर उठी हुई थीं, उसकी धूसर-वर्ण दीवार और घर, उसके बाजार जिसमें ताँबा और चाँदीके कारीगर प्याला और घड़ा बना रहे थे, यद्यपि दुकानोंमें सिर्फ न्यूयार्क या लिवरपूलकी मशीनकी बनी हुई सस्ती चीजें ही बिक रही थीं, संसारका एक सर्वोत्तम म्यूजियम जिसमें हमारे इतिहासके आदिम कालकी वस्तुयें संग्रहीत हैं, एक काफीघर जहाँ हम लोगोंने अरबका कहवा पीया और जहाँ झुंड-के-झुंड लोग बातचीत कर रहे थे, अखबार पढ़ रहे थे या हमारे इर्दगिर्द चौपड़ खेल रहे थे। इस प्रकारकी पृष्ठभूमिमें भी हमारा वह भोज कहानीकी तरह काल्पनिक था।

प्रचलित प्रथाके अनुसार कतिपय भाषणोंके बाद वह भोज संगीतमें परिणत हो गया, और फिर वह संगीत अरबकी नर्तकियोंकी प्रदर्शनी बन गया। फिर उसने पश्चिमी बाल-नृत्यका रूप धारण किया, जिसमें बसराके अमेरिकन सैनिकों और अंगरेज नर्सोंने तथा इराकके अफसरोंने भाग लिया। उस दिन संध्याकालमें वहाँ बैठकर कोई भी व्यक्ति इस भावको अपने मनमें धारण नहीं कर सकता था कि पूर्व और पश्चिममें कभी मेल नहीं होगा, या अल्लाने यह संकल्प कर लिया है कि अरब लोग बराबर रेगिस्तानी ही बने रहेंगे और सागर-पारसे आकर विदेशी उनके ऊपर हुकूमत करेंगे।

दूसरे दिन बगदादसे तेहरानकी आकाश-मार्गसे यात्रा करते हुए मैं गत रात्रिकी घटनाओंपर विचार कर रहा था। और इस आमोद-प्रमोदके निम्नमें जो कतिपय प्रशान्त अन्तःस्रोत प्रवाहित हो रहे थे, उनसे मैं अवगत हो गया। ये अन्तःस्रोत वे ही थे, जिन्हें मैंने इससे पहले समग्र मध्य-पूर्वमें छात्रों, पत्रकारों और सैनिकोंसे बातचीत करते हुए लक्ष्य किया था। इन सबसे मेरा विश्वास और भी पुष्ट हो गया कि यह नव जागरित जनसमूह इस पीढ़ीमें ही किसी उग्रपंथी नेताका अनुयायी बन जायगा, यदि शिक्षाके लिये एवं प्राचीन निषेधात्मक धार्मिक एवं शासन-सम्बन्धी व्यवहारोंसे मुक्त होनेके लिये सुयोग प्राप्त करनेकी उसकी नव क्षुधाकी पूर्ति उसके अपने शासकों एवं विदेशी महाप्रभुओं द्वारा नहीं होगी। बुर्का, झब्बेदार टोपी (फेज), रोग, गन्दगी, शिक्षा और आधुनिक औद्योगिक उन्नतिका अभाव, शासनकी स्वेच्छाचारिता—इन सबने मिलकर उनके मनमें यह धारणा जमा दी है कि अपने समाजकी प्रतिक्रियागामी शक्तियों और स्वार्थपर विदेशी प्रभुत्वकामियोंने उनके ऊपर अतीत युग को लाद दिया है। बार-बार मुझसे पूछा जाता था : क्या अमेरिका उस

पद्धतिका समर्थन करना चाहता है, जिसमें हमारी राजनीति विदेशियों द्वारा नियंत्रित होती है, चाहे वह कितनी ही विनम्रतापूर्वक हो, हमारे जीवनपर विदेशियोंका प्रभुत्व होता है, भले ही वह अप्रत्यक्ष रूपमें हो ? और क्या यह इसलिये कि संसारके सामरिक मार्गों और वाणिज्य-पथोंपर हम लोगोंके देशके कुछ स्थल समर-कौशलकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण समझे जाते हैं ? या वे कहेंगे, जैसा कि आप लोगोंके कहनेका ढंग है, चूँकि हमारे देशके कुछ स्थल सामरिक दृष्टिसे महत्वपूर्ण हैं, इसलिये हम लोगोंका इस पर अधिकार होना चाहिये, ताकि धुरी-राष्ट्र या कोई अन्य गैर-प्रजासत्तात्मक राष्ट्र संसारके इन सर्वप्रधान सामरिक मार्गों और वाणिज्य-पथों पर अपना आधिपत्य कायम करने न पावे ? या इसलिये कि हमारे समुद्र, हमारी नहरें और हमारे देश पूर्वी भूमध्यसागरपर नियंत्रण रखनेके लिये आवश्यक हैं और एशियाके मार्गमें पड़ते हैं ?

मैं जानता हूँ कि इस समस्याका वर्णन और भी अधिक सरल रूपमें किया जा सकता है, और इसका उत्तर देना सहज नहीं है। मैं जानता हूँ कि स्वेज-नहर, पूर्वी भूमध्यसागर और एशिया-माइनरसे होकर प्राच्यके मार्गोंपर मित्रतापूर्ण सुदृढ़ अधिकार होना चाहिये, जिससे पश्चिमके गण-तांत्रिक राष्ट्रोंपर शत्रु-पक्ष द्वारा कोई खतरा पहुँचने न पावे। इसी तरह मैं यह भी जानता हूँ कि इस समय जो 'संरक्षणात्मक' (protective) औपनिवेशिक पद्धति (colonial system) प्रचलित है, उसके लिये भी बहुत कुछ ऐतिहासिक और वर्त्तमान कालिक औचित्य है। किन्तु दार्शनिक दृष्टिसे यदि हम इन सब देशोंके विक्षोभपर विचार करें, तो यह सन्देह होता है कि क्या उस पद्धतिको कायम रखा जा सकता है ? आदर्शवादिताकी दृष्टिसे हमें इस तथ्यका सामना करना ही पड़ेगा कि उक्त पद्धति उन सब सिद्धान्तोंके विरुद्ध है, जिनके लिये युद्ध करनेका हम लोग दावा करते हैं।

और जितना ही हम उन सिद्धान्तोंका उपदेश करते हैं, उतना ही हम उन विक्षोभको उत्तेजित करते हैं, जो उस पद्धतिके अस्तित्वपर खतरा पहुँचाता है।

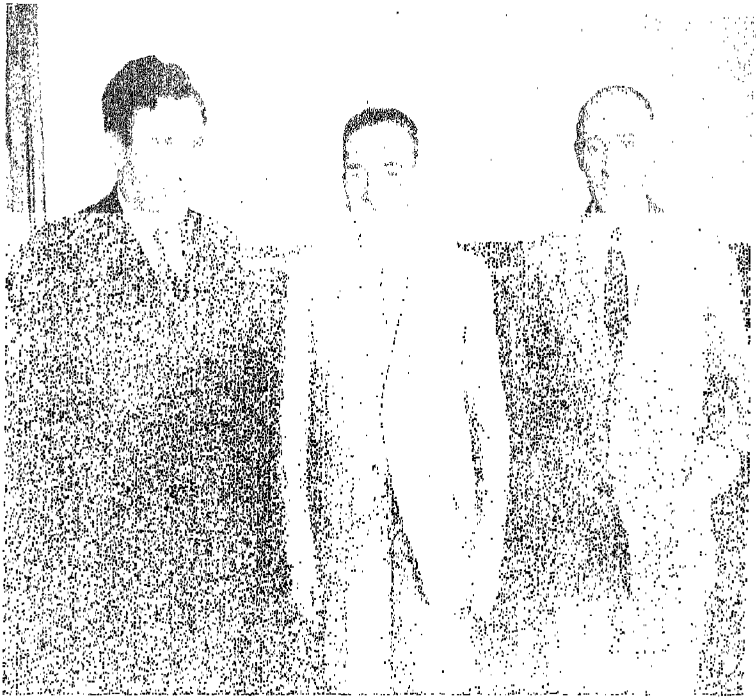
मुझसे ये सारी बातें छिपी नहीं हैं। किन्तु यहाँ मैं उन्हीं बातोंका वर्णन कर रहा हूँ, जो मध्य-पूर्वके प्रधान-मंत्रियों, परराष्ट्र-सचिवों और वहाँके प्रत्येक नगरके जागरित बुद्धिजीवी दलोंके मनमें और अस्पष्ट रूपमें वहाँकी अशिक्षित जनताके मनमें भी हैं। चाहे जिस प्रकार हो, नवीन दृष्टिकोण और धीर बुद्धिके साथ इस प्रश्नका उत्तर देना ही पड़ेगा, अन्यथा भीषण उच्छृंखलताको धारण करके कोई नया नेता पैदा होगा, जो इन असन्तुष्ट जन-समुदायोंको परस्पर सम्मिलित कर डालेगा। और इसका अवश्यम्भावी परिणाम होगा या तो बाह्य शक्तियोंका सम्पूर्ण प्रत्याहार और उसके साथ-साथ गणतांत्रिक प्रभावका सम्पूर्ण विलोप-साधन अथवा उन बाह्य शक्तियों द्वारा इन सब देशोंपर सम्पूर्ण सैनिक अधिकार एवं नियंत्रण।

जिन लक्ष्योंकी हम घोषणा करते हैं, उनपर यदि हमारा विश्वास है और यदि हम यह चाहते हैं कि मध्य-पूर्वकी वे उत्तेजक शक्तियाँ हम लोगोंके साथ मिलकर उन लक्ष्योंकी दिशामें कार्य करें, तो हमें अपने स्वार्थ-साधनके लिये देशी लोगोंके बीच परस्पर फूट डालकर और उनकी शक्तियोंका कौशलपूर्वक उपयोग करके अपने नियंत्रणको चिरस्थायी बनानेकी चेष्टासे विरत होना पड़ेगा।

टर्की—एक नूतन राष्ट्र

भूमण्डलका वह विशाल एवं प्राचीन भाग जो उत्तर-अफ्रिकासे लेकर दुनियाके प्राचीनतम समुद्रकी पूर्वी सीमाके चारों तरफ और चीनके मार्गमें समरकन्द तक फैला हुआ है, वह क्षेत्र हो सकता है, जिसमें हमारे इस महा-युद्धकी जय-पराजयका निर्णय हो। इस समय भी यह अञ्चल एक सम्भावित रणक्षेत्र बना हुआ है। संयुक्त-पक्षके ब्रिटिश, युद्धरत फरासीसी तथा अन्य राष्ट्रोंके टैंकों और वायुयानोंके साथ अमेरिकन टैंक और वायुयान भी वहाँ मौजूद हैं। किन्तु यह केवल एक रणक्षेत्र ही नहीं है, बल्कि इससे भी बढ़कर है। यह एक सामाजिक प्रयोगशालाके रूपमें भी है, जहाँ लाखों मनुष्य युद्धके सम्बन्धमें प्रकट किये गये हमारे विचारों और उनके प्रति हमारी सत्यनिष्ठाकी परीक्षा उसी प्रकार धीरे-धीरे, किन्तु अपरिवर्त्तनशील प्रणाली द्वारा, कर रहे हैं, जिस प्रणालीसे यह युद्ध लड़ा जा रहा है और उसकी हार-जीतकी लोगोंके मनमें भावना उठा करती है।

मध्य-पूर्वमें नवचेतनाके लक्षण प्रकट हो रहे हैं, और वह बदल रहा है, आपके इस अनुभवकी सत्यताका दृढ़ प्रमाण आपको टर्कीमें मिलेगा। क्योंकि टर्कीके प्रजातंत्र राज्यने एक ही पीढ़ीमें उस सम्पूर्ण विशाल अञ्चलमें, जो किसी समय ओटोमन साम्राज्यके अन्तर्गत था, जो कुछ घटित हो रहा है, उसका एक संभवनीय नमूना हमारे सामने उपस्थित कर दिया है। और आज टर्की किसी-न-किसी रूपमें जो विचार एक अमेरिकनके मनमें उत्पन्न कर देता है, वे विचार यहाँसे लेकर रूस, चीन और भारतके सीमान्त तक वह जो कुछ देखता है, उससे और भी सबल हो जाते हैं।



इस ग्रुपमें बायीं ओरसे—स्व० प्रेसीडेन्ट रूजवेल्टके व्यक्तिगत प्रतिनिधि मि० विल्की, टर्कीके वैदेशिक विभागके मंत्री मि० न्यूमेन मेनेमेन्सीयोग्लू और संयुक्तराष्ट्रके राजदूत मि० लारेन्स स्टेनहार्ट।

U.S.O.W.I. के सौजन्यसे

टर्की एक अभिनव प्रजातंत्र राज्य है। इसने अपना १९ वाँ वार्षिकोत्सव गत शरद् कालमें मनाया था। अपने कई यूरोपियन पड़ोसी राष्ट्रोंसे यह कमजोर है। जिस समय मैं टर्कीमें था, मैंने प्रत्येक तुर्कको—जिससे मेरी बातचीत हुई—इस बातके सम्बन्धमें विशेष रूपसे सचेतन पाया कि उसके देशपर किसी भी समय आक्रमण हो सकता है। और चाहे जो कुछ हो, यह पहलेकी अपेक्षा बहुत छोटा बन गया है—किसी समय जो एक विस्तृत साम्राज्यके रूपमें था, वह आज एक प्रवीण संयुक्त-राष्ट्रके रूपमें परिणत हो गया है।

तरुण और अपेक्षाकृत दुर्बल तथा क्षुद्र होनेपर भी टर्की मुझे अच्छा लगा। और अच्छा इसलिये लगा कि यह बहुत ही स्पष्ट रूपमें अपनी पूरी ताकतके साथ अपनी तटस्थताकी रक्षा करनेके लिये दृढ़संकल्प था। यह अच्छा इसलिये लगा कि उसने आधुनिक संसारकी ओरसे अपना मुँह मोड़ नहीं लिया है और बड़ी तेजीसे सुदृढ़ रूपमें अपना गठन कर रहा है। यह अच्छा इसलिये लगा कि मैंने वहाँके बहुतसे लोगोंके चेहरेपर दृढ़ता और ईमानदारीका भाव पाया, जिनमें कुछ वर्दी पहने हुए थे और कुछ बिना वर्दीके ही थे, और उनके सामने संग्राम करनेके लिये उनका भविष्य बहुत ही स्पष्ट था। और अन्ततः वह मुझे अच्छा इसलिये लगा कि मैंने सोचा कि टर्कीको एक ऐसे राष्ट्रके रूपमें मैंने देखा है, जिसने अपने-आपको पा लिया है। और यह इस बातका संकेत है कि संसारमें समृद्धि, शिक्षा, स्वतंत्रता एवं लोकतंत्रके भाव जो क्रमशः बढ़ रहे हैं, वे उसके प्राचीनतम भागमें भी उतने ही सत्य हैं, जितने नवीनतम भागमें।

अंकारा संसारकी बड़ी राजधानियोंमें से नहीं है। यह आधुनिक है, जिसके साथ एक प्राचीन ग्रामका अंश-विशेष एक पहाड़ीपर बचा हुआ रह गया है, मानों वह तुर्कीको इस बातका याद दिला रहा हो कि वे कहाँ तक

आगे बढ़े हैं। दूसरी पहाड़ीसे—जिसपर इस नूतन प्रजातंत्र राज्यके जनक अतातुर्कने अपना निवास-स्थान बनाया था, आप नीचेकी ओर वृक्षोंकी छायामें चौड़ी सड़कोंसे होकर नगरके मध्य तक पैदल जा सकते हैं। यहाँकी सड़कें गाड़ियोंसे भरी रहती हैं; लोग अच्छे ढंगसे पोशाक पहने हुए और कार्य-व्यस्त मालूम पड़ते हैं; मकान नये और देखनेमें सुन्दर हैं।

एक दिन मैं अंकारासे मोटरपर चालीस मील दूर पूर्व दिशामें देहातकी तरफ गया। नगरकी सीमाके बाहर आप अपनेको पुराने अनातोलियामें पाइयेगा। इधर देहातकी तरफ एक ऐसी कठिनता और दुर्भेद्यता पायी जाती है, जिससे आपको यह समझनेमें देर नहीं लगेगी कि किस कारणसे अतातुर्कने ओटोमन साम्राज्यकी परम्परागत राजधानी कान्सटैन्टिनोपुलसे, जिसे इस समय इस्ताम्बुल कहा जाता है, हठतापूर्वक अपना मन हटाकर अनातोलियाकी समतल भूमिके बीच यहाँ अपनी नयी राजधानी बसायी।

इतना अवश्य है कि आक्रमण करनेके लिये यह एक दुर्भेद्य देश है। शिक्षित एवं सुसज्जित एक छोटा-सा सैन्यदल इस तरहके देशको आक्रमण-शील यांत्रिक सैन्यदलोंके विरुद्ध बहुत समय तक बचाये रख सकता है।

पहाड़ियोंमें गड़ेरिये अपने जानवरोंके झुंडोंको चराते हैं; किन्तु यहाँके देहातोंमें भी पुनर्निर्माणका प्रमाण पाया जाता है। इस कार्यको उन्होंने गत १९ सालके अन्दर, जबसे वह एक प्रजातंत्र राज्य हुआ है, बहुत आगे बढ़ाया है। पूर्वकी ओर लोग एक नया राजमार्ग बना रहे थे। हमने इस सड़कपर पत्थर बैठाने और पत्थर फोड़नेकी मशीनोंको काम करते देखा था। आधुनिक ढंगसे सिंचाईका भी बहुत-कुछ प्रबन्ध है। इस प्रकारकी सिंचाईसे एक दिन अनातोलियाके अधिकांश भाग समृद्धशाली कृषिभूमिके रूपमें परिणत हो जा सकते हैं। सार्वजनिक शिक्षा, सिंचाई और उद्योग-

यन्त्रोंके विकासमें जो प्रगति हुई है, उसका तुर्कोंको अभिमान है, और वे इस बातके लिये बहुत उत्कण्ठित थे कि वे जो कुछ कर रहे हैं, उन्हें हम देखें।

हम लोगोंने खासकर शिक्षकोंके एक ट्रेनिंग स्कूलको देखनेके लिये एक गाँवका निरीक्षण किया। वहाँ उन लोगोंने गाँवके एक झरनेके नजदीक एक घर बनाया था। वह घर कंक्रीट और काँचका बना हुआ था। वह ठीक गाँवके मध्यमें था। एक तरफ पीनेका पानी था; दूसरी तरफ कपड़ा धोने का प्रबन्ध था; गाँवके बच्चोंके खेलनेके लिये एक जल-धारा अलग थी। वहाँ खड़ा होकर जिस समय मैं इस आनन्दजनक-क्रमोन्नतिको लक्ष्य कर रहा था, मैंने बुर्काधारण किये हुए कुछ स्त्रियोंको एक घरकी छतपर अपनी उसी पुरानी परिपाटीके अनुसार निश्चल भावसे बैठी हुई देखा। इसके साथ ही मैंने उन बालक-बालिकाओंको भी देखा, जो उस स्वच्छ जल-धाराको एक अभिनव और साथ ही अच्छी और रोमाञ्चकारी वस्तु समझकर उसपर उसी प्रकार दृष्टिपात किये हुए थे, जिस प्रकार मैं।

अपने उस थोड़े समयके अवस्थानमें मैं टर्कीके शिल्प-व्यवसायको जितना देख सकता था, उतना देखा। जर्मन राष्ट्रके, जो इसपर आक्रमण कर सकता है, उद्योग-धन्धोंकी तुलनामें यह प्रभावोत्पादक नहीं कहा जा सकता। किन्तु परित्राणमें और भविष्यके लिये जो आशा उसमें निहित है, उस दृष्टिसे वह अवश्य ही प्रभावोत्पादक था। मैंने हवाई अड्डे, यांत्रिक सैन्यसज्जा, रेलकी लाइन और बिलकुल आधुनिक ढंगकी इमारतें देखीं। मैंने यह सब कुछ और इससे अधिक भी देखा, और एक बार फिर मुझे इस बातका पक्का विश्वास हो गया कि औद्योगिक क्रांतिपर किसी एक राष्ट्र या जातिका ही एकाधिपत्य नहीं होगा। मध्य-पूर्वके लक्ष-लक्ष मनुष्योंको वाष्पयंत्रने जागरित कर दिया है—और जागरित ही नहीं किया है, बल्कि

उनके विचारोंको भी आलोड़ित कर दिया है। तुर्कोंके लिये इसने एक नूतन कौशल एवं नूतन क्षुधा उत्पन्न कर दी है। अब वे आधुनिक दुनियामें रहना चाहते हैं, और इस दुनियाके औजारोंका व्यवहार करना उन्होंने सीख लिया है, इसलिये अब उनकी इस अग्रगतिको रोकना बहुत कठिन होगा।

युद्धके बीच भी टर्कीमें औद्योगिक एवं आर्थिक पुनर्गठनके जो कार्य चल रहे हैं, उनसे भी बढ़कर प्रभावोत्पादक है वहाँकी सामाजिक एवं शिक्षा-विषयक क्रान्ति। किसी नवागन्तुककी दृष्टिमें किसी देशकी पोशाक ही बाह्य रूपमें इस बातकी द्योतक होती है कि परिवर्त्तनके प्रति उस देशके निवासियोंका मनोभाव क्या है। बगदादमें मैंने सरकारी अफसरोंको देखा था, जिनमें कुछ यूरोपियन पोशाक पहने हुए थे और कुछ वही पुराने ढंगकी मुसलमानोंकी पोशाक। चीनमें वहाँके राष्ट्रपतिका सम्मान इसलिये किया जाता है कि वह प्राचीन कालकी रीति-नीति और पोशाकको धारण करते हैं। मगर श्रीमती चियाङ्ग काईशेक स्वदेशी पोशाक धारण करनेपर भी बाहरसे ऐसी मालूम होती हैं, मानों वह प्रचलित फैशनकी पोशाक पहने हुई हों। मगर टर्कीमें हरएक सरकारी अफसर बड़े गर्वके साथ केवल पश्चिमी पोशाक ही पहनता है। परिवर्त्तनके एक प्रतीकके रूपमें फेजका पहनना कानूनन बन्द किया गया है। कहीं-कहीं आपको जो दो-एक बुर्काधारिणी स्त्रियाँ दीख पड़ेंगी, उन्हें देखकर आप भ्रममें पड़ जायेंगे कि वे वर्त्तमान कालकी हैं या नहीं। आतातुर्क और उनके दृढ़संकल्प सुदक्ष उत्तराधिकारियोंके सुयोग्य नेतृत्वमें तुर्कोंने वास्तविक रूपमें पुरातन पूर्वकी पर्दा-प्रथा को उठा दिया है। अपने देशवासियोंके चेहरेपर से उन्होंने आवरणको हटा दिया है, जिससे अब उनके चेहरोंपर प्रकाशकी ज्योति दीख पड़ती है।

और युग-युगसे प्रचलित इन रीतिमें जो क्रान्ति हुई है, वह बिना किसी हिंसा या वर्दी या सामूहिक उन्मादनाके। किसी देशपर आक्रमण किये बिना ही यह संपन्न हुआ है।

इसके लिये विशेष रूपसे गर्व करना अमेरिकाके लिये उचित है। इस्तान्बुलके बाहर राबर्ट कालेज, जिसे दुर्भाग्यवश मैं देख नहीं सका, आज भी उसी प्रकार शिक्षाके क्षेत्रमें अन्तर्राष्ट्रीयताका एक निःस्वार्थ प्रयोग है, जिस प्रकार यह वर्षोंसे रहा है। इसके ग्रेजुयेट इस समय टर्कीके शासन-विभागमें कितने ही महत्वपूर्ण पदोंपर कार्य कर रहे हैं। उनके अमेरिकन शिक्षकोंने उन्हें जो ज्ञान एवं भाव प्रदान किये थे, उनका वे अच्छी तरह उपयोग कर रहे हैं। उन अमेरिकन शिक्षकोंके इस प्रकार शिक्षा प्रदान करनेका एकमात्र उद्देश्य है संसारके किसी एक भागमें अज्ञान एवं अन्ध-विश्वासके विरुद्ध संग्राम करके समग्र विश्वको सुन्दर एवं समृद्ध बनाना।

किन्तु अमेरिकनोंको भी यह समझनेमें कठिनाई हो सकती है कि शिक्षाका यह प्रश्न किस प्रकार सारे एशियाको गंभीर रूपमें प्रभावित कर रहा है। हम लोग अपने स्कूल और पाठ्य-पुस्तकोंको ज्योंका त्यों स्वीकार कर लेते हैं। हमारे बच्चे स्वभावतः ही छात्र बन जाते हैं। इस सम्बन्धमें हमारे मनमें कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

मगर टर्कीके देहातोंमें आप देखेंगे कि वहाँके लोग शिक्षाको ज्योंके त्यों रूपमें स्वीकार नहीं करते। मैं एक सीधे-सादे छोटे स्कूलमें—जो छात्रों और उसके शिक्षकों द्वारा निर्मित हुआ था—खड़ा था और तुर्की बालकोंके राष्ट्रीय गानको सुन रहा था। मैं बड़े ध्यानके साथ उन बालकोंको उनका राष्ट्रीय लोकनृत्य सीखते हुए देख रहा था। अपने इन नृत्योंमें वे उन प्राचीन कौशलोंके हाव-भावको मूर्त्त कर रहे थे, जो किसी

उनके विचारोंको भी आलोड़ित कर दिया है। तुर्कोंके लिये इसने एक नूतन कौतूहल एवं नूतन क्षुधा उत्पन्न कर दी है। अब वे आधुनिक दुनियामें रहना चाहते हैं, और इस दुनियाके औजारोंका व्यवहार करना उन्होंने सीख लिया है, इसलिये अब उनकी इस अग्रगतिको रोकना बहुत कठिन होगा।

युद्धके बीच भी टर्कीमें औद्योगिक एवं आर्थिक पुनर्गठनके जो कार्य चल रहे हैं, उनसे भी बढ़कर प्रभावोत्पादक है वहाँकी सामाजिक एवं शिक्षा-विषयक क्रान्ति। किसी नवागन्तुककी दृष्टिमें किसी देशकी पोशाक ही बाह्य रूपमें इस बातकी द्योतक होती है कि परिवर्त्तनके प्रति उस देशके निवासियोंका मनोभाव क्या है। बगदादमें मैंने सरकारी अफसरोंको देखा था, जिनमें कुछ यूरोपियन पोशाक पहने हुए थे। और कुछ वही पुराने ढंगकी मुसलमानोंकी पोशाक। चीनमें वहाँके राष्ट्रपतिका सम्मान इसलिये किया जाता है कि वह प्राचीन कालकी रीति-नीति और पोशाकको धारण करते हैं। मगर श्रीमती चियांग काईशेक स्वदेशी पोशाक धारण करनेपर भी बाहरसे ऐसी मालूम होती हैं, मानों वह प्रचलित फैशनकी पोशाक पहने हुई हों। मगर टर्कीमें हरएक सरकारी अफसर बड़े गर्वके साथ केवल पश्चिमी पोशाक ही पहनता है। परिवर्त्तनके एक प्रतीकके रूपमें फेजका पहनना कानूनन उठा दिया गया है। कहीं-कहीं आपको जो दो-एक बुर्काधारिणी स्त्रियाँ दीख पड़ेंगी, उन्हें देखकर आप भ्रममें पड़ जायँगे कि वे वर्त्तमान कालकी हैं या नहीं। आतातुर्क और उनके दृढ़संकल्प सुदक्ष उत्तराधिकारियोंके सुयोग्य नेतृत्वमें तुर्कोंने वास्तविक रूपमें पुरातन पूर्वकी पर्दा-प्रथा को उठा दिया है। अपने देशवासियोंके चेहरेपर से उन्होंने आवरणको हटा दिया है, जिससे अब उनके चेहरोंपर प्रकाशकी ज्योति दीख पड़ती है।

और युग-युगसे प्रचलित हुए रीतिमें जो क्रान्ति हुई है, वह बिना किसी विप्लव या वर्दी या सामूहिक उन्मादनाके। किसी देशपर आक्रमण किये बिना ही यह संपन्न हुआ है।

इसके लिये विशेष रूपसे गर्व करना अमेरिकाके लिये उचित है। इस्तान्बुलके बाहर राबर्ट कालेज, जिसे दुर्भाग्यवश मैं देख नहीं सका, आज भी उसी प्रकार शिक्षाके क्षेत्रमें अन्तर्राष्ट्रीयताका एक निःस्वार्थ प्रयोग है, जिस प्रकार यह वर्षोंसे रहा है। इसके ग्रेजुयेट इस समय टर्कीके शासन-विभागमें कितने ही महत्वपूर्ण पदोंपर कार्य कर रहे हैं। उनके अमेरिकन शिक्षकोंने उन्हें जो ज्ञान एवं भाव प्रदान किये थे, उनका वे अच्छी तरह उपयोग कर रहे हैं। उन अमेरिकन शिक्षकोंके इस प्रकार शिक्षा प्रदान करनेका एकमात्र उद्देश्य है संसारके किसी एक भागमें अज्ञान एवं अन्ध-विश्वासके विरुद्ध संग्राम करके समग्र विश्वको सुन्दर एवं समृद्ध बनाना।

किन्तु अमेरिकनोंको भी यह समझनेमें कठिनाई हो सकती है कि शिक्षाका यह प्रश्न किस प्रकार सारे एशियाको गंभीर रूपमें प्रभावित कर रहा है। हम लोग अपने स्कूल और पाठ्य-पुस्तकोंको ज्योंका त्यों स्वीकार कर लेते हैं। हमारे बच्चे स्वभावतः ही छात्र बन जाते हैं। इस सम्बन्धमें हमारे मनमें कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

मगर टर्कीके देहातोंमें आप देखेंगे कि वहाँके लोग शिक्षाको ज्योंके त्यों रूपमें स्वीकार नहीं करते। मैं एक सीधे-सादे छोटे स्कूलमें—जो छात्रों और उसके शिक्षकों द्वारा निर्मित हुआ था—खड़ा था और तुर्की बालकोंके राष्ट्रीय गानको सुन रहा था। मैं बड़े ध्यानके साथ उन बालकोंको उनका राष्ट्रीय लोकनृत्य सीखते हुए देख रहा था। अपने इन नृत्योंमें वे उन प्राचीन कौशलोंके हाव-भावको मूर्त्त कर रहे थे, जो किसी

समय अनातोलियामें अत्यन्त उन्नत दशामें थे। किन्तु इस समय आधुनिक शिक्षण-प्रणाली द्वारा उन्हें शिक्षा दी जा रही थी, और वे विज्ञान-सम्मत कृषिशास्त्रका अध्ययन कर रहे थे। यह मेरा आन्तरिक विश्वास है कि छात्रोंके सामने इस प्रकार पुस्तकोंको खोलना इतिहासकी एक ऐसी निर्णयात्मक घटना है, जिसपर जातिका भविष्य बहुत-कुछ निर्भर करता है। यह प्रगतिके मार्गमें एक नयी दिशाका सूचक है, और इससे फिर वापस नहीं लौटा जा सकता।

आधुनिक टर्की एक ऐसा देश है, जो अभी तरुण है और वहाँकी जनताको स्वतंत्रता एवं स्वायत्त शासनका अपेक्षाकृत कम अनुभव है। फिर भी उसके पास संग्राम करनेके लिये निश्चयात्मक रूपमें कुछ वस्तुयें अवश्य हैं। आप जिन लोगोंसे बातें करेंगे, उनके चेहरेपर इस वस्तुको पायँगे, उनकी वाणीमें आप इसे सुनेंगे। अंकाराके समान उनके नये शहरोंमें और उनके पुराने गाँवोंमें—जिस तरहके गाँव टर्कीके देहातोंमें मैंने देखे थे—आप इसे मोटे-मोटे अक्षरोंमें लिखा पायँगे।

किन्तु स्वभावतः तुर्क लोग युद्ध करना नहीं चाहते ; क्योंकि वे जानते हैं कि जर्मन-सेनाओं द्वारा उनके देशपर आक्रमण उनकी समस्त कृतियोंके लिये कितना भयंकर रूपमें विघातक सिद्ध होगा। टर्की एक छोटा देश है। अपने देशके सीमान्तके बाहर इसके एक करोड़ साठ लाख अधिवासियोंकी कोई महत्त्वाकांक्षा नहीं है। इस विश्वव्यापी युद्धमें तराजूके पलड़ेको किसी एक ओर झुकानेमें वे क्या कर सकते हैं, इस सम्बन्धमें उन्हें कोई भ्रान्ति नहीं है। इसलिये उन्होंने सशस्त्र तटस्थताकी नीतिका अवलम्बन किया है। गत वर्ष शरद् कालमें टर्कीकी सेनामें दस लाखसे अधिक मनुष्य थे। उसने अपने सैनिक संगठनको इस रूपमें विकसित किया है, जिससे आधुनिक सामरिक साज-सज्जाकी कुछ शाखाओंमें

उसकी जो कमी है, उसकी पूर्त्ति उसके उस संगठनकी दृढ़निश्चयता एवं सैनिक-शिक्षासे हो जाती है। मैंने टर्कीकी सेनाके कर्मचारी-मण्डलके एक उच्च अधिकारीसे बातचीत की। उनके देशमें मैं जहाँ कहीं गया, सर्वत्र सैनिकोंको देखा—कहीं सन्तरीके रूपमें पहरा देते हुए, कहीं रण-कौशल प्रदर्शन करते हुए और कहीं फौजी स्कूलमें। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि यदि कोई आक्रमणकारी राष्ट्र प्राच्यपर विजय प्राप्त करनेके लिये टर्कीको राजमार्गके रूपमें व्यवहृत करना चाहे, तो उसके लिये अवश्य ही टर्की एक ऐसी समस्या होगी, जिसकी वह सहज ही अवहेलना नहीं कर सकता।

टर्कीके सैनिकोंको देखनेके सिवा मैंने वहाँके शासन-विभागके प्रमुख नेताओंसे बहुत देर तक बातचीत की। वे लोग भयपूर्ण उद्विग्नताके साथ यूरोपपर दृष्टि गड़ाये हुए थे और यह नहीं जानते थे कि कब उन्हें अपने देशकी रक्षाके लिये युद्धमें संलग्न होना पड़ेगा।

इस प्रकार उद्विग्न बने रहना वास्तवमें भयंकर है। किन्तु टर्कीके किसी व्यक्तिने मुझे इस बातकी जरा भी परख न होने दी कि यदि उसके देशकी शान्ति एवं निरापदतापर कोई खतरा पहुँचेगा, तो वे उसका मुकाबला अत्यन्त तीव्र, दृढ़प्रतिज्ञ एवं निष्ठुर रूपमें किये बिना और कुछ करेंगे।

मैं समझता हूँ कि एक विदेशी आगन्तुकको प्रभावित करनेके लिये यह कोरी गप्प ही नहीं थी। मैंने मि० सराकोगलूके साथ बातचीत की, जो एक प्रतिभाशाली तथा आकर्षक व्यक्ति हैं और इस समय टर्कीके प्रधान-मंत्री हैं। मैंने नूमेन बेके साथ भी बातचीत की, जो एक बुद्धिमान एवं विशिष्ट राजनीतिज्ञ हैं और मि० सराकोगलूके स्थानपर परराष्ट्र-सचिव नियुक्त हुए हैं। मैंने बहुतसे अन्य सरकारी मेम्बरों, तुर्की पत्रकारों, सैनिकों, किसानों और मजदूरोंसे बातचीत की। इनमें हरएकने मुझसे एक ही तरहकी बात कही : "हम युद्ध को किसी भी रूपमें नहीं चाहते ; किन्तु हमारे देशके सीमान्तका जो प्रथम

सैनिक अतिक्रमण करेगा, वह गोलीसे मार डाला जायगा, और अपने देशकी पहाड़ियों, जंगलों और सड़कोंपर हमारा गोली चलाना बंद होनेके कबल ही बहुतसे विदेशी मृत्यु-मुखमें पतित हो जायँगे।"

वे लोग बराबर अन्य देशवालोंको 'विदेशी' नामसे अभिहित किया करते थे, और हमेशा इस बातपर जोर दिया करते थे कि चाहे जो भी देश किसी भी दिशासे उनके देशपर आक्रमण करेगा, उसके विरुद्ध लड़नेके लिये वे कृतसंकल्प हैं। किन्तु उनके ऐसा कहे बिना भी यह स्पष्ट था कि उनका तात्कालिक भय एक ही दिशामें आबद्ध था। आज वे हम लोगोंसे या हमारे मित्र अंगरेजोंसे—जो टर्कीके भी मित्र हैं—या कठिनाइयोंमें पड़े हुए रूसियोंसे भय नहीं करते, यद्यपि रूसके अन्तिम अभिप्रायको लेकर उनकी परेशानी कम नहीं है। उनकी तात्कालिक उद्विग्नता परिचमको लेकर है—उस महाशक्तिको लेकर, जिसका गठन पिछले कई सालोंके अन्दर हुआ है और जो उनके राज्यसे होकर एशियामें फैल जाना चाहती है। यह सच है कि वे उद्-विग्न एवं भयभीत होकर अपेक्षा कर रहे हैं, क्योंकि वे लड़ना नहीं चाहते; किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि सन्त्रस्त होकर वे ऐसा कर रहे हैं अथवा किसीको परितुष्ट करनेकी धारणासे। जर्मनीने दो बार उनकी राजधानीमें सन्धिके लिये चेष्टा की है, और दोनों बार वह विफल हुआ है।

तुर्क लोग हम लोगोंके साथ कारबार करना चाहते हैं। वे अपने मालोंका व्यापार करना चाहते हैं। दुनियामें जितना क्रोम (एक प्रकारकी धातु) होता है, उसका लगभग एक चतुर्थांश टर्कीमें उत्पन्न होता है। उनके तमाखू और कपासकी अन्य देशोंमें बहुत जरूरत है। इन संपत्ति-साधनोंके साथ तुर्क लोग अपनी तटस्थताको कम-से-कम कुछ समय तक तो कायम रख ही सकते हैं। उन्हें खाद्य-पदार्थोंकी—खासकर गेहूँकी—जरूरत है और उन्हें तैयार माल तथा कल-कांटोंकी जरूरत है, जिसका मैंने बड़ी मुश्किलसे पता

लगाया। और मुझे इस बातकी बड़ी खुशी है कि मेरे लौटनेके बादसे हम लोग टर्कीको क्रमशः अधिकाधिक परिमाणमें खाद्य-पदार्थ और दूसरे सामान भेज रहे हैं। क्योंकि इस समय एकमात्र अमेरिका ही ऐसा देश है, जो पर्याप्त रूपमें उन्हें माल पहुँचा सकता है। मेरा यह आन्तरिक विश्वास है कि टर्कीके साधन हमारे शत्रुको प्राप्त न हो सकेंगे, और जो देश हमारा मित्र बनना चाहता है, उसकी तटस्थताको कायम रखनेके लिये हमारे स्वार्थके हकमें यह अच्छा है कि हम यथासम्भव टर्कीको माल पहुँचाया करें।

और इस बातमें कोई सन्देह हो ही नहीं सकता कि टर्की हम लोगोंका मित्र बनकर रहना चाहता है। पिछले दस सालोंसे डा० गोबेल्स और उनका नात्सी प्रचार-विभाग इस दिशामें जोर-शोरसे कार्य कर रहा है। फिर भी टर्कीकी सजग जनताका संसारके महान गणतंत्रोंके साथ घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करनेकी ओर जो मन्द गतिसे किन्तु आन्तरिकताके साथ झुकाव हो रहा है, उसमें परिवर्त्तन करनेमें वह समर्थ नहीं हुआ है। तुर्क लोग हमारे मित्र हैं। वे हमें चाहते हैं और हमारी कद्र भी करते हैं। वे हमसे भय नहीं करते और न ईर्ष्या ही करते हैं।

वे अपनी तटस्थ-नीतिका सचाईके साथ पालन कर रहे हैं। उदाहरण-स्वरूप उन्होंने मुझे अपने देशमें संयुक्त-राज्य अमेरिकाके सामरिक वायुयान पर—जिसपर मैंने संसारकी परिक्रमा की थी—प्रवेश करने नहीं दिया, जिससे मुझे कैरोमें दूसरा अमेरिकन मुसाफिरी वायुयान बदलना पड़ा और उसीपर सवार होकर मैं भूमध्यसागरके पूर्वी उपकूल और जनशून्य तौरस पहाड़के ऊपरसे उड़ते हुए अंकारा पहुँचा। हवाई अड्डेपर जहाँ हम लोग उतरे, हमने तीन बमवर्षक वायुयानोंको वहाँ देखा, जिनपर पहरा बैठाया गया था। रूमानियाके तेल-क्षेत्रोंपर बमवर्षा करके लौटते समय इन वायुयानोंके

अमेरिकन उड़ाकोंको नीचे उतरनेके लिये तुर्कोंने विवश किया था और उनके वायुयानोंको नजरबन्द कर लिया था।

किन्तु इस वास्तविक तटस्थताके निकनमें जो एक आन्तरिक सौहार्द छिपा हुआ था, उसे समझनेमें किसीको भूल नहीं हो सकती थी। धुरी-राष्ट्रके रेडियोने जब टर्कीमें मेरी उपस्थितिके सम्बन्धमें शिकायत की, तब मैंने अखबारवालोंसे कहा कि इस शिकायतके सम्बन्धमें मेरा उत्तर बहुत सीधा है—"हिटलरको निमंत्रण भेजिए कि वह मेरे विरुद्ध अपने प्रतिद्वन्द्वी उमीदवारको जर्मनीके प्रतिनिधि-रूपमें यहाँ भेजे।" पीछे चलकर मुझे मालूम हुआ कि मेरे इस कथनसे टर्कीके सरकारी अफसरोंका बहुत-कुछ मनोविनोद हुआ।

एक खास दिलचस्प बात तो यह है कि यद्यपि राष्ट्रीयताकी दीक्षा ग्रहण करके ही टर्कीने इतनी उन्नति की है, फिर भी टर्की और उसके अधिकारियोंमें मैंने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगकी आवश्यकताको महसूस करने और उसे ग्रहण करनेका जितना भाव पाया, उतना अन्य किसी देशमें नहीं—जहाँ-जहाँ मैं गया था। प्रधान-मंत्री, परराष्ट्र-सचिव तथा अन्य प्रमुख समाचारपत्र-लेखकोंसे मेरी जो बहुत समय तक दिल खोल कर बातचीत हुई थी, उन सबमें इस बातपर जोर दिया गया था।

अवश्य ही और राजधानियोंकी तरह यहाँ भी आपको अन्तर्राष्ट्रीय समितिके विनोदजनक प्रदर्शन देखनेको मिलेंगे। एक रातको परराष्ट्र-सचिव नूमन मेनें अंकाराके बाहर हम लोगोंके आगमनके उपलक्ष्यमें भोजका आयोजन किया। यह भोज अतातुर्कके देहाती मकानमें हुआ था, जहाँ उनका चलाया हुआ एक आदर्श कृषि-क्षेत्र और दुग्धशाला है। उन लोगोंने मुझे बताया कि यह एक आदर्श कृषि-क्षेत्र (फार्म) है। किन्तु मैंने वहाँ जो कुछ देखा, वह था एक

पहाड़ीपर आधुनिक ढंगका एक सुन्दर प्रासाद, जिसके बरामदेके साथ संलग्न नीचेकी ओर पुष्पोद्यान सुशोभित हो रहे थे।

इस प्रासादका उपयोग इस समय परराष्ट्र-सचिव द्वारा सरकारके जो अतिथि होते हैं, उनकी अभ्यर्थनामें किया जाता है। इसके एक कमरेमें एक टेलीफोन था, जो बिलकुल ठोस सोनेका बना हुआ था और जिसका व्यवहार अतातुर्क किया करते थे। दूसरे कमरेमें एक पुराने ढंगकी तुर्की मशीन "शिश-केबाब" बनानेके लिये रखी हुई थी। प्रधान रसोइयेने एक बहुत बड़े गोलाकार मांसके टुकड़ेको लकड़ीके कोयलेकी आगपर रखा और उसके पक जानेपर फिर उसे छोटे-छोटे टुकड़ोंमें चावलके कटोरोंमें डाल दिया।

प्रधान नाचघरमें हमारे मेजमान नूमेन वे खड़े थे। वह इस पीढ़ीके एक अत्यन्त सुयोग्य परराष्ट्रनीति-कुशल व्यक्ति हैं। उनके कागज-पत्रोंसे ऐसा ही ज्ञात होता है, और देखनेमें भी वे इसी रूपमें प्रतीत होते हैं। उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। किन्तु उनका पीलापन और शारीरिक दुर्बलता उनको उस शिष्ट सुदक्षताको और भी गौरवपूर्ण बना देती है, जिस सुदक्षताको धारण किये हुए वह यूरोप और दुनियाके रवैयेको देखते हुए जैसे मालूम पड़ते हैं। मैंने उनके मनको उनके चेहरेकी तरह ही कुछ उदास, कुछ चिड़चिड़ा, किन्तु बहुत ही मजबूत और चतुर पाया।

उनके चारों तरफ यूरोपके और सब देशोंके कूटनीतिज्ञ नृत्यमें भाग ले रहे थे, या मद्य-पान कर रहे थे, अथवा बातचीत कर रहे थे। अंकारामें पत्र-प्रतिनिधियोंकी जो कान्फ्रेन्स हमने की थी, उसमें धुरी-राष्ट्रों द्वारा प्रभावित पत्र-प्रतिनिधि भी शामिल थे। किन्तु टर्कीमें धुरी-राष्ट्रोंके जो कूटनीतिज्ञ हैं, वे पार्टियोंमें मित्र-राष्ट्रोंके कूटनीतिज्ञोंके साथ शामिल नहीं होते। फिर भी विभिन्न देशोंके प्रतिनिधि वहाँ मौजूद थे। सोवियेट रूसके राजदूत उस समय मास्को गये हुए थे,

सगर उनके कायम ओकारा पार्टीमें मौजूद थे। वह सायंकालीन पोशाकमें बिलकुल ठीक मालूम पड़ रहे थे—मैं इस पोशाकमें नहीं था—किन्तु उनका चेहरा हँसमुख नहीं होनेसे कुछ मजदूर जैसा प्रतीत हो रहा था। इसके विपरीत एक लम्बे कदकी अंगरेज महिला, जो एक प्रकारके श्वेत पक्षीके पंखोंको धारण किये हुई थी, उनकी तुलनामें कुछ विचित्र जँचती मालूम पड़ रही थी। पीछे चलकर मुझे पता चला कि उसके पतिने क्रीटके युद्धमें भाग लिया था। ग्रीस और युगोस्लेवियाके प्रतिनिधि एक-दूसरेके कंधेपर बाँह रखे हुए मेरे पास आये और मुझसे यूरोपके विभिन्न राष्ट्रोंके सम्मिलनके सम्बन्धमें अपने अभिप्राय जताने लगे। एक यूनान कूटनीतिज्ञने, जिसका नाम मुझे कभी मालूम नहीं हुआ, मुझे उत्तेजनाके स्वरमें बताया कि उसने सुना है, अमेरिकन बाक्सर (मुष्टियोद्धा) कोननने अभी हालमें विश्व-विख्यात मुष्टियोद्धा जो लुईको परास्त किया है। उसका यह भ्रमपूर्ण कथन अवश्य ही परेशानीमें डालनेवाला था। अफगानिस्तानके राजदूतने, जो देखनेमें बहुत भव्य मालूम पड़ रहे थे, मुझसे यह शिकायत की कि अंकारामें राजदूतका पद उन्होंने खासकर शिकारके लिये ग्रहण किया था और अब वह यह देख रहे हैं कि टर्कीने युद्धकी तैयारीके लिये जो उपाय काममें लाये हैं, उनके कारण वह अपने इस प्रिय प्रमोदमें भाग नहीं ले सकते।

इन सब गोलमालके बीच हम लोगोंकी वह दुनिया, जिसमें हम रह रहे हैं, अच्छी तरह प्रतिबिम्बित हो रही थी; मेरे मेजबान नूमेन बेकी मूर्त्ति और भी भव्य मालूम पड़ रही थी। अपने पूर्ववर्ती परराष्ट्र-विभागके मंत्री और वर्त्तमान प्रधान-मंत्री सराकोगलूके समान इनके प्रभाव-प्रतिपत्तिका कारण न तो इनकी जन्मगत कुलीनता है और न सिद्धान्तकी कुलीनता। अतातुर्क और तुर्की जन-साधारणके पक्षमें यह पहले बहुत समय तक कठोर

संग्राम कर चुके हैं और अब केवल टर्कीकी जनताके साथ संग्राम कर रहे हैं। मैंने उस रातको उनकी अपनी पार्टीमें गौरसे उन्हें देखा। वहाँ हम लोगोंने स्काटलैण्डकी बनी शराब पी, रूसका बना हुआ भोजन किया और अमेरिकन संगीतके तालमें नृत्य किया। इस प्रकार वहाँ कूटनीतिक दुनियाकी एक अजीब अन्तर्राष्ट्रीयता उपस्थित थी, और मुझे पहलेसे भी अधिक इस बातका दृढ़ विश्वास हो गया कि तुर्कोंने इस युद्धके गर्भसे प्रकट होनेवाले एक भिन्न संसारके ऊपर अपनी बाजियाँ लगायी हैं।

रक्तवर्ण सिर और नील नयनवाले बच्चोंकी तरह जिन्हें जब-जब मैं टर्कीमें देखता था, तो आश्चर्यमें पड़ जाता था, या गलियोंमें कठोर एवं सुदृढ़ चेहरावाले सैनिकोंकी तरह, या स्कूलके उन शिक्षकोंकी तरह जिन्होंने राबर्ट कालेजमें अपनी कोमल एवं मनोरम अंगरेजी सीखी थी, नूमेन वे मुझे एक बहुत बड़े परिवर्त्तनकी सजीव मूर्त्ति जैसे प्रतीत हुए, जो परिवर्त्तन आज अधिकसे अधिक मानव-जातिके जीवनको गंभीर रूपसे प्रभावित कर रहा है।

गत महायुद्धमें टर्की जर्मनीके पक्षमें था। ओटोमन साम्राज्य, जिसके ध्वंसावशेषसे इस नूतन प्रजातंत्रका जन्म एवं विकास हुआ है, संसार-भरमें कहीं भी लोकप्रिय नहीं था। यहाँ तक कि "तुर्क" शब्दको भी लोग बुरा मानते थे।

टर्कीके जीवनमें यह परिवर्त्तन इतना द्रुत हुआ है कि हममें से बहुतोंने इसे लक्ष्य ही नहीं किया है। बीस सालके अन्दर ही अतातुर्क और उनके नूमेन वे तथा सराकोगलू जैसे मित्रोंके असाधारण संग्रामने उनके देशवासियोंकी शक्तियों एवं महत्वाकांक्षाओंको नये ढंगकी जीवन-प्रणालीमें परिणत कर दिया है।

मध्य-पूर्वके अरब लोगोंकी तरह चीनके सीमान्तके चतुर्दिक या दक्षिण-पश्चिमी प्रशान्तके द्वीपोंमें जो लोग रहते हैं, उनकी तरह या भारतीयोंकी तरह उन्हें एक पीढ़ी पूर्व तक स्वायत्त शासनका कोई अनुभव नहीं था। उनमें शिक्षा नहींके तुल्य थी, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सफाईकी दशा बहुत ही गयी-बीती थी और शोषण, दरिद्रता एवं कष्टका उनका इतिहास बहुत दिनोंसे चला आ रहा था। किन्तु कुछ ही वर्षोंके अन्दर उन्होंने अपनी अभ्यस्त जीवन-प्रणालीमें, अपनी प्राचीन रीति-नीतिमें और अपने विचारोंमें संपूर्ण परिवर्त्तन कर डाला है।

एक स्त्रीने, जिसका परिचय मुझे टर्कीमें प्राप्त हुआ, एक विशेष प्रकारके वास्तविक ढंगसे इन परिवर्त्तनोंको मुझे हृदयंगम कराया। वह विशुद्ध तुर्क थी और अधेड़ अवस्थाकी एक आकर्षक स्त्री थी, जो अंगरेजी अच्छी तरह बोलती थी। उसकी बातचीत आजकी किसी भी समझदार स्त्री जैसी थी। वह इस्तान्बुलकी रहनेवाली थी और उस समय टर्कीके सर्वोच्च न्यायालयके सामने बहुतसे मुकदमोंमें बहस कर रही थी। वह एक वकील है, टर्कीके नामी वकीलोंमें से एक, और उसकी वकालत खूब चली हुई है। वह एक स्त्री वकील थी, इस बातको लेकर मैंने वहाँ लोगोंको विशेष रूपमें आलोचना करते नहीं देखा। असल बात तो यह है कि और भी कई दूसरी नवयुवती स्त्रियोंसे मेरी मुलाकात हुई थी, जो कानूनका अध्ययन कर रही थीं और जिनमें सरकारी अफसरोंकी लड़कियाँ भी थीं।

और यह टर्कीका हाल है। मुझे आजसे सिर्फ ४० साल पहलेके अपने बचपनके दिन बरबस याद आ गये, जब कि मेरी माताका कानूनका पेशा अख्तियार करना और सार्वजनिक कार्योंमें दिलचस्पी लेना इंडियानामें एक असाधारण और प्रायः विलक्षण जैसी वस्तु समझा जाता था।

हमारा सहयोगी मित्र, रूस

१८ सितम्बर, बृहस्पतिवारको मैं कैस्पियन सागरके ऊपरसे होकर यूराल नदीके मुहानेकी लवणाक्त लाल रंगके कीचड़से युक्त समतल भूमिको पार करते हुए सोवियेट रूसके राज्यमें घोला। नदीके क्यूबिशेव स्थान तक उड़कर गया। इसके दस दिन बाद मैंने रूससे प्रस्थान किया और वहाँसे इसी नदीके मुहानेकी ओर मध्य-एशियाके ताशकन्दसे रेशमके पुराने वाणिज्य-मार्गसे होकर चीन तक उड़कर गया। फिर चीनसे अमेरिका लौटते हुए हमारे वायुयानने तीन बार रूसमें और साइबेरियामें भूमिपर अवतरण किया।

मैं रूसमें कुल दो सप्ताह तक था। इससे पहले मैं वहाँ कभी नहीं गया था। मैं रूसी भाषाका एक शब्द भी नहीं बोल सकता; किन्तु मेरे साथ दुभाषिये अमेरिकन थे। सोवियेट यूनियनके सम्बन्धमें मैंने बहुत-कुछ पढ़ा था; किन्तु मैंने जो कुछ पढ़ा था, उससे उस विशाल देशमें जो कुछ हो रहा था, उसका कोई स्पष्ट चित्र मेरे मनमें अंकित नहीं हुआ था। आखिर रूस जानेके कबल मेरे मनमें यह सन्देह उठा, और वह सन्देह रूसके मेरे प्रवासमें और भी निश्चित होता गया, कि यह देश इतना विशाल है और इसकी अवस्थामें जो परिवर्त्तन हुआ है, वह इतना जटिल है कि पुस्तकोंसे भरी अलमारीका यदि आजीवन अध्ययन किया जाय, तब कहीं जाकर सोवियेट यूनियनके सम्बन्धमें सम्पूर्ण सत्यपर प्रकाश डाला जा सकता है।

यह बात सच है और उल्लेख करने योग्य है कि सोवियेट सरकारने रूसके सम्बन्धमें मैं जो कुछ जानना चाहता था, उसे जाननेका मुझे पूरा सुयोग दिया। उसने मुझे अपने ढंगसे उसके औद्योगिक और सामरिक कल-कारखानों, सामूहिक कृषि-क्षेत्रों, विद्यालयों, पुस्तकालयों, चिकित्सालयों और युद्धके मोर्चोंकी परीक्षा करनेकी अनुमति प्रदान की। मैं इन स्थानोंमें स्वच्छन्द भावसे उसी प्रकार आया-गया, मानो मैं संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकामें भ्रमण कर रहा हूँ। मैंने अचानक वहाँके लोगोंसे बिना किसी रोक-टोकके चाहे जितने अप्रत्याशित प्रश्न किये, और ये प्रश्न बराबर एक अमेरिकनकी उपस्थितमें किये जाते थे, जो रूसी भाषा समझ सकता था और बोल सकता था।

रूसमें पहले-पहल जानेवाला व्यक्ति अवश्य ही उसके अतीत कालपर कभी-कभी विचार करने लग जाता है। क्यूबिशेवमें एक दिन तीसरे पहर मैं विप्लवसे पूर्वके रूसके सम्बन्धमें सोच रहा था। वोल्गा नदीके किनारेपर से होकर मैं अकेला टहलता हुआ कुछ दूर उसके पश्चिम तरफ गया और नदीके सामने मुँह करके पार्ककी एक बेंचपर बैठ गया। वहाँकी सरकारने नदीके किनारे लाल-सेनाका एक विश्राम-गृह हम लोगोंके रहनेके लिये दिया था। हवामें कड़ाकेकी सर्दी थी; मगर पेड़ोंमें पत्तियाँ अब भी लगी हुई थीं। नदीके किनारे छोटे-छोटे सादे रंगके देहाती बँगले और देवदारुके वृक्ष फैले हुए थे। रूसी लोग इस प्रकारके बँगलोंको बहुत पसन्द करते हैं। नीचे बहनेवाली नदीकी तरह वहाँकी हवा बिलकुल शान्त थी। देवदारुके वृक्षोंसे कुछ दूरपर गेहूँके खेत थे, जो नदीके किनारे-किनारे स्टालिनग्राड तक फैले हुए थे। वहाँ रूसी सैनिक नात्सी टैंकों और वायुयानोंके विरुद्ध पत्थरके टुकड़ोंका ढेर लगा रहे थे।

नदीके किनारे जहाँ मैं खड़ा था, उससे नीचे एक नावपर से लकड़ीके कुन्दोंका उतारा जाना अभी तुरन्त समाप्त हुआ था। कई एकड़ जमीनमें उन कुन्दोंके ढेर लगे हुए थे। उस समय डान बेसिन रूसके हाथसे निकल चुका था, और देशमें जो कुल कोयला उपलब्ध था, वह सब युद्धके उद्योग-धन्धोंमें खर्च हो रहा था, इसलिये आगामी शीतकालमें जलानेके लिये रूसी नगरोंको एकमात्र इसी ईंधनपर निर्भर करना पड़ता। एक गड़ेरिया भेड़ोंके एक झुंडको किनारेसे लिये जा रहा था। नदीके बीच एक भरा हुआ टैंकर (तेल ढोनेवाला जहाज) धीरे-धीरे सिंन्धकी ओर जा रहा था। एक जवान रूसी सैनिक भेड़ोंके पीछे-पीछे चल रहा था और अपने पांवसे कंकड़ोंको ठोकर मार-मारकर नदीमें फेंक रहा था। जब उसने अपना टोप उतारा, हवाके झोंकेमें उसके बाल फड़फड़ा उठे, जिससे वह और भी कम उम्रका मालूम हुआ। और तब मैंने यह लक्ष्य किया कि उसके टोपपर खुफिया पुलिसके संकेताक्षर N. K. V. D खुदे हुए थे।

मैंने सन् १९१७ से पहलेके जहाज बनानेवालेके सम्बन्धमें विचार किया, जिसने ग्रीष्मकालीन गृहके रूपमें मेरे पीछेके विश्राम-गृहको बनाया था। मुझे बताया गया कि वह उस स्थानका एक प्रभावशाली व्यक्ति और एक कृपण जहाज-मालिक तथा गल्लेका व्यापारी था। जिस समय उस शहरका नाम समारा था, वोल्गा नदीके वाणिज्यसे वह समृद्धिशाली बना था, और जब (समाराके एक विद्रोहीके नामपर, जिसने प्रथम पंचवार्षिक योजनाकी परिकल्पना की थी) उस शहरका नाम क्यूबिशेव पड़ा, उसका कारबार बन्द कर दिया गया। उसका बनाया हुआ वह घर अभी तक कायम था; मगर पड़ोसके मकानोंकी अपेक्षा कम फटा-पुराना था, और वह इसलिये कि लाल फौजने इसे उपयोगी समझा था।

मुझे ऐसा लगा कि मैं विप्लवके नामपर नर-नारियोंकी सम्पूर्ण पीढ़ीको, जो नष्ट कर दी गयी थी, छिन्न-भिन्न परिवारोंको और हजारों मनुष्योंको, जो युद्ध, गुप्त हत्याकाण्ड और अनाहारसे मृत्युको प्राप्त हुए थे, देख रहा था।

उस समयकी सच्ची कहानीका पूर्ण विवरणके साथ शायद कभी उल्लेख नहीं किया जायगा। कारण, उन मुट्ठी-भर लोगोंको छोड़कर जो विदेशोंमें भाग गये थे, रूसकी प्रायः सम्पूर्ण धनिक एवं मध्यवित्त-श्रेणियोंका मूलोच्छेद कर डाला गया। और आजके रूसी उस समयकी इस कहानीको एक वीरत्वपूर्ण कार्य समझते हैं।

रूसमें आनेसे पहले मैंने इस बातको प्रत्यक्ष नहीं किया था कि किस हद तक यह कहानी सच है; क्योंकि आधुनिक रूसका मूल्यांकन करते समय मैंने इस बातपर काफी तौरपर खयाल नहीं किया था कि वह इस समय ऐसे लोगों द्वारा शासित हो रहा है, और उसकी जनतामें प्रायः सबके सब ऐसे ही लोग हैं, जिनके माता-पिताकी कोई सम्पत्ति नहीं थी, कोई शिक्षा नहीं थी और जिन्हें जन-साधारणकी वंश-परम्परा प्राप्त थी। आज रूसका कदाचित ही कोई ऐसा निवासी होगा, जिसका भाग्य विप्लवके पूर्व उसके पिताका जैसा भाग्य था, वैसा ही या उससे अच्छा न हो। रूसका एक व्यक्ति, और सब व्यक्तियोंके समान ही, स्वभावतः उस व्यवस्थामें कुछ अच्छाई पाता है, जिसमें उसके भाग्यकी उन्नति हुई है, और जिन निष्ठुर उपायों द्वारा यह व्यवस्था कायम की गयी है, उन्हें भूल जानेकी प्रवृत्ति उसमें स्वाभाविक होती है। एक अमेरिकनके लिये यह विश्वास करना या पसंद करना कठिन हो सकता है; किन्तु वहाँ सर्वत्र सब तरहके लोगोंमें साफ-साफ यही कैफियत दी जाती थी। एक दिन मास्कोमें संध्या समय जब मैं एक दल समझदार आधुनिक रूसियोंको उनकी शासन-व्यवस्थाका समर्थन करनेके

लिये उत्तेजित करनेकी कोशिश कर रहा था, तो उन्होंने स्पष्ट रूपमें यह भाव प्रकट किया।

किन्तु रूसमें मैं उसके गत दिनोंकी याद करने नहीं गया था। राष्ट्रपतिकी आरसे मुझे जो ठास काम सौंपे गये थे, उनके अलावा मैं दृढ़संकल्प होकर गया था कि सोवियेट यूनियनका अस्तित्व बना हुआ है, चाहे हम उसे पसन्द करें या नहीं, इस साधी-सी बातसे हमारी पीढ़ीके अमेरिकनोंके लिये जो सब वास्तविक समस्यायें विशेष रूप धारण कर रही हैं, उनके उत्तर मैं स्वयं पानेकी कोशिश करूँ।

और मेरा विश्वास है कि इनमें से कुछ उत्तर, जो कम-से-कम मेरे लिये संतोषजनक हैं, मुझे मिल गये। उनमें तीनका, जो बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, मैं चन्द वाक्योंमें संकलन किये देता हूँ।

पहली बात तो यह है कि रूस एक प्रगतिशील देश है। वह सजीव एवं क्रियाशील है। उसमें मरकर भी जीवित रहनेकी योग्यता है। हिटलरकी नात्सी वाहिनीका सफल प्रतिरोध करके रूसने जो गौरव प्राप्त किया है, वही हम लोगोंके लिये उसके जीवन धारण करनेकी योग्यताका सबसे बड़ा प्रमाण है। किन्तु मुझे यह स्वीकार करनेमें तनिक भी संकोच नहीं होता कि नर-नारियोंके एक जीवित संगठनके रूपमें रूसकी शक्तिके सम्बन्धमें मैं अब जो कुछ जान पाया हूँ, उसपर मैं रूस आनेके पहले विश्वास करनेके लिये तैयार नहीं था।

दूसरी बात यह है कि इस युद्धमें रूस हम लोगोंका सहायक मित्र है। हिटलरकी प्रचण्ड शक्ति द्वारा अंगारोंसे भी बढ़कर उग्र रूपमें रूसियोंकी परीक्षा हुई है, और उन्होंने इसका सामना जमकर किया है। फासिज्म और नात्सी व्यवस्थाके प्रति उनका द्वेष वास्तविक, गम्भीर और कटु है। और यह द्वेष ही उन्हें यूरोपसे और संसारसे

हिटलरको दूर करने और नात्सी विपत्तिको निर्मूल करनेके लिये कृतसंकल्प बनाता है।

तीसरी यह है कि युद्धके बाद भी हमें रूसके साथ मिलकर काम करना होगा। कम-से-कम मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि जब तक हम ऐसा करना नहीं सीखले, तब तक चिर-शान्तिकी व्यवस्था नहीं हो सकती।

सोवियेट यूनियनके विभिन्न भागोंमें मैंने जो कुछ देखा और सुना, उससे मेरे उन अनुमानोंकी और भी पुष्टि हुई है। मैंने रूसी युद्ध-मोर्चेके एक भागको नजदीकसे देखा था और उससे मुझे लाल-सेनाकी कृतियोंका प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त हुआ था। युद्ध-मोर्चेकी पृष्ठभूमिमें मैंने बहुतसे कारखाने देखे थे, जिनमें काम करनेवाले सोवियेट श्रमिकोंने मोर्चेपर के सैनिकोंको अनवरत रूपमें रसद और सामान पहुँचाकर हमारे बहुतसे विशेषज्ञोंको चक्करमें डाल दिया है। मैंने सामूहिक कृषि-क्षेत्रोंको भी देखा। कारखाना और कृषि-क्षेत्रोंकी पृष्ठभूमिमें सोवियेट पत्रकारों और लेखकोंसे मिला और उनसे बातचीत की। इन पत्रकारों और लेखकोंने ही समस्त रूसवासियोंमें यह उच्च भावना भर दी है कि वे एक धर्म-युद्धमें संलग्न हैं। पत्रकारोंकी पृष्ठभूमिमें मैंने रूसकी केन्द्रीय सरकारके प्रधान कार्यालय क्रेमलिनको देखा और मि० स्टालिनके साथ दो बार काफी देर तक बातचीत की। यहाँ पहले-पहल मुझे यह देखनेका सुयोग मिला कि सर्वहाराके अधिनायकत्वमें क्षमताका किस रूपमें वास्तविक प्रयोग किया जाता है। और अन्तमें इन सबकी पृष्ठभूमिमें मैंने रूसी जनताको देशके एक छोरसे दूसरे छोर तक देखा। यद्यपि वहाँकी २० करोड़ जनतामें से मेरा इस प्रकार कुछेकका नमूना लेना बहुत ही असंगत कहा जा सकता है, फिर भी यह सुविधा तो अवश्य थी कि यह नमूना बिलकुल आकस्मिक रूपमें, लिया गया था। रूसके मेरे अत्यन्त शिक्षाप्रद अनुभवोंमें एक अनुभव है अहेयके

युद्ध-मोर्चेकी यात्रा। मास्कोसे जहेव तक पहुँचनेके लिये आपको लेनिनग्राडसे कालिनिन तक जो राजमार्ग गया है, उसपर से होकर चलना होगा। फिर पश्चिमकी तरफ किलन तक जाकर उससे आगे एक छोटेसे देहाती शहर स्टारिट्सा जाना होगा। हम लोग आरामदेह गाड़ियोंपर रवाना हुए थे। रात-भर गाड़ियोंपर सवार रहे। प्रातःकाल सूर्योदयसे पूर्व ही स्टारिट्सा पहुँच गये और वहाँ फिर हम अमेरिकाकी बनी हुई जीप गाड़ियोंपर सवार हुए। मेरे साथ जनरल फिलिप, मेजर जनरल ब्रेडली, रूसमें रहनेवाले अमेरीकन फौजी सरकारी दूत कर्नल जोसेफ ए० माइकेल तथा मेरे दलके चार आदमी और रूसी पथ-प्रदर्शक थे।

जीप गाड़ी अमेरिकाका एक महान् आविष्कार है, और एक अमेरिकनके नाते मुझे इसका गर्व है। इस प्रकारकी एक गाड़ीमें १४ घंटे तक सवार रहनेके बाद मैंने इसकी बनावट और इसके सब हिस्सोंकी पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त कर ली। मगर इसकी उछलनेवाली चालको देखकर इसके अमेरिकामें आविष्कृत होनेका मेरा जो गर्व था, वह कुछ-कुछ मंद पड़ गया। घंटों तक उन मार्गोंसे होकर चलते हुए, जिसकी दूरीका कभी अन्त होता हुआ मालूम ही नहीं पड़ रहा था, हम लोग ऊबड़-खाबड़, कीचड़से सनी हुई और पहियोंकी लकीरोंसे युक्त सड़कोंपर उछलते और दचके खाते रहे। यहीं पहले-पहल मुझे अपने पिता द्वारा आदिम इंडियानाकी दशाओंके सम्बन्धमें कही गई उन कहानियोंका वास्तविक मर्म मालूम हुआ।

आखिर हम लोग जहेवके उत्तर तरफ लेफ्टिनेण्ट-जनरल डिमिट्रीके सदर मुकामपर पहुँचे। डिमिट्रीका व्यक्तित्व इतना आकर्षक एवं हृदयग्राही है कि जिन सब विशिष्ट व्यक्तियोंसे मैं मिला, उनमें उनकी स्मृति आज भी स्पष्ट रूपसे विद्यमान् है। उनकी उम्र केवल ३८ सालकी है; किन्तु वह

संसारके एक अत्यन्त महत्वपूर्ण युद्ध-मोर्चेपर मुस्तैद सोलह डिवीजन सैन्य-दलोंके सेनानायक थे।

वह औसत ऊँचाईके मनुष्य हैं। शरीरका गठन मजबूत है और जन्मसे ही वह अश्वारोही हैं। उनके धनुषाकार पाँव उनके कज़ाक वंशका होना प्रकट कर देते हैं। वह पूर्ण स्वस्थ, सजीव, सतर्क तथा तेजस्वितामें भरे हुए मालूम पड़ते थे। वह हम लोगोंको जमीनके नीचे अपने सदर मुकाममें ले गये। अपने लड़ाईके नकशों, अपनी फौजोंकी तैयारी, आक्रमणकी अपनी योजना और उस समय जो घोर युद्ध हम लोगोंके आगे और हमारे चतुर्दिक चल रहा था, उसमें क्षण-क्षणपर होनेवाले परिवर्त्तनोंको उन्होंने समझाया।

उस समय वह जर्हेवकी बगलसे होकर निकल जाने और वियाज्माके रेल-मार्गको काट डालनेके रणकौशलका आरम्भ कर रहे थे, जो हमारे अमेरिका लौटनेके कुछ सप्ताह बाद और लेनिनग्राडका घेरा नाटकीय ढंगसे उठनेके पहले सफल हुआ। उनके सदर मुकामसे, जो एक पहाड़ीपर देवदारु वृक्षके कुंजमें अवस्थित था, हम लोग शहरसे बाहर लगभग आठ मील दूर तोपोंका गर्जन सुन सकते थे।

उनके कर्मचारी-मण्डलकी कर्मतत्परता देखकर मैं चकित हो गया। जनरल अपने आदेशका एक वाक्य भी मुश्किलसे बोल पाते थे, जब कि उनके दो या तीन सहकारी उनके आदेशकी प्रतीक्षामें वहाँ सावधान होकर खड़े हो जाते थे। लड़कियों और स्त्रियोंको अधिक संख्यामें सैनिक वर्दी धारण किये हुए देखकर भी मैं कम विस्मित नहीं हुआ। संवाद भेजने, पत्र-व्यवहार करने, यातायात तथा सफाई वगैरहके काममें तो वे थीं ही। इसके अलावा हमने उन्हें जनरलके सदर मुकामके चारों तरफ वृक्षोंके झुरमुटके बीच और जमीनके नीचेके तहखानेमें, जहाँ अफसर लोग अपना काम करते थे, पहरा देते भी देखा।

सदर मुकामसे इस युद्ध-भूमिके पास तक मोटरपर गये और वहाँ जर्मनोंके एक शक्तिशाली स्थानका निरीक्षण किया, जिसपर हालमें ही रूसी सेनाने दखल जमा लिया था। किसी समय जो एक छोटी-सी पहाड़ीके प्रान्त-भागपर एक छोटा-सा गाँव था, वह इस समय ध्वंसावशेष, कीचड़, घरोंके टूटे-फूटे अंश और बिना दफनाये गये मुर्दोंके ढेरके सिवा और कुछ नहीं रह गया था। एक खाईके निम्न भागमें मैंने एक टिन देखा, जो अभी खुला भी नहीं था और आधा कीचड़में गड़ा हुआ था। उसपर अंगरेजीमें लिखा हुआ था "Luncheon Ham," अर्थात् जलपानके लिये सूअरका लवणाक्त मांस। मुझे आश्चर्य हुआ कि इस विश्वव्यापी महायुद्धके किस दूसरे मोर्चेपर जर्मनोंने इस टिनके डिब्बेको उठाया होगा।

जनरलने मुझसे कहा कि उनकी सेनाओंने अभी तुरत कुछ जर्मनोंको बन्दी बनाया है, और मुझसे पूछा कि क्या मैं उन्हें देखना पसन्द करूँगा? मैंने कहा—"हाँ, मैं उन्हें देखना चाहता हूँ और उनसे बातचीत भी करना चाहता हूँ।" जनरलने उत्तर दिया—"मुझे यह हिदायत दी गयी है कि आप जैसा चाहें, वैसा आपको करने दूँ।"

अभी तुरत पकड़े गये इन बन्दियोंपर मैंने एक दृष्टि डाली। संख्यामें वे चौदह थे और एक पंक्तिमें दीन भावसे खड़े थे। मैंने एक बार फिर उन्हें गौरसे देखा। और तब मैंने अपने मनमें विचारा : क्या ये पतली पोशाक पहने हुए, कृश शरीर और क्षयरोगग्रस्त जैसे चेहरावाले मनुष्य ये ही भयानक हून और अजेय सैनिक हैं, जिनके विषयमें मैंने इतनी कहानियाँ पढ़ी हैं?

दुभाषियेकी मददसे मैंने उनके साथ बातचीत करना शुरू किया। मैंने उनसे पूछा, वे जर्मनीमें कहाँ रहते हैं, उनकी उम्र कितनी है, क्या घरमें

उन्हें चिट्ठियाँ मिलती हैं, उनके बिना उनके परिवारकी क्या दशा हो रही है ? इसी तरहके और भी बहुतसे सरल एवं दयालुतापूर्ण प्रश्न मैंने पूछे। उनके उत्तरोंके साथ-साथ जर्मन सैनिक मोर्चेका अन्तिम चिह्न तक गायब हो चुका था। ये सैनिक बड़े दुःखी दिखाई पड़ रहे थे और अपने घरके वियोग-दुःखसे खिन्न हो रहे थे। इनमें कुछकी अवस्था चालीस सालकी थी और कुछकी केवल सतरहकी।

अब मैं जनरलकी तरफ मुखातिब हुआ और उनसे बतलाया कि मैं अपने मनमें क्या सोच रहा था।

"यह ठीक है, मि० विल्की," उन्होंने कहा—"मगर इन्हें देखकर धोखेमें मत पड़िये। अब भी युद्धके साज-सामानमें जर्मन लोग बहुत बढ़े-चढ़े हैं, और उनके अफसर बहुत ही सुयोग्य और पेशेवर लोग हैं। जिन सैनिकोंको आप यहाँ देख रहे हैं, ऐसोंको लेकर जर्मन सेना आज भी संसारकी सबसे बड़ा सैनिक संगठन है। फिर भी यदि आपका राष्ट्र हम लोगोंकी आवश्यकतानुसार युद्धके साज-सामान भेजता रहे, तो लाल-सेना काकेशससे लेकर उत्तरी ध्रुव तक हरएक मोर्चेपर जर्मनोंको परास्त कर देगी; क्योंकि हमारे आदमी जर्मनोंसे अच्छे हैं और वे अपनी जन्मभूमिके लिये लड़ रहे हैं।"

मेरा खयाल है कि जनरलके सैनिक जर्मन सैनिकोंसे अच्छे हैं। उस दिन और उसके दूसरे दिन उन्हें देखकर मुझे यह स्पष्ट हो गया कि वे अपनी जन्मभूमिके लिये लड़ रहे हैं। मोर्चेसे चंद मील पीछे, हमने रूसी किसानोंको कृषि-क्षेत्रकी गाड़ियोंपर अपने सामानोंको ढेरी लगाये हुए देखा। हरएक गाड़ीके पीछे एक-एक गाय बँधी हुई थी, जो धीरे-धीरे सड़कोंसे होकर चल रही थी। और विचित्र बात तो यह थी कि वे लोग मोर्चेसे कहीं दूर नहीं जा रहे थे, बल्कि उसी तरफ जा रहे थे। एक

प्रकारकी भौतिक शक्ति धारण करके वे गर्वोन्नत भावसे फिर उस भूमिकी ओर लौट रहे थे, जिसको लाल-सेनाने शत्रुसे जीतकर वापस किया था। उन गाँवोंमें आकाशकी ओर उठे हुए क्षीण धुआँकशके सिवा और कुछ नहीं रह गया था; किन्तु खेतोंमें हल जोतनेका वह समय था और इसलिये वे लोग वापस जा रहे थे।

कुछ बूँदा-बाँदी, ठंढ-भरी बरसात—जिसका सामना जर्मनोंको एक-दो महीने बाद करना पड़ेगा, उसीका यह पूर्वाभास था—के कारण हम लोगोंका प्रस्थान रुक गया, और जनरलने हमें अपने साथ रात्रिका भोजन करनेके लिये निमंत्रित किया। इस भोजमें हम लोग कुल मिलाकर लगभग चालीस आदमी थे, जिनमें सोवियेट अफसर और सैनिक तथा उनसे मिलनेवाले भी थे। हम सब एक ही खीमेमें किसी तरह सट-सटकर बैठ गये। हम लोगोंने उबाला हुआ सूअरका लवणाक्त ठंढा मांस, अनाजकी रोटी, टमाटो, ककड़ियाँ तथा अचार खाये और परस्पर स्वास्थ्य-कामना करते हुए वोडका शराब पी।

भोजनके समय बिना सोचे ही मैंने दुभाषियेसे कहा कि वह जनरलसे पूछे, रूसके दो हजार मीलके युद्ध मोर्चेके कितने बड़े अंशकी वह रक्षा कर रहे हैं? इसपर जनरलने मेरी ओर इस प्रकार देखा, मानों मेरा यह प्रश्न उन्हें बुरा लगा हो, और दुभाषियेने उनकी बातोंको धीरेसे दुहराते हुए मुझसे कहा—"महाशय, मैं रक्षा नहीं कर रहा हूँ। मैं आक्रमण कर रहा हूँ।"

जेहेव-मोर्चेको देखनेके बाद मैंने इस बातको पहलेकी अपेक्षा और भी स्पष्ट रूपमें हृदयंगम किया कि रूसमें इस युद्धको जो "जनयुद्ध" कहा जाता है, वह बिलकुल यथार्थ है। वस्तुतः वह रूसी जनता ही है, जो हिटलरके मतवादको नष्ट कर डालनेके लिये कृतसंकल्प है। अब तक वहाँकी जनता

जिस अग्नि-परीक्षासे होकर गुजरी है और आगे चलकर उसे जिस संकटका सामना करना है, वह ऐसा है कि किसी भी अमेरिकनको प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता। मोर्चेपर जानेके कबल स्टालिनने रूसके महान् बलिदान और उसकी बहुत जरूरी आवश्यकताओंके सम्बन्धमें मुझे कुछ आँकड़े दिये थे, जिनके प्रचुर प्रमाण मुझे प्रत्यक्ष देखनेको मिले थे।

उस समय तक कुल मिलाकर पचास लाख रूसी हताहत हो चुके थे, या लापता थे। दक्षिण-पश्चिमी रूसके बृहत् उपजाऊ कृषि-क्षेत्रपर अधिकांशमें जर्मनोंका अधिकार हो गया था। उनकी पैदावारसे उनके शत्रुको लाभ पहुँच रहा था और उनके अपने स्त्री-पुरुषोंको विवश होकर नात्सियोंकी गुलामी करनी पड़ती थी। रूसके हजारों गाँव नष्ट कर दिये गये थे और वहाँकी जनता गृहहीन बन गयी थी। उसकी यातायातकी व्यवस्था अत्यधिक भाराक्रान्त हो रही थी, उसके कारखानोंका उत्पादन चरम सीमापर पहुँच गया था, और उनके लिये उसके बाकी बचे हुए तेल-कूपों और कोयलेकी खानोंके सम्पूर्ण उत्पादनकी जरूरत थी।

रूसमें भोजन मुश्किलसे मिल रहा था, या इससे भी बदतर हालत थी। आगामी जाड़ेमें रूसके गृह-परिवारोंमें जलानेके लिये बहुत कम ईंधन बचा रह गया था। जब मैं मास्कोमें था, उस समय भी स्त्रियाँ और बच्चे इर्दगिर्द पचास मीलके अन्दर लकड़ी बटोरकर इकट्ठा कर रहे थे, ताकि आगामी जाड़ेकी सर्दीसे वे कुछ बच सकें। सेना और युद्धके लिये प्रयोजनीय श्रमिकोंको छोड़कर बाकी लोगोंके लिये कपड़ा प्रायः नहींके बराबर रह गया था। बहुत-सी जरूरी दवाइयाँ भी नहीं मिल रही थीं।

युद्धकालीन रूसका यही चित्र मुझे देखनेको मिला। फिर भी किसी रूसीने मुझसे युद्धसे विरत होनेकी बात नहीं की। वे सब जानते थे कि नात्सी द्वारा अधिकृत देशोंमें वहाँकी जनतापर क्या बीती है। मुझे यह

पक्का विश्वास हो गया कि रूसकी जनताने—उसके नेता नहीं—विजय या मृत्यु इन दोमें से एकको वरण कर लिया है। वह केवल विजयकी ही बात करती थी।

मैंने एक पूरा दिन एक सोवियेट वायुयान-कारखानेको देखनेमें बिताया। मैंने रूसमें और भी कारखाने देखे थे—मिसरीके कारखाने युद्ध-सामग्रीके कारखाने, ढलाईके कारखाने, बेतके कारखाने और बिजलीके कारखाने। मगर वायुयान बनानेका वह कारखाना, जो उस समय मास्कोसे बाहर अवस्थित था, आज भी मेरी स्मृतिमें अत्यन्त उज्ज्वल बना हुआ है।

वह एक बहुत विशाल कारखाना था। मेरा अनुमान है कि लगभग तीस हजार मजदूर तीन फेरियोंमें (shifts) उसमें काम कर रहे थे, और प्रतिदिन काफी संख्यामें वायुयान तैयार कर रहे थे। उसमें जो वायुयान तैयार होता था, वह "स्टारमोविक" नामक प्रसिद्ध वायुयान है। वह एक इंजिनवाला और कवचसे विशेष रूपमें सुसज्जित लड़ाकू विमान है रूसवालोंने इसमें उन्नति करके इसे सचमुच युद्धका एक अभिनव अस्त्र बना डाला है। इसकी छत बहुत कम ऊँची होती है, और यह धीरे-धीरे ऊपर उठता है, जिससे इसे वस्तुतः एक रक्षक लड़ाकू वायुयानकी आवश्यकता होती है। किन्तु टैंकमार अस्त्रके रूपमें इसका व्यवहार होने, बहुत नीचेसे और तेज चालमें उड़ने तथा अधिक परिमाणमें गोला आदि ढोनेके कारण यह लाल-सेनाके अत्यन्त शक्तिशाली अस्त्रोंमें से एक है।

जिस समय मैं कारखानेका निरीक्षण कर रहा था, अमेरिकन वायुयान-विशेषज्ञ भी मेरे साथ मौजूद थे। उन्होंने मेरे इस अनुभवकी पुष्टि की कि जिन वायुयानोंको हमने कारखानेसे निकलते और पासके ही हवाई अड्डे पर परीक्षित होते देखा था, वे अच्छे वायुयान हैं। और विशेष बात तो यह थी कि उन्होंने यह घोषित किया था कि वायुयान चालकोंके लिये उनके वायु-

यानोंमें रक्षा-कवचका जैसा प्रबन्ध है, वैसा उनके जानते संसारमें और कहीं भी किसी वायुयानमें नहीं। मैं वायुयान-विद्याका विशेषज्ञ नहीं हूँ, किन्तु मैंने अपने जीवनमें बहुतसे कारखानोंका निरीक्षण किया है। मैंने ध्यानपूर्वक सब कुछ देखा था, और मैं समझता हूँ कि मेरी रिपोर्ट सही है।

वायुयान तैयार करनेकी प्रक्रियाके कुछ भागोंका संगठन अभी बिलकुल आधुनिक ढंगसे नहीं हो पाया था। स्टारमोविकके पंखे एक प्रकारकी लकड़ीकी वाष्पके दाबसे छोटा करके उससे बनाये जाते हैं और तब उसे कैनवासमें आच्छादित कर देते हैं। लकड़ीके कारखाने हाथके परिश्रमपर बहुत ज्यादा निर्भर करनेवाले मुझे जान पड़े, और उनके उत्पादनसे भी ऐसा ही मालूम पड़ता था। बिजली और गियरके कुछ कारखाने भी बहुत पुराने ढंगके थे।

इन अपवादोंके सिवा उक्त कारखाना उत्पादन और कर्मकुशलतामें मैंने अब तक जितने कारखाने देखे हैं, उनमें किसीके साथ भी मजेमें बराबरी कर सकता है। मैंने खराद और छेद करनेवाले यंत्रोंके अनेक कारखानोंमें भ्रमण किया। मैंने संसार-भरसे इकट्ठे किये गये मशीनोंके औजार भी देखे, जिनपर ट्रेड-मार्क खुदे हुए थे। उनसे पता चलता था कि वे बेमसिज, स्कोडा, शेफिल्ड, सिनसिनैटी, सेबरइलोबरूक और एन्टवर्पसे आये हुए थे। उनका उपयुक्त रूपमें व्यवहार हो रहा था।

कारखानेमें काम करनेवाले मजदूरोंमें सैकड़े ३५ से अधिक स्त्रियाँ थीं। श्रमिकोंमें मैंने दस सालके लड़कोंको भी देखा। सब नील रङ्गके ब्लाउज पहने हुए थे और नवसिखुए विद्यार्थी जैसे मालूम पड़ते थे, यद्यपि कारखानेके अधिकारियोंने निःसंकोच रूपमें यह स्वीकार किया कि बहुतसे कारखानोंमें बच्चे वयस्कोंकी तरह सप्ताहमें पूरे चौंसठ घंटे काम करते हैं।

बहुतसे लड़के खरादोंपर कारीगरोंका काम कर रहे थे और बहुत अच्छी तरहसे करते हुए दीख पड़ रहे थे।

सब मिलाकर उस कारखानेमें हम अमेरिकनोंकी दृष्टिमें अधिक आदमी काम करते हुए मालूम पड़ रहे थे। इसी तरहकी एक अमेरिकन फैक्टरीमें जितने आदमी काम करते पाये जायँगे, उससे अधिक काम कर रहे थे। हर तीसरी या चौथी मशीनपर एक विशेष चिह्न लटक रहा था, जिससे पता चलता था कि उसका श्रमिक एक 'Stakhanovite' है और उसके लिये उत्पादनका जितना निर्दिष्ट नियम है, उसे पूरा करके भी कुछ अधिक करनेके लिये वह प्रतिज्ञाबद्ध है। और हम लोगोंको यह जानकर आश्चर्य होगा कि "स्टाखानोवाइट" श्रेणीके ये मजदूर खण्डशः काम करनेवाले होते हैं, और जितनी शीघ्रतासे ये अपना काम पूरा करते हैं, उसीके अनुसार क्रमशः इनकी मजदूरीमें वृद्धि होती चलती है। रूसकी शिल्प-व्यवस्था एक अमेरिकनकी दृष्टिमें एक विचित्र असत्याभाष जैसी प्रतीत होगी। वहाँ श्रमिकोंको कामपर नियुक्त करने और उन्हें मजदूरी देनेकी जो पद्धति है, उससे हमारे बड़ेसे बड़े असामाजिक व्यवसायीको भी संतोष होगा। और जिस ढंगसे वहाँ पूँजीका व्यवहार किया जाता है, उससे मेरा विश्वास है, नार्मन थामस जैसे व्यक्तिको भी पूर्ण सन्तोष प्राप्त होगा। फैक्टरीकी दीवारोंपर उन श्रमिकोंकी सम्मानसूचक नामावली लिखी हुई थी, जो अधिक और अच्छे ढंगसे माल तैयार करनेकी उस अविराम प्रतिद्वन्द्विता में आगे बढ़े हुए थे। इससे हम सहज ही इस परिणामपर पहुँचते हैं कि काम करनेके लिये उन्हें यह अतिरिक्त उत्तेजन प्रदान किया जाता है, और जिस किसी मजदूरसे हमने बातचीत की, उसके वार्त्तालापसे यह स्पष्ट हो जाता था कि उससे कर्मकुशलताके अपेक्षाकृत अभावकी पूर्त्ति अनेकांशमें हो जाती है।

वहाँके एक मजदूरकी उत्पादन-क्षमता अमेरिकाकी तुलनामें कम थी। रूसके अधिकारियोंने इस बातको मुझसे स्पष्टतः स्वीकार किया था। इसका कारण उन्होंने यह बताया कि जब तक शिक्षा और व्यावहारिक ज्ञान द्वारा हम कर्मपटुताके अभावको दूर नहीं करते, तब तक उसकी पूर्ति-के लिये हमें उनकी देश-प्रेमकी भावनापर विशेष जोर देना ही पड़ेगा, ताकि उत्पादनमें वृद्धि हो और सब प्रकारके श्रमिकों—बूढ़ा स्त्री और बच्चों—को भी कामपर भरती करना ही होगा। इस बीचमें हम फैक्टरीके तैयार वायुयानोंको उसके दालानसे बाहर निकलते, निशाना मारनेकी जगहपर उसके मशीनगन और तोपोंकी परीक्षा होते और फिर अपने सिरके ऊपर आकाशमें मँडराते देख सकते थे।

कारखानेके संचालक ट्रेटियाकोव, जो एक गम्भीर आकृतिके मनुष्य थे और जिनकी अवस्था लगभग चालीसकी थी, हम लोगोंको अपने आफिसमें जलपानके लिये ले गये। लम्बे बरामदोंसे होकर, जो नीले रंगकी बिजली बत्तियोंके मन्द प्रकाशसे प्रकाशित हो रहे थे, हम लोगोंने एक साधारण ढंग के कमरेमें प्रवेश किया। इस कमरेमें, जहाँ वह काम किया करते थे, बिलकुल अँधेरा था। एक टेबुलपर सैन्डविच, गरम चाय, केक और वोडका शराबकी बोतलें रखी हुई थीं। एक कोनेमें दो झंडे रखे हुए थे। वे दोनों इस कारखानेको रूसकी सरकार द्वारा अपना निर्दिष्ट कार्य सफलतापूर्वक पूरा करनेके लिये पुरस्कार-स्वरूप दिये गये थे।

ट्रेटियाकोवने मेरे प्रश्नोंका उत्तर देना स्वीकार किया। वह एक टेबुलके सामने बैठे थे। उनकी काली पोशाकपर एकमात्र चिह्न एक छोटा-सा पतला चाँदीका तारा था। पीछे मुझे मालूम हुआ कि सोवियेट रूसके केवल सात ऐसे नागरिकोंमें से वह एक हैं, जिन्हें यह ताराचिह्न

प्रदान किया गया है। यह "Hero of the Soviet Union" (सेवियेट युनियनका वीर) नामक उपाधिका निदर्शन है।

एक घंटे तक उनसे ब्योरेवार जिरह करनेके बाद मुझे यह स्पष्ट हो गया कि किसी भी सभ्य समाजमें वे एक प्रमुख नेता हो सकते थे। वह शान्त भावसे गम्भीरतापूर्वक और अपने कार्यकी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आवश्यकताका पूर्ण ज्ञान रखते हुए बोलते थे। उनके विशाल कारखानेके किस कोनेमें क्या काम होता था, इसका उन्हें विस्तृत ज्ञान था। कारखानेमें रोज कितने वायुयान तैयार होते हैं, कुल कितने मजदूर काम करते हैं, एक कारखानेमें 'स्टारमोविक' श्रमिक अधिकसे अधिक कितना काम करता है, इस प्रकारके मेरे कुछ प्रश्नोंको उन्होंने नम्रताके साथ किन्तु दृढ़तापूर्वक टाल दिया। और जब मैंने चतुरताके साथ इन सब बातोंको जाननेकी कोशिश की, तो उनकी आँखें चमक उठीं, और मुझे उनसे युद्ध-सम्बन्धी कोई ऐसी गुप्त बात नहीं मालूम हो सकी, जो इंगलैण्ड या अमेरिकाके किसी उत्तरदायित्वपूर्ण फैक्टरी मैनेजरसे नहीं मालूम होती।

उन्होंने हमसे बताया है कि यह मशीन सन् १९४१ के अक्टूबरमें मास्कोसे—जिस समय सोवियेट राजधानीसे नात्सी तोपोंके गर्जन सुने जा सकते थे—ज्योंकी त्यों उठाकर यहाँ लायी गयी थी। एक हजारसे अधिक मीलकी दूरीसे वह मशीन यहाँ पहुँचायी गयी थी, और यह उस हालतमें, जब कि वहाँके यातायातके साधन युद्धजन्य आवश्यकताओंसे भाराक्रान्त हो रहे थे। फिरसे वह यंत्र यहाँ बैठाया गया। जिस समय तक वह ढोकर लाया गया, उसके बहुतसे मिस्त्री बराबर उसके साथ रहे और अपने कल पुर्जोंकी देखभाल करते रहे। इस प्रकार दो महीनेके बाद वह यंत्र अपने नये स्थानमें स्थापित होकर वायुयान तैयार करने लगा।

उन्होंने मुझे बताया कि सन् १९४१-४२ के उस प्रथम जाड़ेमें यंत्रमें गरमी पहुँचानेका कोई साधन नहीं था। मजदूर लोग कारखानेमें आग जलाकर रखते थे, ताकि मशीनके कल-पुर्जे सर्दीसे जमने न पावें। मजदूरोंके रहनेके लिये अलग घर नहीं थे, और उनमें बहुतसे अपने औजारोंके पास ही सोया करते थे। किन्तु सन् १९४२ की शरद्-ऋतु तक व्यवस्था पहलेसे कुछ अच्छी हो गयी थी। उदाहरणके लिये फैक्टरीके रेस्तराँमें, जिन्हें मैंने देखा था, मजदूरोंको सादा किन्तु पर्याप्त तथा पौष्टिक भोजन मिलता था। किन्तु मुझे यह भी मालूम था कि उसी शहरके बाजारोंमें एकमात्र भोजन जो मिल सकता था, वह था काली रोटी और आलू, और वह भी अत्यधिक मूल्यमें।

भोजन समाप्त होनेपर मैंने छोटे कदके एक नौजवानसे, जिसका परिचय कारखानेके डाइरेक्टरने मुझसे कराया था, प्रश्न पूछना शुरू किया। वह उत्पादन-विभागका सुपरिन्टेन्डेन्ट और एक बुद्धिमान नवयुवक था। वह मजदूरकी पोशाक पहने हुए था और सरपर कारीगरकी टोपी थी, जो रूसमें शिल्प श्रमिककी प्रायः चिह्न जैसी समझी जाती है। वह एक व्यावहारिक शिक्षाप्राप्त इञ्जीनियर था। चाल ढालमें सावधान और आडम्बरप्रिय जान पड़ता था। इसके साथ ही वह उद्योगी और बुद्धिमान भी था और अपने कार्यका पूर्ण ज्ञान रखता था। इस प्रकारका नवयुवक अमेरिकाके औद्योगिक जीवनमें बहुत जल्दी तरक्की कर सकता है और योग्यता प्राप्त करके अपने साथियोंका नेता बन सकता है। दर असल उसे देखकर मुझे अमेरिकाके उसके जैसे होनहार नवयुवककी बात इतनी याद आ गयी कि मैंने उससे यह पता लगानेका निश्चय किया कि कम्यूनिस्ट पद्धतिमें ऐसी कौन-सी प्रेरणा एवं आकर्षण हैं, जिनके कारण उसने अपने साथियोंसे अपनेको अधिक शिक्षित बनाया है, आवश्यकतासे अधिक घंटे तक काम करके तीस हजार

मनुष्योंका अध्यक्ष बना है, और वह ज्ञान प्राप्त किया है, जो स्पष्टतः उसे सर्वोच्च पदपर लिये जा रहा है ?

उसने कहा कि मुझको आपके प्रश्नोंके उत्तर देनेमें प्रसन्नता होगी। उसने मुझे बताया कि उसकी उम्र ३२ सालकी है। वह विवाहित है और उसके दो बच्चे हैं। औसत घरोंसे वह एक बहुत अच्छे सुखप्रद मकानमें रहता है। युद्धसे पहले उसके पास एक मोटर था।

"इस फैक्टरीके सुपरिन्टेन्डेन्टके रूपमें आपका जो वेतन है, उसकी तुलनामें कारखानेके औसत निपुण कारीगरको कितना वेतन मिलता है ?" मैंने पूछा।

क्षणभर सोचकर वह बोले—"लगभग दसगुना अधिक।"

इस अनुपातसे अमेरिकामें यह २९ हजारसे ३० हजार डालर तक वार्षिक पड़ेगा, और ठीक इतना ही उस प्रकारके उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्तिको अमेरिकामें मिलेगा। इसलिये मैंने उनसे कहा—"मैंने समझा था, कम्युनिज्मका अर्थ है पारिश्रमिककी समानता।"

उन्होंने कहा—सोवियेट रूसमें इस समय सोशलिज्मकी जो धारणा है, उसके अनुसार समानता उसका कोई अंग नहीं है। "प्रत्येक व्यक्तिसे उसकी क्षमताके अनुसार काम लिया जायगा, और प्रत्येक व्यक्तिको उसके कार्यके अनुसार पारिश्रमिक मिलेगा," यही स्टालिनके अनुसार सोशलिज्मका आदर्श-वाक्य है, और जब हम लोग इस दिशामें अपनी क्रमोन्नतिमें कम्युनिज्मके स्तर तक पहुँच जायँगे, तब यह आदर्श-वाक्य बदल कर "प्रत्येकको उसकी क्षमताके अनुसार और प्रत्येकको उसकी आवश्यकतानुसार" के रूपमें हो जायगा, उन्होंने समझाकर कहा। इस अवस्थामें भी उन्होंने अपने कथनमें इतना और जोड़ते हुए कहा, संपूर्ण समानता आवश्यक या वाञ्छनीय नहीं होगी।

"अपनी इस आयमें से तो स्वभावतः आप कुछ बचाते होंगे, कुछ बचाकर अलग रखते होंगे, है न ?"—मैंने फिर पूछा।

वे हँसकर बोले—"हाँ, यदि मेरी स्त्री अत्यधिक खर्च न करे।"

"आप अपनी बचतकी रकमको लेकर क्या करते हैं ? आप उसे किस तरह लाभके लिये लगाते हैं ?"

"पहले-पहल जो बचत मुझे हुई थी, उससे हमने अपने लिये एक अच्छा मकान खरीदा।"—उन्होंने मुझसे कहा।

"और फिर ?"

"तब हमने देहातमें एक जगह खरीदी, जहाँ मेरा परिवार छुट्टीके दिनोंमें जाकर रह सके, और मैं भी विश्रामके लिये, या मछली पकड़नेके लिये अथवा शिकार करनेके लिये वहाँ जा सकूँ, जब कभी मुझे फैक्टरीके कामोंसे फुर्सत मिल जाय।"

"और अब ये सब चीजें आपने खरीद ली हैं, तो फिर आप फाजिल रुपया लेकर क्या करते हैं ?"

"आह, मैं उसे नगदके रूपमें रखता हूँ, या उससे सरकारी बोण्ड खरीदता हूँ।"

सोवियेट सरकारके बोण्डपर सूद नहीं मिलता, यह मैं जानता था। इसके साथ ही मुझे यह भी स्मरण हो आया कि पहले-पहल अपनी आयकी बचतकी जो रकम मैंने जमा की थी, उसको लेकर मुझे यही खयाल हुआ था कि इससे जितनी आमदनी सम्भव हो सके, प्राप्त की जाय। इस बातको ध्यानमें रखते हुए मैंने उनसे यह जाननेके लिये कि उनका उत्तर क्या होता है, पूछा—"आप किसी ऐसे काममें रुपया क्यों नहीं लगाते, जिससे आपको अच्छा लाभ हो ?"

उन्होंने आश्चर्यके साथ और, मैंने खयाल किया, कुछ-कुछ बड़प्पनके भावसे भी मेरी ओर देखा। "आपका मतलब है, मि० विल्की, पूँजीपर मुनाफा लेना? रूसमें यह सम्भव नहीं है, और किसी प्रकारसे भी मैं इसमें विश्वास नहीं करता।"

और जब मैंने इस बातकी कोशिश की कि वह मुझे इसका कारण बतलावें, तब वह दस मिनट तक मार्क्स और लेनिनके सिद्धान्तोंकी व्याख्या करते रहे और मैं ध्यानपूर्वक सुनता रहा। अन्तमें उनकी इस व्याख्याके बीचमें ही टोककर मैंने पूछा—"अच्छा, यह तो बताइये कि आप इतना खटकर काम क्यों करते हैं?"

उन्होंने उत्तर दिया, बोलते समय अपनी बाँहको अपने चारों तरफ झाड़ते हुए, "मैं इस फैक्टरीको चला रहा हूँ। किसी दिन मैं इसका डाइरेक्टर बनूँगा। आप इन चिह्नोंको देखते हैं?"—अपने ब्लाउजमें खोंसे हुए सम्मानसूचक पदकोंकी ओर दिखाते हुए—"ये पदक मुझे अपनी पार्टी और सरकारसे मेरे इनामके कारण प्राप्त हुए हैं।"—उन्होंने सरल भावसे कहा—"किसी दिन ऐसा हो सकता है, यदि मैं अपनेको इस योग्य साबित करूँ कि पार्टी मुझे कोई ऐसा काम दे, जिसका सम्बन्ध देशके शासनसे हो।"

"मगर जब आप वृद्ध हो जायँगे, तब आपकी देखभाल कौन करेगा?"

"मैं अपने लिये कुछ नगद बचाकर रखे रहूँगा, और यदि वह पर्याप्त नहीं होगा, तो सरकार मेरे लिये प्रबन्ध करेगी।"

"क्या आपको कभी यह इच्छा नहीं होती कि आपका कोई निजका कारखाना हो?"—मैंने पूछा।

इसके उत्तरमें एक बार फिर उन्होंने मार्क्सवादी अर्थनीति और समाज-दर्शनके सिद्धान्तोंकी झड़ी लगा दी। इन सिद्धान्तोंसे वे उतने ही परिचित जान पड़ते थे, जितने अपने कारखानेके कामोंसे।

"अच्छा, आपके परिवारका क्या होगा ?"—मैंने आग्रहके साथ पूछा—"क्या आप यह नहीं चाहते कि आपकी जीवन-यात्रा जिस रूपमें आरम्भ हुई थी, उससे अच्छे रूपमें आपके बच्चोंकी हो ? यदि आपकी पत्नीके रहते हुए आपकी मृत्यु हो जाय, तो ऐसी अवस्थामें क्या आप उसकी रक्षा करना नहीं चाहते ?"

उन्होंने अधीरताके साथ कहा—"यह आप पूँजीवादी ढंगकी बात कर रहे हैं, मि० विल्की ! मैंने एक मजदूरके रूपमें अपनी जीवन-यात्रा आरम्भ की थी। मेरे बच्चोंकी जीवन-यात्रा भी इसी रूपमें आरम्भ होगी। मेरी पत्नी इस समय काम करती है, और जब तक अच्छी रहेगी, काम करती रहेगी। जब वह काम करनेमें असमर्थ हो जायगी, तो राष्ट्र उसकी देखभाल करेगा।"

"अच्छा, यह तो बताइये कि यदि आप इस कामको अच्छी तरह नहीं कर सकें, तो आपका क्या होगा ?"

उन्होंने इसका उत्तर एक विकट मुसकुराहटके साथ दिया—"मैं जहन्नुममें भेज दिया जाऊँगा।"

मैं जानता था कि इसका मतलब बेकारीसे लेकर मृत्यु तक हो सकता है। मगर यह स्पष्ट ही ऐसा सोच रहे थे कि वह अपने कामको अच्छी तरह नहीं कर सकेंगे, इसकी बहुत कम आशंका है। इसके बाद मैंने दूसरा दृष्टिकोण लेकर उनसे काम लेना चाहा। "मान लीजिए, साधारण समय हो, युद्धकाल नहीं हो और मान लीजिए, आप यहाँ डाइरेक्टरके कामको पसन्द नहीं करें, तो क्या आप इस कामको छोड़कर किसी दूसरी फैक्टरीमें काम पा सकते हैं ?"

"अधिकांश श्रमिक ऐसा ही करते हैं ; किन्तु पार्टीके एक सदस्यकी हैसियतसे मुझे वहाँ कामपर लगे रहना चाहिये, जहाँ पार्टीकी समझमें मैं रहकर बहुत अच्छा काम कर सकता हूँ।"

"अच्छा, मान लीजिए कि आप किसी अन्य प्रकारके कामको करना पसन्द करें, तो क्या आप अपने कामको बदल सकते हैं?"

"यह ऊपरके अधिकारी बतला सकते हैं।"

"मैं समझता हूँ कि आप अपने राष्ट्रके आर्थिक एवं राजनीतिक सिद्धान्तोंसे पूर्णतया सहमत हैं। किन्तु यदि आपके विचार इससे भिन्न हों, तो क्या आप उन्हें व्यक्त कर सकते हैं और उनके लिये लड़ सकते हैं?" इस प्रकारकी सम्भावनापर वह विचार करनेके लिये प्रवृत्त हों, इसके लिये मुझे उनके साथ दस मिनट तक गरम बहस करनी पड़ी; किन्तु इतनेपर भी मेरे प्रश्नके उत्तरमें वह केवल हिचकिचाकर रह गये। अब अधीर होनेकी मेरी बारी आयी और मैंने कुछ उग्र भावसे कहा—"तो वास्तवमें आप लोगोंको कोई स्वतंत्रता नहीं है।"

"मि० विल्की, आप नहीं समझते। मेरे पिता और पितामहको जितनी स्वतंत्रता थी, उससे अधिक स्वतंत्रता मुझे प्राप्त है। वे लोग किसान थे। उन्हें पढ़ना-लिखना सीखनेकी कभी अनुमति नहीं दी गयी। वे लोग जमींदारके गुलाम बने हुए थे। जब वे बीमार पड़ते थे, उनके लिये न तो डाक्टर थे और न अस्पताल। अपने पूर्वजोंकी दीर्घ परम्परामें मैं ही पहला व्यक्ति हूँ, जिसे शिक्षा प्राप्त करने, सब प्रकारसे उन्नति करने और किसी भी पदपर पहुँचनेका सुयोग मिला है।

और मेरे लिये यही स्वतंत्रता है। यह आपको भले ही स्वतंत्रता मालूम न हो; मगर याद रखिये, हम लोग अपनी समाज-व्यवस्थाकी उस स्थितिमें हैं, जो अभी विकसित हो रही है। किसी दिन हम लोगोंको भी राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त होगी।"

मैंने उनपर दबाव डालते हुए कहा—"जहाँ राष्ट्र प्रत्येक वस्तुका मालिक है, वहाँ राजनीतिक या आर्थिक स्वतंत्रता आपको किस तरह प्राप्त हो सकती है?"

इसपर वे अपने सिद्धान्तोंको इस प्रकार उगलने लगे, मानों उसका कभी अन्त ही नहीं होगा। किन्तु मार्क्सवादी उत्तरके सिवा, जिसमें वह अच्छी तरह शिक्षित थे, उनके पास और कोई दूसरा उत्तर ही नहीं था। मगर मेरा जो मौलिक प्रश्न था, उसका कोई उत्तर मार्क्सवादमें है ही नहीं।

जब मैं वहाँसे चलनेके लिये मुड़ा, तो मैंने सहसा मेजर काइटको, जो हमारे वायुयानके आश्चर्यजनक रूपमें सुदक्ष एवं बुद्धिमान चालक थे, वानेससे कहते हुए सुना—"सुनो, हम लोग तब तक यहाँसे बिदा न हों, जब तक कि तुम उस आदमीको समझाकर न कह दो कि मि० विल्की उसको बातोंमें लगानेकी कोशिश कर रहे हैं। यह सच है कि अमेरिकामें रुपयेसे जो कुछ खरीदा जाता है, उसे हम लोग पसन्द करते हैं और कुछ आगे बढ़ना चाहते हैं; किन्तु एकमात्र रुपयेके लिये ही हम काम नहीं करते। मेरे कंधेपर जो परिचय-चिह्न तुम देख रहे हो, वह जिस समय मुझे प्राप्त हुआ था, उस समय मेरे वेतनमें काफी वृद्धि हुई थी और इसके साथ ही मुझे यह रेशमी फीता भी मिला था।" उड़नेमें विशेषता प्राप्त करनेके लिये जो सम्मानसूचक क्रास-चिह्न उन्हें मिला था, उसके रेशमी फीतेकी ओर निर्देश करते हुए—"और इसमें मुझे एक पैसा भी नहीं मिला। आप उनसे कहिये कि मैं पद और वेतन वृद्धिको योंही छोड़ देनेके लिये तैयार हूँ; मगर दस लाख डालरके बदले भी मैं इस रेशमी फीतेको छोड़नेके लिये तैयार नहीं होऊँगा।"

रूसके कृषि-क्षेत्रोंका युद्धके कामके लिये उसी प्रकार उपयोग किया जा रहा है, जिस प्रकार उसकी फैक्टरियोंका। एक युद्धरत राष्ट्रकी सहायता करनेमें ये फार्म या कृषि-क्षेत्र कितने कारगर हो सकते हैं, इस सम्बन्धमें हिटलरने जो अनुमान किये थे, वे बिलकुल गलत सिद्ध हुए। और उनकी इस क्षमताको देखकर आज सारा संसार विस्मित हो रहा है।

जेहेवदे सोवियत से मध्य-एशिया और साइबेरियाके अन्तिम सीमान्त तक हम लगातार कई दिनों तक इन कृषि-क्षेत्रोंके ऊपरसे होकर उड़ते रहे। क्योंकि रूसके ये कृषि-क्षेत्र युद्धके मोर्चेके पश्चात् भागमें लगभग छ हजार मीलमें फैले हुए हैं। मेरा अनुमान है कि इन कृषि-भूमिकी विशालता या उसकी निःसीम विचित्रताकी ठीक-ठीक धारणा बिना आकाशसे देखे किसीको हो ही नहीं सकती। उसके कुछ भागोंमें उस समय अनाजकी फसल लगी हुई थी, जो सुदूर क्षितिज तक फैली हुई थी। फसल लगे हुए इन हरेभरे खेतोंको देखकर हमारा वायुयान-चालक मेजर काइट अपनी जन्मभूमि टेक्सासके वियोगमें विह्वल हो उठा। कृषि-क्षेत्रोंके अन्य भाग, जैसे ताशकन्दके निकटकी सींची गयी समतल भूमि, कैलिफोर्नियाके दक्षिणी हिस्से जैसे दिखायी पड़ रहे थे।

क्यूबिशेवके पास वोल्गा नदीके तटपर मुझे इन कृषि-क्षेत्रोंको नजदीकसे देखनेका मौका मिला। हम नदीमें एक आधुनिक ढंगकी अच्छी-सी नौकापर सवार होकर गये। वृक्षोंसे होकर नदीके किनारेके ऊँचे-ऊँचे मकानोंकी ऊपरी छतें देखी जा सकती थीं। ये सब किसी समय मास्को और लेनिनग्राडके रईसोंकी जमींदारियोंके अन्तर्गत थे, और इस समय मजदूरों के लिये विश्राम-गृह और स्वास्थ्य-निवास बने हुए हैं। उनको देखकर मुझे उन बड़े-बड़े घरोंकी याद आ गयी, जो हडसन नदीकी नौकापर से देखे जाते हैं। मगर वोल्गा हडसनकी अपेक्षा अधिक छली नदी है, और इसका पता मुझे उस समय चला, जब कि नावके माझीने मुझे एक बार नाव खेनेके लिये दिया। सहसा हम लोग नदीके प्रवाहके वेगमें पड़कर क्षिप्र गतिसे किनारेकी ओर जा लगे। हमारी इस अवस्थापर नावका माझी हँसने लगा। नदीकी धारामें लकड़ीके कुन्दोंके बड़े-बड़े बेड़े बह रहे थे। ये तख्ता चीरनेकी मिलोंमें भेजे जा रहे थे। बेड़ोंपर छोटी-छोटी झोपड़ियाँ

तथा मवेशी और मुर्गीके बच्चे उन परिवारोंके लिये थे, जो गर्मीके मौसममें उत्तर-रूसके जंगलोंसे दक्षिणके शहरोंकी तरफ धीरे-धीरे बेड़ोंपर बहते हुए जाते हैं।

क्यूबिशेवमें मुझे बताया गया कि वोल्गा नदीसे विद्युत-शक्तिका उत्पादन करनेके लिये उसके एक मोड़को बाँधकर पानी रोकनेकी योजना तैयार की गयी है। अपनी इस यात्रामें हम वोल्गा नदीके उस भाग तक गये, जहाँ प्रस्तावित योजना काममें लायी जानेवाली थी। मैं उन लोगोंमें नहीं हूँ, जो इस प्रकारकी विशाल सरकारी योजनाओंपर सहज ही विस्मित हो जायँ; किन्तु जब मुझे यह स्पष्ट हो गया कि इस योजनाके पूर्ण होनेपर जिस परिमाणमें विद्युत-शक्ति उत्पन्न होगी, वह अमेरिकाके कई बिजली-घरोंकी शक्तिकी अपेक्षा दूनी होगी, तब मैं इस बातको महसूस करने लगा कि रूसी लोग अपने विशाल जंगलों और चौरस मैदानोंके अनुरूप ही कल्पना करते और योजना बनाते हैं।

वोल्गा नदीके उस मोड़को छोड़कर हम लोग दूरवर्ती एक सामूहिक कृषि-क्षेत्रको देखने गये। यहाँ पहले एक साधारण रईस घरानेकी जमींदारी थी, जहाँ वे लोग शिकार खेला करते थे। इस कृषि-क्षेत्रमें ८ हजार एकड़ जमीन है, जिसपर इस समय पचपन परिवार गुजर करते हैं। इस अनुपातसे प्रत्येक परिवारपर लगभग १४० एकड़ जमीन पड़ती है। इसी मापके औसत कृषि-क्षेत्र अमेरिकाके इंडियाना प्रदेशमें भी पाये जाते हैं। यहाँकी मिट्टी अच्छी है—काली, पुआलसे सनी हुई और उपजाऊ। मगर वर्षा बहुत कम होती है, प्रतिवर्ष लगभग १३ इंच। इंडियानामें लगभग चालीस इंच वर्षा होती है। फसलें बिना खादके ही बोयी जाती हैं और बिल्कुल मशीनके जरिये खेती होती है। गेहूँ, राई और दूसरे छोटे-छोटे अनाज विशेष रूपमें उपजाये जाते हैं। फी-एकड़

औसत साढ़े पन्द्रह बुशल गेहूँ और उससे कुछ कम राई पैदा होती है, जो यहाँकी हालतोंको देखते हुए काफी अच्छी उपज कही जा सकती है। इस औसत पैदावारका हिसाब लगानेके लिये मुझे तथा याइक काविलसको कुछ आँकड़ोंपर ध्यानपूर्वक विचार करना पड़ा और हेक्टर (रूसमें जमीनकी माप) को एकड़में तथा पूड (रूसमें अनाजकी माप) को बुशलमें बदलना पड़ा। फिर अमेरिकाके सिक्केमें फी बुशलका तुलनात्मक दाम कितना हुआ, इसके पता लगानेकी कोशिश हमने छोड़ दी; क्योंकि दामोंके जो आँकड़े दिये गये थे वे, सब रूबल (रूसी सिक्का) में थे, और रूबलके मूल्यमें उस समय बहुत जल्द घटा-बढ़ी हो रही थी और विभिन्न बाजारोंमें उसका मूल्य भी एक समान नहीं था। फिर भी अनाजोंके गुणकी परीक्षा हम कर सकते थे, और हमने उन्हें अच्छा पाया।

फार्मके पचपन परिवारोंमें प्रत्येकको एक-एक निजकी गाय रखनेकी इजाजत दी गयी थी। दुबली-पतली गायोंके झुंडमें सब किस्मकी गायें थीं। वे उन परिवारोंके रहनेके छोटे-छोटे घरोंके पास ही एक सार्वजनिक भूमिमें एक साथ चर रही थीं। उस सामूहिक कृषि-क्षेत्रके अधिकारमें कुल ८०० मवेशीयाँ थे, जिनमें २९० उत्कृष्ट जातिकी गायें थीं और उनकी अच्छी तरह देखभाल की जाती थी। मवेशियोंके रहनेके लिये ईंटोंके बड़े-बड़े खलिहान बने हुए थे; उनके सहन कंक्रीटके और खूँटे बिलकुल आधुनिक ढंगके थे। बछड़ोंकी देखभाल साफ-सुथरी गोशालामें बड़ी दयालुताके साथ की जाती थी। जिन स्त्रियोंके ऊपर उन खलिहानोंकी देख-भालका भार था, उन्होंने मुझे बताया कि किस प्रकार यत्नपूर्वक देखभाल और बच्चोंके उत्पादनकी शिक्षा द्वारा उनकी नस्लें सुधारी जाती हैं।

मैंने उस फार्ममें केवल एक सुगठित शरीरवाले मनुष्यको देखा। वह फार्मका मैनेजर था। मजदूरोंमें अधिकांश स्त्रियाँ या छोटे लड़के-लड़कियाँ

और कुछ वृद्ध मनुष्य थे। रूसके ये कृषि-क्षेत्र ही वहाँके प्रकाण्ड आधार हैं, जिनसे लाल-सेनाके लिये सैनिक भरती किये जाते हैं, और इन सैनिकोंकी स्त्रियाँ और बच्चे ही आज देशके लिये खाना जुटा रहे हैं।

मैनेजर ही फार्मका सर्वेसर्वा था। उसने वैज्ञानिक पद्धतिसे कृषि-शास्त्रकी शिक्षा प्राप्त की थी। साथ ही वह चतुर और दुःसाहसिक भी था। कहाँ किस समय कौन-सी फसलें बोयी जानी चाहिये आदि बातोंकी योजना वह तैयार करता था और कार्यका संचालन करता था। फार्ममें जितने पुरुष, स्त्री और बच्चे थे, सब उसकी हुकूमतमें थे।

दूसरी ओर वह स्वयं फार्मसे सम्बन्ध रखनेवाली योजनाओं और युद्धके आर्थिक प्रयोजनकी पूर्तिके लिये जितना अंश उस फार्मके लिये निर्धारित कर दिया गया था, उतनेकी पैदावारके लिये उत्तरदायी था। सफल होनेपर ही उसके अधिकार एवं पद-मर्यादामें वृद्धि होगी, और यदि वह असफल होगा, तो उसे कठोर दण्ड दिया जायगा।

मैं इन कृषि-क्षेत्रोंमें से किसी एकके आमद-खर्चका हिसाब जाननेके लिये उत्कण्ठित था, और इस सम्बन्धमें मैंने बहुतसे प्रश्न पूछे। मुझे बताया गया कि हरएक मेम्बर कितना काम करता है, इसका ठीक-ठीक हिसाब फार्मके आफिसमें रखा जाता है। एक दिन पूरा काम करनेपर एक इकाई समझी जाती है; मगर विशेष योग्यता दिखलानेवालेको इसके अलावा भी पुरस्कृत किया जाता है। जैसे कोई ट्रैक्टर मशीन चलानेवाला यदि एक दिनमें एक निर्दिष्ट एकड़ जमीनको जोत डालता है, तो उसका काम दो दिनों का समझा जाता है। इसी प्रकार एक निर्दिष्ट संख्यामें अनाजकी आँटियों को बाँधना या निर्दिष्ट संख्यामें गायोंको 'चराना एक अतिरिक्त 'कामका दिन' समझा जाता है।

रूसके अन्य सामूहिक कृषि-क्षेत्रोंके समान इस फार्मने भी सरकारसे भाड़ेपर ट्रैक्टर तथा मशीनके रूपमें सामान लिये थे। भाड़ेकी चुकती फार्म की फसलमें नकदके रूपमें नहीं, बल्कि जिन्समें की जाती है। फार्मको कर भी देना पड़ता है, जो एक तरहका सरकारी लगान होता है। यह कर भी जिन्समें ही दिया जाता है। इन सब खर्चोंको काटकर जो फसल बच जाती है, वह फार्मके मेम्बरोंमें जिसके जितने कामके दिन होते हैं, उसके अनुसार बाँट दी जाती है।

इस अन्तिम वितरणमें हरएक मेम्बरको फसलका जितना हिस्सा मिलता है, उससे वह फार्मकी दुकानसे या तो तैयार माल खरीद सकता है अथवा उसे बेच सकता है। किन्तु सरकारकी ओरसे बराबर किसानोंपर अधिकाधिक रूपमें यह दबाव डाला जाता है कि वे अपनी फसल सीधे सरकारके हाथ बेच दें, यद्यपि सिद्धान्त रूपसे फार्मका टैक्स और मशीनोंका भाड़ा जिन्समें चुकानेके बाद वे अपनी फसल चाहे जहाँ बेचनेके लिये स्वतन्त्र हैं। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि अधिकांश किसानोंके पास, जिनसे मेरी बातचीत हुई थी, काफी पैसे थे, और वे यह नहीं जानते थे कि उसको किस तरह खर्च किया जाय। इसका कारण यह था कि युद्ध और सेनाकी आवश्यकताओंकी पूर्तिमें देशके प्रायः समस्त कल-कारखाने लगे हुए थे, इसलिये दुकानोंमें तैयार माल बहुत कम रह गया था और दिन-दिन घटता ही जा रहा था।

हम लोग फार्मके मैनेजरके घरपर भोजन करने गये। उनकी अवस्था सैंतीस सालकी थी। वह विवाहित थे, और उनके दो बच्चे थे। वह एक छोटे-से साधारण पत्थरके मकानमें रहते थे, जो देखनेमें बहुत-कुछ अमेरिकाके एक समृद्ध कृषि-क्षेत्रके समीप बने हुए वासगृह जैसा ही जान पड़ता था। उन्होंने दिल खोलकर बड़ी प्रसन्नताके साथ हम लोगोंका आतिथ्य-सत्कार

किया। भोजन सादा किन्तु अच्छा और प्रचुर मात्रामें था। मैनेजरकी स्त्रीने, जिसने स्वयं खाना पकाया था, मुझसे उसी तरह खानेके लिये आग्रह किया, जिस प्रकार इंडियानाके खलिहान-घरोंमें मुझसे बहुत बार आग्रह किया गया था। "मि० विल्की, कुछ और खाइये। आपने तो अभी तक कुछ खाया ही नहीं।" अवश्य ही इन सबके साथ वहाँ सदा उपस्थित रहनेवाली वोडका शराब भी मौजूद थी। पानीका कहीं पता नहीं था।

मैंने इस बातको जाननेके लिये मैनेजर और उनकी स्त्रीसे विशेष रूपमें आग्रह किया और फार्मके कुछ श्रमिकोंसे भी इस सम्बन्धमें बातचीत की कि हरएक किसानमें अपनी जमीनका मालिक बननेकी जो प्रबल प्रेरणा होती है, उससे वे मुक्त कैसे हैं ? उनमें से कुछको तो मेरा यह प्रश्न विचित्र जैसा लगा ; मगर मैनेजरने हमें समझाया कि उन्हें तथा उनके अन्य सहकर्मियोंको दासतासे मुक्त हुए अभी एक सौ वर्ष भी नहीं बीते। न तो उनको और न उनके पूर्वजोंको कभी उस जमीनपर मालिकाना हक प्राप्त था, जिसको वे जोता करते थे। इसलिये आज जो व्यवस्था है, उसे वे अच्छा पाते हैं।

बादमें मुझे मालूम हुआ कि यह कृषि-क्षेत्र औसत कृषि-क्षेत्रोंकी अपेक्षा प्राकृतिक साधनोंमें कुछ बढ़ा-चढ़ा है ; किन्तु सोवियेट यूनियनके अन्य २६०,००० कृषि-क्षेत्रोंके समान ही इसका भी परिचालन होता है। अब मैं इस बातको हृदयंगम करने लगा कि रूस जो इस प्रकार सुदृढ़ रूपमें जर्मनों का प्रतिरोध कर रहा है, उसके पीछे ये कृषि-क्षेत्र किस प्रकार मूल कारणके रूपमें काम कर रहे हैं।

रूसके युद्ध-मोर्चेके पीछे वहाँके कृषि-क्षेत्र और कारखाने सहायताके लिये प्रस्तुत हैं। उनकी सारी शक्तियाँ जिस प्रकार युद्धके काममें

संलग्न हो रही हैं, उस प्रकार जर्मनीको छोड़कर संसारमें शायद ही और कहीं होती हों। कारखानों और कृषि-क्षेत्रोंके पीछे वहाँका शासन-यंत्र है, जिसकी बदौलत इन कारखानों और कृषि-क्षेत्रोंके सम्पूर्ण उत्पादन युद्धके कामोंमें लगाये जाते हैं।

इस शासन-यंत्रका एक बहुत ही दिलचस्प और महत्वपूर्ण अंग मुझे मालूम पड़ा वहाँके अखबार। अन्य अंगोंकी तरह इसपर भी सरकारका नियंत्रण है।

मास्कोमें ही मैंने और अमेरिकाके समाचारपत्र-प्रकाशक गार्डनर काउल्सने, जो मेरे साथ थे, अपने जीवनमें पहले-पहल स्त्री-पुरुषोंको समाचारपत्र खरीदनेके लिये कतार बाँधकर खड़े देखा था। दैनिक समाचारपत्र वहाँ लाखोंकी संख्यामें प्रकाशित होते हैं, फिर भी उनकी माँग बनी ही रहती है।

सारे रूसमें छोटे-छोटे शहरोंमें मैंने लोगोंको छोटे-छोटे झुंडोंमें सड़कों पर शीशेके बक्सोंको चारों तरफसे घेरकर खड़े देखा। उन बक्सोंके भीतर वहाँके दो सर्वप्रधान पत्र 'प्रवदा' और 'इजवेस्तिया' की प्रतियाँ आलपीनसे नत्थी हुई थीं। लोग सर्दीमें खड़े होकर भी और आपसमें ठेला-ठेली करते हुए उन अखबारोंको पढ़ना चाहते थे।

जब हम ताशकन्द उड़कर गये थे, उस समय हमारा वायुयान सोवियेट रूसके और किसी दूसरे व्यवसायी वायुयानकी अपेक्षा अधिक तेजीमें उड़ा था। हम लोग ऐसे अमेरिकन थे, जो बहुत वर्षोंके अन्दर मध्य-एशियाके उस नगरमें पहले-पहल देखे गये थे, इसलिये स्वभावतः हम वहाँके लोगोंके लिये कौतूहलकी वस्तु बन गये थे। और यह हम लोग तब तक बने रहे, जब तक कि उन्हें यह न मालूम हुआ कि हम लोगोंने मास्कोके समाचारपत्रोंके ताजे अंक अपने साथ लाये हैं, जो अभी तक ताशकन्दमें

नहीं पहुँचे थे। इन अंकोंके पहुँचनेपर तो हमारे सरकारी मेजबानोंने भी उन्हें पढ़नेके लिये हमारा त्याग कर दिया।

रूसके समाचारपत्रोंके सम्बन्धमें जाननेके लिये मैं विशेष उत्कण्ठित था, और रूसमें जहाँ कहीं मैं गया, मैंने इस सम्बन्धमें प्रश्न किये। मेरा यह विश्वास हो गया है कि रूसके समाचारपत्र वहाँकी सरकारके हाथमें निर्दिष्ट कामके उद्देश्य-साधनके लिये उसी प्रकार एक जबर्दस्त साधन हैं, जिस प्रकार वहाँके स्कूल अन्त तकके लिये। रूसकी वर्तमान सरकारका नियंत्रण गत पचीस वर्षोंसे वहाँके स्कूलों और समाचारपत्रोंपर रहा है, और वह रूसी जनतासे किस हद तक सहायता एवं आत्मत्यागकी माँग कर सकती है, इस सम्बन्धमें जो विदेशी अब भी रूसकी सरकारकी शक्तिकी अवहेलना करते हैं, वे वास्तविकतासे दूर भागना चाहते हैं।

एक रात मास्कोमें मुझे सोवियेट समाचारपत्रोंमें जिस प्रकारके विचार एवं मनोभाव प्रकट किये जाते हैं, उनकी परीक्षा करनेका मौका मिला। मास्कोमें अमेरिकाके जो पत्रकार हैं, वे मेरे जानते बहुत ही सुयोग्य संवाद-दाता हैं। 'न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिब्यून' के वाल्टर केर, 'चिकागो डेली न्यूज' के लेलैण्ड स्टो, 'न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिब्यून' के मारिस हिण्डस, 'न्यूयार्क टाइम्स'के रैल्फ पार्कर, यूनाइटेड प्रेसके शेपिरो, एसोसियेटेड प्रेसके एड्डी गिल्मोर और हेनरी केस्सीडी, नेशनल ब्राडकास्टिंग कंपनीके राबर्ट मैगिडाफ, कोलम्बिया ब्राडकास्टिंग कम्पनीके लेरी लेस्यूयर और 'टाइम एण्ड लाइफ' पत्रके वैली ग्रैबनर—ये सब वहाँ मौजूद थे। मेरा खयाल है कि शायद लण्डनको छोड़कर संसारके और किसी भी दूसरे शहरमें तेज, ईमानदार और कठोर परिश्रमी विदेशी संवाददाताओं और पत्र-कारोंका ऐसा दल नहीं होगा। उनमें कुछ लोगोंने एक रातको सोवियेट पत्रकारोंके एक दलको एकत्र किया और एक कमरेमें हम लोगोंको भोज्य

एवं पेय पदार्थ दिये तथा दुभाषियोंके बीच मुझे बैठा दिया। वहाँ कोई सरकारी अफसर नहीं था और किसी भी विषयपर मनमाना प्रश्न पूछने की मुझे इजाजत दी गयी थी।

सोवियेट पत्रकारोंका जो दल वहाँ मौजूद था, वह बड़ा ही दिलचस्प था। वहाँ सोवियेट संवाददाता और औपन्यासिक इलिया हेरनवर्ग थे, जिनका अधिकांश जीवन फ्रान्समें व्यतीत हुआ है और जो पश्चिम यूरोपका किसी भी विदेशी पत्रकारसे कम ज्ञान नहीं रखते। नौजवान रिपोर्टर और नाटक-रचयिता बोरिस वोयेटिकोव वहाँ थे, जिन्होंने सेवस्टेपूलके पतनके पूर्व उसके अन्तिम क्षण तककी कहानी लिखी है और जो वहाँसे एक पनडुब्बीपर सवार होकर भागे थे। वेलेन्टिना गेनी नामकी एक युवती सोवियेट पत्रकार भी वहाँ थीं। रूसी रुपाका और समझेका बूट पड़ने हुए भीषण चेहरावाले युवक सिमोनोव भी थे। वह उसी दिन स्टालिनग्राडसे मास्को आये थे। वह 'Russian People' (रूसी जनता) नामक नाटकके रचयिता हैं और सम्भवतः वर्त्तमान रूसके सबसे बढ़कर लोकप्रिय पत्रकार हैं। जनरल एलेक्सी इगनेटियेव भी थे, जो साठ वर्षसे अधिक अवस्थाके होनेपर भी देखनेमें बहुत अच्छे मालूम पड़ते थे। सन् १९१७ के विप्लवके पूर्व इन्होंने अपने देशसे बाहर सरकारी सैनिक-दूतके रूपमें काम किया था और इस समय लाल-सेनाके दैनिक समाचारपत्र 'रेड स्टार' के प्रमुख लेखकोंमें से एक हैं।

हम लोगोंने धूम्र-पान किया, गरम चाय पी और रातमें देर तक बातचीत करते रहे। वार्त्तालाप दो दिशाओंसे होकर चल रहा था। उन लोगोंने यूरोपका दूसरा मोर्चा, रुडोल्फ हेस, रूसको अमेरिकासे रसद और युद्धके सामान और भी अधिक मिलनेकी आवश्यकता आदि विषयोंपर प्रश्न पूछ-पूछकर मुझे परेशान कर डाला। वे सब

अच्छे जानकार, उत्सुक, उत्कण्ठित और समालोचक होनेपर भी विरोधी नहीं थे। बादमें मुझे बताया गया कि इस सालके अन्दर यह पहला ही अवसर है, जब कि सोवियेट पत्रकार और एक विदेश आगन्तुकके बीच इस प्रकार दिल खोलकर गैर-सरकारी ढंगसे बातचीत हुई है।

उस संध्याको जो सब पेशेवर लेखक वहाँ उपस्थित थे, उनमें से किसीने भी हम लोगोंके बीच विचारोंका जो आदान-प्रदान हुआ था, उसके सम्बन्धमें विश्वास भंग नहीं किया। और मैं भी अवश्य ही ऐसा नहीं करूँगा। मगर मुझे विश्वास है कि वे लोग मेरे सम्बन्धमें किसी प्रकारका गलत खयाल नहीं करेंगे, यदि मैं अपने जीवनमें कमसे कम एक बार जो बातें मुझे उन पत्रकारोंसे मालूम हुई थीं, उनमें से कुछका वर्णन करूँ।

दो बातें ऐसी हैं, जो उल्लेख करने योग्य हैं। उनमें से पहलीको मैं एक प्रकारके दुराग्रहके सिवा और कुछ नहीं कह सकता। वे लोग किसी भी बातको माननेके लिये तैयार नहीं थे। किसी आदमीको यदि बचपनसे ही स्वेच्छाचार शासन-प्रणालीकी शिक्षा दी जाय, तो वह दो परस्पर-विरोधी भावोंके सिवा और किसी रूपमें सोच ही नहीं सकता।

उदाहरणके लिये, मैंने सिमोनोवसे, जो अभी तुरत स्टालिनग्राडसे लौटे थे, पूछा कि कुछ दिन पहले जेद्दव-मोर्चेपर जर्मन बन्दियोंको देखकर और उनके साथ बातचीत करके मेरे मनपर उनके सम्बन्धमें जैसा दयनीय एवं कुत्सित प्रभाव पड़ा था, वैसा ही प्रभाव स्टालिनग्राडके मोर्चेपर पकड़े गये जर्मन बन्दियोंको देखकर उनके मनपर पड़ा या नहीं? मेरा प्रश्न रूसी भाषामें अनुवादित कर दिया गया; किन्तु उसका कोई उत्तर नहीं मिला। किसी औरने ही मेरी बातको सुना और उसे आगे बढ़ाया।

दुभाषियोंके साथ चन्द हफ्तों तक रहनेके बाद आप वहाँकी किसी भी बातपर आश्चर्यित न होना सीख जायेंगे। इसलिये मैंने अपने प्रश्नको फिर दोहराया। इस बार भी उसका कोई उत्तर नहीं मिला। इस बार मैं तब तक प्रतीक्षा करता रहा, जब तक कि हम लोगोंका वार्त्तालाप आपसे आप जहाँसे आरम्भ हुआ था, वहाँपर पहुँचकर रुक न गया। मैंने फिर तीसरी बार प्रश्न पूछा। जनरल इगनेटियेवने, जो एक शिष्ट एवं आतीथ्य संस्कारोंसे युक्त भद्र पुरुष हैं, अन्तमें मेरे प्रश्नका उत्तर दिया। एकमात्र वे ही ऐसे रूस देशवासी वहाँ उपस्थित थे, जो थोड़ी-बहुत अंगरेजी बोल सकते थे।

"मि० विल्की, आप जो नहीं समझ रहे हैं, वह बिलकुल स्वाभाविक है। जिस समय यह युद्ध शुरू हुआ था, हम लोग जर्मन बन्दियोंकी खोजमें रहा करते थे। हम उनसे जिरह किया करते थे। हम उनसे यह जानना चाहते थे कि वे हमारे देशपर आक्रमण करने क्यों आये हैं? जर्मनोंके सम्बन्धमें और नात्सियोंने उनके लिये जो कुछ किया है, उसके सम्बन्धमें हमें बहुत-सी दिलचस्प बातें मालूम हुईं।

"किन्तु अब वह बात नहीं रही। गत जाड़ेमें जब हम लोगोंका आक्रमण शुरू हुआ और हमने जर्मनोंको पीछे हटाकर उनसे अपने अनेक नगर और ग्राम छीन लिये, तबसे हम जर्मनोंके सम्बन्धमें अन्य रूपमें सोचने लगे हैं। हमने अपनी आँखोंसे देखा है कि जर्मनोंने हमारे घर-द्वार और हमारे लोगोंको कैसी दुर्दशा कर डाली है। आज कोई भी भद्र सोवियेट पत्रकार किसी जर्मनसे बन्दीनिवासमें भी बातचीत करना नहीं चाहता।"

दूसरा उदाहरण लीजिए। मैं चन्द दिनोंसे बड़ी होशियारीके साथ यह सुझाव उन लोगोंके सामने पेश करता आ रहा था कि यदि सोवियट लोग अपने महान संगीत-रचयिता डिमिट्री शस्टाकोविचको एक बार अमेरिका भेजें, तो बड़ा अच्छा हो। पिछली रातको मैंने मास्कोके श्रेष्ठ संगीत-भवनमें, जो ठसाठस भरा हुआ था, उनके सप्तम स्वरमें एक विशिष्ट संगित सुना था। वह एक ऐसा दुर्बोध संगीत था, जिसके बहुत-कुछ अंशको मैं पसन्द नहीं कर सकता; किन्तु उसका आरम्भ जिस रूपमें हुआ था, वह मेरे लिये बहुत प्रभावोत्पादक सिद्ध हुआ।

"हम लोगोंके लिये यह आवश्यक है कि हम परस्पर एक दूसरेको अच्छी तरह जानें।" मैंने कहा—"हम लोगोंको सीखना है कि एक दूसरेको समझ सकें। हम लोग इस युद्धमें सहयोगी हैं और अमेरिकन लोग तब तक आपका साथ नहीं छोड़ेंगे, जब तक कि हिटलर परास्त न हो जाय। मगर मैं चाहता हूँ कि युद्धके बाद शान्ति कालमें भी हम लोग मिलकर काम करें। इसके लिये यह आवश्यक है कि दोनों ओरसे विशेष धैर्य, सहिष्णुता और समझदारीसे काम लिया जाय। शस्टाकोविचको अमेरिका क्यों न भेजा जाय, जहाँ पहलेसे ही उनके बहुतसे प्रशंसक मौजूद हैं और जहाँ वह हम दोनों के सामने परस्पर एक दूसरेको समझनेका जो प्रश्न है, उसके हल करनेमें बहुत-कुछ सहायता पहुँचा सकते हैं?

इस बार सिमोनोवने मेरे प्रश्नका उत्तर दिया।

"मि० विल्की, समझदारीका काम दोनों तरफसे होता है। हम लोगोंने बराबर अमेरिकाके बारेमें जाननेकी कोशिश की है। हमने आप लोगोंसे बहुत-कुछ ग्रहण किया है और अपने श्रेष्ठ व्यक्तियोंको

अमेरिकामें अध्ययन करनेके लिये भेजा है। हम लोग कुछ-कुछ आपके देशके सम्बन्धमें जानते भी हैं; किन्तु उतना नहीं, जितना हम जानना चाहते हैं। फिर भी इतना हम अवश्य समझ सकते हैं कि आप क्यों शस्टाकोविचको अपने देशमें निमंत्रित करना चाहते हैं।

"आप लोगोंको भी अपने कुछ अच्छे आदमियोंको हमारे देशका अध्ययन करनेके लिये भेजना चाहिये। तब आप शायद यह समझ सकेंगे कि क्यों हम लोग आपके निमंत्रणका उत्तर पूर्ण उत्साहके साथ नहीं देते। आप देख रहे हैं कि किस प्रकार हम लोग जीवन-मरणके संग्राममें प्रवृत्त हैं। केवल हमारे अपने जीवन ही अनिश्चित नहीं हो रहे, बल्कि जिस आदर्शने हमारे जीवनको एक पीढ़ीसे गठित किया है, वह भी आजकी रातमें स्टालिनग्राडमें अनिश्चित हो रहा है। ऐसी स्थितिमें हमसे यह प्रस्ताव करना कि हम अपने एक संगीतज्ञको अमेरिका भेजें—जो खुद भी इस युद्धमें फँसा हुआ है और जहाँके मनुष्योंके जीवन भी अनिश्चित हो रहे हैं, आपको उस बातका विश्वास दिलानेके लिये जो बिल्कुल स्पष्ट है, एक प्रकारसे हमारा अपमान करना है। आप इसका कुछ दूसरा खयाल न करें।"

मैं नहीं समझता कि मैंने उनके सम्बन्धमें कोई दूसरा खयाल किया।

उस संध्याकी दूसरी बात जो उल्लेखनीय है, वह है रूसवासियोंका शान्त, स्थिर, विश्वासयुक्त गर्व तथा देश-प्रेम। हम अमेरिकनोंके लिये—जो रूसके विषयमें बहुत वर्षोंसे जितनी भयानक कहानियाँ पढ़ते आ रहे हैं, उतनी और किसी विषयमें नहीं—यह समझना कठिन है कि आज सोवियेट रूसका शासन-कार्य वहाँकी जो पीढ़ी चला रही है, वह अपनी शक्तिसे पूर्ण परिचित है। मध्य-एशिया और साइबेरियामें

में उनकी इस शक्तिसे अत्यधिक प्रभावित हुआ था। यह एक ऐसा गुण है, जिसके सम्बन्धमें मेरा यह खयाल था कि वह विशेष रूपसे अमेरिकामें और खासकर पश्चिममें ही पाया जाता है।

मास्कोमें स्टालिनके साथ मेरी दो बार बहुत देर तक बातचीत होती रही। उस अवसरपर उन्होंने जो कुछ कहा था, उसके अधिकांश का वर्णन करनेके लिये मैं स्वतंत्र नहीं हूँ। मगर स्वयं स्टालिनके सम्बन्धमें कुछ लिखनेके लिये किसी प्रकारकी सावधानीकी आवश्यकता नहीं है। वह वर्त्तमान पीढ़ीके एक विशिष्ट पुरुष हैं।

उनके निमन्त्रणपर एक संध्याको साढ़े सात बजे मैं उनके स्थान पर उनसे मिला। वह अपने सहयोगियोंके साथ बहुधा रातमें ही राय मशविरा किया करते हैं। उनका आफिस जिस बड़े कमरेमें था, वह लगभग अठारह फूट लम्बा और पैंतीस फूट चौड़ा था। उसकी दीवारोंपर मार्क्स, एञ्जिल्स और लेनिनकी तस्वीरें टँगी हुई थीं और लेनिन तथा स्टालिनके एक साथवाले चित्र भी, जैसा कि आप वहाँके प्रत्येक स्कूल, सार्वजनिक भवन, फैक्टरी, होटल, अस्पताल और बालगृहमें पायेंगे। इन चित्रोंके सिवा अनेक स्थानोंमें मोलोटोवका चित्र भी आप पायेंगे। पीछेके एक कमरेमें, जो आफिससे देखा जा सकता था, एक विशाल ग्लोब रखा हुआ था, जिसका व्यास लगभग दस फूट था।

स्टालिन और मोलोटोव एक लम्बे टेबुलके एक छोरपर मेरा स्वागत करनेके लिये खड़े थे। उन्होंने सरल ढंगसे मेरा अभिवादन किया और हम लोगोंने प्रायः तीन घंटे तक युद्धके सम्बन्धमें, युद्धोत्तर कालके सम्बन्धमें, स्टालिनग्राड और युद्धके मोर्चेके सम्बन्धमें, अमेरिकाकी स्थितिके सम्बन्धमें, इंग्लैण्ड, अमेरिका और रूसके पारस्परिक सम्बन्धके

विषयमें तथा और भी बहुतसे महत्वपूर्ण एवं महत्वहीन विषयोंपर बातचीत की।

इसके कई दिनोंके बाद राज्यकी ओरसे मेरे सम्मानमें दिये गये एक भोजक अवसरपर मुझे स्टालिनके पास प्रायः पाँच घंटे तक बैठनेका मौका मिला था। इस भोजमें कितने ही प्रकारके खाना परोसे गये थे। खानेके बाद हम लोगोंने एक दूसरे कमरेमें छोटे-छोटे टेबुलोंके पास बैठकर कहवा पीया, और अन्तमें मास्कोके अवरोध और रक्षाका एक चलचित्र दिखलाया गया।

दूसरे भोजके अवसरपर प्रसंगवश हम लोगोंने दुभाषियोंकी स्वास्थ्य-कामना करते हुए सुरापान किया। हम लोगोंने अपने-अपने देश तथा नेताओंकी शुभकामना करते हुए सुरापान किया; हमने रूसकी जनता और अमेरिकाकी जनताके नामपर तथा भविष्यमें दोनोंके सहयोगकी आशा करते हुए सुरापान किया; और परस्पर स्वास्थ्य-कामना करते हुए सुरापान किया। अन्तमें मेरे मनमें यह आया कि इस भोजमें वस्तुतः जो लोग काम कर रहे हैं और इधर-उधर दौड़-धूप करते हुए हम लोगोंके कथनोंका अनुवाद कर रहे हैं, वे हैं दुभाषिये। इसलिये मैंने प्रस्ताव किया कि उनकी स्वास्थ्य—कामनाके लिये पान किया जाय। फिर मैंने मि० स्टालिनसे कहा—"मुझे उमीद है कि दुभाषियोंकी स्वास्थ्य-कामनाके लिये सुरापानका प्रस्ताव करते हुए मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया है, जो शिष्टाचारके विरुद्ध समझा जाय।" उन्होंने उत्तर दिया—"बिलकुल नहीं, मि० विल्की, हम लोगोंका देश गणतांत्रिक है।"

मैं समझता हूँ, स्टालिन लगभग पाँच फूट और चार या पाँच इंच लम्बे हैं। आकृतिसे किञ्चित स्थूलबुद्धि जैसे मालूम पड़ते हैं।

मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कदमें वे कितने छोटे हैं; मगर उनका सिर, उनकी मूँछें और उनकी आँखें बड़ी-बड़ी हैं। उनका चेहरा जब शान्त होता है, उस समय वह दृढ़ जैसा मालूम पड़ता है। वे सितम्बर महीनेमें क्लान्त-जैसे दिखाई पड़ रहे थे—बीमार-जैसे नहीं, जैसा कि बार-बार खबरें छपा करती थीं। मगर वे अत्यधिक क्लान्त हो रहे थे। और ऐसा होना उनके लिये ठीक ही था। वे शान्तभावसे फौरन बातचीत करने लग जाते हैं और बीच-बीचमें मर्म-स्पर्शी वक्तृत्वशक्तिका भी प्रदर्शन कर देते हैं। जिस समय उन्होंने मुझसे इंधन, यातायातके साधन, सामरिक साज-सज्जा और जन-शक्तिके सम्बन्धमें रूसकी हताशपूर्ण स्थितिका वर्णन किया, उस समय सचमुच उनका वह वर्णन नाटकीय ढंगका हो गया था।

मेरे खयालसे वे एक दृढ़चेता एवं स्थितप्रज्ञ पुरुष हैं। कार्य करनेकी अदम्य प्रेरणा उनके मनमें बराबर होती रहती है। उन्होंने मुझसे अनुसन्धानकारी प्रश्न किये। उनका प्रत्येक प्रश्न भरा हुआ रिवाल्वर जैसा मालूम पड़ता था, मानो वे जिस विषयको जानना चाहते हों, उसके अभिप्रायको उनका वह प्रश्न छिन्न-भिन्न करके उसे स्पष्ट कर डालनेके लिये पूछा गया हो। वे अपने वार्त्तालापसे रसिकता और शिष्टाचारसूचक प्रशंसा-वाक्योंको दूर रखते हैं और कामकी बातोंके सिवा अन्य बातोंकी अधिक चर्चा करना पसन्द नहीं करते।

उन्होंने जब मुझसे विभिन्न कारखानोंमें मेरे भ्रमणके सम्बन्धमें पूछा, तब वे कारखानेके प्रत्येक विभागका विवरण अलग-अलग जानना चाहते थे, न कि उनके काम करनेके ढंग और उनकी कार्यक्षमताके सम्बन्धमें मेरे मोटा-मोटी विचार। जब मैंने उनसे स्टालिनग्राडके बारेमें पूछा, तब उन्होंने युक्तियोंके साथ केवल उसका भौगोलिक

एवं सामरिक महत्व ही नहीं समझाया, बल्कि उसकी सफल या असफल रक्षाका रूस, जर्मनी और मध्य-पूर्वपर जो नैतिक प्रभाव पड़ेगा, उसे भी बताया। रूस स्टालिनग्राडको बचाये रखनेमें सक्षम होगा, इस सम्बन्धमें उन्होंने कोई भविष्यवाणी नहीं की, और इस बातपर भी वह निश्चित थे कि न तो स्वदेश-प्रेम और न केवल वीरता प्रदर्शन द्वारा ही उसकी रक्षा की जा सकती है। युद्धकी जय-पराजय मुख्यतः सैन्य-संख्या, रणकौशल और युद्धके साज-समानपर निर्भर करती है।

उन्होंने बार-बार मुझसे कहा कि उनकी ओरसे जान-बूझकर इस प्रकारका प्रचार-कार्य किया जाता है, जिससे रूसकी जनता नात्सियोंसे घृणा करे। किन्तु इसके साथ ही यह भी स्पष्ट था कि स्वयं वे हिटलरकी उस क्रियाकुशलताके दुःखित मनसे प्रशंसक थे, जिसके द्वारा उसने रूसके कुछ विजित प्रदेशोंसे वहाँके मजदूरोंमें सैकड़े नौजवानोंको जर्मनीमें स्थानान्तरित किया था। और जर्मन सेनाको, खासकर उसके अफसरोंको, बतौर पेशाके जो पूर्ण सैनिक शिक्षा दी जाती है, उसके लिये भी उनके दिलमें आदरका भाव था। वे चर्चिलकी तरह इस मतके समर्थक नहीं हैं कि हिटलर अपने दलके सुयोग्य व्यक्तियोंके हाथकी कठपुतली बना हुआ है। उनका खयाल था कि हम लोगोंको इस बातकी दृढ़तापूर्वक आशा नहीं करनी चाहिये कि जर्मनीका आन्तरिक विरोध और कलहके कारण शीघ्र पतन हो जायगा। उनका कहना था कि जर्मनीको पराजित करनेका उपाय है उसकी सेनाको नष्ट कर डालना। और उनका यह विश्वास था कि सारे यूरोपमें हिटलरकी अजेयताके सम्बन्धमें जो विश्वास फैला हुआ है, उसे नष्ट करनेका एक सफल तरीका है जर्मन नगरोंपर और

विजित देशोंमें उसके द्वारा अधिकृत बन्दरगाहों और फैक्टरियोंपर आकाशसे लगातार बमवर्षा करना।

जब हमने युद्धके कारणोंपर तथा युद्धके बाद जो सब आर्थिक एवं राजनीतिक प्रश्न संसारके सामने उपस्थित होंगे, उनके सम्बन्धमें बातचीत की, तब उन्होंने व्यापक धारणाशक्ति, यथार्थ एवं विस्तृत ज्ञान तथा वास्तविक चिन्तनका परिचय दिया। इसमें सन्देह नहीं कि स्टालिन एक कठोर मनुष्य हैं, शायद क्रूर भी, फिर भी वे एक सुयोग्य व्यक्ति हैं। उनमें छल-कपटके भाव नहींके बराबर हैं।

अमेरिकाकी उत्पादन प्रणालीकी कुशलताकी वे जिस रूपमें प्रशंसा करते हैं, उससे वहाँके शिल्पियोंकी राष्ट्रीय संस्थाको पूर्ण संतोष प्राप्त होगा। किन्तु युद्ध चलानेके सम्बन्धमें गणतांत्रिक प्रणालीकी जो बाधायें और जटिल विधियाँ हैं, उन्हें वे नहीं समझते। उदाहरणके लिये उन्हें इस बातपर आश्चर्य होता था कि गणतांत्रिक राष्ट्र युद्धके कामोंके लिये जो सब स्थान उनके लिये सामरिक दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण हों और जिन राष्ट्रोंका उनपर अधिकार हो वे सहयोग प्रदान करनेवाले न हों और न उन सब स्थानोंकी रक्षा करनेमें समर्थ हों, उनका उपयोग करनेके लिये वे जोर क्यों नहीं डालते।

आम तौरसे जैसा समझा जाता है, उसके विरुद्ध, विन्सटन चर्चिलके लिये स्टालिनके हृदयमें विशेष आदरका भाव है। उन्होंने अपना यह आदरका भाव मुझसे प्रकट भी किया, और यह आदर-भाव उसी प्रकारका था, जिस प्रकारका एक महान् वास्तववादी व्यक्तिके प्रति दूसरे महान् वास्तववादी व्यक्तिका होना चाहिये।

व्यक्तिगत रूपमें स्टालिन एक सीधे-सादे मनुष्य हैं—मिथ्या कपट आवरण या विशेष भाव-भंगियोंसे बिलकुल परे। किसी कृत्रिम

आचरण द्वारा प्रभावित करनेकी चेष्टा वे नहीं करते। उनकी विनोदकी प्रवृत्ति जबरदस्त है और वे स्थूल उपहास एवं व्यङ्गपूर्ण उक्तियों पर फौरन हँस पड़ते हैं। एक बार मैं उनसे उन सोवियट स्कूलों और पुस्तकालयोंके सम्बन्धमें चर्चा कर रहा था, जिन्हें मैंने देखा था और जो मुझे बहुत अच्छे लगे थे। और इसके बाद मैंने यह भी कहा—"किन्तु यदि आप रूसकी जनताको इसी प्रकार शिक्षित बनाते रहेंगे, मि० स्टालिन, तो पहली बात जो आप सीखेंगे, वह यह होगी कि आप अपनेको ही अपने कामसे अलग पायेंगे।"

वे अपने सिरको पीछेकी ओर करके खूब हँसे। दो दिन देर तक संध्याकालमें हम लोगोंके बीच जो बातचीत हुई थी, उसमें मेरे किसी कथनपर या किसी दूसरे व्यक्तिके कथनपर उनका उतना मनोविनोद नहीं हुआ था, जितना इस बार मेरे उपर्युक्त कथनपर।

यह कुछ विचित्र जैसा लगता है कि स्टालिन हल्के रंगकी पोशाक पहनते हैं। उनकी विख्यात फौजी पोशाक बहुत अच्छे कपड़ेकी और मुलायम हरे रंग या सुकुमार गुलाबी रंगकी होती है। उनका ढीला पाजामा हल्का पीले या नीले रंगका होता है। जूता काले रंगका और खूब चमकदार। वे साधारण सामाजिक हास-विलासकी बातोंसे कुछ खिचे-से रहते हैं। पहली बारकी बातचीतके बाद जब मैं उनसे बिदा हो रहा था, उन्होंने मुझे मिलनेका जो समय दिया था और मेरे साथ निश्छल भावसे वार्त्तालाप करके मेरा जो सम्मान किया था, इसके लिये मैंने उनके गुणोंकी प्रशंसा की। इसपर कुछ झेंपते हुए वे बोले :

"मि० विल्की, आप जानते हैं, जार्जियाके एक किसानके रूपमें मेरे जीवनका विकास हुआ है। सुन्दर ढंगसे बातचीत करनेकी कलामें

मैं अपटु हूँ। फिर जो कुछ मैं कह सकता हूँ, वह इतना ही है कि मैं आपको बहुत चाहता हूँ।"

स्टालिन जिस प्रकार सीधे-सादे ढंगसे रहा करते हैं, उसका अनिवार्य प्रभाव वहाँके अन्य नेताओंपर भी पड़ा है। खासकर मास्को और क्यूबिशेवमें रूसके नेताओंमें तड़क-भड़कका जो अभाव पाया जाता है, वह विशेष रूपसे ध्यान देने योग्य है। ये सब नेता साधारण ढंगकी पोशाक पहनते हैं। वे बोलते बहुत कम हैं और दूसरेकी बातोंको अच्छी तरह ध्यानपूर्वक सुनते हैं। आश्चर्यकी बात तो यह है कि उनमें बहुतसे चालीस वर्षसे भी कम अवस्थाके हैं। यह मेरा अनुमान ही है, जिसे मैं किसी प्रकार प्रमाणित नहीं कर सकता कि स्टालिन क्रेमलिनमें अपने बिलकुल आसपास रहनेवाले नौजवानोंको बदलते रहना ज्यादा पसन्द करते हैं। वस्तुस्थितिसे आगाह रहनेका यही उनका ढंग है।

जिन दूसरे नेताओंके साथ मैंने विस्तारपूर्वक बातचीत की थी, उनमें परराष्ट्र-सचिव मोलोटोव, उनके सहायक ऐन्ड्री विशिन्स्की और सालोमन लोजोवस्की, देशरक्षा-विभागके भूतपूर्व कमिसार मार्शल वोरोशिलोव तथा विदेशी वाणिज्य-विभागके प्रधान अनस्टेसिया मिकोयन थे। इनमें प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति हैं, अपने देशसे बाहरकी दुनियासे दिलचस्पी रखते हैं और हम लोग अपने यहाँके व्यङ्गचित्रोंमें जिस प्रकारके अद्भुत जंगली रूसियोंको देखते हैं, उनसे आकृति, चाल-ढाल और बोलीमें सर्वथा भिन्न हैं।

क्यूबिशेवमें मि० विशिंस्कीने मेरे सम्मानमें एक भोज दिया था। चार-पाँच साल पहले रूसमें वहाँके कम्यूनिस्ट नेताओंपर देशद्रोहका जो मामला चला था, उसमें ये ही प्रधान सरकारी वकील थे। उनके सफेद बाल, अध्यापक जैसा उनका चेहरा और उनके शान्त चिन्ताशील

ढंगको देखकर मैं आश्चर्य करने लगा कि क्या यह वही व्यक्ति है, जिसने रूसी विद्रोहके कुछ पुराने विश्वस्त व्यक्तियोंको हत्या एवं देशके प्रति विश्वासघात करनेके अभियोगपर प्राणदण्ड दिलवाया था।

जब कभी रूसके प्रमुख व्यक्तियोंके साथ सन्धिके सम्बन्धमें या युद्धके बाद दुनियाको क्या करनेके लिये तैयार होना चाहिये, इस विषयको लेकर बातचीत हुई, इन्होंने अपनी बातचीतमें पूरी समझदारी और राजनीतिज्ञताका परिचय दिया।

मेरे अमेरिका छोड़नेके बाद मि० स्टालिनने यूरोपियन युद्धमें अमेरिका और सोवियेट रूसके पारस्परिक सहयोगका कार्यक्रम क्या होना चाहिये, इसकी स्पष्ट व्याख्या कर दी है। उनके विचारसे दोनोंके सहयोगके उद्देश्य निम्नलिखित होने चाहिये :

"जातिगत वर्जनकी भावनाका सम्पूर्ण परित्याग, राष्ट्रोंकी समानता और उनके प्रदेशोंकी अखण्डताको अक्षुण्ण रखना, जिन राष्ट्रोंकी स्वतंत्रताका अपहरण किया गया है, उनकी स्वतंत्रता और स्वराज्यकी पुनः प्रतिष्ठा करना, प्रत्येक राष्ट्रको अपने देशका शासन-प्रबन्ध वह जिस रूपमें चाहे करनेका अधिकार है इस बातको मान लेना, क्षतिग्रस्त राष्ट्रोंका आर्थिक सहायता प्रदान करना और उन्हें अपनी भौतिक उन्नति प्राप्त करने, गणतांत्रिक स्वतंत्रताकी पुनः प्रतिष्ठा करने तथा हिटलरकी शासन-पद्धतिका विध्वंस करनेमें सहायता देना।"

कुछ लोग पूछ सकते हैं : स्टालिन जो कुछ कहते हैं क्या वही उनका वास्तविक अभिप्राय है? कुछ लोग हमारा ध्यान इस बातकी ओर दिलायेंगे कि अभी दो ही साल तो बीते हैं, जब कि रूसने अपनी स्वार्थ-साधनाके लिये जर्मनीके साथ समझौता किया था। मैं सामरिक, राजनीतिक, क्षणिक या किसी दूसरी दृष्टिसे की गई इस प्रकारकी स्वार्थ-

साधनाके पक्षमें कुछ कहना नहीं चाहता। क्योंकि मेरा विश्वास है कि इस प्रकारकी स्वार्थ-साधनासे जो नैतिक क्षति होती है, वह क्षणिक लाभसे कहीं बढ़कर होती है। और मेरा यह भी विश्वास है कि इस तरहकी सुविधा प्राप्त करके बचाये गये प्रत्येक रक्तबिन्दुके लिये युद्धमें हमें बीस रक्तबिन्दु बहाने पड़ते हैं। मगर एक रूसदेशवासी भी तो, जो यह समझता है कि जर्मनीके साथ सन्धि करके उसके देशने अपने लिये समयकी सुविधा प्राप्त की थी, अपनी ओर अँगुली उठानेवाले गणतंत्र राष्ट्रोंको म्यूनिककी याद दिला सकता है और साथ ही इसके इस बातकी भी याद दिला सकता है कि संयुक्त-राष्ट्रने सन् १९३७ और १९४० के बीच ७० लाख टन सर्वोत्तम लोहा जापानको चालान किया था।

स्टालिनके कथनकी सत्यताकी माप हम इन बातोंको मद्दे नजर रखते हुए अच्छी तरह कर सकते हैं कि अपनी पितृभूमिकी रक्षामें लाखों रूस देशवासी प्राणदान कर चुके हैं और ६ करोड़ रूसी नात्सियोंके गुलाम बन गये हैं; रूसके लाखों स्त्री-पुरुष और बच्चे मोर्चेपर लड़नेवाले योद्धाओंके निमित्त युद्धके सामान तैयार करने और उत्पादन करनेके लिये कारखानोंमें प्रति सप्ताह चौंसठ घंटे सरगर्मीसे काम कर रहे हैं; और नात्सियोंकी पहुँचके बाहर सैकड़ों मील दूर अपनी बड़ी-बड़ी फैक्टरियोंको स्थापित करनेमें स्थाना वे किस प्रकार आश्चर्यजनक रूपमें सफल हुए हैं। क्योंकि स्टालिनके उद्देश्यकी सर्वोत्तम व्याख्या हमें वहाँकी जनताके मनोभावमें ही मिल सकती है।

गणतांत्रिक राष्ट्रोंमें ऐसे कितने ही राष्ट्र हैं, जो सोवियेट रूसके प्रति सशंकित बने रहते हैं और उसपर विश्वास नहीं रखते। वे वहाँकी आर्थिक व्यवस्थाके आक्रमणोंसे इसलिये डरते हैं कि कहीं वह उनकी अपनी आर्थिक व्यवस्थाके लिये विघातक न सिद्ध हो। किन्तु इस

प्रकारकी आशंका कमजोरीके सिवा और कुछ नहीं है। रूस न तो हमको भ्रमित करने जा रहा है और न हमें बहकाने जा रहा है। और यह इसलिये—और यह बात हमारे लिये विचारणीय है—कि जब तक हमारे गणतांत्रिक राष्ट्र और हमारी स्वतंत्र अर्थनीति बुराई और अपनी व्यावहारिक असफलताके कारण इतने दुर्बल न हो जायँ, जिससे हम रूस और दूसरे राष्ट्रोंके लिये सहज ही आक्रमणीय बन जायँ, तब तक ऐसा नहीं हो सकता। कम्यूनिज्मका सबसे अच्छा जवाब है सजीव, स्पन्दन-शील एवं निर्भीक गणतंत्र—आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सभी क्षेत्रोंमें। हम लोगोंके लिये जो कुछ करना आवश्यक है, वह इतना ही कि हम अपने स्वीकृत आदर्शोंके अनुसार कार्य करनेके लिये प्रस्तुत हो जायँ। तभी उन आदर्शोंकी रक्षा हो सकती है।

नहीं, रूससे भय करनेकी हमें आवश्यकता नहीं। हम दोनोंका जो समान शत्रु हिटलर है, उसके विरुद्ध रूसके साथ मिलकरके कार्य करना हमें सीखना होगा। युद्धके बाद भी संसारमें रूसके साथ मिलकर कार्य करना हमें सीखना होगा, क्योंकि रूस एक प्रचण्ड गतिशील देश है, एक सजीव नूतन समाज है, एक शक्ति है, जिसकी भावी जगतमें उपेक्षा नहीं की जा सकती।

याकुत्स्कका प्रजातंत्र

सोवियेट यूनियनका राज्य बहुत विशाल है। संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका, कनाडा और मध्य अमेरिका इन तीनोंको मिलाकर भी वह बड़ा है। यहाँ विभिन्न जातियों और वर्गोंके लोग बसते हैं और बहुत-सी भाषायें बोलते हैं।

साइबेरिया प्रदेशके एक प्रजातंत्र राज्य याकुत्स्कमें मुझे ऐसे कुछ प्रश्नोंके उत्तर मिले, जो प्रश्न रूसके सम्बन्धमें अमेरिकनों द्वारा आम तौरसे पूछे जाते हैं।

याकुत्स्कमें मैंने ऐसी बहुत-सी बातें देखीं, जो सारे रूसके लिये लागू नहीं होतीं। सीमान्तकी अवस्थायें, सर्द आबहवा, मुफ्तमें मिलनेवाली बेहद ज़मीन और जनतामें आगे बढ़कर मार्ग परिष्कार करनेकी भावना—ये सब बातें सारे सोवियेट यूनियनमें नहीं पायी जातीं। किन्तु इन भिन्नताओंके होते हुए भी याकुत्स्कके अतीतकी कहानी और उसके वर्त्तमानका जो रूप मैंने देखा, उससे रूसकी क्रान्तिके सम्बन्धमें मैंने नई बातें सीखीं।

याकुत्स्क एक बड़ा देश है। आयतनमें वह अलास्काका दुगुना होगा। यहाँकी आबादी बहुत ज्यादा नहीं, इस समय सिर्फ ४००,००० के लगभग है; किन्तु इसकी अपेक्षा बहुत अधिक जनसंख्याका भरण-पोषण करनेके लिये इसके पास पर्याप्त साधन हैं। सोवियेट रूसने इस प्रदेशको क्रमशः उन्नतिशील बनानेका प्रयत्न आरम्भ कर दिया है,

और उनके प्रयत्नोंको देखकर मुझे ऐसा लगा कि इतने वर्षोंसे मास्को और न्यूयार्कमें जो राजनीतिक वाद-विवाद होते आये हैं, उनकी अपेक्षा ये प्रयत्न दुनियाके लिये और अमेरिकाके लिये कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

पहले याकुत्स्कके अतीत इतिहासपर विचार कीजिए। याकुत्स मंगोल जातिके थे, जो उत्तरकी ओर फैलते गये, जैसे-जैसे चंगेज खाँ पश्चिमकी ओर बढ़ता गया। उनके जातिगत विशिष्ट गुण उनके गालोंकी ऊँची हड्डियाँ, उनकी तिरछी आँखें और काले बाल आज भी उनमें पाये जाते हैं। उनमें अधिकांश लोग लोमके लिये पशुओंको फँसाते अथवा मिट्टीसे सोना निकालते थे। वे झोपड़ियोंमें रहा करते थे, जिनकी छतें बहुत नीची होती थीं, जमीन धूलसे भरी हुई और आगके धुयेंसे धूमिल। इन झोपड़ियोंमें मवेशी और मनुष्य एक साथ रहा करते थे, जिससे क्षयरोगके कीटाणु वहाँ सहज ही उत्पन्न हो सकते थे। जाड़ेमें वे मछली और कन्द-मूलपर गुजर करते थे। बार-बारके दुर्भिक्ष और रोगने उन लोगोंका सर्वनाश कर डाला था, जो किसी समय साहसी जाति समझे जाते थे। जारोंके शासनकालमें याकुत्स्क उपदेश, वस्त्र और पशु-लोमके लिये प्रसिद्ध था।

रूसी लोग धीरे-धीरे इस देशमें आये, और हाल तक उनकी संख्या अधिक नहीं थी। सेण्ट पिटर्सबर्ग (इस समयका लेनिनग्राड) की सरकार अपने बहुतसे कैदियों और राजनीतिक बन्दियोंको याकुत्स्क भेजा करती थी। बहुतसे रूसी लेखकोंने; जिन्होंने वहाँके कटु जीवनको भोग किया था, वहाँसे मुक्त होनेपर इसके सम्बन्धमें लिखा है। और इसलिये याकुत्स्क 'जन-कारागार'के नामसे विख्यात था।

संयोगवश, जिस समय हम लोग वहाँ थे, हम लोगोंकी परिचर्याके लिये जो सेविकायें नियुक्त थीं, उनमें मैंने सोवियेट यूनियनके कुछ

वर्तमान निर्वासितोंको भी पाया। खासकर एक पोलिश स्त्रीने सोवियेट पद्धतिके सम्बन्धमें मुझे जो विवरण दिया, उसका सरकारी प्रचार-कार्यके साथ मुश्किलसे मिलान हो सकता था।

पहली सितम्बरको ही जब हमारे वायुयानने याकुत्स्क प्रजातंत्रकी राजधानी याकुत्स्क शहरमें वायुयानके अड्डेपर अवतरण किया, वहाँकी भूमि बर्फसे आच्छादित हो चुकी थी। हम घंटों तक वन-भूमिके ऊपरसे ही होकर उड़ते रहे। साइबेरियाके उत्तर भागमें उत्तर-मेरुप्रदेश तक यह वन-भूमि फैली हुई है। यह वन-भूमि आकाशसे विस्तृत, ठंढी और जनशून्य जैसी दिखायी पड़ती है। बीच-बीचमें कहीं-कहीं कदाचित कोई सड़क दिखायी पड़ती है, अन्यथा मीलों तक बर्फ और वृक्षोंके सिवा कुछ नजर ही नहीं आता।

जब हमारा वायुयान भूमिपर स्थिर हुआ, वहाँ जो थोड़ेसे लोग एकत्र थे, उनमें से एक आगे बढ़कर आया।

"मेरा नाम मुराटोव है," उसने कहा। "मैं याकुत्स्कके सोवियेट समाजवादी प्रजातंत्रकी जन-परिषद्का सभापति हूँ। मुझे मास्कोसे कामरेड स्टालिनके आदेश मिले हैं कि जब तक आप यहाँ रहें, आपकी देखरेख करता रहूँ; आप जो कुछ देखना चाहें, आपको दिखाऊँ, और आप चाहे जो कुछ पूछ-ताछ करें, उसका उत्तर दूँ। स्वागत।"

उनका भाषण संक्षिप्त था; किन्तु उसमें ही उन्होंने जो कुछ कहना था, कह दिया। उस अड्डेपर एक दर्जनसे कम ही आदमी खड़े थे; मगर उनकी भाव-भंगी ऐसी जान पड़ रही थी, जैसे किसी विदेशी आगन्तुकका बैंड बाजा और गार्डस् आफ आनरके साथ स्वागत करनेके लिये कोई सैनिक अधिकारी खड़ा हो।

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और समझाया कि हम लोग वहाँ थोड़ी ही देर ठहरेंगे ; क्योंकि उसी दिन बाकी समयमें हम लोगोंको अपनी यात्राका एक हजार मील तय करना है ।

"आप आज नहीं जा रहे हैं, मि० विल्की," उन्होंने उत्तर दिया, "और शायद कल भी नहीं। मौसमकी जो रिपोर्ट मिली है, वह अच्छी नहीं है, और मुझे जो हिदायतें दी गयी हैं उनमें एक यह भी है कि आप यहाँसे अपने दूसरे पड़ावपर सकुशल पहुँच जायँ, इस बातका मैं पूरा खयाल रखूँ। अगर मुझसे इसमें गफलत होगी, तो मैं अपने कामसे बर्खास्त कर दिया जाऊँगा।"

काले रंगकी एक बहुत बड़ी बंद सोवियट मोटर गाड़ीपर हम वहाँसे पाँच या इससे अधिक मील दूर याकुत्स्क शहरमें पहुँचे। रास्तेमें मुराटोवने अपने प्रजातंत्रकी खूब बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा करना शुरू कर दिया, और जब तक मैं उनके साथ रहा, उन्होंने इसमें एक क्षणके लिये भी विराम नहीं होने दिया। उनके उस उत्साहमें चालाकी या धूर्तताके लिये कोई स्थान नहीं था।

"याकुत्स्कमें आप क्या देखना पसन्द करेंगे, मि० विल्की?"—शहरके नजदीक पहुँचनेपर उन्होंने पूछा।

"क्या आपके इस शहरमें कोई पुस्तकालय है?"

"हाँ, अवश्य है।"

हम सीधे उस पुस्तकालयमें चले गये और मुराटोव अपने कोट और टोपीको उतारनेके लिये एक क्षण भी ठहरे बिना हम लोगोंको वाचनालयमें ले गये। किन्तु दरवाजेके पास एक छोटे कदकी स्त्रीने, जो देखनेमें विचारशील जैसी मालूम पड़ती थी, बड़ी शिष्टताके साथ हम लोगोंको रोक दिया। मुराटोवके एक सरकारी अफसर जैसे तौर-तरीकाको

देखकर भी उसे किसी प्रकारका संकोच नहीं हुआ। उसने शिष्टता-पूर्वक किन्तु दृढ़ताके साथ कहा—"यहाँ हम लोग केवल पढ़नेकी आदत डालनेकी शिक्षा देनेका ही प्रयत्न नहीं कर रहे हैं, बल्कि शिष्ट व्यवहारकी भी। कृपया आप लोग नीचे जायँ और कमरेमें अपने कोट और टोपियोंको उतार डालें।" सुराटोवने कुछ सतम्भित-से होकर उसके साथ वाद-विवाद करना शुरू किया; मगर इस वाद-विवादके फल-स्वरूप वह जो कुछ रियायत प्राप्त कर सके, वह इतनी ही थी कि नीचे न जाकर हम लोग वहीं उसके आफिसमें अपने कोट और टोपियोंको रख सकते हैं। मुझे ओरकी हँसी जैसी आ गयी। सारे रूसमें यह पहला ही मौका था, जब कि मैंने एक विशिष्ट रूसी अफसरको इस प्रकार चलते समय रोका जाते हुए देखा था।

एक पुराने मगर हवादार और प्रकाशपूर्ण स्वच्छ मकानमें याकुत्स्क शहरका, जिसकी कुल आबादी पचास हजार है, वह पुस्तकालय अवस्थित था। पुस्तकालयमें पुस्तकोंकी संख्या ५५०,००० थी। कर्मचारियोंकी संख्या भी पर्याप्त थी। किताबोंके रखनेके ताक लकड़ीके बने हुए थे। वाचनालयमें पुस्तकोंको पहुँचानेके लिये जो मशीन थी, वह पुराने जमानेके देहाती कुयेंकी तरह काम कर रही थी। पुस्तकोंके सूचीपत्र आधुनिक ढंगके और पूर्ण थे। रजिस्टर देखनेसे पता चला कि गत नौ महीनेके अन्दर एक लाखसे अधिक मनुष्य वहाँ पढ़ने आये थे, जिनमें बहुतसे आसपासके देहातोंके थे। विशेष रूपमें प्रदर्शन योग्य वस्तुयें दीवारोंसे लटकी हुई थीं। खुले ताकोंपर सोवियेट पत्रिकायें और रोजमर्रेकी काम आनेवाली पुस्तकें रखी हुई थीं। वहाँके वायुमंडलसे ही इस बातका पता चल जाता था कि सब काम बड़ी निपुणताके साथ किये जाते हैं। यह एक ऐसा पुस्तकालय था,

जिसको लेकर याकुत्स्क जैसा कोई भी शहर अपनेको गौरवान्वित समझ सकता है।

हमारा होटल—जो एक याकुत्स्कका एकमात्र होटल था—एक नये मकानमें था, जो लकड़ीके कुन्दोंका बना हुआ था। उसके हरएक कमरेमें एक-एक रूसी ढंगका चूल्हा था। होटल हृष्ट चेहरेवाले मनुष्योंसे भरा हुआ था, जो चमड़ेके कोट और बारहसिंघाके रोयेंसे बने हुए बूट जूते पहने हुए थे। लड़कियोंके कपोल रक्तवर्णके थे और अपने सिरके चारों तरफ वे रूमाल बाँधे हुए थीं। वे अजीब ढंगसे सीधे हम लोगोंकी तरफ देख रही थीं और बेतहाशा हँस रही थीं। हम लोग विदेशी जो थे।

याकुत्स्क शहर बहुत-कुछ अमेरिकाके एक पीढ़ी पहलेके पश्चिमी शहर जैसा मालूम पड़ता था। सचमुच यहाँके जीवनको देखकर मुझे अपने जीवनके प्रारम्भके दिनोंकी याद आ गई, जब कि हमारी रुचि सरल एवं स्वस्थ थी, हमारी मनोवृत्ति बहुत सूक्ष्म नहीं बन गई थी और हमारी प्राणशक्ति प्रचण्ड बनी हुई थी। बड़ी सड़कोंके फुटपाथ काफी चौड़े थे, जिनको देखकर मुझे एलवुडकी सड़कोंकी याद आ गई, जिन्हें मैंने अपने बचपनमें देखा था। यहाँके घर भी साफ-सुथरे थे। उनकी खिड़कियोंसे होकर काफी रोशनी अन्दर जाती थी और चिमनियोंसे मुलायम धुँआ बाहर निकलता था।

फिर भी यहाँ ऐसी बहुत-सी चीजें इस बातकी याद दिलानेके लिये थीं कि यह साइबेरिया है, मिन्नीसोटा या विसकोनसिन नहीं। अधिकांश घर लकड़ीके कुन्दोंके बने हुए थे, जिनके बीच जानवरोंके रोयें भरे हुए थे और उनके बाहरी हिस्सोंमें साइबेरियाके और सब घरोंकी तरह ही मीनाकारी की हुई थी।

खाना भी साइबेरियाका ही था। जलपानके दस्तूरपर भुना हुआ एक संपूर्ण सूअरका बच्चा, डब्बोंमें भरे हुए मसालेदार मांस, अंडे, पनीर, शोरबा, मुर्गीके बच्चे, बछड़ेका मांस, टोमाटो, अचार, शराब और वोडका शराब, जो इतनी तीक्ष्ण कि रूसी लोगोंको भी उसमें पानी डालना पड़ता था। प्रत्येक बार हम लोगोंको बहुत ज्यादा खाना परोसा जाता था। जलपानके समय वोडका शराब और तमाम दिन गरमागरम चाय। याकुत्स्क एक सर्द मुल्क है, और इन लोगोंने हमारे होटलके बाहर जो कुछ खाया, वह प्रचुर परिमाणमें था।

मुझे यह जाननेका कौतूहल हुआ कि यहाँके लोगोंके आमोद-प्रमोदके साधन क्या हैं।

"क्या आपके यहाँ कोई थियेटर है?"—मैंने मुराटोवसे पूछा। थियेटर वहाँ था, और हम लोग कुछ देरकर शामको वहाँ गये। उन्होंने मुझे बताया कि तमाशा नौ बजेसे शुरू होता है। खाना खाकर हमने वोडका पीया और फिर बातचीत करते रहे। इसी समय एकाएक खयाल आया कि नौ तो बज चुके हैं।

"आपने तमाशा शुरू होनेका समय क्या बताया था?"—मैंने उनसे पूछा।

"मि० विल्की," उन्होंने जवाब दिया—"जब मैं वहाँ पहुँचता हूँ, तभी तमाशा शुरू होता है।"

और हुआ भी ऐसा ही। इस बार किसीने उन्हें दरवाजेपर रोका भी नहीं। हम लोग आध घंटा देर करके अपने स्थानपर पहुँचे और अपनी जगहपर बैठ गये। हमारे बैठते ही पर्दा उठा। लेनिनग्राडसे एक नाटक कम्पनी वहाँ आई हुई थी, जिसकी ओरसे गीतिनाट्यका प्रदर्शन किया गया था। नृत्यका प्रदर्शन उत्कृष्ट रूपमें हुआ था, अभिनय भी

सुन्दर और गाना भी अच्छा था। दर्शक लोग हर्षध्वनि करके अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहे थे, हालांकि हाल पूरा भरा हुआ नहीं था। इस शहरमें लगातार दो रातोंसे यही गीतिनाट्य अभिनीत हो रहा था।

उस रातको थियेटरमें जो नौजवान दर्शक उपस्थित थे, उनसे युद्ध बहुत दूर हटा हुआ था। और उसी तरह कम्यूनिज्मका मतवाद भी रंगसंच प्रेम, ईर्षा और नृत्यके दृश्योंसे परिपूर्ण था। नाटकके अंकोंके बीच-बीचमें जब पर्दा गिर जाता था, दर्शक लोग अपनी प्रणयिनियोंके साथ हाथमें हाथ डाले हुए थियेटरके चारों तरफ बन-ठनकर चक्कर लगाते फिरते थे, जैसा कि रूसी दर्शक बराबर किया करते हैं।

इससे पहले गोधूली-कालमें, वर्षाके ऊपरसे होकर चलते हुए हम वहाँका म्यूजियम देखने गये थे। वहाँ हमें ऐसी अनेक वस्तुयें देखनेको मिलीं, जो युद्धकी स्पष्ट याद दिला रही थीं। दीवारोंपर जो चार्ट टँगे थे, उनसे मालूम होता था कि स्कूल, अस्पताल, मवेशी और खुदरा व्यापारमें जो क्रमशः वृद्धि हो रही थी, वह सब एकाएक सन् १९४१ के जूनमें आकर बन्द हो गई, मानो देशके जीवनने ही उन्हें बन्द कर दिया हो। और मेरे प्रत्येक प्रश्नके उत्तरमें वे यही कैफियत देते थे कि यदि जर्मन लोगोंने हमारी सब प्रकारकी स्वाभाविक प्रगतिमें अस्थायी भावसे रुकावट नहीं डाली होती, तो अब तक हम कितनी अधिक उन्नति कर पाते।

मुराटोवने मुझे म्यूजियममें असली सोनेके नमूने दिखलाये, जो इस समय याकुत्स्ककी सबसे बड़ी सम्पत्ति हो रहा है, और 'कोमल सोना" अर्थात् पशु-लोमके नमूने भी, जिसका स्थान वहाँकी कीमती पैदावारोंमें दूसरा है। नेवला-जातिके एक जानवरके लोम, लोमड़ी और भालूके चमड़ोंके साथ-साथ वहाँ उत्तर-मेरुप्रदेशके खरगोशों और सफेद गिलह-

रियोंके छोटे-छोटे मुलायम लोमयुक्त चमड़े भी थे। उन्होंने बताया कि चमड़ा खराब न हो, इसके लिये इन जानवरोंकी आँखोंपर गोलीका निशाना लगाया जाता है। और जब मैंने नम्रताके साथ इस बातपर अपना सन्देह प्रकट किया कि जिस व्यवसायमें आपको बराबर इन नन्हें गिलहरियोंकी आँखोंपर निशाना लगाना पड़ता है, उसमें आर्थिक लाभकी सम्भावना कहाँ तक हो सकती है, तब भी मुराटोव अपनी बातपर डटे रहे। उन्होंने कहा कि सभी याकुत्स्क शिकारी जब लाल-सेनामें भरती किये जाते हैं, तो वे इतने अच्छे सैनिक सिद्ध होते हैं कि उन्हें आप-से-आप रात्रिके अन्धकारमें निशाना मारनेवाले सैनिकोंमें श्रेणीबद्ध कर लिया जाता है।

डिनरमें भी हम युद्धकी चर्चासे खाली नहीं थे। यद्यपि याकुत्स्क युद्धके मोर्चेसे तीन हजार मीलकी दूरीपर है, फिर भी हमने वहाँके सीधे-सादे लोगोंको—जिनमें से अधिकांशने अपने जीवनमें कभी किसी जर्मनको नहीं देखा था और न यूराल पहाड़के पश्चिममें कभी यात्रा की थी—'पितृभूमिके लिये युद्ध' की चर्चा बड़े उत्साहके साथ करते पाया। मैंने मुराटोवसे पूछा कि वह अपने यहाँके लोगोंकी शिक्षाके लिये क्या कर रहे हैं?

"मि० विल्की," उन्होंने कहा—"आपके प्रश्नका जवाब बहुत सीधा है। सन् १९१७ से पहले याकुत्स्ककी जनतामें केवल सैकड़े दो मनुष्य शिक्षित थे, सैकड़े ९८ न तो पढ़ सकते थे और न लिख सकते थे; किन्तु इस समय दशा ठीक इसके विपरीत है।"

"इसके सिवा" प्रसन्नतासे मेरी ओर देखकर मुसकुराते हुए उन्होंने अपनी बात जारी रखी: "मुझे अब मास्कोसे आदेश मिला है कि आगामी वर्ष समाप्त होनेके पूर्व ही बाकी सैकड़े दो मनुष्योंकी निरक्षरता को भी अन्त (liquidate) कर डालूँ।"

एक बार फिर इस अन्त("liquidate") शब्दका व्यवहार किया गया। रूसमें इस शब्दका बराबर व्यवहार किया जाता है। इसका अर्थ हो सकता है किसी निर्दिष्ट कार्यको सम्पन्न करना, या इसका अर्थ अयोग्यता, असफलता अथवा जान-बूझकर बाधा पहुँचानेके लिए कैद, देश-निर्वासन या मृत्युदण्ड भी हो सकता है। मुझे स्मरण हो आया एक समाचारका, जिसे जो बार्नेसने 'प्रवदा' पत्रसे पढ़कर मुझे सुनाया था। उसमें बताया गया था कि एक सामूहिक कृषिक्षेत्रके मैनेजरको बीस साल कैदकी सजा इसलिये दी गई थी कि उसके फार्ममें एक सौ गायोंकी मृत्यु हो गई थी। जिन कारणोंसे उन गायोंकी मृत्यु हुई थी, उन कारणोंको वह दूर (liquidate) नहीं कर सका, इसलिये वह खुद ही दूर (liquidate) कर दिया गया और सरकारकी यह मन्शा थी कि दूसरे कृषिक्षेत्रोंके मैनेजर भी इस बातको जान रखें।

मुराटोवने बड़े गर्वके साथ हम लोगोंको याकुत्स्कका नवीनतम चलचित्र भवन दिखलाया। यह कंक्रीटका बना हुआ था, और इस तरह उसने इस पुराने विश्वासको अप्रमाणित कर दिया था कि जिस भूमिके नीचेका भाग सर्दीसे बराबर जमा हुआ रहता हो, उसके ऊपर केवल लकड़ीके ही मकान बनाये जा सकते हैं।

शहरमें जो सबसे आकर्षक मकान था, उसमें स्थानीय कम्यूनिस्ट पार्टीका प्रधान कार्यालय था। मुझे अक्सर इस बातपर आश्चर्य होता था कि किस प्रकार कम्यूनिस्ट दलके तीस लाख सदस्य—रूसमें इस दलकी कुल संख्या इतनी ही है, कुल आबादीका लगभग सैकड़े एक या डेढ़ भाग—यथार्थतः व्यावहारिक रूपमें अपने विचार और नियंत्रणको बीस करोड़ मनुष्योंपर लाद सकते हैं। मगर यहाँ याकुत्स्कमें मैं इसकी प्रक्रियाको समझने लगा था।

शहरमें कोई दूसरा संगठित दल नहीं था ; कोई गिरजाघर नहीं, कोई गुप्त सभा नहीं और न कोई दूसरी पार्टी। याकुत्स्ककी ५०,००० जनसंख्यामें केवल ७५० मनुष्य, अर्थात् कुल आबादीका सैकड़े एक या डेढ़ हिस्सा, कम्यूनिस्ट दलके सदस्य हैं और शहरके एक क्लबके मेम्बर हैं। मगर इन ७५० सदस्योंमें कारखानोंके कुल डाइरेक्टर, सामूहिक कृषिक्षेत्रोंके मैनेजर, सरकारी अफसर, अधिकांश डाक्टर, स्कूलोंके सुपरिन्टेन्डेन्ट, बुद्धिजीवीवर्ग, लेखक, लाइब्रेरियन और शिक्षक भी शामिल हैं। दूसरे शब्दोंमें इसका अर्थ यह हुआ कि याकुत्स्कमें, जैसा कि रूसकी अधिकांश जातियोंमें पाया जाता है, जातिके जो सबसे बढ़कर शिक्षित, सुदक्ष, बुद्धिमान एवं सुयोग्य मनुष्य हैं, वे कम्यूनिस्ट पार्टीके सदस्य हैं। सारे रूसमें इस प्रकारका हर-एक कम्यूनिस्ट क्लब वहाँके उस सुदृढ़ राष्ट्रीय संगठनका एक अंग है, जिसके प्रधान सेक्रेटरी इस समय भी स्टालिन हैं। और सब उपाधियोंकी अपेक्षा इस उपाधिको ही स्टालिन क्यों ज्यादा पसन्द करते हैं, यह इस बातसे ही समझा जा सकता है। क्योंकि यही संगठन कम्यूनिस्ट दलको क्षमताशाली बनाये हुए है। इसके सदस्य ऐसे लोग हैं, जिनके स्वार्थ दल-विशेषमें सम्बद्ध हैं। यही उपर्युक्त प्रश्नका उत्तर है।

अमेरिकन लोग इस प्रकारकी एक दलवाली पद्धतिको पसन्द नहीं करेंगे। परन्तु याकुत्स्कमें मैंने सोवियेट यूनियनके महान् साहसिक कार्योंमें से एकका प्रमाण पाया, और वह कार्य ऐसा है, जिसकी प्रशंसा श्रेष्ठ एवं अत्यन्त प्रगतिशील विचारवाले अमेरिकन लोगोंकी भी करनी चाहिये। वह कार्य है राष्ट्रीय एवं जातीय अल्पसंख्यक सम्प्रदायोंकी भीषण समस्याका रूस द्वारा समाधान।

इस शहरके निवासियोंमें इस समय भी अधिकांश याकुत्स हैं। याकुत्स्क प्रजातंत्रकी कुल आबादीमें इनकी संख्या सैकड़े ८२ है। जहाँ

तक मैं देख सका था, याकुत्स्क लोग रूसियोंके समान ही वहाँ रहते थे। उच्च पदोंपर भी वे प्रतिष्ठित थे। वे अपनी भाषामें कविता लिखते थे, और उनका अपना थियेटर था। जिन पदोंपर ऊपरसे नियुक्ति होती थी, मुराटोवके पदकी तरह, उनपर बहुधा रूसी ही नियुक्त किये जाते थे। निर्वाचन द्वारा जिन पदोंकी भरती होती थी, उनपर, जैसा कि मुझसे बताया गया, अक्सर याकुत्स ही नियुक्त होते थे। स्कूलोंमें दोनों भाषायें सिखाई जाती थीं। सड़कोंपर युद्ध-सम्बन्धी जो पोस्टर लगे हुए थे, उनके शीर्षक रूसी और याकुत दोनों भाषाओंमें थे।

समस्याका यह समाधान कहाँ तक स्थायी हो सकेगा, इसके सम्बन्धमें भविष्यवाणी करना कठिन है। इसमें सन्देह नहीं कि कुछ अंशोंमें इसकी उत्कृष्टताका कारण देशकी विशालता है। अब भी इस प्रजातंत्रके बहुतसे स्थान ऐसे हैं, जिनका मानचित्र नहीं बन सका है। मुराटोवने मुझे बताया कि गत कई वर्षोंके अन्दर यहाँ दस हजारसे अधिक झील और जलस्रोतोंका पता लग चुका है और उनके नाम रख दिये गये हैं। मैं यह महसूस करता हूँ कि याकुत्स्क प्रजातंत्रकी जिस खुली जगहके ऊपरसे होकर हम दो दिनों तक उड़े थे, उसी प्रकारकी खुली जगह ही ऐसे संघर्षोंके लिये एक वृहत् उपादान सिद्ध होती है, जिसने यूरोपमें पक्षपातपूर्ण विचार और निर्यासनको जन्म दिया है।

सोवियेट यूनियनकी इस साइबेरिया-स्थित चौकीमें स्वयं मुराटोवने मुझे जितना आकर्षित किया, उससे अधिक शायद ही किसी अन्य वस्तुने किया हो। यदि याकुत्स्क शहरने मेरे बहुतसे प्रश्नोंके उत्तर संकेत द्वारा मुझे बता दिये, तो मुराटोवने दूसरे बहुतसे प्रश्नोंकी व्याख्या कर दी। क्योंकि रूसका शासन कार्य इस समय जो नये लोग चला रहे हैं, उनमें यह एक नमूना हैं। और विचित्रता तो यह है कि उनके बहुतसे विशिष्ट गुण

और उनकी जीवन-प्रणाली उन बहुतसे अमेरिकनोंके समान ही है, जिन्हें मैं जानता हूँ।

मुराटोव छोटे कदके, स्थूल कायवाले मनुष्य हैं। उनका चेहरा गोल, हँसमुख और बिलकुल सफाचट है। वोल्गा नदीके तटवर्त्ती सराटोव स्थानमें उनका जन्म हुआ था। उनके पिता एक किसान थे। स्टालिनग्राडकी एक यंत्रकी दुकानसे उन्हें विशेष रूपमें शिक्षा देनेके लिये चुना गया था, क्योंकि वे मेधावी थे। परिश्रम और अध्ययन द्वारा उन्होंने स्कूली शिक्षा समाप्त करके विश्वविद्यालयमें प्रवेश किया और फिर मास्कोके समाज-विज्ञानके प्रमुख विद्यालय इन्स्टीट्यूट आफ रेड प्रोफेसर्समें प्रवेश किया। दो वर्ष बीते वे उत्तर-मेरुके समीप इस स्थानमें याकुत्स्ककी जन-परिषद्के प्रधान बनाकर भेजे गये थे। अब तक उनकी अवस्था ३७ सालकी हो चुकी थी। सन् १९१७की क्रान्तिके बादसे ही उनकी संपूर्ण शिक्षा हुई थी। इस समय वे सोवियेट समाजवादी संयुक्त-राष्ट्रके सबसे बृहत् प्रजातंत्र राज्यका परिचालन कर रहे थे, जो आयतनमें फ्रांसका पचगुना है। मैंने दो दिनों तक उन्हें अच्छी तरहसे देखा और जाना। वे एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो अमेरिकामें भी सफल होंगे; अपने देशमें तो वे बहुत ही सफल हो रहे हैं।

उनका काम करनेका ढंग, जैसा कि सारे साइबेरियामें सोवियेटका ढंग है, रूढ़, कठोर और बहुधा क्रूर और कभी-कभी भ्रान्त होता है। और इसके लिये उनकी कैफियत होती है: "किन्तु इससे सफलता मिलती है।" जब मैंने उनसे याकुत्स्ककी आर्थिक उन्नतिके सम्बन्धमें जाननेका विशेष आग्रह किया, तब उनकी बातचीत कैलिफोर्नियाके अचल संपत्तिके विक्रेताकी तरह होने लगी। और एक बार फिर मुझे इस शताब्दीके आरम्भमें अमेरिकाकी महती उन्नतिके वे तेजस्वी दिन याद

आ गये, जब हमारे अपने नेता लोग भी कार्यको सम्पन्न करनेमें ही विशेष दिलचस्पी रखते थे।

"ज़रा सोचिये तो, मि० विल्की ! हम लोगोंने सन् १९२२ में याकुत्स्क सोवियेट समाजवादी प्रजातंत्रकी स्थापना की थी, जब कि रूसके गृह-युद्धमें हम लोगोंकी पूर्ण विजय हो चुकी थी। उस समय स्टालिन छोटी-छोटी अल्पसंख्यक जातियोंके कमिसार थे। उस समयसे लेकर अब तक हम लोगोंने इस प्रजातंत्रके बजटको अस्सीगुना कर दिया है, और यहाँका प्रत्येक अधिवासी इस बातको अच्छी तरह जानता है।

"रूसके सभी नक्शोंमें याकुत्स्कके ऊपर सफेद चिह्न रहा करता था। अब, इस महीनेमें हमारे यहाँकी स्वर्णखानोंमें जितना सोना निकला है, उसका स्थान एकमात्र लोहेको छोड़कर अन्य समस्त खनिज-पदार्थोंकी प्रतियोगितामें तीसरा है। ये स्वर्णखानें उत्पादनकी निर्दिष्ट योजनासे आगे बढ़ी हुई हैं।" अपने इस कथनके प्रमाणमें उन्होंने बहुतसे आँकड़े पेश किये।

सोवियेट यूनियनके समस्त म्युनिसिपल बिजली-कारखानोंमें जो प्रतियोगिता हुई थी, उसमें याकुत्स्कके बिजलीके कारखानेने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। और पार्टीकी ओरसे यहाँके कारखानेको बिजली-उत्पादनके खर्चमें कमी करनेके लिये एक लाल झंडा पुरस्कार-स्वरूप मिला था।

"हम लोगोंने बीस सालके अन्दर याकुत्स्कमें उद्योग धन्धोंमें दस अरब रूबल लगाया है।" उन्होंने कहा—"हम लोग इस साल करीब ४,०००,००० क्युबिक (घन) मीटर लकड़ी काटेंगे, जब कि सन् १९११ में यह संख्या सिर्फ ३५,००० घनमीटर थी। और इस दिशामें हमें अभी और भी तरक्की करना है, जब तक कि हम वार्षिक उत्पादनकी

निर्दिष्ट संख्या ८८,०००,००० क्यूबिक मीटर तक न पहुँच जायँ।"
उनके कथनसे यह स्पष्ट था कि वह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारके रूपमें अपनी योजना बना रहे थे।

"जब यह युद्ध समाप्त हो जायगा, तो आपको अमेरिकामें लकड़ी और लकड़ीके गूदेकी जरूरत होगी। और हम लोगोंको मशीनोंकी, सब तरहकी मशीनोंकी, जरूरत होगी। उत्तरी ध्रुवसागरका मार्ग खुलते ही हमारा देश आप लोगोंके देशसे बहुत दूर नहीं रह जायगा। आइये, हम लोगोंके यहाँसे लकड़ी ले जाइये; हम लोग इसके बदलेमें खुशीसे आपका माल लेंगे।"

मैंने अपनी आँखोंसे देखा कि वे जो कुछ कह रहे थे, उसमें दुकानदारीकी बातें नहीं थीं। याकुत्स्क रेलवाइनसे लगभग एक हजार मील दूर है। ट्रान्स-साइबेरियन रेल-मार्ग और मास्कोके साथ याकुत्स्क प्रजातंत्रका सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये इसी साल वे लोग सब मौसममें काम आने लायक एक पक्का राजमार्ग निर्माण कर रहे थे। अब तक यातायातके लिये उन्हें आकाश-मार्ग और लेना नदीपर निर्भर करना पड़ता था। गर्मीमें स्टीमर और बड़ी-बड़ी नावोंपर माल ढोकर लेना नदीसे याकुत्स्क तक तिक्सीकी खाड़ीके रास्ते पहुँचाते हैं। जाड़ेमें नदीकी ऊपरी सतहपर जल इस तरह जम जाता है कि वह मजबूत सड़क जैसा बन जाता है।

सोना और पशु-लोम वहाँकी बहुमूल्य वस्तुयें हैं। इतिहासके प्रारम्भ कालसे ही सड़कोंके अभावमें भी इन वस्तुओंको बाहर भेजा जाता रहा है। मगर सोवियेटकी ओरसे इधर जो अनुसन्धानकारी अभियान हुए हैं, उनसे याकुत्स्कमें अन्य बहुमूल्य संपदों—चाँदी, निकेल, तांबा और सीसा—के होनेका भी पता चला है। तेलका भी पता

जाता है, और यद्यपि तेलकूपोंके सम्बन्धमें विशेष ब्योरोंको सैनिक दृष्टिसे छिपाकर रखा गया है, फिर भी सुगटोवने मुझे बताया कि सन् १९४३ सालके खतम होनेके पहले ही उन कूपोंमें से वे लोग व्यावसायिक दृष्टिसे तेल निकालने लग जायँगे। मछली, लकड़ीका तख्ता और नमक इन तीन वस्तुओंके लिये यहाँ जो साधन हैं, उनका तो अभी तक पूर्ण रूपसे उपयोग ही नहीं हुआ है। हाथीदाँतका व्यवसाय भी यहाँ चल निकला है। हाथीकी जातिके एक प्रकारके विशाल जानवर प्रागैतिहासिक कालमें इस प्रदेशमें पाये जाते थे। उस समयसे अब तक इन जानवरोंके बड़े-बड़े दाँत उत्तरी ध्रुवके ठंडे गोदाममें सुरक्षित रखे हुए हैं। उन्हीं दाँतोंको लेकर हाथी दाँतका खासा व्यवसाय चल रहा है।

कृषिके सम्बन्धमें भी याकुत्स्कका भविष्य पूर्ण आशाप्रद है। म्यूजियममें उन लोगोंने मुझे मिश्रित जातिके गेहूँके नमूने दिखलाये। इनकी पैदावारको रूसी लोग उत्तरकी ओर, जहाँ तक गेहूँके कृषि-क्षेत्रोंकी सीमा है, बढ़ाते जा रहे हैं। फसलके आबाद करनेका समय बहुत थोड़ा ही होता है; मगर जमीनके नीचेकी मिट्टी पानीसे भरी होती है और सूर्य तमाम दिन और गर्मीमें प्रायः रात-भर चमकता रहता है।

अधिकांश कृषिक्षेत्र—सितम्बर महीने तक सैकड़े ९७—सामूहिक कृषिक्षेत्रके रूपमें परिणत हो चुके हैं। बारहसींगा इस समय तक भी यहाँका प्रधान बोझ ढोनेवाला जानवर बना हुआ है; मगर इस समय यहाँ सैकड़ों ट्रैक्टर खेतोंमें चल रहे हैं। ट्रैक्टर मशीनके स्टेशनोंसे भाड़ेपर कृषिक्षेत्रोंको ये ट्रैक्टर दिये जाते हैं। इस प्रजातंत्रमें फसल काटनेवाली १६० मशीनें भी हैं—"जरा सोचिये तो, मि० विल्की,

उत्तरी ध्रुवप्रदेशमें १६० फसल काटनेवाली मशीनें!" और इसके साथ ही विशेषज्ञोंका एक छोटा-सा किन्तु वर्द्धमान दल, जो उत्तरी ध्रुव-प्रदेशकी वृक्षशून्य विशाल दलदल भूमिको शस्यश्यामल बनानेके लिये कृतसंकल्प है।

इन लोगोंके उत्साह एवं आत्म-विश्वासको देखकर मुझे बार-बार पाश्चात्य देशोंकी उन्नतिकी जो रोमाञ्चकर कहानी है, उसकी याद आ आती थी। मैं याकुत्स्कसे इस बातको जाननेके लिये अतिशय कौतूहल लेकर लौटा कि आजसे दस साल बाद इसकी दशामें कितना परिवर्त्तन हो जायगा।

जब मैं स्वदेश लौटा, मैंने उसी प्रकारका कौतूहल सारे रूसके सम्बन्धमें लोगोंके मनमें पाया। और रूसके प्रति उनके मनोभावमें भय एवं विस्मययुक्त प्रशंसाकी भावना।

रूस क्या करने जा रहा है? क्या वह शान्तिके मार्गमें एक नया बाधक बनने जा रहा है? क्या युद्धके अन्तमें वह ऐसी शर्तोंकी माँग करने जा रहा है, जिससे यूरोपको उपयुक्त शान्तिके मार्गपर पुनः प्रतिष्ठित करना असम्भव हो जायगा? क्या वह अपने आर्थिक एवं सामाजिक दर्शनको दूसरे देशोंके जीवनमें क्रमशः प्रविष्ट करने जा रहा है?

यदि सच पूछा जाय, तो मेरे खयालसे इन प्रश्नोंका उत्तर कोई नहीं बता सकता। मुझे सन्देह है कि खुद स्तालिन भी इनके उत्तर जानते हों।

यह तो स्पष्ट है कि रूस क्या करने जा रहा है, इस सम्बन्धमें यदि मैं कुछ कहनेका प्रयत्न करूँ, तो वह हास्यास्पद होगा। किन्तु इतना मैं अवश्य सत्य रूपमें जानता हूँ कि सोवियेट रूसमें २० करोड़ मनुष्य वास करते हैं; एक गवर्नमेण्टके अन्दर जितने एक भूमिखण्डपर

रूसका नियंत्रण है, उतनेपर संसारमें और कहीं किसी देशका नहीं। लकड़ी, लोहा, कोयला और तेलके प्रायः अक्षय साधन उनके देशमें हैं, जिनका अभी तक वस्तुतः पूरा-पूरा व्यवहार लाभके लिये किया ही नहीं गया है। देश-भरमें चिकित्सालय और सार्वजनिक स्वास्थ्य-सुधार-संस्थाओंकी प्रतिष्ठा करके रूसी लोग इस समय संसारकी स्वस्थ-तम जातियोंमें से एक हो रहे हैं। ये लोग सबल एवं प्राणदायक जलवायुमें वास करते हैं। गत २५ वर्षके अन्दर देशव्यापी शिक्षा-पद्धतिकी बदौलत प्रतिशत अत्यधिक मनुष्य साक्षर बन गये हैं और हजारों शिल्प-विज्ञानकी शिक्षा प्राप्तकर चुके हैं। वहाँके सर्वोच्च अधिकारीसे लेकर कृषिक्षेत्र या कारखानेमें काम करनेवाले साधारण-से-साधारण श्रमजीवी तक अपने देश रूसके कट्टर भक्त बने हुए हैं और उसकी भावी उन्नतिके स्वप्नमें विभोर हो रहे हैं।

रूसके सम्बन्धमें जो सब प्रश्न किये जाते हैं, उन सबका उत्तर मैं नहीं जानता; किन्तु एक बात मैं जानता हूँ : रूसकी क्षमताकी, उसकी शक्तिकी, वहाँकी जनताकी उपेक्षा नहीं की जा सकती और न उन्हें योंही उड़ा दिया जा सकता है। हम लोगोंका आचरण उन गृहिणियोंकी तरह नहीं हो सकता, जो पंसारीकी दुकानमें जाकर वहाँकी नाना प्रकारकी चीजोंमें कुछ चीजोंको चुनती हैं, किसी चीजको लेती हैं और किसीको छोड़ देती हैं। सीधी बात तो यह है कि इस विषयमें हमारे लिये चुनावका कोई प्रश्न ही नहीं है। रूसको हमें मानना ही पड़ेगा। यही कारण है कि मैं बराबर अपने अमेरिकन साथियोंसे कहा करता हूँ : अपने शत्रु जर्मनीको पराजित करनेके समान उद्देश्यको लेकर जब तक हम दोनों राष्ट्र मिले हुए हैं, तब तक रूसियोंके साथ अधिक-से-अधिक सहयोगपूर्वक हम काम करें। उनके सम्बन्धमें हम

जो कुछ जान सकें, जाननेकी चेष्टा करें और उनको भी अपने सम्बन्धमें जानने दें।

एक बात और है, जिसे मैं जानता हूँ। भौगोलिक दृष्टिसे, व्यापारकी दृष्टिसे तथा बहुत-सी समस्याओंके सम्बन्धमें दोनोंके विचार करनेके ढंगमें जो समानता है, उस कारण रूसियों और अमेरिकनोंको एक साथ आगे बढ़ना चाहिये। रूसको शिल्प-प्रधान देश बनानेके लिये अमेरिकाकी वस्तुओंकी असीम परिमाणमें आवश्यकता होगी ; और रूसके पास असीम प्राकृतिक साधन हैं, जिनकी हम लोगोंको आवश्यकता है। हम लोगोंके समान ही रूसी भी परिश्रमी और सरल प्रकृतिकके हैं, और अमेरिकाकी पूंजीवादी पद्धतिको छोड़कर और सब बातोंके लिये उनके मनमें अमेरिकाके प्रति विस्मययुक्त प्रशंसाका भाव है। और स्पष्ट ही, रूसमें भी ऐसी बहुत-सी बातें हैं, जिनकी हम प्रशंसा कर सकते हैं—उसकी तेजस्विता, उसके प्रकाण्ड स्वप्न, उसकी शक्ति, उसकी उद्देश्यके प्रति दृढ़ संलग्नता। कम्यूनिस्ट सिद्धान्तका जितना मैं विरोधी हूँ, उतना और कोई दूसरा नहीं हो सकता ; क्योंकि मैं किसी भी ऐसी पद्धतिका पूर्णतः विरोधी हूँ, जो स्वेच्छाचारतंत्रकी ओर ले जानेवाली है। किन्तु यह बात मेरी समझमें कभी नहीं आई कि यह क्यों मान लिया जाय कि कम्यूनिज्म और लोकतंत्रमें यदि सम्पर्क स्थापित हो जाय, तो लोकतंत्र दब जायगा।

इसलिये एक बार मैं फिर कहता हूँ : मेरा यह विश्वास है कि रूस और अमेरिकाके लिये—जो सम्भवतः संसारके सबसे बढ़कर शक्तिशाली देश हैं—विश्वके आर्थिक कल्याण एवं शान्तिके लिये एक साथ मिलकर काम करना सम्भव है। कम-से-कम यह जानते हुए कि जब तक ये दोनों देश मिलकर काम नहीं करेंगे, तब तक स्थायी शान्ति

एवं आर्थिक स्थायित्व नहीं हो सकता। मैंने और किसी बातपर इससे अधिक विश्वास नहीं किया। और अपने देशकी स्वतंत्र आर्थिक एवं राजनीतिक प्रणालीकी मौलिक सत्यतामें मेरा इतना प्रगाढ़ विश्वास है कि मुझे इस बातमें जरा भी सन्देह नहीं है कि कम्यूनिज्म और लोकतंत्रके एक साथ मिलकर काम करनेपर भी हमारी आर्थिक एवं राजनीतिक प्रणाली जीवित रहेगी।

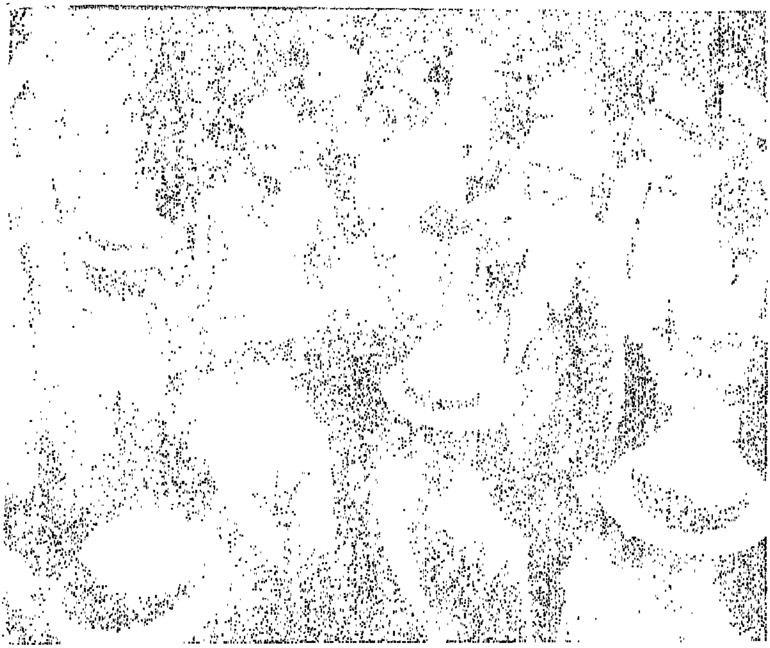
चीन पाँच सालसे युद्ध कर रहा है

यदि हम इस विश्वव्यापी महासमरमें, जिसमें हम इस समय संलग्न हैं, वास्तविक विजय प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें सुदूर-पूर्वके लोगोंके सम्बन्धमें स्पष्ट जानकारी प्राप्त करनी होगी। प्रत्यक्ष रूपसे युद्धमें भाग लेनेके प्रथम वर्षमें ही अधिकांश अमेरिकन इस बातको महसूस करने लगे हैं कि एशियाका युद्ध यूरोपके युद्धका कोई पार्श्ववर्ती रूप नहीं है। यदि हम भविष्यमें युद्धको रोकना चाहते हैं, तो हमें यह जानना होगा कि संसारके इस विशाल अञ्चलमें कौन-सी शक्तियाँ काम कर रही हैं। जो लोग हमारे साथ विश्वस्त व्यवहार कर रहे हैं, उनको जाननेकी हमें जरूरत है, और उनका साथ देनेके लिये हमें बहुत कुछ ईमानदार बननेकी भी जरूरत है, चाहे इसका अर्थ दुनियाके सम्बन्धमें हमारे बहुतसे रूढ़िगत पक्षपातपूर्ण विचारोंके लिये कुछ भी क्यों न हो।

सुदूर-पूर्वके साथ हमारा जो नया सम्बन्ध हुआ है, इस बातको गम्भीर रूपमें महसूस करनेके कारण ही मैंने चीन जानेका इरादा किया। मेरी इस यात्राके सम्बन्धमें पहले-पहल जब वाशिंगटनमें विचार-विमर्श हो रहा था, उसके कई दिन बाद तक ऐसा मालूम पड़ रहा था कि यातायातके साधनमें कठिनाइयाँ होनेके कारण, और इस वजहसे भी कि राष्ट्रपतिकी यह स्पष्ट इच्छा थी कि मैं भारत नहीं जाऊँ, मेरी यह चीन-यात्रा अत्यन्त कठिन हो जायगी। मगर ये सब कठिनाइयाँ हम लोगोंके न्यूयार्क छोड़नेके कबल ही दूर हो गई।

प्रस्थान करनेके कई दिन पहले मैंने वाशिंगटनमें चीनके परराष्ट्र-सचिव टी० वी० सुङ्गके साथ जलपान किया। उन्होंने अपने देशकी आर्थिक एवं सामरिक कठिनाइयोंके सम्बन्धमें साफ-साफ बातें मुझे बताईं, और यह आशा प्रकट की कि संयुक्त-पक्षके राष्ट्रोंमें सामरिक कौशलकी दृष्टिसे वास्तविक सहयोग स्थापित होगा। उनके विचारसे इस प्रकारके सामरिक कौशल द्वारा ही चीनको सहायता मिल सकती है और गणतंत्र राष्ट्रोंका प्रचण्ड प्रभाव उसी व्यापक रूपमें कार्यसाधक हो सकता है, जिस रूपमें हिटलर और जनरल तोजो अपनी समर-योजनायें तैयार करते हैं।

मैं उनके इस विचारसे सहमत हूँ। किन्तु न तो मेरी इस चीन यात्रासे और न उसके बाद चीन और रूसको इङ्गलैण्ड और अमेरिकाके साथ पूर्ण एवं असन्दिग्ध रूपमें सम्बद्ध करके एक वास्तविक संयुक्त समर-कौशल कायम करनेके लिये जो प्रयत्न हुए हैं, उनके परवर्त्ती वृत्तान्तसे मुझे इस सम्बन्धमें कोई दृढ़ आस्था हुई है। हमारे बहुतसे नेताओंमें जो यह प्रवृत्ति देखी जाती है कि वे इस युद्धको पृथक-पृथक प्रथम श्रेणीके युद्ध और द्वितीय श्रेणीके युद्धके रूपमें देखना चाहते हैं, उससे मैं अब



चीनमें—मि० विल्की, जापानी अधिकृत सीमाके समीप चीनके सामरिक मोर्चेका निरीक्षण करते समय चीनके सैनिकोंके साथ वार्तालाप कर रहे हैं।

एक ही दुनिया

U.S.O.W.I. की सौजन्यसे

भी भयभीत हो उठता हूँ। और सुदूर-पूर्वकी मेरी इस यात्राने अवश्य ही मेरे मनमें इस सम्बन्धमें कोई सन्देह नहीं रहने दिया। या तो हम एशियामें चीनके साथ उसी रूपमें पूर्ण साझीदार बनकर इस युद्धमें विजय प्राप्त करें, जिस रूपमें अंगरेज, रूसी और जर्मनी द्वारा अधिकृत राष्ट्रोंके साथ पूर्ण साझीदार बनकर यूरोपमें अथवा हमारा वह विजय प्राप्त करना वास्तविक नहीं होगा।

मैं जानता हूँ कि बहुतसे लोगोंका ऐसा विश्वास है कि भविष्यपर नियंत्रण रखनेके लिये इङ्गलैण्ड और अमेरिकाका संयुक्त प्रभुत्व बहुत कुछ आवश्यक है। वे इस बातकी उम्मीद करते हैं कि जर्मनीका औद्धत्य जब बहुत कुछ शान्त हो जायगा, उस समय पश्चिम-यूरोपपर ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका द्वारा आक्रमण होगा और फिर इसके बाद दोनों की सम्मिलित शक्तियों द्वारा मध्य-पूर्वपर अधिकार कर लिया जायगा। इस प्रकार, उनकी कल्पनाके अनुसार, रूसकी प्रगति और उसका भावि प्रभुत्व पश्चिम-यूरोपपर इन दोनों राष्ट्रोंका आधिपत्य होने तथा इसके बाद विजित जातियोंका हमारे झंडोंके नीचे आ जानेसे शक्ति-सन्तुलनमें हमारे समान हो जायगा। इसी तरह वे हिटलरसे निबट लेनेके बाद अमेरिका और इङ्गलैण्डके सम्मिलित उद्योग तथा चीनसे आंशिक रूपमें सहायता ग्रहण करके जापानको नष्ट कर डालनेकी कल्पना भी अपने मनमें कर रहे हैं। वे यह भी देख रहे हैं कि युद्धके बाद चीन एक अखण्ड किन्तु दुर्बल राष्ट्रके रूपमें रह जायगा, जिसके साथ विजयी पाश्चात्य राष्ट्र दयालुतापूर्ण व्यवहार करेंगे, और पूर्वका अभिभावक बनकर वे अपनी शक्तियोंका प्रयोग उसके कल्याणके लिये उसी रूपमें करेंगे जिस रूपमें, वे विश्वकी भावी शान्ति एवं सुरक्षाके लिये समुचित समझेंगे। वे सोच रहे हैं कि इङ्गलैण्ड और अमेरिका एक साथ मिलकर

पूर्व और पश्चिम दोनोंके समान रूपमें ट्रस्टी बनेंगे और संसारमें सामरिक एवं व्यापारिक दृष्टिसे जो सब महत्वपूर्ण स्थान हैं, उनपर वे अपना नियन्त्रण कर लेंगे, और उनका यह ट्रस्टीका पद और यह नियंत्रण कायम रहे, इसकी गारण्टीके लिये इसके पीछे उनकी संयुक्त सैनिक शक्ति होगी। इस प्रकार पश्चिमके सांस्कृतिक एवं राजनीतिक महत्व सुरक्षित बने रहेंगे, शान्तिकी पुनर्स्थापना होगी, आर्थिक सुरक्षाकी व्यवस्था हो जायगी, और समग्र संसार इन लोगोंके गणतंत्र एवं कल्याण-कामनाके ज्ञानोज्ज्वल आदर्शके झंडेके नीचे आ जायगा।

इसमें सन्देह नहीं कि यह युक्ति विश्वास दिलाने वाली और हृदयग्राही है। यह सुननेमें अच्छी भी मालूम पड़ती है—बशर्ते कि आप अटलाण्टिक चार्टरमें व्यक्त की गई उन उदात्त भावनाओंकी उपेक्षा कर दें, जिन भावनाओंको मि० चर्चिलने नहीं, राष्ट्रपति रूजवेल्टने प्रशान्त महासागरके उपकूलस्थ देशोंकी जनताके लिये भी स्पष्ट रूपसे लागू बतलाया है*; बशर्ते कि आप स्वतंत्रता चतुष्टयके उपदेशोंकी उपेक्षा कर दें, जिनकी दीक्षा आप संसारको देनेकी कोशिश कर रहे हैं; बशर्ते कि आप लगभग २० अरब मनुष्योंके विचारोंको भूला दें।

वर्षोंसे हम जापानकी प्रकृत महत्त्वाकांक्षाओं एवं योग्यताओंके सम्बन्धमें तथा पूर्वी देशोंमें संसारमें अपने लिये एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करनेकी जो आकांक्षा क्रमशः बढ़ रही है, उसके प्रति उनकी अपीलके

*मि० विल्की अब नहीं रहे। यदि वे आज जीवित होते, तो उन्हें यह जानकर कितना आश्चर्य और परिताप होता कि राष्ट्रपति रूजवेल्टने २० दिसम्बर १९४४ के अपने एक वक्तव्यमें स्पष्ट रूपसे कहा है कि 'अटलांटिक चार्टर' का कभी अस्तित्व ही नहीं था। उसपर कभी किसीने हस्ताक्षर किया ही नहीं। —अनुवादक

सम्बन्धमें अज्ञान बने रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि हमने जापानियोंको तुच्छ समझा है और पूर्वकी नव-विकसित शक्तियोंकी अवज्ञा की है। हम केवल अस्पष्ट रूपमें इतना ही जानते थे कि जापानी एक साम्राज्य-गठनकी चेष्टामें लगे हुए हैं। और अब हम इस बातको महसूस करने लगे हैं कि यदि यह साम्राज्य गठित हो जाय, तो वह कितना वृहत् होगा।

आखिर जापानके वे स्वप्न भी इन लोगोंकी आँखोंके सामने ही वास्तव रूप धारण करने लगे हैं। क्योंकि जापानियोंने अपने मनमें साम्राज्यकी जो परिकल्पना की थी, उसके एक बहुत बड़े भागपर विजय प्राप्त करते हुए हमने उन्हें देखा है। कोरिया और मंचूरियाके सिवा चीनका संपूर्ण उपकूल उनके अधिकारमें है। फिलीपाइन्सके अधिकांशपर उनका दखल है। उन्होंने वस्तुतः समग्र ईस्ट इंडीजको जीत लिया है। आधा बर्मा उनके अधिकारमें आ गया है और बर्मा रोडको उन्होंने काट डाला है। भारतीय महासागरके कम-से-कम आधे पूर्वी भागपर उनका नियंत्रण है, और वे कलकत्तेके द्वारदेश तक पहुँच चुके हैं।

वे काफी दूर तक आगे बढ़ चुके हैं—इतना आगे, जिससे सचमुच हम अपने मनमें इस बातकी धारणा कर सकें कि यदि वे अपने उद्देश्यमें पूर्ण रूपसे सफल हो जायँ, तो संसारका रूप क्या होगा। उदाहरणके लिये मान लीजिए कि भारतवर्ष उनके हाथमें चला जाय, चीन बाहरकी सहायतासे संपूर्ण विच्छिन्न होकर अवरुद्ध एवं पराजित हो जाय। मैं यह नहीं विश्वास करता कि ये सब बातें संघटित होने जा रही हैं; मगर उनकी संभावनाओंको अस्वीकार करना अस्पष्टतः अतीतकी दुःखजनक भूलोंकी पुनरावृत्ति करना है।

यदि ये सब घटनायें घटित हो जायँ, तो हम लोग केवल एक वृहत् साम्राज्यकी सृष्टि ही नहीं, बल्कि संभवतः इतिहासके सबसे बड़े

साम्राज्यकी सृष्टि देखेंगे—ऐसा साम्राज्य, जिसके अन्तर्गत प्रायः लोग लगभग १ करोड़ ५० लाख वर्गमील भूमिपर वास कर रहे हों, जो पृथ्वीके एक-तिहाई भागमें फैला हुआ हो और संसारकी कुल जनसंख्याके आधे भागका उसमें समावेश हो जाय। यही जापानका स्वप्न है।

इसके अलावा यह साम्राज्य सब प्रकारके समृद्धि-साधनोंको धारण करनेवाला होगा। वह शान्तिकाल अथवा युद्धकाल दोनों समयके उद्योग-धन्धोंके लिये अपने यहाँके कच्चे मालपर निर्भर कर सकेगा। इस प्रकारके साम्राज्यका स्वप्न चरितार्थ होनेपर जापानको फिलीपाइनसे, लोहा, फिलीपाइन और बर्मासे ताँबा, मलायासे टिन, अनेक द्वीपोंसे तेल, क्रोम, मैंगानीज, रसाबुन, अलमूनियमके लिये बौक्साइट, और जरूरतसे ज्यादा ज्वार मिलेंगे। उस समय संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका वह देश नहीं रह जायगा, जिसकी ख्याति एक उदार वदान्य भूमिके रूपमें होगी, बल्कि वह देश होगा तथाकथित Greater East Asia Co-Prosperity Sphee.

मुझे अमेरिकन जातिके साहस, कर्मोद्यम एवं अहश्में असीम विश्वास है। मगर मैं यह विश्वास करता हूँ कि अगर आगे चलकर अमेरिकनोंको विवश होकर इतने बड़े विस्तृत साम्राज्यका सामना करते हुए रहना पड़े, तो हम लोगोंकी जीवन-यात्रा-प्रणाली बहुत-कुछ उसी ढंगकी होगी, जिस ढंगकी किसी सशस्त्र सैन्य शिविरमें रहनेवालोंकी होती है, और जिस स्वतंत्रतापर हम गर्व करते हैं, वह एक मिथ्या आशाके सिवा और कुछ नहीं रह जायगी। ऐसी स्थितिमें हमें निरन्तर आतंक, अनन्त युद्ध तथा शस्त्रास्त्रोंके गिरा डालनेवाले बोझके नीचे दबे रहना पड़ेगा, और हम बराबर अपने शस्त्रास्त्रोंमें वृद्धि करनेके प्रयत्नमें ही लगे रहेंगे। इस प्रकार जहाँ जीवन धारण करनेके

लिये निरन्तर संघर्ष चलता रहेगा, वहाँ न तो शान्ति या समृद्धि और न स्वतंत्रता या न्याय ही फूल-फल सकता है। और तब इस बातकी कुछ भी कीमत नहीं रह जायगी कि प्रशान्त महासागर कितना विस्तृत या कितना संकीर्ण है।

मेरा विश्वास है कि हम लोग इस विपत्तिको कभी आने नहीं देंगे। मैं विश्वास करता हूँ कि हम लोग समय रहते बराबर इसपर आघात पहुँचाकर इससे अपनेको बचा लेंगे। मगर केवल आघात पहुँचानेसे ही काम नहीं चलेगा। पूर्वमें जो कुछ हो रहा है, वहाँके लोगोंके जैसे विचार हैं, उनके विचार करनेके ढंगमें जो परिवर्त्तन हुए हैं, पाश्चात्य साम्राज्यवाद और श्वेताङ्ग जातिकी श्रेष्ठतामें उनका विश्वास किस प्रकार नष्ट हो चुका है और उनके अपने जो मानदण्ड एवं आदर्श हैं, उनके अनुसार स्वतंत्रताकी जो आकांक्षा उनमें उत्पन्न हो रही है—इन सब बातोंको हमें अच्छी तरह समझना होगा। हम सब यह कहा करते हैं कि यह महायुद्ध 'विचारोंका युद्ध है,' यह एक राजनीतिक युद्ध है। मगर अकसर हम, जैसा कि उत्तर-अफ्रिका और पूर्वमें, पुराने ढंगकी शक्तिशाली राजनीति और बिलकुल सामरिक कार्योंके रूपमें तथा सुविधा और प्रत्यक्ष व्यावहारिकताके रूपमें कार्य करते हैं। हम बहुत जल्दी इस बातको भूल जाते हैं कि यह युद्ध किस लिये लड़ा जा रहा है और बहुत आसानीसे अपने आदर्शोंका परित्याग कर देते हैं। हम इस बातको अच्छी तरह अपनी क्रियाशील अन्तश्चेतनामें धारण किये नहीं रहते कि जापानके अति-साम्राज्यको सामरिक या राजनीतिक दृष्टिसे परास्त करना हमारे लिये बहुत मुश्किल हो जाता, यदि पाँच सालके लम्बे और साहस भङ्ग कर देनेवाले अर्सेमें चीनकी जनताने जानपर खेलकर जापानका प्रतिरोध नहीं किया होता।

अमेरिकनोंके, जिन्हें न्यायतः किसीके पक्ष आपत्तियोंमें और हस्तक्षेप करना लाभकर नहीं जान पड़ा क्योंकि इस अर्थमें हमारी संपूर्ण सभ्यताके लिये चीनवासियोंका जापानियोंके विरुद्ध प्रतिरोध कितना महत्त्वपूर्ण हुआ है, इसको शायद ही किसीने समझा है। जब मैं चीनमें था और वहांके जिन लोगोंने जापानियोंके विरुद्ध प्रतिरोधका नेतृत्व किया और चलाया है, उनसे बातें कर रहा था, उस समय स्वभावतः मेरे लिये यह सोचना सुखकर नहीं था। जिस समय हम लोग अपने कटु विवाद, झगड़ों और अमेरिकाको यूरोपकी राजनीतिसे अपनेको पृथक् रखना चाहिये इस प्रश्नको लेकर व्यस्त थे, हमने चीनको प्रचुर सहायता देना तो दूर रहा, वह जो वीरत्व दिखला रहा है, उसे समझने तककी कोशिश नहीं की। अब हम लोग उस भूलका सुधार करनेके लिये एक बहुत बड़े युद्धमें संलग्न हैं। हमें उसका सुधार करना ही होगा।

अपनी जाति या देशके भविष्यके सम्बन्धमें जापानियोंका जो दृष्टिकोण है, उससे प्रायः विपरीत दृष्टिकोण चीनवासियोंका है। वे साम्राज्य-विस्तारकी आकांक्षा नहीं रखते। वे केवल अपने विशाल एवं सुन्दर स्वदेशपर अपना अधिकार बनाये रखना चाहते हैं और उसकी उन्नति करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि पूर्वमें जो नूतन शक्तियाँ क्रियाशील हो रही हैं, उनका उपयोग वे अपनी स्वतंत्रताके लिये तथा अन्यान्य जातियोंकी स्वतंत्रताके लिये करें। और उधर जापानी उन्हीं शक्तियोंका उपयोग अपने साम्राज्यवादी उद्देश्योंकी पूर्त्तिके लिये करना चाहते हैं।

चीन संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाकी अपेक्षा क्षेत्रफल और जनसंख्यामें बहुत बड़ा है। उसके प्रदेश नाना प्रकारके समृद्धि-साधनोंसे भरपूर हैं; किन्तु इसके साथ ही वह इस योग्य भी नहीं है कि अपनी आवश्यकताओंकी पूर्त्ति अपने-आप कर ले—और हम लोगोंका देश

भी ऐसा नहीं है। फिर भी हम मानते चीनवाले उसी तरह न तो अशिष्ट होते और न दुनियाको जीतना चाहते हैं, जिस तरह हम लोग; अपनी आवश्यकताओंकी पूर्ति अपने देशके अन्दर ही कर देनेकी भावना एकाधिपत्यमें विश्वास रखनेवाले राष्ट्रोंको छोड़के सिवा और कुछ नहीं है। जब संसारमें वास्तविक प्रजातंत्रकी स्थापना हो जायगी, उस समय एक राष्ट्रके लिये स्वयं पर्याप्त बननेकी आवश्यकता उसी प्रकार नहीं रह जायगी, जिस प्रकार अमेरिकाके न्यूयार्क राज्यको पेनसिलवेनिया राज्यसे स्वतंत्र बननेकी आवश्यकता नहीं है।

हमें यह आशा नहीं करनी चाहिये कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जनसत्तात्मक शासनके सम्बन्धमें चीनवासियोंके आदर्श भी ठीक-ठीक हमारे समान ही होंगे। उनके कुछ विचार हम लोगोंको अति मौलिक और कुछ हास्यास्पद रूपमें पुरातन प्रतीत हो सकते हैं। किन्तु हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि हम लोगोंके भी कुछ रीति-रस्म उन लोगोंकी दृष्टिमें हास्यास्पद या अरुचिकर प्रतीत होते हैं। हम लोगोंको अपना ध्यान इस अत्यावश्यक बातपर आबद्ध रखना चाहिये कि चीनवासी स्वाधीन होना चाहते हैं—अपने देशकी जनताकी भलाई एवं मंगलके लिये, अपने जीवनको अपने ढंगसे परिचालित करनेके लिये स्वाधीन होना चाहते हैं। वे एशियाको स्वाधीन देखना चाहते हैं।

हालमें संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका और चीनमें तथा इंग्लैण्ड और चीनके बीच जो सन्धियाँ हुई हैं, जिनमें हम लोगोंने चीनमें अपनी विशेष सुविधाओं एवं अधिकारोंका परित्याग कर दिया है, उनके द्वारा स्वाधीन बननेका चीनका जो संकल्प है, उसको स्वीकार करनेके मार्गमें हमने एक कदम आगे बढ़ाया है। अब अमेरिकन और अंगरेज चीनमें रहते हुए वहाँके कानूनों और अदालतोंसे उसी प्रकार मुक्त नहीं समझे

जायँगे, जिस प्रकार चीनी लोग अमेरिकामें रहते हुए वहाँकी कानूनी कार्यवाइयोंसे मुक्त नहीं समझे जाते। किन्तु इससे यह नहीं मान लेना चाहिये कि इन सन्धियोंसे ही समस्याका समाधान हो जायगा। उदाहरणके लिये अंग्रेज लोग अब भी चीनके एक बहुत बड़े बन्दरगाह हाँगकाँगपर दावा करते हैं, जिस बन्दरगाहसे होकर चीनको संसारके साथ अपना वाणिज्य करना होगा। और शांघाईके अन्तर्राष्ट्रीय इलाकेमें जिस प्रकार अमेरिकन तथा अन्य यूरोपियन राष्ट्र अपने विशेष अधिकारोंका दावा करते हैं, उसी प्रकार हाँगकाँग भी चीनवासियोंके लिये विदेशियोंके उन विशेष अधिकारों एवं सुविधाओंका निदर्शन-स्वरूप है, जिनके कारण वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त करनेमें उन्हें अब भी बाधा पहुँच रही है।

यह दुर्भाग्यकी बात है कि अब भी ऐसे बहुतसे अमेरीकन हैं, जो चीन-वासियोंके सम्बन्धमें एक जातिके रूपमें नहीं, बल्कि एक जड़ एवं निष्क्रिय जन-समुदायके रूपमें सोचा करते हैं, और पचास लाख चीनियोंकी मृत्यु पचास लाख पाश्चात्य देशवासियोंकी मृत्युसे भिन्न और उनकी अपेक्षा कम मूल्यवान समझते हैं। पूर्वमें इस समय जो नवजागरण दिखाई पड़ रहा है, वही आजकी दुनियामें शायद सबसे बढ़कर तथ्यपूर्ण बात है। यदि हम सामरिक दृष्टिसे इस युद्धमें विजयी भी हो जायँ तथापि इस नवजागरणका हमें स्वीकार करना ही होगा। यदि हम बुद्धिमानीसे काम लें, तो हम उन शक्तियोंको, जो इस समय संपूर्ण प्राच्यमें गतिशील हो रही हैं, संसारभरमें शान्ति एवं आर्थिक सुरक्षा कायम करनेके सहयोग मूलक प्रयत्नकी ओर मोड़ सकते हैं। किन्तु ये ही शक्तियाँ, यदि हम उनकी अवज्ञा या उपेक्षा कर देंगे, संसारको व्याकुल करती रहेंगी।

चीनका पश्चिममें निकास

मुझे इस बातकी बराबर खुशी होती रहेगी कि मैंने चीनकी अपनी प्रथम यात्रामें 'सन्धि-बन्दरगाह' (Treaty port-)से होकर नहीं, बल्कि उसके पश्चात् भारतसे, चीनके उत्तर-पश्चिमके विशाल पृष्ठदेश (hinterland-)से होकर उस देशमें प्रवेश किया। प्रशान्त महासागरके ये सन्धि-बन्दरगाह—जिनपर इस समय जापानियोंका अधिकार है—आधुनिक चीनके लिये उन पीढ़ियोंके प्रतीक हैं, जिनमें चीन पश्चिमके राष्ट्रों द्वारा एक बृहत् किन्तु आदिम मुल्का देश समझा जाता था, और वहाँके निवासी उनकी दृष्टिमें ऐसे थे, जिनके धर्मको परिवर्त्तित किया जा सकता था, जिनका शोषण किया जा सकता था और जो उपहास-योग्य थे। शांघाई, हाँगकाँग और कैन्टन भले ही सुन्दर नगर समझे जायँ; मगर चीनवासियोंके लिये तो उनके नाम तक उन दिनोंकी याद दिलानेवाले हैं, जब कि, जैसा कि चीनी प्रजातंत्रके संस्थापक सन-यात-सेनने लिखा है, "बाकी मनुष्य-जाति भोजन परोसनेकी थाली और टुकड़ोंमें काटनेवाली छुरीके समान है और हम लोग मछली और मांसके समान।"

चीनमें मेरा पहला पड़ाव तिहवामें हुआ, जिसे रूसी लोग उरुमची कहते हैं, और जो चीनी पूर्वी तुर्किस्तान या सिंकियांग प्रान्तकी राजधानी है। हमारा वायुयान साइबेरियाके ताशकन्दसे एक ही दिनमें उड़ा था। इस उड़ानका अधिकांश इली नदीकी घाटीके उतारकी ओर हुआ था। यह घाटी संसारकी कुछ सर्वोच्च पर्वत-श्रेणियों—तियन शान और अल्ताई

पर्वत—को विभक्त करती है। वहाँ तक इस शून्य मरुभूमिके ऊपरसे होकर तब तक उड़ते रहे, जब तक कि अंगूर और खरबूजोंकी उपजाऊ भूमिमें नहीं पहुँच गये, जिसे चीनी लोग सिंकियांग या 'नूतन उपनिवेश' कहा करते हैं।

सिंकियांग फ्रान्ससे दूना बड़ा है। यहाँकी आबादी ५०००,०००से कुछ कम है। यह चीनका सबसे बड़ा प्रान्त है और सबसे बढ़कर सम्भ्रिशाली भी समझा जा सकता है। यह केवल एशियाके भौगोलिक केन्द्रके समीपस्थ ही नहीं है, बल्कि उसके राजनीतिक केन्द्रके भी समीपस्थ है; क्योंकि यहीं रूस और चीनके सीमान्त एक-दूसरेसे मिलते हैं। अन्तमें चलकर इस विचित्र प्रदेशमें—जिसके सम्बन्धमें बहुतसे अमेरिकनोंने कभी सुना तक नहीं—जो कुछ घटित होगा, उसका प्रभाव हमारे इतिहासपर निर्णयात्मक रूपमें पड़ सकता है।

पिछली पीढ़ीमें बहुत थोड़े विदेशी इस देशमें आये हुए थे। जब मैं तिहवामें था, मेरे चीनी मेजमानोंका अनुमान था कि केवल कुछ ही दर्जन अमेरिकन या अंगरेज यात्री चीन और रूसके बीचके इस वाणिज्य-आकाश-मार्गपर—जो चीन और मास्कोके बीच गत एक सालसे चालू हुआ है—सिंकियांगसे होकर उड़े हैं। और इन थोड़ेसे यात्रियोंने भी हामी शहर को, जो अपेक्षाकृत एक छोटा शहर है और जहाँका हवाई अड्डा तिहवासे अच्छा है, जितना देखा है, उतना राजधानी तिहवाको नहीं।

खास इस शहरमें ऐसी कोई चीज नहीं है, जिसपर वह अभिमान कर सके। यह एक छोटा शहर है, और यहाँ किसी प्रकारकी चहल-पहल नहीं है। यहाँकी भूमि कीचसे भरी है। सड़कोंके नाम रूसी भाषामें हैं, सरकार चीनकी है और यहाँके बाशिन्दे तुर्की हैं, जो चीनमें रहनेवाले दो करोड़ मुसलमानोंके एक अंश हैं। एशियाके सर्वोत्तम खरबूजे और छोटे-छोटे बीजरहित अंगूर यहीं पैदा होते हैं। इतने स्वादिष्ट अंगूर मैंने

शायद ही कभी खाये हों। शहरके चारों तरफके पहाड़ धातुओंसे भरपूर हैं। सिंचाईके कारण प्रान्तको भोजन मिलता है। इस समय इसका एकमात्र महत्त्वपूर्ण निर्यात ऊन है, जो अब काफी परिमाणमें रूस भेजा जाता है और वहाँकी लाल-सेनाके आच्छादनमें काम आता है।

सिंकियांग संसारका एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ राजनीति और भूगोल एक साथ मिलकर एक प्रकारके विस्फोटक कौमल मिश्रणकी सृष्टि करते हैं। और यह मिश्रण उन लोगोंके लिये महत्त्वपूर्ण है, जो संसारमें क्या संघटित होने जा रहा है, इस बातको जाननेके लिये समुत्सुक हैं। भौगोलिक दृष्टिसे सिंकियांगका झुकाव रूसकी ओर है। सोवियेट टर्क-सिब रेल लाइन इसकी सीमान्तसे कुछ ही मीलकी दूरीपर है। तिहवामें वहाँकी जनताके व्यवहारमें आनेवाली जो सब चीजें हमने देखीं, वे सब रूससे आई हुई थीं। जिन मोटर गाड़ियोंपर हम सवार हुए थे, वे रूसकी बनी हुई थीं। वहाँकी सेनाको हमने रूसी टैंक चलाते देखा। किन्तु राजनीतिकी दृष्टिसे इस प्रदेशका झुकाव चीनकी ओर है। हान राजवंशके समयसे ही चीनवालोंने सिंकियांगपर शासन किया है। वहाँके वर्त्तमान गवर्नर चीनी हैं। इस समय चीनमें अपने उपकूलवर्त्ती प्रदेशके पश्चात् भागका द्वार खोलनेके लिये जो आशापूर्ण प्रबल आन्दोलन चल रहा है, उसका प्रभाव भी सिंकियांगपर बहुत-कुछ पड़ रहा है। इस युद्धके बाद चीन और सोवियेट रूसके बीच जिस प्रकारका सम्बन्ध होगा, वह सारे संसारके लिये महत्त्वपूर्ण होगा, और यह संभव है कि उस सम्बन्धका निर्णय इसी अञ्चलमें हो।

सोवियेट सरकारने सिंकियांगके ऊपर चीनके प्रभुत्वको बराबर माना है। दोनों राष्ट्रोंके बीच सीमान्तको लेकर कभी कोई संघर्ष नहीं हुआ है। किन्तु पिछले दस वर्षोंमें रेल-मार्ग, बाजार, वाणिज्य-सम्बन्धी साख

और कम्यूनिस्ट मतवादके दबावके कारण इस प्रान्तका झुकाव दृढ़तापूर्वक सोवियेट पक्षकी ओर हो रहा है, और यदि चीनवासी भी अपने पश्चिमोत्तर प्रान्तोंमें—जिनमें सिंकियांग भी शामिल है—उद्योग-धन्धोंका विस्तार करके सोवियेटकी तरह दबाव डालनेकी कोशिश करें, तो इसका अर्थ होगा दो शक्तिशाली जातियोंके बीच शक्तिकी वास्तविक परीक्षा।

मैंने मास्को और चुंकिंग दोनों स्थानोंमें सिंकियांगकी राजनीतिक कठिनाइयोंके सम्बन्धमें कहानियाँ सुनीं, जिनको लेकर कभी-कभी दोनोंके बीच प्रत्यक्ष संघर्षकी नौबत पहुँच जाती थी। इस षड्यंत्रका एक प्रधान नायक मा चुंग-इंग नामक एक मुसलमान नेता है, जिसने सन् १९३२में पड़ोसके प्रान्त कान्सूसे सिंकियांगपर आक्रमण किया था। 'तोंगन तुङ'को ख्यातिप्राप्त वह व्यक्ति है और अपने स्वधर्मी मुसलमानोंपर उसका प्रभाव भी काफी है। सन् १९३४में वह सीमान्तको पार कर गया था। कहा जाता है कि इस समय वह मास्कोमें है और फिर लौट जानेके लिये समयकी प्रतीक्षा कर रहा है। दूसरा प्रधान नेता शेंग शिह-त्साई है, जो चीनी जातिका ही है और इस समय सिंकियांगका गवर्नर है। चूँकि वह चीनके उत्तर-पूर्व प्रान्त मंचूरियाका—जिसपर सन् १९३१से जापानियोंका अधिकार है—निवासी है, इसलिये वह जापानका सख्त विरोधी है। गत जूनमें गवर्नरके प्रासादमें उसका भाई अपने बिछावनपर मरा हुआ पाया गया था। इस घटनाको लेकर जो सब कल्पित कहानियाँ फैली थीं—और जिन्हें एशियामें लोग समाचारके रूपमें ग्रहण कर लेते हैं—उनमें कहा गया था कि इस हत्याकाण्डमें रूसियोंका हाथ था।

मैं यह नहीं जान सका कि इन कहानियोंमें कहाँ तक सचाई थी। बहुत संभव है कि इनमें सचाईका अंश बिलकुल न हो। मैंने तिह्वामें गवर्नर शेंगके साथ भोजन किया, और सोवियेट कोन्सल-जनरल (प्रधान-

प्रतिनिधि) ने भी हम लोगोंके साथ भोजन किया। हम लोगोंने परस्पर एक-दूसरेके प्रति स्वास्थ्य-कामना करते हुए और अपने-अपने देश के नामपर रूसी वोडका और चीनकी बनी हुई चावलकी शराब पी। इस अवसरपर रूस और चीनके बीच हार्दिक बन्धुत्वके सिवा और किसी बातका संकेत नहीं मिला। मगर दूसरे दिन प्रातःकाल रूसी प्रतिनिधिके हवाईअड्डेपर मैंने चीनी गवर्नरके साथ एकान्तमें वार्तालाप किया। किसी समय इस चीनी गवर्नरकी सहानुभूति कम्यूनिस्टोंके प्रति थी ; किन्तु अब वह क्यांग-काई-शेकका अनुगत बन गया है। उसने मुझे हत्या, षड्यंत्र, जासूसी और प्रति-जासूसीकी जो सब कहानियाँ सुनाईं, वे मामूली रोमाञ्चकारी कहानियों जैसी मालूम पड़ती थीं, और एक अमेरिकनके लिये उनपर विश्वास करना कठिन हो जाता, यदि सब जगह सन्देह एवं रहस्यके प्रमाण नहीं पाये जाते। यह स्पष्ट है कि युद्धके बाद हम लोगोंकी एक प्रधान समस्या होगी चीन और रूस तुर्किस्तानमें जिन समस्याओंका सामना कर रहे हैं, उनके समाधानके लिये वे सहयोगपूर्वक कार्य करें, इस दिशामें उनकी सहायता करना। और यही एक खास कारण है, जिससे मैं बार-बार इस बातपर जोर देता हूँ कि चीन और रूसको तथा संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका और ब्रिटेनको आज परस्पर सम्मिलित होनेकी आवश्यकता है, जिससे जब तक वे युद्धमें संलग्न हैं, एक साथ मिलकर कार्य करना सीख सकें। क्योंकि यदि वे ऐसा नहीं करेंगे, तो मध्य-एशियामें जो बारूद सुलग रही है, वह वर्तमान युद्धके समाप्त होनेपर भड़के बिना नहीं रह सकती।

गवर्नर शेंगने मुझे जो भोज दिया था, वह इस प्रकारके बहुतसे भोजोंमें केवल सबसे पहला ही नहीं था, बल्कि और कुछ था। चीनवासियोंने मेरे आगमनके उपलक्षमें भोजोंकी भरमार कर दी थी, और यह निश्चित

रूपमें कहा जा सकता है कि चीनी लोग अतिथि-सत्कारमें संसारकी अन्य सभी जातियोंसे बढ़-चढ़े हैं। गवर्नर शेंगका दिया हुआ वह भोज खास तौरसे आनन्दप्रद था। हम लोग एक लम्बे मेहराबदार कमरेमें बैठे थे। हालके दोनों तरफ रखे हुए कम चौड़े मेजोंके आर-पार और दूसरे मेहमान आमने-सामने बैठे थे। हालकी दीवारोंपर एक अमेरिकनके स्वागतमें अंकित वाक्य, हम लोगोंके समान शत्रु जर्मनी और जापानसे लड़नेके लिये ललकार और हमारी विजयमें विश्वास सूचक वाक्य सतरह भाषाओंमें लिखे हुए थे। ये सतरह भाषाएँ एशियाके उस विभिन्न मार्गोंकी मिलन-भूमिमें प्रचलित हैं, जहाँ संसारका एक प्राचीनतम पैदल मार्ग आज भी यूरोप और एशियाके बीच सम्बन्ध-सूत्र स्थापित करता है।

गवर्नर लम्बे कदके एक सुन्दर व्यक्ति थे। उनकी मूँछें काली थीं। वे चीनी वंशके मंचूरिया-निवासी थे, और जापानमें उन्होंने विद्याध्ययन किया था। दस वर्षसे अधिकसे वे सिकियांगके गवर्नर रह चुके थे और उस देशको, वहाँके षड्यंत्रों और परस्पर-विरोधी शक्तियोंको भलीभाँति जानते थे। मैंने दिनके तीसरे पहर उनके आफिसमें उनके साथ बातचीत की। उन्होंने मुझे बताया कि जिस प्रान्तके वह गवर्नर हैं, उसका शासन-कार्य चलानेमें उन्हें किन-किन समस्याओंका सामना करना पड़ता है; क्योंकि उनके राष्ट्रकी राजधानी चुंकिंगसे सिकियांग पहुँचनेमें ४६ दिनोंकी यात्रा करनी पड़ती है।

तिहवामें और उसी तरह अन्य चीनी नगरोंमें भी जहाँ-जहाँ मुझे जाना था, मुझे इस बातका वास्तविक रूपमें मर्मस्पर्शी प्रमाण मिला कि अमेरिकन लोग सारे संसारमें किस प्रकार सम्मानकी दृष्टिसे देखे जाते हैं। उस सितम्बरकी रातमें भोजके उस बड़े कमरेमें एक अमेरिकनसे बढ़कर दूर देशका रहनेवाला और कोई नहीं था। हमारे साथ जो सरकारी

अफसर और सैनिक शानदार खाना खा रहे थे, उनमें अधिकांश ऐसे थे, जो मेरी ओर बड़े कौतूहलके साथ देख रहे थे। उनके इस प्रकार देखनेसे यह मालूम होता था कि उनमेंसे बहुतोंने अपने जीवनमें पहली बार एक अमेरिकनको देखा रहा है। फिर भी उन लोगोंने मेरी जो अभ्यर्थना की, उसमें एक प्रकारकी आत्मिकता एवं मैत्रीका भाव था, जो उनकी इस अव्यक्त आशाको बड़े जोरके साथ प्रकट कर रहा था कि भविष्यमें भी अमेरिका चीनका मित्र बना रहेगा।

तिहुवाकी हरएक बात मुझे ताशकन्द या तेहरान या काबुलसे चलकर स्पष्टरूपमें एशियाकी शक्ति एवं उसकी वास्तविक सजीवताकी याद दिला रही थी। दूसरे दिन गवर्नरने अपने अमेरिकन अतिथियोंके लिये एक सैनिक पर्यवेक्षणका अभिनय किया। सैनिकोंके कवायद करनेके एक बहुत बड़े मैदानमें हमने सिंकियांगकी सेना या उसके एक बहुत बड़े भागको सैनिक वेशमें कतार बाँधकर मार्च करते देखा।

यह एक सम्मोहक प्रदर्शन था। सैनिक लोग साफ-सुथरे, सधे हुए और स्वस्थ दिखाई पड़ रहे थे। उनकी साज-सज्जा संख्यामें यद्यपि अधिक नहीं थी, फिर भी उनमें अधिकांश रूसके थे और अच्छे थे। उनके साथ चलनशील तोपखाना, मशीनगनसे लैस मोटर-साइकिल, कवचयुक्त स्काउट-गाड़ियाँ और कुछ हल्के किन्तु शीघ्रगामी टैंक थे। मोटर-लारी पर पैदल सेनाके भी कई दल थे। उनकी साज-सज्जा रूसकी बनी हुई थी, यह उस समय और भी स्पष्ट हो गया, जब कि एक गोलन्दाज सैन्यदल मशीनगनसे लैस 'कर्चाका'के साथ हम लोगोंके पाससे होकर बहुत तेज दौड़ता हुआ निकल गया। यह कर्चाका यूक्रेनके कृषि-क्षेत्रकी भारी बोझ ढोनेवाली गाड़ी है। सोवियेट रूसके गृह-युद्धमें पहले-पहले गुरिल्ला वाहिनी ने इसका प्रयोग किया था, और इस समय इन गाड़ियोंने यूक्रेनमें दूसरी बार नात्सियोंको रोकनेमें बहुत बड़ा काम किया है।

किन्तु इस सैनिक प्रदर्शनका अन्तिम दृश्य बिलकुल स्थानीय ढंगका था। कई दर्जन घुड़सवार, मृदु और नम्र स्वभाववाले मंगोल और कज़ाकोंने—जो अपने घोड़ोंके ऊपर इस प्रकार बैठे हुए थे, मानो वे भी उन घोड़ोंके ही अंश हों,—चारों-ओरसे बहुत-सी रुकावटों—शायद पन्द्रह—के बीच आक्रमण किया। दोधारी तलवारोंसे उन्होंने छोटे-छोटे वृक्षोंको काट डाला, एक कृत्रिम मनुष्यके सिरके टुकड़े-टुकड़े कर दिये, जमीनपर पड़ी हुई चीजोंको उठा लिया—और यह सब उन्होंने बहुत तेज चालमें घोड़ोंको दौड़ाते हुए किया। उनको ध्यानपूर्वक देखनेके बाद यह समझना कठिन नहीं था कि चंगीज खाँ कैसे अपने शत्रुओंको संत्रस्त कर देता था।

जनरल च्यांग-काई-शेकने अपने दो घनिष्ठतम निजी दोस्तों और अंगरक्षकोंके द्वारा मेरे पास तिहवामें लिखित अभिनन्दन भेजा था। जब तक मैं चीनमें रहा, उनके ये दोनों मित्र बराबर मेरे साथ रहे। वे थे सूचना-विभागके उपसचिव डा० हालिंगटन के० टांग और उत्तर-पश्चिम युद्धमण्डलके प्रधान सेनापति जनरल चू शाओ-लियांग। चीन छोड़नेके वक्त उन दोनोंके लिये मेरे मनमें गंभीर स्नेहका भाव था।

चीन जाते समय मार्गमें एक विदेशीने, जिसका उस देशके सम्बन्धमें ज्ञान और उसके प्रति प्रेम मुझे उतना ही मालूम हुआ, जितना अधिकसे अधिक किसी मनुष्यका हो सकता है, मुझसे डा० हालिंगटनके सम्बन्धमें बताया कि वह जनरल च्यांग-काई-शेकके एक अत्यन्त कुशल, विश्वस्त और ईमानदार अनुगत हैं। वह मिसौरीके पार्क कालेजके ग्रेजुएट हैं और न्यूयार्कके एक स्कूलमें पत्रकार-कलाकी शिक्षा प्राप्त की है। एक चीनी समाचारपत्रके प्रकाशकके रूपमें विशेष प्रसिद्धि प्राप्त करनेके बाद वह जनरलके एक अत्यन्त विश्वस्त परामर्शदाता हुए और मंत्रिमण्डलके एक महत्वपूर्ण विभागका संचालन करनेमें उनकी सहायता करने लगे। इसके साथ-साथ वह अपने

प्रचारके लिये अनुवादक, सेक्रेटरी और सलाहकारके रूपमें भी कार्य कर रहे हैं। उनसे अच्छी तरह परिचित होनेके बाद मुझे पता लगा कि कोई भी महान् नेता उनके जैसे अंगरक्षकको अपने साथ रखना पसन्द करेगा।

डा० हालिंगटन आश्चर्यजनक रूपसे शुद्ध अंग्रेजी धारा-प्रवाह बोलते हैं। इसके विपरीत जनरल चू जो कुछ बोलते थे, उसका एक शब्द भी मेरी समझमें नहीं आया; किन्तु उनकी इस कमीकी पूर्ति उनके व्यक्तित्वसे हो जाती थी। उनके जैसा प्रिय व्यक्तित्ववाला मनुष्य मुझे कदाचित ही मिला है। चीनमें जब कभी मैं किसी भोजमें शामिल होता या कोई भाषण समाप्त करता अथवा किसी सभासे बाहर निकलता, उनको बराबर अपनी ओर अत्यन्त सौहार्द भावसे मुसकुराते देखता। वह बहुत कम बोलते थे, और उनके जैसे एक प्रसिद्ध सैनिकसे जैसी मर्यादाकी आशा की जाती थी, उसी प्रकारकी मर्यादा धारण किये रहते थे। समग्र चीनको एकताबद्ध करनेके लिये जनरलने आरम्भमें जो कठोरतम संग्राम किये थे, उन सब संग्रामोंमें इन्होंने उनका साथ दिया था। उन्होंने अपने व्यवहारसे मुझे यथासम्भव इस बातका अनुभव करा दिया कि चीन विचित्र रीति-रस्मोंसे भरा हुआ एक पराया देश नहीं है, बल्कि एक सहानुभूतिसंपन्न अतिथि-सत्कारपरायण देश है, और इस देशमें अमेरिकाके मित्र भरे पड़े हैं।

दूसरे चीनी, जिनके प्रगाढ़ बन्धुत्वको भूलना कठिन है और जिन्होंने हम लोगोंके साथ-साथ मास्कोसे यहाँ तककी यात्रा की थी, मेजर सू हुआन-शेंग थे। वह वायुविभागमें चीनी दूतमण्डलके सहायक सैनिक अफसर थे। चीन देशके अन्दर आकाश-मार्गसे उड़ते हुए कई बार उन्होंने हमारे वायुयानके चालकका काम किया था। सन् १९३८ में, अमेरिकाके युद्धमें संलग्न होनेके तीन साल पहले, इस नौजवानने—जो अभी भी सत्तरह सालका एक लड़का जैसा मालूम पड़ता था—चीनकी ओरसे पहले-पहल

जापानपर वायुयान द्वारा जो आकस्मिक आक्रमण हुआ था, उसमें चालक मरकर और पर्चे गिराकर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। मुझे इस बातकी प्रसन्नता हुई कि हम लोगोंके नायकों इन यात्रामें अंग्रेज विमानके पास, युद्धके मोर्चोंको जिस समय हम लोग देखनेके लिये जा रहे थे, मार्गमें अपनी पत्नी और बच्चोंसे मिलनेका सुयोग मिला। और उस समय मुझे खेद हुआ, जब कि हम लोगोंके स्वदेश लौटनेके मार्गमें वह चाङ्केंगियामें हम लोगोंसे जुदा होकर अपने कामपर वापस चला गया।

वे ही अब क्योंकि हमारे वायुयानपर सवार थे, जब कि दूसरे दिन २९ सितम्बरको प्रातःकाल हम कान्सू प्रान्तकी राजधानी लानचाउ उड़कर जानेके लिये वहाँसे विदा हुए। पाँच घंटेकी यह उड़ान एक दृष्टिसे हमारी इस आकाश-मार्ग द्वारा विश्व-परिक्रमाकी एक विशेष उल्लेखनीय घटना है। जिस समय आप युद्धग्रस्त संसारके ऊपरसे होकर उड़ रहे हों, अपने हरएक ठहरावके बाद दूसरे ठहरावको समझनेके लिये अपनेको तैयार कर रहे हों, मार्गके प्राकृतिक दृश्य आपको उतने नहीं आकर्षित कर सकेंगे। मगर तिहवा और लानचाउके बीचके देशका जो दृश्य मैंने देखा, वह मेरे जीवनका एक अत्यन्त आश्चर्यजनक दृश्य था। हम लोगोंके नीचे ज्यों-ज्यों यह दृश्य प्रकट होता जाता था, हम सम्पूर्ण विमुग्ध भावसे इसे देखने लग जाते थे।

सौन्दर्यमें इससे बढ़कर मनोहर दृश्य और शायद ही कहीं हो। हमारे मार्गका कुछ अंश रेगिस्तान और कुछ अंश हरे-भरे शस्यपूर्ण खेतोंके ऊपरसे होकर पड़ता था। यह बिलकुल पहाड़ी प्रदेश था; मगर हिमाच्छन्न तियेन शान पर्वत-श्रेणीको पीछे छोड़ते ही हम ऐसे स्थानमें पहुँच गये, जहाँके पहाड़ कम ऊँचे और आश्चर्यजनक रूपसे उपजाऊ थे। स्थान-स्थानपर चीनवासियोंने पहाड़ियोंको काटकर चोटी तक समतल

चला जाता है, और नीचेकी जमीन एक बहुत बड़े आकारके बिलियार्ड खेलनेके टेबुल जैसी मालूम पड़ती है, जिसपर मानो टेढ़े-मेढ़े और विभिन्न प्रकारके फैले हुए तृणाच्छादित कालीन खोदकर चिह्नित कर दिये गये हों।

जब हम लानचाउके निकट पहुँचे, हमने लाल मिट्टीसनी हुई पहाड़ियोंका स्पर्श किया, जहाँकी हवा और नदियाँ शताब्दियोंसे मिट्टीको बहाकर उत्तर-चीनकी ओर ले जाती रही हैं। ये लाल पहाड़ियाँ आकाशसे देखनेपर अविश्वसनीय रूपमें मनोरम मालूम पड़ती हैं। उनको देखकर मैं यह सोचे बिना नहीं रह सका कि एक राष्ट्रके लिये, जो अपने देशके पश्चिम द्वारको उन्मुक्त करनेके लिये कृतसंकल्प है, उसमें कितना ऐश्वर्य भरा पड़ा है। सिंचाईका प्रबन्ध, बिजलीके कारखाने, उपजाऊ खेत और चारागाह—इन सबको लेकर इस भूभागमें संपूर्ण रूपमें बड़े-बड़े नगर बसाये जा सकते हैं। और इस प्रकारके नगरोंके निर्माणमें यदि किसी बातका अभाव मुझे मालूम हुआ, तो वह निर्माण करनेवाले लोगोंका।

मैं नहीं जानता कि चीनमें जो मैं कई सप्ताहों तक रहा, उस अवधिमें मैं कितनी बार इस उड़ानके विषयमें सोचता रहा। पहली बात तो यह है कि एक ओर इस उत्तर-पश्चिम भूभागकी जनशून्यता और दूसरी ओर इसके संपूर्ण विपरीत दक्षिण-चीनकी जनाकीर्ण उर्वर भूमि—दोनोंके बीच जो असमानता है, उसको स्पष्ट रूपमें प्रकट कर देती है। दूसरी बात यह कि प्रत्येक चीनी नेताने, जिसके साथ मैंने बातचीत की, चीनके उत्तर-पश्चिम प्रदेश तथा उसकी समृद्धिको यातायातके साधनों, सहयोग समितियों और आधुनिक विज्ञानकी सहायतासे उन्मुक्त करनेके लिये जो वर्त्तमान संग्राम चलाया जा रहा है, उसकी चर्चा की और बताया कि जापानके विरुद्ध युद्धमें और उसके बाद शान्तिकालमें एक शक्तिशाली आधुनिक राष्ट्र-निर्माणके महत् कार्यमें चीनकी सर्वप्रधान आशा उसी संग्रामपर केन्द्रित है।

आखिरी बात — और सबसे बढ़कर महत्त्वपूर्ण है, वह यह कि सिंकियांगमें और लानचाऊमें तथा इन दोनों नगरोंके बीचके देहातमें मुझे पश्चिम अमेरिकाके उन दिनोंके साथ, जब कि वह विकसित हो रहा था, एक असाधारण सादृश्य मालूम हुआ। यहाँके लोग लम्बे कदके और साहस-पूर्ण तथा बेलाग और [illegible] जनवादी वृत्तियोंमें जिस प्रकारके संतुलन लोगोंको इसने देखा था, उनसे अधिक वह यहाँके मुझे मालूम हुए। चीनके उपकूल-प्रदेशके आधे भागपर, उसके समस्त बड़े-बड़े औद्योगिक नगरों और बन्दरगाहोंपर तथा अधिकांश बहुत और उपजाऊ कृषि-भूमिपर इस समय जापानियोंका अधिकार है, जिससे अपने देशके पश्चिम द्वारको उन्मुक्त करनेके सिवा उनके लिये और कोई दूसरा उपाय ही नहीं रह गया है। अतः मुझे यह देखकर खुशी हुई कि चीनवासियोंमें जो लोग इस समय इन देशोंमें पथ-प्रदर्शक बनकर नयी परिष्कार कर रहे हैं, उनमें वहाँ [illegible] और लाभवाली मनोवृत्तिका अभाव है। इसके विपरीत वे कुछ बढ़-चढ़कर और दोनोंके साथ उसी तरहकी बातें करते हैं, जिस तरह अमेरिकामें मेरे पिताकी पीढ़ीके लोग बातें किया करते थे।

लानचाऊमें मैंने चीनकी कुछ औद्योगिक सहयोग-समितियोंका निरीक्षण किया। वहाँ मेरी मुलाकात न्यूजीलैण्डवाली रिवी ऐलेसे, हुई, जो बहुत ही शान्त प्रकृतिके सच्चे व्यक्ति हैं। उन्होंने 'इन्डसको' (Indusco) को एक अन्तर्राष्ट्रीय शब्दके रूपमें और इस बातके प्रतीकके रूपमें परिणत कर दिया है कि जिस जातिने अपने कर्मोद्यमकी बदौलत अपनेको ऊँचा उठानेका संकल्प कर लिया है, वह कहाँ तक कार्य-साधन कर सकती है। जिस समय ऐलेके साथ मेरी मुलाकात हुई थी, वह कठिनाइयोंका सामना कर रहे थे, और मेरा यह अनुमान है कि आगे भी उन्हें कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा। किन्तु मुझे इसमें जरा भी सन्देह

यही है कि रूस और चीनका औद्योगिक सहयोग-आन्दोलन, जैसा कि मैंने उसे चीनके उत्तर-पश्चिम प्रान्तोंमें पाया था, एशियाके भविष्यको प्रभावित करके किसानोंके आर्थिक क्षेत्रमें एक विराट् परिवर्तनका सूत्रपात कर रहे हैं।

जापानी आक्रमणकारियोंके विरुद्ध चीनका जो सैनिक संग्राम चल रहा है, उसके विषयमें अमेरिकामें जितना लिखा गया है, उसकी अपेक्षा चीनके इस आर्थिक संग्राम—जिसमें वह इस समय संलग्न हो गया है—के विषयमें बहुत कम लिखा गया है। किन्तु इस आर्थिक संग्रामके सम्बन्धमें मैंने जो कुछ देखा, उससे मुझे विश्वास हो गया कि यह भी कम लाभप्रद नहीं है। यदि हम अमेरिकन किसी विपक्ष शक्ति द्वारा अपने समुद्रके उपकूल-भागमें सहसा आक्रान्त हो जायँ, तो हम अपने देशके विशाल भीतरी भागमें हट जा सकते हैं और वहाँसे संग्राम चलानेके लिये यंत्र और दक्ष श्रमिक प्राप्त कर सकते हैं; किन्तु चीनके विशाल अभ्यन्तरमें इस प्रकारकी सुविधायें नहीं थीं। चीनवासियोंको अपने कारखानोंको देशके भीतरी भागमें अपने साथ ले जाना पड़ता था; और वह भी भाड़ेकी गाड़ियोंपर नहीं, लारियोंपर नहीं, बैलगाड़ियोंपर नहीं, बल्कि छोटे और बड़े टुकड़ोंमें अलग-अलग मनुष्योंकी पीठपर। इस प्रकार वे इन बोझोंको बड़ी-बड़ी नदियोंकी घाटियों और पर्वत-श्रेणियोंके पार ले जाया करते थे।

सुदूर पहाड़ी प्रदेशोंमें, जहाँ मशीनोंकी घरघराहट कभी नहीं सुनी गई थी, वे मशीनके हिस्सोंको ले जाकर रखते थे और फिर उन्हें एक साथ मिलाकर बैठाते थे। इस प्रकार जहाँ कुछ ही कारखाने स्थानान्तरित किये जा सकते थे, वहाँ अब एक हजारसे अधिक औद्योगिक संस्थायें फूल-फल रही हैं, जिनमेंसे अधिकांश छोटी हैं और उनके उत्पादनका क्षेत्र

सीमित है ; किन्तु उनमें प्रत्येक नूतन चीनकी नींव डालनेमें स्वल्प रूपमें अपना-अपना अंश ग्रहण कर रही है।

अवश्य ही हम अमेरिकनोंमें आनेवाली घटनाओंके अंकन—चित्रको पढ़नेकी क्षमता है। इस नूतन चीनके विकासकी तुलना आधुनिक इतिहासमें केवल हमारे पश्चिमके विकाससे ही की जा सकती है। हम चीनी लोगोंके संग्रामको जानते हैं। हम उनकी आशासे भी परिचित हैं। और कुछ अंशोंमें हम यह भी जानते हैं कि उनकी उस आशाकी पूर्ति किस रूपमें होगी। आधुनिक चीनके नेताओंका आर्थिक उद्देश्य अपने देशका उसी प्रकार क्रम-विकास करना है, जिस प्रकार हम लोगोंने अपने देशका किया था। वे लोग अपने देशमें उद्योग-धन्धोंकी नींव डालना चाहते हैं, जिससे वहाँकी जनताकी रहन-सहनका मानदण्ड ऊँचा हो जाय। बहुतसे विशेषज्ञोंका यह विश्वास है कि एक बार चीनका औद्योगीकरण आरम्भ हो जानेपर उसकी गति हमारे देशकी अपेक्षा भी शीघ्रगामी होगी। नूतन चीन उद्योग-धन्धोंका आरम्भ उन्नत शिल्प-विज्ञानके साथ कर रहा है। जहाँ हम लोगोंको रेलगाड़ीके इंजिनके मन्दगामी क्रम-विकासकी प्रतीक्षा करनी पड़ी थी, वहाँ वे एक घंटेमें तीन सौ मीलकी चालसे उड़नेवाले वायुयानके साथ कार्यारम्भ कर सकते हैं।

अभी तक उनके पास न तो वायुयान हैं और न रेलगाड़ीके इंजिन। काचवाउमें उसका राजमार्ग समाप्त हो जाता है। यह आधुनिक चीनका एकमात्र स्थल-मार्ग है। मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक अमेरिकन अपनी आँखोंसे इस बातको देखता कि जापानियोंके साथ पाँच साल तक युद्ध करते रहनेके बाद भी चीनवासी अब तक जो वीरता एवं धैर्यके साथ युद्ध चला रहे हैं और उसके सम्बन्धमें चीनसे जो कहानियाँ उनके कानों तक पहुँचती हैं तथा उनपर वे आश्चर्य प्रकट करते हैं, उनमें अति- रञ्जनाकी मात्रा कहाँतक है।

अल्मा-आताके पूर्व सोवियेट सीमान्तको पार करनेके बादमें हम बराबर इसी राजमार्गके विस्तारके ऊपरसे होकर उड़े थे। आता एक बड़ा शहर है, और रेल-मार्ग तथा आकाश-मार्ग द्वारा साइबेरिया, सोवियेट मध्य-एशिया और खास रूसके शिल्प और कच्चे मालके साथ संबद्ध है। अल्मा-आतासे भारी-भरकम मोटर-लारियाँ पक्की सड़कसे होकर पूर्वकी ओर सिङ्क्याङ और हामी होते हुए कान्सू प्रान्तके पश्चिम सीमान्त तक रौंदती हुई जाती हैं। हम लोग इन लारियोंके ऊपरसे होकर उड़े, और हमें इस बातका पक्का विश्वास हो गया कि एशियाके इस प्राचीन वाणिज्य-मार्गपर, जो शायद इतिहासका प्राचीनतम कारवाँ-मार्ग है और जिस मार्गसे होकर मार्को पोलोने प्राचीन कैथेकी यात्रा की थी, ये लारियाँ उतनी ही वास्तविक थीं, जितनी वे बेमेल मालूम पड़ती थीं।

इस राजमार्गका चीनमें जहाँ अन्त होता है, वहाँ न तो रोड-बेड(Road-bed) है, न पेट्रोल और न लारियाँ यह स्थान राजमार्गकी ऐतिहासिक जनश्रुतियोंको बहुत-कुछ उपयुक्त रूपमें चरितार्थ करता है। लारियोंके बदलेमें चीनी लोग बैलगाड़ियों, ऊँटों और कुलियोंका व्यवहार करते हैं। सोवियेट रूससे लारीपर जो माल भेजे जाते हैं, वे सीमान्तसे चार दिनमें कान्सूके सीमान्तपर और फिर वहाँसे ७० दिनोंमें लानचाउ पहुँचते हैं। फिर भी वे रेल-मार्गके उस स्थान तक नहीं पहुँचते, जहाँ उन्हें गाड़ियोंपर लादा जा सके, बल्कि अब भी उन्हें लगातार कई दिनों तक उन्हीं आदिम युगके यातायातके साधनों द्वारा ढोकर आगे ले जाया जाता है और तब वे उस संकीर्ण स्थानसे निकलकर चीनके उन घनी आबादीवाले भागोंमें पहुँचते हैं, जहाँ उनकी अत्यधिक आवश्यकता होती है।

लानचाउके बाहर हवाई बन्दर और नगरके बीच हमने एक चीनी काफिलाको रूसकी तरफ जानेके लिये तैयार होते देखा। इस काफिलेमें

पर, आखरवाली छोटी-छोटी दो पहियेवाली ट्रक-गाड़ियोंपर ऊन, नमक और चायके बोझोंके ढेर लगे हुए थे। बाहर वहीं पीरदारके साथ सीलों क्यूमें कतारमें खड़े थे और उनके बाद कुली लोग। वे सब दरवाजा खोलनेके हुक्म की प्रतीक्षा कर रहे थे। मुझे बताया गया कि पश्चिमकी तरफ उन्हें दो महीनेसे अधिक तक धीरे-धीरे चलकर रास्ता पूरा करना होगा और तब इसके बाद अपने मालके बदलेमें उन्हें पेट्रोल, वायुयानके विभिन्न भाग, इंजिन और गोला-गोली आदि मिलेंगे। ये सब चीजें सोवियेट एशिया अब भी चीनको बहुत अंशोंमें उधार दे रहा है और इनकी कुल संख्या स्तब्ध कर देनेवाली सीमापर पहुँच चुकी है।

सड़क बहुत खराब हालतमें है और उसपर से होकर अत्यधिक यातायात होता है। अगर यह बंद हो जाय, तो हम लोगोंको नुकसान उठाना पड़ेगा। इस सड़कसे होकर किस तादादमें इस समय मालोंका यातायात हो रहा है, इस सम्बन्धमें मुझे कोई सरकारी आँकड़े नहीं मिल सके। मगर लानचाउमें रहनेवाले अमेरिकनोंका अन्दाज है कि इस १८०० मील लंबे राजमार्गसे होकर हर महीना चीनमें २००० टनसे अधिक माल नहीं पहुँचते। बर्मा रोडसे, जिसे जापानियोंने काट डाला है, जितने माल चीनमें पहुँचाये जा सकते हैं, उनकी तुलनामें यह संख्या बहुत कम है। किन्तु अमेरिकन वायु-यानोंको छोड़कर, जो भारतसे होकर हिमालय पर्वत-श्रेणीके ऊपर उड़ा करते हैं और जापानके विरुद्ध समग्र मोर्चेसे होकर गैरकानूनी ढंगसे जो माल छन-छनकर भीतर पहुँचते हैं, उसके सिवा बाहरी दुनियाके साथ चीनका सम्बन्ध जोड़नेके लिये यही एकमात्र मार्ग है।

लानचाउ पीत नदीके तटपर उसके उद्गम—स्थानसे लुंगकुयानकी अपेक्षा बहुत नजदीक है। यहाँ एक या दो सप्ताहके बाद हमें उस पारमें जापानी सैन्य-शिविरोंको देखना था। लानचाउ शहरकी आबादी पाँच

कारखाने अधिकको नहीं होगी। यहाँ कोई रेल-मार्ग नहीं है, और ३ सालसे पुराना कोई महत्त्वपूर्ण कारखाना नहीं है। फिर भी इसका भविष्य आशापूर्ण है। कान्सू प्रान्तको, जिसकी यह राजधानी है, भूमि सम्पत्ति-शाली है और भावी उन्नतिके लिये इसकी संभावनायें विशाल हैं।

लानचाउमें ही जनरल चू मुझे अपने घरपर अपनी पत्नीसे मुलाकात करानेके लिये ले गये। हम लोग शहरसे बाहर एक पहाड़ीपर गये। इस पहाड़ीपर से नीचे शहर और उससे आगे दूर तक नदी दिखाई पड़ती है। पहाड़ीकी चोटीके पास एक चीनी मन्दिर है, जो इस समय चीनके पाँच उत्तर-पश्चिम प्रान्त—शेन्सी, कान्सू, निंगशिया, चिंघाई और सिंकियांगके सैनिक विभागके लिये सदर दफ्तरका काम करता है। यहाँ हमने बैठकर चाय पी और जनरल चू तथा उनकी बीबीके साथ एक बहुत बड़ा भोज खाया। जनरल कार्य करनेके कमरेके बरामदेसे मन्दिरकी खपरैल छत, शहरके उस पारकी नदी और उसके पानीसे सिंचाईके प्रबन्ध देखे जा सकते हैं। कान्सू प्रान्तको उपजाऊ बनानेके लिये सिंचाईका यह प्रबन्ध दो हजार वर्षसे अधिकसे जारी है।

उस रातको कान्सूके गवर्नर कू चेंग-लुनने हम लोगोंको एक दूसरा भोज अफसरोंके एक होस्टलमें दिया, जहाँ हम लोग रात-भरके लिये ठहरे थे। मेरे मेजबानके सिवा और भी दूसरे उच्चपदस्थ सरकारी कर्मचारी वहाँ उपस्थित थे। उन लोगोंने प्रान्तके वन-जंगल, कृषि, जलको सुरक्षित रखनेकी समस्या और उसके पनपते हुए व्यवसायोंकी—जिनमेंसे कुछ व्यवसायोंको, जिनमें एक कम्बलकी फैक्टरी भी शामिल थी, दूसरे दिन मैंने देखा था—चर्चा की। चीनकी युद्धकालीन राजधानी चुंकिंग पहुँचनेमें मुझे अब भी कई दिनोंकी देर थी, मगर मैं अभीसे उस शक्तिका अनुभव करने लग गया था, जिससे इस अद्भुत राष्ट्रने जापानियोंके विरुद्ध संग्राम चलानेकी क्षमता प्राप्त की है।

स्वतंत्र चीन किन साधनोंसे लड़ता है

कान्चाउसे हम उड़कर चेंगतू गये और फिर वहाँसे पहाड़ोंको पार करते हुए राजधानी चुंकिंग पहुँचे। चीनसे स्वदेश लौटते समय रास्तेमें हम उत्तर तरफ उड़कर सियान तक गये और फिर वहाँसे चेंगतू वापस आये। चेंगतूसे अपनी लम्बी उड़ानमें उत्तर चीन और गोबीको पार करते हुए हम साइबेरिया पहुँचे। कई बारकी छोटी-छोटी उड़ानोंमें हमने सेचवान या यूनानमें वहाँके अमेरिकन सदर दफ्तर या सैन्य-शिविरोंका निरीक्षण किया। इस प्रकार हमने स्वतंत्र चीनके उन प्रान्तोंके, जहाँ अब भी हवाई आक्रमणोंके सिवा और किसी भी रूपमें जापानियोंकी पहुँच नहीं हो सकी है, एक काफी बड़े हिस्सेको अपनी इस यात्रामें तय किया।

इन प्रान्तोंकी संख्या दस है—पाँच उत्तर-पश्चिममें और पाँच दक्षिण-पश्चिममें। उत्तर-पश्चिममें हमने चीनके भविष्यको देखा था। दक्षिण-पश्चिममें खासकर सेचवान प्रान्तमें—चेंगतू और चुंकिंगमें—हमने उसके वर्तमानको सर्वोत्तम रूपमें देखा।

यहाँकी भूमिने नहीं, बल्कि यहाँकी जनताने मुझे अत्यन्त प्रबल रूपमें प्रभावित किया। इस देशमें जो अक्षय मानवीय साधन हैं, उनको पूर्ण रूपसे समझना किसी भी व्यक्तिके लिये कठिन है। जो लोग चीनको जानते हैं, मगर सन् १९३७ के बादसे, जब जापानने चीनको जीतनेका अपना वर्तमान प्रयास आरम्भ किया, वहाँ नहीं गये हैं, मुझे बताते हैं कि चीनवासियोंकी सजीवता, उनकी साधन-सम्पन्नता, उनका

साहस और स्वाधीनताके प्रति उनका अनुराग जो उनकी जातिके विशिष्ट गुण हैं, उनके लिये सदासे चमत्कारके रूपमें रहे हैं।

चीनकी सूती कपड़ेकी मिलों, युद्धके सामान प्रस्तुत करनेकी फैक्टरियों, चीनीके बर्तन बनानेके कारखानों और सिमेंट मिट्टी तैयार करनेकी कलोंको देखने और उनके मैनेजर तथा सैकड़ों श्रमिकोंके साथ घंटों बातचीत करनेके बाद मैंने आधुनिक शिल्प-प्रणालियोंको अपने लिये उपयोगी बना लेनेमें चीनवासी कितने निपुण होते हैं और इसमें उनकी उद्भावना-शक्ति कितनी प्रखर होती है, इसका वास्तविक महत्त्व मुझे अब मालूम होने लगा। और जिसे आम तौरसे चीनका नवजागरण कहा जाता है, उसका वास्तविक अभिप्राय मुझे तब जान पड़ा, जब कि मैंने कालेजके अध्यापकों और स्कूलके शिक्षकोंके साथ चीनकी उस अदम्य प्रेरणाके सम्बन्धमें आलोचना की, जिसके परिणाम-स्वरूप वह अपनेको अतीतकी जड़ता एवं शिथिलतासे सर्वथा मुक्त कर लेनेके लिये कृतसंकल्प है और जिसकी बदौलत आधुनिक चीनमें कुछ ही सालके अन्दर साक्षरता केवल मुट्ठी-भर लोगोंके लिये विशेष सुविधाके रूपमें नहीं रह गई है, बल्कि सर्वसाधारण जनताका उसपर अधिकार हो गया है। इस समय लगभग १००,०००,००० चीनी साक्षर हैं। विश्वविद्यालयोंमें कोरी विद्वत्ताकी दृष्टिसे शिक्षाकी माप नहीं की जाती। आजके चीनी विद्वान चीनके ज्ञानैश्वर्यको आधुनिक जीवनकी समस्याओंके प्रति प्रयुक्त कर रहे हैं। अब वे केवल मठोंकी निर्जनताको ही नहीं ढूँढ़ते, बल्कि अपने राष्ट्र एवं समाजकी अच्छे ढंगसे सेवा करनेके लिये तीव्र प्रतियोगिता करना चाहते हैं।

चंगतूमें आठ विश्वविद्यालयोंके अध्यक्षोंसे मेरी मुलाकात हुई, और मैंने उनसे ढेर-के-ढेर प्रश्न किये। छः विश्वविद्यालयोंके अध्यापक जापानी

अधिकृत अंचलोंसे भागकर यहाँ आये हुए थे और जो विश्वविद्यालयोंकी सुविधाओंका पूरी-पूरीसे उपयोग कर रहे थे, जिससे विश्वविद्यालयके भवन, पुस्तकालय और वैज्ञानिक प्रयोगशालाओंमें प्रायः चौबीस घं. तक काम होता ही रहता था।

इस प्रभावोत्पादक दृश्यको मैं कभी नहीं भूल सकता, जब कि एक दिन प्रातःकाल मुझे उन विश्वविद्यालयोंके दस हजार छात्रोंके सामने भाषण करना पड़ा, और जब-जब मेरे भाषणमें स्वतंत्रताका जिक्र आता था, वे मुक्तकण्ठसे हर्षध्वनि प्रकट करते थे। स्वतंत्र चीनमें मैंने उन आदमियोंसे बातचीत की, जो छोटे-छोटे विद्यालयोंका संचालन कर रहे हैं और जहाँ चीनके किसानों और मजदूरोंके बच्चोंको उनके देशके इतिहासमें पहली बार शिक्षा प्राप्त करनेका मौका मिल रहा है।

दस साल पहले जहाँ केवल एक सौ समाचारपत्र थे, वहाँ आजके स्वतंत्र चीनमें एक हजार समाचारपत्र निकल रहे हैं। प्रायः प्रत्येक बड़े शहरसे एक या दो समाचारपत्र प्रकाशित होते हैं, और उनके संपादकीय लेख, जो अनुवाद करके मुझे सुनाये गये थे, तेज और जोरदार होते हैं। चीनकी संवाद-संग्रह करने और वितरण करनेवाली संस्था चाइनीज सेन्ट्रल न्यूज सर्विस (Chinese Central News Service) पेशेवर ढंगसे समाचार संग्रह करती है और उसका वितरण करती है। इस काममें वह अमेरिकाकी संवाद-संग्रह करनेवाली एजेन्सियों और रायटर कम्पनीसे मजेमें टक्कर ले सकती है।

मैं चुंकिंगमें देर करके तीसरे पहर शहरसे कुछ मील दूर वहाँके एक हवाई बन्दरपर पहुँचा। हमारी मोटर गाड़ियोंके नगरमें पहुँचनेके बहुत पहलेसे ही लोग सड़कके दोनों तरफ कतार बाँधकर खड़े थे। नगरके मध्य भागमें हमारे पहुँचनेके पहले ही झुंड-के-झुंड लोग सड़कपर दुकानोंके

सामने भीड़ लगाये खड़े थे। स्त्री, पुरुष, छोटे-छोटे लड़के-लड़कियाँ, लम्बी दाढ़ीवाले वृद्ध भद्र पुरुष, फेल्ट टोपी पहने हुए चीनी, अन्य प्रकारकी टोपी पहने हुए दूसरे लोग, कुली, मजदूर, भार ढोनेवाले, विद्यार्थी, शिशुओंको दूध पीलानेवाली मातायें अच्छी पोशाकमें या गरीबी की पोषाकमें—सब-के-सब ग्यारह मील तक उस सड़कपर भीड़ लगाये खड़े थे, जिस सड़कसे होकर हमारी गाड़ियाँ धीरे-धीरे अतिथि-भवनकी ओर जा रही थीं, जहाँ हम लोग ठहरनेवाले थे। यांगसी नदीके दूसरे किनारेपर भी लोग खड़े होकर हमारी प्रतीक्षाकर रहे थे। चुंकिंगकी सभी पहाड़ियोंपर--जो अवश्य ही संसारका सबसे बढ़कर पहाड़ीमय नगर कहा जायगा—लोग खड़े होकर मुसकुरा रहे थे, हर्षध्वनि प्रकट कर रहे थे और कागजके छोटे-छोटे अमेरिकन और चीनी झंडे हिला रहे थे।

कोई भी व्यक्ति जो संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाके राष्ट्रपतिके पदके लिये उमीद-वार खड़ा हो चुका है, जनताकी भीड़ोंसे बहुत-कुछ अभ्यस्त हो जाता है; मगर इस तरहकी भीड़से नहीं। मैं अपने मनमें जितना चाहता, इसमें छूट दे सकता था; किन्तु मेरी सारी चेष्टा व्यर्थ सिद्ध हुई। लोग कागजके जिन झंडोंको हिला रहे थे, वे सब एक ही आकारके थे, जिससे इस बातका पता चलता था कि चुंकिंगके अतिथि-सत्कारपरायण और कल्पनाशील मेयर डा० के० सी० वूका इस प्रदर्शनका आयोजन करनेमें पूरा हाथ था। यह बिलकुल स्पष्ट था कि इन सब लोगोंको, जिनमें बहुतसे नंगे पाँव थे या फटे-चिटे कपड़े पहने हुए थे, इस बातकी कोई भी स्पष्ट धारणा नहीं थी कि मैं कौन हूँ और यहाँ क्यों आया हूँ। हरएक गलीकी मोड़पर पटाखेकी आवाज हो रही थी, जिससे मैंने समझा कि चीनवालोंका यह एक पुराना शौक है।

यद्यपि मैंने इस बातका पूरा प्रयत्न किया कि इस प्रदर्शनको ज्योंके त्यों रूपमें मैं ग्रहण नहीं करूँ, फिर भी इस दृश्यने मुझे गम्भीर रूपमें प्रभावित किया। लोगोंके चेहरोंपर मुझे कुछ भी बनावट या कृत्रिमताका भाव दृष्टिगोचर नहीं हुआ। वे मुझे अमेरिकाके एक प्रतिनिधिके रूपमें तथा उसकी मैत्री एवं साहाय्य—जिसके मिलनेकी शीघ्र उम्मीद की जाती थी—की वास्तविक आशाके रूपमें देख रहे थे। वह जनताकी सदिच्छाका एक सामूहिक प्रदर्शन था। और यह वहाँकी जनतामें और उनके मनोभावोंमें जो सहज शक्ति है और जो चीनका सबसे बड़ा राष्ट्रीय साधन है, उसका एक प्रभावोत्पादक प्रदर्शन था।

मैंने इसी तरहकी एक भीड़को, मगर इससे संख्यामें कुछ कम, लानचाउ पहुँचनेपर सुदूर उत्तर-पश्चिममें देखा था। बादमें दूसरी भीड़को, जो काफी प्रभावोत्पादक थी, मैंने शेन्सी प्रान्तकी राजधानी सियानमें देखा। वहाँ लोग घंटों तक पानीमें भीगते हुए सड़कोंपर मेरी प्रतीक्षा करते रहे, क्योंकि हमारा वायुयान देर करके पहुँचा था। उन्हें देखकर मैं गंभीर रूपमें द्रवित हुए बिना नहीं रह सका। चीन जैसे विराट देशमें थोड़े समयमें भ्रमण करके अपनी इच्छानुसार लोगोंके साथ घनिष्ठ सम्पर्क और व्यक्तिगत मैत्री-सम्बन्ध स्थापित करना असंभव है—उस प्रकारका सम्बन्ध, जिससे किसीको एक विदेशी जातिकी प्रकृति एवं विचारोंकी जानकारी आम तौरसे हुआ करती है। किन्तु चीनी जनताकी इन भीड़ोंने मुझे इस बातकी निश्चित एवं स्थायी धारणा प्रदान की कि चीनके सम्बन्धमें मेरे जो ऊपरी अनुभव थे, उनके पीछे कुछ और बात थी, जिसे उन हजारों मनुष्योंके चेहरोंपर पढ़नेमें किसीको भ्रम नहीं हो सकता था।

जिन चीनवासियोंको मैं अच्छी तरह जान सका था वे निश्चित रूपमें किसी-न-किसी क्षेत्रके नेता थे। उनमें से कुछका वर्णन मैं आगे चलकर इसी

विवरणमें प्रशंसासूचक उच्च शब्दोंमें करूँगा। मगर चीनकी अज्ञात जनताके लिये मेरे विचारसे ऐसी कोई भी प्रशंसा नहीं है, जो अत्यधिक कही जा सके।

उनमें एकने—जिसके साथ मेरी कभी मुलाकात नहीं हुई—जब मैं चीनमें था, एक पत्र मुझे लिखा था। वह एक छात्र है, और अपने पत्रके अन्तमें उसने अपनी एक तस्वीर चिपका दी थी। उसकी अंग्रेजी उसी तरहकी थी, जिस तरहकी भाषाका केवल एक छात्र ही, जिसे अपने-आपपर और अपने शब्दकोषपर पूर्ण विश्वास हो, व्यवहार कर सकता है।

उसने लिखा था—"प्रिय मि० वेन्डेल विल्की, मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि चीन, जो मित्र-पक्षके देशोंमें एक बहुत ही बहादुर और विश्वस्त देश है, सब प्रकारकी कठिनाइयोंका सामना करते हुए भी कभी भयभीत नहीं हुआ और न अपने विचारको बदला; क्योंकि हम लोग इस बातको पूरी तरहसे समझ रहे हैं कि हम स्वतंत्रता एवं सत्य-शीलताके पवित्र पक्षमें युद्ध कर रहे हैं, और हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि हमारा भविष्य उज्ज्वल है, और ईश्वर हमें वह विजय प्रदान करेगा, जिसको प्राप्त करनेके लिये हम व्यथित हो रहे हैं।"

उसने इस पत्रके साथ युद्धके बाद शान्तिकी स्थापनाके लिये अपनी योजनाका एक चिट्ठा भी शामिल कर दिया था। और उसकी वह योजना मनोरञ्जक थी। किन्तु उसके भावने मुझे उसी तरह प्रभावित किया, जिस तरह चीनके जन-समूहके भावने, जिसे चीनमें मैं जहाँ कहीं गया, सर्वत्र देखा। उसने प्रस्ताव किया था कि ऐसे स्मारक चिह्न स्थापित किये जायँ, जिन्हें देखकर लोग युद्धकी प्रशंसा न करके उससे घृणा करें, और उसने यह भी प्रस्ताव किया था कि इस युद्धका अन्तिम दिन सारे संसारमें सार्वजनिक बलिदान-दिवसके रूपमें मनाया जाय और इसे 'शान्ति,

स्वतंत्र, आनन्द दिवस' ('Peace Free, Pleasure, Day') के नामसे अभिहित किया जाय।

उसकी योजनाका एक प्रस्ताव है, "मनुष्योंमें लोक भावकी वृद्धि करना।" और इसके लिये उसने यह सुझाव पेश किया था कि प्रत्येक राष्ट्र एक शान्ति-कोष स्थापित करे, जिससे वैज्ञानिक छात्रवृत्तियोंकी व्यवस्था की जाय। केवल विज्ञान ही, उसने मुझे लिखा था, "मनुष्योंकी पीड़ाका समाधान कर सकता है, प्रकृतिकी क्षतियोंकी पूर्ति कर सकता है, मनुष्योंकी जीवन-यात्रा-प्रणालीके आनन्दपक्षको ऊँचा कर सकता है और संपूर्ण मानव जातिको-अपनी जातिके साथ नहीं, प्रकृतिके साथ संग्राम करनेके लिये प्रस्तुत कर सकता है।"

हमारे पक्षमें जो देश युद्ध कर रहे हैं, उनमें शायद कोई भी देश एक व्यक्तिके व्यक्तित्व द्वारा उतना शासित नहीं हो रहा है, जितना चीन। उस व्यक्तिका नाम है च्यांग-काई-शेक, यद्यपि वह संसार-भरमें 'जनरलिस्सिमो' (The Generalissimo) नामसे अभिहित किये जाते हैं। इस शब्दका संक्षिप्त रूप 'लिस्सिमो' (Lissimo) है और लोग कभी-कभी इस नामसे भी च्यांग-काई-शेकको पुकारते हैं।

जनरलिस्सिमोके साथ मेरी कई बार देर-देर तक बातचीत हुई, और उनके परिवारमें मैंने कई बार अकेले उनके साथ और श्रीमती च्यांगके साथ जलपान और भोजन भी किये।

एक दिन तीसरे पहर कुछ देर करके हम जनरलच्यांगके देहाती वासस्थानपर गये, जो यांगसी नदीके किनारेपर अवस्थित है। हमारे साथ डा० हालिंगटन टॉग भी थे। उनके उस साधारण ढंगके बने मकानके सामनेके आरपार एक बहुत बड़ा ओसारा था, जहाँ बैठकर हम लोग चुं-किंगकी पहाड़ियोंको देख रहे थे। नीचे नदीमें छोटी-छोटी नौकायें तेज

ग्रामोंमें चीनी किसानों और उनकी पैदावारोंको लिये हुए याङ्गत्सीकी ओर खिसकती जा रही थीं। उस दिन चुंकिंगमें काफी गर्मी थी, मगर सुखप्रद मृदुमन्द वायु बह रही थी। जिस समय श्रीमती च्यांग हम लोगोंको चाय परोस रही थीं, मैंने जनरलके साथ वार्तालाप शुरू किया। श्रीमती च्यांग और डा० हॉलिंगटन हम लोगोंके उस वार्तालापमें बारी-बारीसे दुभाषियेका काम कर रहे थे।

इन लोगोंने चीनके अतीत कालके सम्बन्धमें तथा उनके शासनका जो यह उद्देश्य है कि चीनको, जो प्रायः सम्पूर्ण रूपसे एक कृषि-प्रधान है, एक आधुनिक शिल्प-प्रधान समाजमें परिवर्तित कर दिया जाय, इस सम्बन्धमें आलोचना की। उन्हें यह आशा थी कि इस प्रकारका परिवर्तन होनेपर भी चीनकी प्राचीन परम्परागत प्रथाओंमें जो सर्वोत्तम बातें हैं वे कायम रह जायँगी और व्यापक रूपमें किसी प्रकारकी सामाजिक विशृङ्खलता भी उत्पन्न नहीं हो सकेगी। इसके लिये वह पश्चिमी ढंगके बड़े-बड़े कल-कारखानोंको न खोलकर सारे देशमें व्यापक रूपसे छोटे-छोटे कारखाने स्थापित करना चाहते हैं। उन्हें यह विश्वास है कि चीनी प्रजातन्त्रके जनक डा० सन यात सेनने कृषि एवं शिल्प दोनोंकी प्रधानता रखनेवाले समाजकी स्थापनाके सम्बन्धमें जो शिक्षायें दी हैं, उनका अनुसरण करके वह इस प्रकारके समाजको स्थापित करनेमें सफल होंगे। किन्तु पश्चिमके किसी व्यक्तिसे इस सम्बन्धमें विचार-विमर्श करनेके लिये वह उत्सुक थे और उन्होंने मुझसे बहुतसे प्रश्न भी किये। मैंने उन्हें समझाया कि अमेरिकामें सामूहिक उत्पादन और बड़े-बड़े औद्योगिक संस्थाओंके समवायसे जिन सामाजिक समस्याओंकी सृष्टि हुई है और जिनसे वह बचना चाहते हैं, उनका एकमात्र कारण, जैसा कि वह समझते हैं, केवल कृपणता एवं व्यक्तिगत ऐश्वर्य प्राप्तिकी कामना ही नहीं है, यद्यपि ये बातें भी निस्सन्देह

उन समस्याओंकी सृष्टिमें सहायक हो रही हैं। हाँ, कम-से-कम कुछ अंशोंमें वे समस्यायें अवश्य आर्थिक प्रयोजनोंके कारण उत्पन्न हुई हैं। सामूहिक रूपमें उत्पादन होनेसे उत्पादनका खर्च बहुत कम हो जाता है।

मैंने उन्हें मोटर गाड़ीके व्यवसायका दृष्टान्त दिया, जिसके सम्बन्धमें वह आशा करते हैं कि एक दिन चीनमें भी कम खर्चमें मोटर गाड़ियाँ तैयार होने लगेंगी और उनसे चीनकी सड़कें भर जायँगी। मैंने उन्हें बतलाया कि एक मोटर गाड़ी यदि एक छोटे कारखानेमें तैयार की जाय, तो उसकी लागत खर्च किसी बड़े कारखानेमें, जिसका प्रबन्ध वैज्ञानिक ढंगसे हो रहा हो, तैयार की गई मोटर गाड़ीकी अपेक्षा पाँचगुना अधिक पड़ेगा। रहन-सहनके ढंगको ऊँचे पैमानेपर रखनेके लिये जिन सब चीजोंकी जरूरत है, उनमें कुछ ऐसी हैं, जिनका उत्पादन यदि केवल छोटे-छोटे कारखानोंमें ही किया जाय, तो सर्वसाधारण जनता तक उनकी पहुँच असंभव हो जायगी। प्रत्येक विचारशील अमेरिकन इस बातको जानता है कि बहुतसे ऐसे उदाहरण हैं, जिनके सम्बन्धमें यह कहा जा सकता है कि हम लोगोंने व्यर्थ ही बड़े-बड़े औद्योगिक समवायोंकी सृष्टि कर डाली है। सामाजिक एवं आर्थिक कल्याणके लिये हमें छोटे-छोटे व्यवसायोंको अधिक-से-अधिक प्रोत्साहन एवं प्राधान्य प्रदान करना चाहिये। किन्तु अपने रहन-सहनके ढंगको कायम रखनेके लिये कुछ व्यवसायोंमें व्यापक रूपसे उत्पादन होना आवश्यक है। मैंने उनसे कहा कि एक ही कारखानेमें हजारों मजदूरोंके एक साथ काम करनेसे जो सामाजिक, आर्थिक और बहुत-कुछ गणतंत्री-विरोधी विशृंखलायें उत्पन्न हो गई हैं और उनके परिणाम-स्वरूप एक ही समयमें सब सम्प्रदायोंकी बेकारीकी जो संभावना हो सकती है, उसे हम स्वीकार करते हैं। इस व्यवस्थाके कारण हमारी जनताके वृहत समुदायोंका जो एक स्थायी सेवकवर्ग कायम हो गया है और इसके परिणाम-

स्वरूप व्यक्तियोंके लिये अपने कारवारके मालिक बननेका सुयोग जो कम हो गया है, उसका हमें खेद है। मैंने जनरलिसिमोसे कहा कि अब तक हम लोग अपनी सब समस्याओंका समाधान नहीं कर सके हैं; किन्तु इतना हम जानते हैं कि समस्याका समाधान आवश्यक बड़े-बड़े व्यवसायोंको छोटे-छोटे अक्षम इकाइयोंमें भंग करके नहीं हो सकता।

मैंने उन्हें स्मरण दिलाया कि पश्चिमी दुनियामें उनके देशके बहुत समीप ही एक नूतन प्रयोग काममें लाया जा रहा है। वह प्रयोग है रूसमें साम्यवादी समाज-व्यवस्थाको लेकर। और इस प्रयोगमें रूसको जो सफलता मिली है, उसका आंशिक कारण है किसी खास उद्देश्यकी सिद्धिके लिये वृहत् जन-समुदायोंका सामूहिक उत्पादन-कौशलके लिये उपयोग करना।

उन्होंने यह सुझाव पेश किया कि जो बड़े-बड़े व्यवसाय आवश्यक हों, उनपर आंशिक रूपमें सरकारका आधिपत्य हो और बाकी अंशोंपर व्यक्तिगत पूँजीका और इस रूपमें शायद समस्याका समाधान हो सकता है।

घंटों तक हम लोगोंके बीच वाद-विवाद चलता रहा। इसके बाद श्रीमती च्यांगने, जो अब तक हम दोनोंके लिये दुभाषियेका काम कर रही थीं, प्रीतिकर किन्तु दृढ़ नारी जनोचित अधिकारके साथ कहा: "दस बज रहे हैं और अब तक आप लोगोंने कुछ खाया नहीं, आइये; अब हम लोग शहरमें चलें और कम-से-कम एक ग्रास भी मुखमें रख लें। आप लोग अपनी इस वाद-विवादको किसी और समयमें समाप्त कर सकते हैं।"

दूसरे समयमें हम लोगोंने इस सम्बन्धमें विशेष रूपसे तथा अन्य बातोंके सम्बन्धमें भी बातचीत की। हम लोगोंने भारतके सम्बन्धमें, संपूर्ण पूर्वके सम्बन्धमें, उसकी महत्त्वाकांक्षाओं एवं उद्देश्योंके सम्बन्धमें, किस प्रकार वह एक विश्वव्यापी व्यवस्थाके अन्तर्गत उपयुक्त हो सकता है इस सम्बन्धमें, सामरिक कौशल, जापान और उसके साधन, पर्ल बन्दर और सिंगापुरका

पतन और पश्चिमके प्रति पूर्वके मनोभावके ऊपर उस पतनके मनोवैज्ञानिक प्रभावके सम्बन्धमें बातचीत की। मध्य-पूर्वके देशोंमें, रूसमें और अब चीनमें अत्यन्त गम्भीर रूपमें या यों कहिये कि उन्मत्त रूपमें राष्ट्रीयताकी जिस बढ़ती हुई भावनाको क्रमशः विकसित होते हुए मैंने देखा था, उसके सम्बन्धमें तथा यह भावना किस प्रकार विश्व-सहयोगकी संभावनाको व्यर्थ कर दे सकती है, इस सम्बन्धमें भी हम लोगोंने बातचीत की। हम लोगोंने रूस और चीनमें कम्युनिस्टोंके साथ च्यांगका सम्बन्ध, ग्रेट-ब्रिटेन और पूर्वमें उसकी नीतिके सम्बन्धमें तथा रूजवेल्ट, चर्चिल और स्टालिनके सम्बन्धमें बातचीत की।

असल बात तो यह है कि ६ दिनों तक मैं जनरल च्यांगके साथ रहा और वे ६ दिन बातचीत करनेमें ही व्यतीत हो गये।

चीनका कोई विवरण मैं बिना अपने इस सिद्धान्तका उल्लेख किये नहीं दे सकता कि जनरल च्यांग-काई-शेक एक मनुष्यके रूपमें और एक नेताके रूपमें उनकी जो अद्भुत ख्याति है, उससे भी बड़े हैं। वे आश्चर्यजनक रूपमें एक शान्त एवं मृदुभाषी पुरुष हैं। जिस समय वे सैनिक वर्दी पहने हुए नहीं होते, वे चीनी पोशाक धारण करते हैं, और इस पोशाकमें एक राजनीतिक नेताकी अपेक्षा एक धार्मिक विद्वानके रूपमें ही वे विशेषतः प्रभावित करते हैं। यह स्पष्ट है कि दूसरेकी बातोंको ध्यान-पूर्वक सुननेकी कलामें वे निपुण हैं और दूसरेके मनकी बातोंको जान लेनेके कार्यमें अभ्यस्त। जिस समय वे आपके साथ किसी विषयमें सहमत होंगे, अपना सिर हिलायेंगे और लगातार मृदु स्वरमें या-याका उच्चारण करेंगे। यह शिष्टाचारका एक सूक्ष्म रूप है,—ऐसा रूप, जिससे जिस व्यक्तिके साथ वे बातचीत करते रहते हैं, उसको शान्त बना देते हैं और वह कुछ अंशोंमें च्यांगका पक्षपाती बन जाता है।

कहा जाता है कि जनरलिसिमो प्रतिदिनका कुछ अंश प्रार्थना और बाइबिलके पाठमें व्यतीत करते हैं। इस प्रार्थना एवं पाठसे, अथवा बाल्यावस्थाके किसी प्रभावसे वह चिन्तनशील एवं धीरवृत्त बन गये हैं, और कभी-कभी उनकी आकृति ही उनके विचारोंके भावको व्यक्त कर देती है। इसमें सन्देह नहीं कि वे एक सच्चे मनुष्य हैं और उनकी आत्ममर्यादा एवं व्यक्तिगत सहिष्णुताकी मात्रा कुछ-कुछ कठोरताकी सीमापर पहुँच गयी है।

जनरलिसिमोने बड़ी कठिनाईके साथ क्षमता प्राप्त की है, और इस बातका उन्हें गर्व है। बीस सालसे अधिकसे एक राष्ट्रके जन्मकी कठोरतम समस्याओंको वे जानते रहे हैं। शायद इसीका यह परिणाम है कि उस असाधारण परिवारके प्रति जिसमें उनका विवाह हुआ है और अपने संग्रामके प्रारम्भिक दिनोंके साथियोंके प्रति उनकी अनुरक्ति अक्षुण्ण और मेरे अनुमानसे कभी कभी अयौक्तिक भी है। मैं इसे प्रमाणित नहीं कर सकता; किन्तु चुंकिंगमें थोड़े समयके लिये भी ठहरनेवाला व्यक्ति इस बातको महसूस किये बिना नहीं रह सकता कि चीनका नूतन प्रजातंत्र यद्यपि अभी तरुण है, फिर भी इसने एक प्रकारसे अपने पुराने संस्कार-बन्धनको विकसित कर लिया है, जिससे आप-से-आप कुछ व्यक्ति उच्च स्थितिपर बने रहते हैं। इस पुराने बन्धनको प्रधान रूपसे धारण करनेवाले जनरलिसिमोके वे साथी हैं, जिन्होंने उस समय उनका साथ दिया था, जब कि वह समरनायकोंके साथ युद्ध कर रहे थे, और चीनके लिये यह लाभकी बात है कि उनमें कोई भी अभी तक वृद्ध नहीं हुआ है।

मैं इस बातका संकेत करना पसन्द नहीं करता कि चुंकिंगमें मैं जिन सब नेताओंसे मिला, वे विशेष योग्यताके पुरुष नहीं थे। वे विशेष योग्यताके अवश्य थे; किन्तु पाश्चात्य देशोंमें जिस अर्थमें समझा जाता

है, उस अर्थमें वे सब प्रतिनिधि-स्वरूप व्यक्ति नहीं कहे जा सकते। जिस प्रकार जनतंत्रके सम्बन्धमें चीनवासियोंकी जो धारणा है, वह कई बातोंमें हम लोगोंकी धारणासे भिन्न है, उसी प्रकार उनके नेताओंके जीवन-धारणका आदर्श भी। कुमिंगटांगकी—जो दल चीनपर शासन करता है—चीनमें स्वायत्त-शासनके विकासके लिये जो योजना है, उसमें अभिभावकत्वकी वह अवस्था भी शामिल है, जिसमें लोगोंको नये ढंगसे जीवन धारण करने और सोचनेका अभ्यास करनेकी शिक्षा दी जाती है, जिससे वे पूर्ण गणतंत्रके अच्छे नागरिक बन सकें और बादमें चलकर उन्हें निर्वाचन-सम्बन्धी अधिकार प्राप्त हों।

इस अभिभावकत्व-अवस्थामें यह अनिवार्य है कि चीनके नेता ऐसे ही मनुष्य हों, जो विदेशी विश्वविद्यालयोंमें अथवा युद्ध और राजनीतिमें पर्याप्त शिक्षा प्राप्त किये हुए हों, न कि ऐसे मनुष्य जो जनताका विशेष रूपमें प्रतिनिधित्व करनेके लिये जनता द्वारा चुने गये हों। और चीनमें ऐसा भी है। चीनमें रहते हुए मेरा यह विश्वास हो गया कि यही एक विशेष कारण है, और महत्त्वपूर्ण भी, जिसकी वजहसे चीनमें और खासकर वहांके विदेशी लोगोंमें, जो चीनके प्रति सहानुभूति-सम्पन्न हैं, चुंकिंगकी केन्द्रीय सरकार द्वारा वहांके जीवनपर जो नियंत्रण रखा जाता है, उसके प्रति असहिष्णुताकी भावना पाई जाती है।

चीनने अपने कुछ सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियोंको मेरे प्रश्नोंके उत्तर देने तथा अपने युद्ध-सम्बन्धी प्रयत्नोंको मुझे दिखलानेके लिये प्रतिनिधिके रूपमें मेरे पास भेजा था। जिन लोगोंने मेरे ऊपर गहरा प्रभाव डाला, उन सबकी तालिका देना असम्भव है।

युद्ध-मंत्री जनरल हो यिंग-चिनने चुंकिंगमें एक पहाड़ीकी चोटीपर अवस्थित अपने घरपर, जिसका रुख नीचे बहती हुई नदीकी तरफ है, जल-

पान करनेके लिये मुझे निमंत्रण किया। उस अवसरपर मैंने उनके साथ, जनरल स्टिलवेलके साथ, एडमिरल चेन शाओ-कानके साथ तथा चीनकी सेनाके अन्य अफसरोंके साथ बातचीत की। बादमें कियांगसीका शासन करनेवाली त्रिमूर्त्तिमें से एक जनरल पाइ-चुंग-सीके साथ बड़ी देर तक मेरी बातचीत हुई।

प्रेसिडेण्ट लिन सिनने अपने सरकारी वासस्थानपर यथोचित रूपमें मेरा आतिथ्य किया। यूआनके उप-सभापति डा० एच० एच० कुंगने अपने मकानके, जो चुंकिंगका सबसे बड़ा मकान है, सामनेके लान-अंर मैदानमें मुझे एक भोज दिया। शिक्षा-मंत्री डा० चेन ली-फू, अर्थ-मंत्री डा० वोंग वेन-हाओ और सूचना-विभागके तत्कालीन मंत्री डा० वांग शिह-चिह सभीने बड़ी उदारताके साथ अपना समय देकर मुझे यह अच्छी तरह समझाया कि चीन किस प्रकार अपने देशपर आये हुए संकटका सामना कर रहा है।

चुंकिंगके मध्य भागमें अवस्थित नेशनल मिलिटरी कौन्सिलके वृहत् हालमें—जिसपर एक साल पहले जापानियोंने बम-वर्षा की थी और जो फिरसे बनाया जा चुका है,—मुझे एक भोज दिया गया, जिस अवसरपर स्वयं जनरलिसिमोने अध्यक्षका आसन ग्रहण किया था। अब तक अपनी इस विश्व-परिक्रमामें मैं जितने सार्वजनिक भोजोंमें शामिल हुआ था, उनमें यह सबसे बढ़कर हृदयग्राही था। क्योंकि जिस सरलताके साथ इसका परिचालन किया गया था, वैसी सरलताका उच्च स्थानोंमें होना हम पसन्द करते हैं। आमोद-प्रमोदका जो प्रबन्ध किया गया था, उसमें संगीतज्ञ लोग प्राचीन चीनके बाजे बजा रहे थे। उन बाजोंमें बहुतसे एक तारवाले थे और देखनेमें तथा बनावटमें बहुत ही भद्दे जान पड़ते थे। चीनके प्राचीन लोकगीतोंका गान किया गया था और उनका सुर कोमल था।

इस भोजमें एक ऐसी प्रासङ्गिक घटना घटित हुई थी, जिसको हमारी पार्टी उस समयसे लेकर अब तक बराबर आनन्दके साथ स्मरण करती रही है। माइक कानेल्सने एक दिन पहले बतौर परीक्षाके मलाई मिली हुई शार्क मछलीका ओठ खाया था, जिससे वह बीमार हो गये थे। इस लिये आजके भोजमें जब पुराने ढंगका मैनिला आइस-क्रीम परोसा गया, तब वह विशेष रूपमें प्रसन्न हुए। उन्होंने चुंकिंगके मेयरसे अपनी प्रसन्नता प्रकट की, जिसपर मेयरने उन्हें समझाया कि अप्रेलमें चिकित्सा-विभागके अधिकारियोंको यह आशंका थी कि चीनमें हैजेका प्रकोप हो जायगा। चूँकि उनके पास महामारीके प्रकोपको रोकनेके लिये टीका देनेकी दवा नहीं थी, और दूधके द्वारा हैजा फैलता है, इसलिये उन्होंने एक म्युनिसपल आर्डिनेन्स पास करके आइस-क्रीमका भोजनमें व्यवहार किया जाना एक दण्डनीय अपराध घोषित कर दिया।

"किन्तु", पुनः उन्होंने कहा, "कल मैंने यह निश्चय किया था कि आइस-क्रीम एक ऐसा सुस्वादु पदार्थ है और मि० विल्की चुंकिंग आये हुए हैं, इसकी इतनी खुशी हम लोगोंको है कि एक दिनके लिये हमने उस आर्डिनेन्सको रद्द कर दिया, जिससे आजकी रातमें हम लोग आइस-क्रीम आपको परोस सके हैं।"

आगामी कई दिनों तक हम लोग बड़ी उत्कण्ठाके साथ इस बातकी प्रतीक्षा करते रहे कि हैजे से बचनेके लिये हमने जो टीका ली थी, वह वस्तुतः लाभदायक थी या नहीं।

अपने मेजबानोंसे जो समय हम लोगोंको विश्रामके लिये बचता था, उसमें बीच-बीचमें हमने और भी बहुतसे चीनवासियोंसे मुलाकात की। डा० सुंगका घर लोगोंसे मिलने-जुलनेके लिये एक सुविधाजनक स्थान था।

मेरा कौतूहल भी बहुत ज्यादा था। चीनीवासियोंमें हम लोगोंसे मिलने और बातचीत करनेकी इच्छा असीम थी।

उदाहरणके लिये, इसी स्थानमें अवकाशके समय मैंने अकेले बिना किसी बाधाके चीनकी कम्यूनिस्ट पार्टीके एक नेता चाउएन-लेके साथ बात-चीत की। यह श्रेष्ठ, गम्भीर और कर्तव्यशील व्यक्ति अपनी प्रत्यक्ष योग्यताके कारण मेरा सम्मान-भाजन बन गया था। वह चुंकिंगमें रहता है, जहाँ वह कम्यूनिस्ट समाचारपत्र 'Hsin Hua Jih Pao' के संपादन-कार्यमें सहायता पहुँचाता है और People's Political Council की सभाओंमें पूर्णरूपसे भाग लेता है। यह सभा इस समय चीनकी प्रतिनिधिमूलक व्यवस्थापिका परिषद्से बहुत-कुछ मिलती-जुलती है, जिसके वह तथा उनकी पत्नी दोनों मेम्बर हैं। मैं जनरल चाउसे—जनरल की पदवी उन्हें जनरलिसीमोके विरुद्ध चीनके गृह-युद्धमें भाग लेनेके कारण कम्यूनिस्टोंकी ओरसे मिली थी—एक बार फिर डा० कुंग द्वारा दिये गये भोजके अवसरपर मिला। इस मौकेपर मेरे प्रस्तावपर ही वह सपत्नीक निमंत्रित किये गये थे। बादमें मुझे बताया गया कि यह पहला ही अवसर है, जब कि चीनके अधिकारी-मण्डल द्वारा उनकी अभ्यर्थना की गई है। जिन लोगोंके विरुद्ध वह लड़े थे, उनके द्वारा रुचिर किन्तु कुछ-कुछ सावधान रूपमें तथा जनरल स्टिलवेल द्वारा, जो दस साल पहले हांकाउमें उनसे परिचित हुए थे, प्रत्यक्ष सम्मानके साथ उन्हें अभिनन्दित होते देखकर मुझे प्रसन्नता हुई।

जनरल चाउ मोटा रंगीन सूती कपड़ेका सूट पहनते हैं, जो चीनकी परम्परागत पोशाकको जताता है और साथ ही इसके किसी कारीगर श्रमिककी पोशाक जैसा मालूम पड़ता है। उनकी मुखाकृति सरल और दोनों आँखें विस्तृत एवं गम्भीर हैं। वह धीरे-धीरे अंगरेजी बोलते हैं।

उन्होंने मुझे दोनों पक्षोंके समझौतेकी रूपरेखा ठीक-ठीक वर्णन करके बताया, जिसके आधारपर चीनके युद्धकालीन संयुक्त मोर्चेका गठन किया गया है। चीनके आन्तरिक मामलोंमें जिस ढंगसे सुधार हो रहा है, उसकी मन्दगतिपर अपनी अधीरता स्वीकार करते हुए भी उन्होंने मुझे यह विश्वास दिलाया कि जब तक जापान पराजित नहीं हो जाता, तब तक यह संयुक्त मोर्चा अवश्य कायम रहेगा। जब मैंने उनसे पूछा कि उनके विचारसे क्या यह समझौता युद्धके बाद भी कुओमिनटांग और कम्यूनिस्ट पार्टीके बीच जो पुरानी शत्रुता चली आ रही है, उसके आघातको सहन करते हुए कायम रहेगा, तो उन्होंने स्पष्ट रूपसे किसी प्रकारकी भविष्यवाणी करनेमें अपनी अनिच्छा प्रकट की। फिर भी चीनके प्रति जनरल च्यांग-काई-शेकका जो निःस्वार्थ अनुराग है, उसके लिये उनके मनमें निःसन्दिग्ध सम्मान और श्रद्धाका भाव है। किन्तु चीनके अन्य नेताओंके सम्बन्धमें वह इतने निश्चित नहीं थे। वह मेरे मनपर यह प्रभाव छोड़कर मुझसे विदा हुए कि यदि चीनके सभी कम्यूनिस्ट उन्हींके समान हों, तो उनका आन्दोलन एक अन्तर्राष्ट्रीय या सर्वहारा-श्रेणीके षड्यन्त्रकी अपेक्षा एक राष्ट्रीय और कृषक-जागरण ही विशेष रूपमें कहा जायगा।

दूसरा व्यक्ति जिन्होंने मुझे गम्भीर रूप में प्रभावित किया, वे थे डा० चांग पो-लिंग। वे एक प्रकाण्ड मनुष्य हैं। वे अपनी चाल-ढाल इस तरह गंभीर बनाये रहते हैं, मानो कोई बहुत बड़े विद्वान हों; किन्तु साथ ही इसके उनमें रसिकताका बोध भी बहुत ही सूक्ष्म एवं प्रखर रूपमें पाया जाता है। वह चीनके एक प्रमुख विद्यालय नानकाईके प्रधान हैं और People's Political Councilके एक मेम्बर भी हैं। भारतवर्ष, या यूरुप, या अमेरिकन विश्वविद्यालय, इनमें से चाहे जिस विषयपर हम

लोगोंने उनके साथ बातचीत की, वह इस प्रकारकी पृष्ठभूमि और विवेकके साथ बोलते थे, जिसकी तुलना अमेरिकामें कदाचित् ही मिल सकती है।

चुंकिंगमें दो और व्यक्ति मुझे ऐसे मिले, जिन्होंने नूतन चीनका जो उदाहरण मेरे सामने उपस्थित किया, वैसा उदाहरण मुझे चीनके परम्परागत जीवनके सम्बन्धमें जो पुस्तकें मैंने पढ़ी थीं उनमें से किसीमें भी नहीं मिला था। इनमें एक जनरल च्यांगके प्राइवेट सेक्रेटरी ली वेइ-कू थे। वह नवयुवक हैं, उसके लिहाजसे कहीं अधिक ज्ञानवान और इस अर्थमें सुयोग्य हैं, जिस अर्थमें एक महान् नेताको अपने सेक्रेटरीके लिये योग्यता अपेक्षित होती है। दूसरे थे Officers' Moral Endeavour Association के सेक्रेटरी-जनरल जे० एल० हुयांग। जनरल जिस प्रकार ठहाका मारकर हँसते हैं, उसी प्रकार शरीरसे भी वह विशाल और हृष्ट-कट्टा हैं। एक असाधारण प्रतिभाशाली मेजबान और मैनेजरके रूपमें उनका वर्णन करना आसान होगा। उनका एक खास काम है चीनके जिन होस्टलोंमें अमेरिकन उड़ाके रहा करते हैं, उनका संगठन करना, और इस कामको वह उत्कृष्ट रूपमें करते हैं। किन्तु उनके आनन्दपूर्ण तौर-तरीका और सामाजिक निपुणताके अन्तरालमें मैंने उन्हें चीनकी विजय और वर्त्तमान संसारसे एक अच्छे संसारकी सृष्टिके लिये संग्राम करनेवाले विचारशील, धीर और अथक योद्धाके रूपमें पाया।

चुंकिंगमें सर्वोच्च पदोंपर कार्य करनेके लिये अच्छे आदमियोंकी कमी नहीं है। किन्तु उनका काम करनेका स्टैण्डर्ड चाहे कितना ही ऊँचा क्यों न हो, चीनके जीवनमें सुंग-परिवारका एक विशिष्ट स्थान है, जिसकी तुलना किसी दूसरेसे नहीं हो सकती। तीनों भाइयों और तीनों बहिनोंने—जिनकी शिक्षा मेथोडिस्ट पादरियों द्वारा और अमेरिकन

कालेजोंमें हुई है—चीनको उसके तरुण प्रजातंत्रके लिये प्रतिभा, राजनीतिक निपुणता, महान् ऐश्वर्य एवं अविचलित अनुरागका एक आभिजात्य प्रदान किया है। ये तीनों भाई और तीनों बहिनें संसारके अत्यन्त विख्यात परिवारोंमें से एक हैं।

वाशिंगटनमें टी० वी० सुंगसे मेरा परिचय हुआ था। वह चीनके परराष्ट्र-सचिव हैं और संयुक्त-पक्षके राष्ट्रोंके एक महान् राजनीतिज्ञ। उनकी तीनों बहिनोंसे चीनमें मेरी मुलाकात हुई थी। उनमें एक जनरल च्यांगकी पत्नी हैं। दूसरी चीनके अर्थ-सचिव एच० एच० कुंगकी पत्नी हैं। तीसरी चीनी प्रजातंत्रके संस्थापक डा० सन-यात-सेनकी विधवा पत्नी हैं।

डा० कुंगने अपने घरके सामनेके मैदानमें मेरे सम्मानमें जो भोज दिया था, उसमें मादम सन और मादम च्यांगके बीच प्रधान टेबुलके सामने मुझे बैठाया गया था। हम लोगोंके बीच सजीव वार्तालाप चल रहा था, और वह मेरे लिये बहुत ही प्रभावोत्पादक था। दोनों महिलायें बहुत सुन्दर अंगरेजी बोलती हैं और उनमें बाह्यविषयक ज्ञान एवं रसिकताकी मात्रा भी पर्याप्त रूपमें पाई जाती है।

भोजन समाप्त हो जानेपर मादम च्यांगने मेरी बाँह पकड़कर मुझसे कहा : "मैं आपको अपनी दूसरी बहिनसे मिलाना चाहती हूँ। वात-शूलकी बीमारीके कारण वह घरसे बाहर इस पार्टीमें शामिल होनेके लिये नहीं आ सकी।" घरके अन्दर मैंने मादम कुंगको पाया। उनकी एक बाँह पट्टीसे बँन्धी हुई झूल रही थी। किसी समय वह अमेरिकामें रह चुकी थीं, इसलिये वहाँका हालचाल जाननेके लिये उत्कण्ठित थीं। हम तीनों काफी देर तक बातचीत करते रहे और हमारा समय इतनी अच्छी तरह कट रहा था कि हमें इस बातका पता ही नहीं चला कि कितना

समय बीत चुका है, और जो लोग घरसे बाहर थे, उनकी भी हमें कोई सुध नहीं रही ।

लगभग ग्यारह बजे डा० कुंग आये और नम्रताके साथ माफ़ी मांगी और मुझको इसलिये झिड़का कि हम लोग लौटकर फिर पार्टीमें नहीं जा सके, जो उस समय तक भंग हो चुकी थी । इसके बाद वह बैठ गये, और तब हम चारोंने विश्वकी समस्याओंका समाधान करना आरम्भ किया ।

हम लोगोंने पूर्वमें जो क्रान्तिकारी विचार व्यापक रूपमें फैल रहे हैं—और जिस विषयकी चर्चा जहाँ कहीं मैं गया, सब जगह छिड़ जाया करती थी—उसके सम्बन्धमें, भारतवर्ष और नेहरूके सम्बन्धमें, चीन और चिआंगके सम्बन्धमें, एशियाके कोटि-कोटि मनुष्योंमें स्वतंत्रताकी जो लहर फैल रही है उसके तथा शिक्षा और आदमीकी तरह जीवन व्यतीत करनेकी उनकी मांगोंके सम्बन्धमें और उनके ऊपरसे पश्चिमके आधिपत्यसे मुक्त स्वायत्त शासनके उनके अधिकारके सम्बन्धमें बातचीत की ।

मेरे लिये यह बातचीत बहुत ही चित्ताकर्षक थी । तीनों ही अपने तथ्योंसे पूर्ण परिचित थे । तीनों ही दृढ़ विचार धारण करनेवाले थे और उनमें प्रत्येकने इस वार्तालापको सजीव बनानेमें अपना-अपना भाग ग्रहण किया था । अन्तमें, हम लोगोंके वहाँसे उठनेके ठीक पहले मादाम च्यांगने डा० कुंग और उनकी श्रीमतीसे कहा : "कल रातको भोजनके समय मि० विल्कीने यह प्रस्ताव पेश किया था कि मुझे अमेरिका और चीनके बीच सद्भाव कायम रखनेके लिये वहाँका भ्रमण करना चाहिये ।" डा० कुंग और उनकी पत्नीने मेरी ओर जिज्ञासा-भरी दृष्टिसे देखा । मैंने कहा : "यह ठीक है, और मैं जानता हूँ कि मेरा ऐसा प्रस्ताव करना सही है ।"

इसपर डा० कुंग गम्भीर भावसे बोले—"मि० विल्की, क्या सचमुच आपका ऐसा अभिप्राय है, और यदि हाँ, तो क्यों ?"

मैंने उनसे कहा—"डा० कुंग, हम लोगोंके बीच जो वार्तालाप हुआ है, उससे आप जान गये होंगे कि मेरा यह विश्वास कितना दृढ़ है कि मेरे देशवासियोंके लिये एशियाकी समस्याओं और वहाँकी जनताकी विचार-दृष्टिको समझना अत्यन्त आवश्यक है। और आप यह भी जानते हैं कि मुझे इस बातकी कितनी निश्चयता है कि युद्धके बाद पूर्वकी समस्याओंके न्यायपूर्वक समाधानपर विश्वकी भावी शान्ति बहुत-कुछ निर्भर करती है।

'मैं चाहता हूँ कि इस भूभागका कोई व्यक्ति जिसमें बुद्धि और सन्देह दूर करनेकी क्षमता तथा नैतिक शक्ति हो, वह चीन और भारत तथा वहाँके लोगोंको समझनेमें हमारी सहायता करे। श्रीमती च्यांग एक बहुत ही उपयुक्त राजदूत हो सकती हैं। उनकी महान योग्यता—मैं जानता हूँ कि इस प्रकार व्यक्तिगत रूपमें जो मैं उनकी चर्चा कर रहा हूँ, इसके लिये वह मुझे क्षमा कर देंगी—और चीनके प्रति उनकी अगाध भक्तिसे अमेरिकाके लोग पूर्ण परिचित हैं। अमेरिकामें वह अपनेको जनताके केवल प्रीति-भाजनके रूपमें ही नहीं पायेंगी, बल्कि उनका प्रभाव उसके ऊपर असीम एवं सफल रूपमें पड़ेगा। हम लोग उनकी बातोंको जितने ध्यानपूर्वक सुनेंगे, उतने ध्यानसे किसी दूसरेकी बातोंको नहीं। ठीक उनके जैसे अतिथिकी ही हमारे देशमें जरूरत है, क्योंकि उनमें रसिकता और जादू है, उनका हृदय उदार एवं बुद्धिमान है, उनकी आकृति और चाल-ढाल प्रसन्न एवं सुन्दर है और उनका विश्वास ज्वलन्त है।"

अब वह अमेरिका आई हैं, और जबसे उन्होंने कांग्रेसके सामने अपना मर्मस्पर्शी भाषण किया है और राष्ट्रपतिको मनोहर किन्तु सतीक्ष्ण रूपमें यह स्मरण दिलाया है कि ईश्वर उन्हींकी सहायता करता है, जो अपनी

सहायता प्राप्त करते हैं, तबसे अमेरिकाने उनकी साहसिकता एवं उनके पक्षकी दिल खोलकर प्रशंसा की है।

अमेरिकाकी आकाश-सेनाके चौदहवें सेनानायक जनरल क्लेयर एल० शेनॉल्ट एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें एक बार बातचीत करके आप उन्हें कदाचित् ही भूल सकते हैं। वह लम्बे कदके, श्याम वर्ण, दुबले-पतले और मेहनती व्यक्ति हैं। उनके चेहरे और आँखोंमें कुछ ऐसी दृढ़ता है, जो उनकी लुइसियानाकी बोलीके सौन्दर्यको निश्चित रूपसे प्रकट कर देती है। शुरूमें वह एक योद्धा और आकाश-युद्ध-सम्बन्धी विशेषज्ञके रूपमें चीन गये। बादमें उन्होंने अमेरिकन स्वयंसेवक ग्रुप-दलका संगठन किया, जिसने चीन और बर्मामें जापानियोंको हक्का-बक्का किया। वह इस समय सेनामें हैं, और सेना उनको पाकर सौभाग्यशाली है।

उन्होंने तथा उनके आदमियोंने जो काम किये हैं, उनकी कीर्ति-कथाकी सब लोगोंको विदित है। शुरूमें युनानके मोर्चेपर उन्होंने जापानी वायु-यानोंका मोर्चा बरबस फेर दिया है, जिसमें शत्रु-पक्षके जहाँ दससे लेकर बीस तक वायुयान नष्ट हुए हैं, वहाँ हमारे पक्षकी हानिका अनुपात एकसे अधिक नहीं रहा है। जब मैं चुंकिंगमें था, चीनके सरकारी कागजोंसे मुझे मालूम हुआ कि जापानियोंके विरुद्ध उन्होंने लगातार सत्तरसे अधिक आकाश-युद्ध जीते हैं, जिनमें उनके पक्षका एक भी वायुयान नष्ट नहीं हुआ है। हालाँ कि हरएक बारके युद्धमें जापानी वायुयानोंकी संख्या अमेरिकन वायुयानोंकी तुलनामें अधिक थी। उनके कर्मचारी-मण्डलके प्रधान कर्नल मेरियन सी० कूपर चुंकिंगमें एक दिन मेरे साथ दोपहरका भोजन करने आये थे। उन्होंने अपने नायकके सम्बन्धमें जो कहानियाँ मुझे सुनाईं, उनको सुनकर बड़े आश्चर्यमें पड़ जाते। जनरलमें एक ओर जहाँ आकाश-युद्ध-सम्बन्धी रणविद्या-विषयक कौशल है, वहाँ

इसके साथ-साथ उनमें अद्भुत रूपमें रणविद्यासे भिन्न कौशल भी है, और इसका परिणाम जो कुछ हुआ है, वह ऐसा जिसे जापानी पसन्द नहीं करते, यह उन्होंने स्पष्ट रूपमें दिखा दिया है। हमारे वायुयानचालक मेजर काइगने मुझे बताया कि मौसम, वायुयान-चालनके लिये आकाशकी अवस्था और भूगोलके सम्बन्धमें जनरल चेनोल्टकी जो पद्धति संवाद प्राप्त करनेकी है, वह उनकी सुविधाओंको देखते हुए सम्पूर्ण आश्चर्यजनक कही जायगी। क्योंकि चीनमें उड़ाकोंको सूचना देनेके लिये कोई सुप्रतिष्ठित ऋतु-विज्ञान-सम्बन्धी स्टेशन नहीं है। जनरल चेनोल्टके आदमी विशेषकर उन्हीं संवादोंपर भरोसा करते हैं, जो विस्तृत क्षेत्रोंमें चीनी संवादपत्रों द्वारा और अंगूर-लताके मार्गसे प्रकाशित किये जाते हैं।

मुझे व्यक्तिगत रूपमें यह पता चला कि लोकप्रियतामें चीनवासियोंमें जनरल चेनोल्टका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं है। चेंगतूमें एक स्कूलके शिक्षकसे जब मैंने प्रश्न किया कि उसके छात्र किस अमेरिकनको सबसे अधिक जानते हैं और किसे सबसे ज्यादा पसन्द करते हैं, तब उसने बिना एक सेकेण्ड भी रुके मुझे झटसे बता दिया, "जनरल चेनोल्ट"। चीनके विख्यात नेताओंको भी मैंने उनके सम्बन्धमें विशेष रूपसे आलोचना करते और बराबर अत्यधिक सम्मान एवं स्नेहके साथ उनके सम्बन्धमें चर्चा करते सुना था।

जनरल चेनोल्टके साथ मुलाकात करने और उनसे बातचीत करनेके सम्बन्धमें कई बार मेरा उनके साथ पहलेसे ही प्रबन्ध हो चुका था; किन्तु एक बार भी मेरा उनके साथ मिलना नहीं हो सका। आखिर मैं उड़कर कुंकिंगके पास उनके सदर मुकामपर उनसे मिलनेके लिये गया। जब मैंने उन्हें अपने हवाई अड्डेके पास ही ४० लड़ाकू वायुयानों—जिनमें

हरएक वायुयान रँगा हुआ होनेसे शार्क मछली जैसा मालूम पड़ता था—की पंक्तिके आमने-सामने खड़ा पाया, तब मैंने समझा कि चुंकिंगमें उनके लिये लोगोंसे मिलनेका वादा करके भी उस वादेको पूरा करना क्यों कठिन होता है।

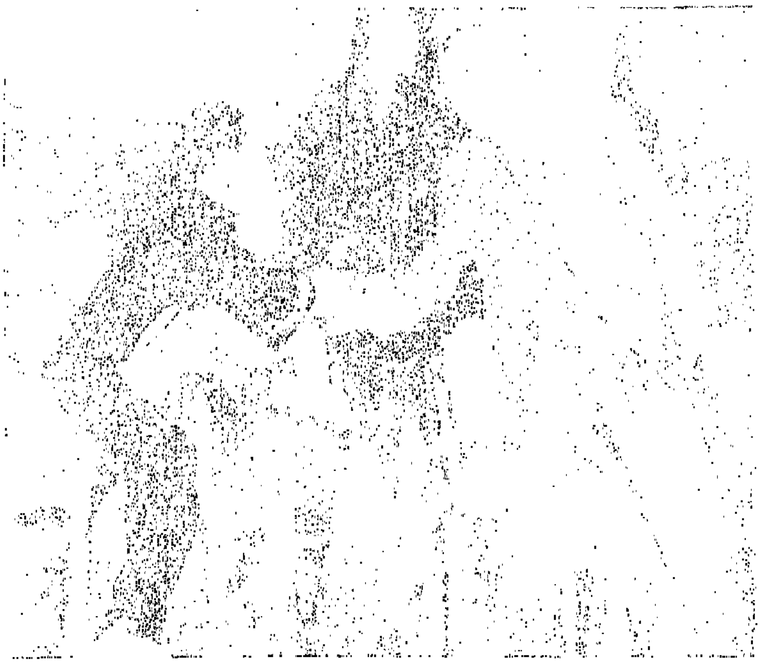
वह अपने प्रत्यक्ष एवं व्यक्तिगत नायकत्वमें एक बहुत ही कार्यव्यस्त और चहल-पहलसे भरे हुए युद्ध-अड्डे का संचालन कर रहे हैं। उनके पदके अन्तर्गत केवल चुंकिंग और यूनान प्रान्तकी राजधानी कुंमिंगके आकाशकी रक्षा करनेका कार्य ही नहीं है, बल्कि भारतसे बर्मा तकके अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आकाश-मार्गकी रक्षा करनेका कार्य भी। इनके अलावा उन्होंने केन्टन, हांगकांग और उत्तर-चीनमें वहाँकी इतिहास-प्रसिद्ध दीवारके पास कोयलेकी खानों तक जापानियोंके ऊपर बमवर्षा करनेका भार भी अपने ऊपर ले रखा है। आकाश-मार्गकी रक्षा तथा जासूसीका काम वह जिस चतुराई और सफलताके साथ कर रहे हैं, वैसी चतुराई और सफलताके साथ मैंने किसी दूसरेको करते नहीं सुना। उनके आदमी प्रायः सब-के-सब दक्षिण-अमेरिकाके हैं और उनमें टेक्ससके निवासियोंकी संख्या काफी है। वे सब उनके सुहृद् अनुगत हैं और उनके लिये आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाते हैं।

केवल एक बातको देखकर मेरे दिलपर बड़ी चोट पहुँची वह थी बहुत थोड़े सामानके साथ उनका काम करना। उनके आदेशके अन्तर्गत जो सेना थी, उसकी संख्या सीमित होनेपर भी उन्होंने जो कार्य कर दिखाया है, उसपर सहसा विश्वास नहीं होता। अमेरिकन योद्धाओंकी जो महान् परम्परा चली आ रही है, जनरल चेनौल्ट उसी परम्पराके धारण करनेवाले हैं, और जो उड़ाके उनके अन्दर काम करते

हैं, वे इस योग्य हैं कि हम उन्हें अच्छी-से-अच्छी और अधिक-से-अधिक सहायता दे सकें।

वह जो कुछ माँगते हैं, वह आश्चर्यजनक रूपमें कम है, और हम लोगोंने जो कुछ उनके पास भेजा है, वह उनकी उस कम माँगसे भी बहुत कम है। जनरल चेनौल्टने शान्त भावसे, किन्तु पूर्ण विश्वासके साथ, इस बातका जिक्र किया कि चीनसे जापानियोंको तंग करनेके लिये कौन-कौनसे उपाय काममें लाये जा सकते हैं। उनका कहना था कि चीन समुद्रसे होकर जापानको जो रसद तथा युद्धके सामान वगैरह पहुँच रहे हैं, उस मार्गको विच्छिन्न कर दिया जा सकता है। चीनके महान् सैन्यदलोंको सहायता प्रदान की जा सकती है, जिससे वे पूर्वी चीनके मैदानको पार करके आगेकी ओर बढ़ सकें, बशर्ते कि उन की रक्षा करनेके लिये आकाशमें वायुयानोंका बेड़ा हो। उन्होंने मुझे बताया कि चीनमें यदि पेट्रोल, तेल और कल-पुर्जे पहुँचानेका प्रबन्ध हो जाय, तो वहाँ कुछ हद तक वायुयानों द्वारा आक्रमण-कार्य भी चलाया जा सकता है। वह घबराहट जैसी मालूम कर रहे थे कि जो बात उनके लिये इतनी स्पष्ट है, उसे अमेरिकाके सरकारी अफसर क्यों नहीं समझ रहे हैं।

क्योंकि चीनसे यदि आक्रमण चलाया जाय, तो केवल सामरिक दृष्टिसे ही नहीं, बल्कि अन्य दृष्टियोंसे भी इसका परिणाम महत्त्वपूर्ण होगा। इससे चीनके सैन्यदलोंमें एक नूतन दृढ़विश्वास उत्पन्न हो जायगा और चीनकी जनतामें उत्साहका संचार होगा। मैं इस दृढ़विश्वासके साथ चीनसे स्वदेश लौटा हूँ कि किसी भी हालतमें हम चीनके लोगोंमें यह भाव उत्पन्न होने न दें कि अगले साल भी हम उनकी उपेक्षा करने जा रहे हैं और युद्धके अन्यान्य स्थलोंमें अपनी सैनिक शक्तिको संलग्न करने जा रहे हैं। इससे चीनकी प्रतिरोध-शक्तिपर जो प्रभाव पड़ेगा, उसकी उपेक्षा



न्यूयार्कमें—मि० विल्की मादम च्यांग-काई-शेकका हार्दिक स्वागत कर रहे हैं ज्यों ही वे न्यूयार्कके मेडीसन स्क्वायर गार्डनमें चीनके अभिवादनमें भाषण देनेके लिये तैयार हो रही हैं।
मि० विल्की और मादम च्यांगके बीचमें बैठे हुये जोन डी० रॉकफेलर

U.S.O.W.I. के सौजन्यसे

भी यदि कर दी जाय तथापि इससे उनकी नैतिक शक्तिकी समस्या—जो मुद्रास्फीतिके कारण पहलेसे ही आशंकाजनक अवस्थापर पहुँच चुकी है—और भी जटिल हो जायगी, और इससे चीनके साथ दृढ़ आधारपर समझौता करके शान्ति एवं युद्धोत्तर संसारके गठनकी हमारी सारी सुविधायें खतरेमें पड़ जायँगी।

जब तक मैं चीनमें रहा एक दिनके लिये भी मैं इस बातको नहीं भूला कि चीन पाँच सालसे भी अधिकसे जापानके साथ युद्ध कर रहा है। इस बातको मैंने चुंकिंगकी पहाड़ियोंमें खोदकर बनाई गई उन अविश्वसनीय गुफाओंमें देखा, जहाँ नगरकी सारी जनता उस समय शरण लेती है, जब कि जापानी वायुयान बमवर्षा करनेके लिये उस नगरके ऊपर आ पहुँचते हैं। इसे मैंने चीनकी जनताके उस बुद्धि-कौशल एवं धीरतामें देखा, जिस बुद्धि-कौशल एवं धीरताके साथ वह वायुयान-आक्रमण समाप्त हो जानेके बाद बार-बार उन गुफाओंसे बाहर निकलती है और अपने विध्वस्त नगरका पुनर्निर्माण करती है तथा लड़ाई जारी रखती है।

मैंने इसे अपनी आँखोंसे देखा नहीं, मगर इसके बारेमें चीनमें जापानी सैन्य पंक्तियोंके पीछे वहाँके असामरिक नागरिकों द्वारा जो वीरतापूर्ण प्रतिरोध चलाया जा रहा है, उसकी आश्चर्यजनक कहानियोंमें सुना। चुंकिंगमें प्रमाण द्वारा इन कहानियोंके सत्यासत्यका अच्छी तरह निर्णय किया जा सकता है। जिस समय मैं चुंकिंगमें था, उस समय भी जापानियों द्वारा विजित शांघाई, हांगकांग और पेकिंग नगरोंसे जख्मी पाँववाले मगर प्रसन्न अमेरिकन और अंगरेज वहाँ पहुँच रहे थे। गुरिल्ला योद्धाओंके दलोंने उन्हें एक दलसे दूसरे दल तक पहुँचाकर चीन महादेशके आधे भागको पार करा दिया था। ये गुरिल्ला सैन्यदल जापानी प्रदेशोंके अभ्यन्तरमें प्रतिरोधकी शृंखला कायम किये हुए हैं। चीनके सारे किसान अपने

वीरतापूर्ण सैनिक कार्यों द्वारा यह दिखा रहे हैं कि उनकी स्वतंत्रता कितने जोखिममें है और उसकी रक्षाके लिये वे युद्ध करनेको कितने व्यग्र हैं।

मैंने इस बातका भी सबूत पाया कि चीन दीर्घकालसे एक चीनी सैनिक संगठनके अन्दर युद्ध कर रहा है। चीनका इस प्रकार एक सैनिक संगठनके अन्दर रहकर युद्ध करना केवल मेरे लिये ही नहीं, बल्कि बहुतसे चीन-वासियोंके लिये भी एक नई बात है। अब भी चीनकी सेनाके सम्बन्धमें बहुतसे अमेरिकनोंकी जो यह धारणा है कि वहाँके सैनिक पेशेवर गुंडे और लुटेरे हैं और उनके नायक केवल शत्रुदलपर अचानक आक्रमण करके उसे छिन्न-भिन्न कर डालनेके कौशलमें निपुण हैं, वह शायद उस देशके—जो शिल्प-कलामें बहुत पिछड़ा हुआ है और आपसकी फूटके कारण एकताबद्ध नहीं है—सैनिक कार्योंका मजाक उड़ानेके सिवा और कुछ नहीं है। किन्तु आज वहाँका सैनिक संगठन मजाक उड़ानेकी चीज नहीं रह गया है। सामरिक चीन आज एकताबद्ध है। उसके नेता रणनीतिमें शिक्षित एवं सुयोग्य सेनानायक हैं। उसकी नूतन सेनायें ऐसे सैनिकोंके शक्तिशाली और लड़ाकू संगठन हैं, जो किस उद्देश्यके लिये लड़ रहे हैं और उस उद्देश्यके लिये किस प्रकार लड़ा जाता है, यह दोनों ही जानते हैं, हालाँकि युद्धके आधुनिक साज-सामानका उन्हें नितान्त अभाव है। ठीक रूसकी तरह चीनमें भी वास्तविक रूपमें यह-युद्ध जन-युद्ध है। बड़े-बड़े जमींदारोंके लड़के भी आज वहाँकी सेनामें भरती हो रहे हैं, जब कि आजसे एक पीढ़ी पहले उस देशके लिये यह बात सोची भी नहीं जा सकती थी, जहाँ सेनामें अशि-क्षित लोग भाड़ेपर भरती किये जाते थे।

एक दिन तीसरे पहर मैं चेंगतूसे बाहर एक तेज धारावाली नदीके छोटेसे पुलके ऊपर खड़ा था। मेरे सामने नदीके किनारे घने धुएँकी

दीवार जैसी बन रही थी। उससे होकर मशीनगनके छूटनेकी चमक देखी जा सकती थी। और पीछे खेतोंमें तोपोंसे गोले दागे जा रहे थे। नदीमें उसके प्रखर प्रवाहके विरुद्ध बहुतसे नौजवान चीनी अपनी जानपर खेलकर तैर रहे थे। उनमें कुछ अपने सिरके ऊपर बन्दूक लिये हुए थे और दूसरे लोग एक पीपेके पुलमें बँधी हुई रस्सियोंको पकड़े हुए थे।

वे लोग उस पुलको नदीके पार तक ले गये। एक बार बीच धारामें पड़कर उनकी जैसी स्थिति हो गई थी, उनसे तो ऐसा मालूम पड़ने लगा था कि वे उस पुलको पार ले जानेमें कभी समर्थ नहीं होंगे। इसके बाद एकाएक मेरे पीछे खेतोंमें सैकड़ों सैनिक दिखाई पड़े। उनके लोहेके टोप और वर्दी इस तरह सावधानीसे छिपाई गई थी कि मैंने उन्हें कभी देख ही नहीं पाया था। वे सब उस पुलपर से दौड़कर नदीके इस पार चले आये और वहाँसे एक मील दूर एक गाँवपर हमला करनेके लिये श्रेणीबद्ध रूपमें जल्दी-जल्दी फैलने लगे।

उस गाँवपर उन लोगोंने अधिकार कर लिया सही, मगर इसके लिये उन्हें कँटेदार तारके घेरेको काटते हुए एक सुरङ्ग-भरे हुए खेतसे होकर— जिसमें से किसी सुरङ्गके स्पर्श होते ही धुएँके ववण्डर ऊपर उठने लगते थे— आगे बढ़ना पड़ा था, और अन्तमें एक खुले हुए मैदानसे होकर, जिसमें कहीं छिपनेकी जगह नहीं थी, उन्हें पेटके बल धीरे-धीरे रेंगकर अपना काम पूरा करना पड़ा था। पूरे साज-सामानके साथ थके-माँदे और गन्दे बनकर वे उस गाँवमें घुसे थे। किन्तु उन्हें इस बातका गर्व था कि खुले मैदानमें इस तरहका जटिल युद्ध किस प्रकार चलाया जाता है, इसका नूतन ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया है।

यह एक प्रकारका रण-कौशल अथवा रण-शिक्षाका अभ्यास था, जिसका प्रदर्शन चीनके सबसे बृहत् चेंगतू-सैनिक-शिक्षणालयमें किया गया था।

इसका आयोजन एक चीनी प्रेज़ुयेटने किया था। वह मेरी बगलमें खड़ा था और जिस समय यह प्रदर्शन चल रहा था, मुझे उसके नियमोंकी व्याख्या करके बताता जा रहा था। उस शिक्षणालयमें दस हजार छात्र नूतन चीनी सेनाके पदाधिकारी बननेके लिये नियमित रूपसे शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, जिनमें अधिकांशने इस प्रदर्शनमें भाग लिया था। यह एक रोमाञ्चकर प्रदर्शन था, और संसारमें कहीं भी इस प्रकारके जो सैनिक प्रदर्शन हुआ करते हैं, उनमें किसीसे भी कम नहीं था। उस दिन तीसरे पहर मैंने जो दृश्य देखा और उसके बाद भी बार-बार जो दृश्य मुझे चीनमें देखनेको मिला, वह मेरे लिये उस युगके अन्तका द्योतक था, जिस युगमें ४० करोड़ चीनवासी किसी भी सेना द्वारा—चाहे वह जापानी हो या ब्रिटिश या अमेरिकन—ठुकराये जा सकते थे।

चीन पाँच सालसे लड़ रहा है, इस बातका फिर दूसरा सबूत मैंने चेंगतूके ही आकाश सेना-शिक्षणालयमें दूसरे दिन पाया। वहाँ मैंने सैकड़ों चीनी छात्रोंको—जिनके सम्बन्धमें कुछ ही वर्ष पहले यह कहना उदारतासूचक समझा जाता था कि वे लड़ाकू जातिके नहीं हैं—मोटी लाठियोंसे एक दूसरेको जापानी ढंगसे प्रचण्ड रूपमें आघात करते और ठोंकते हुए तथा इस प्रकार पीटते समय जोर-जोरसे चिल्लाते और चीखते हुए देखा। अब तक मैंने इस प्रकारके व्यक्तिगत संग्रामके जितने अभ्यास देखे थे, उनमें यह सबसे बढ़कर कठोरतम था। यहीं मैंने चीनके बाल-सेनादल (Boy Scouts)को भी देखा, जिनमें कुछ तो बहुत ही कम उम्रके अर्थात् आठ वर्षके बालक थे। किन्तु इस कम अवस्थामें ही उन्हें सैनिक जीवनके पूर्ण अनुशासनकी शिक्षा दी जा रही थी, जिससे आगे चलकर वे पेशेवर सैनिकका जीवन व्यतीत करनेके लिये अभीसे तैयार हो सकें।

मैंने डा० हालिंगटन टांगसे कहा कि मैं युद्धक्षेत्रके किसी भागमें चीनी मोर्चा देखना चाहता हूँ। पहले तो यह असम्भव जैसा मालूम पड़ा। बादमें चलकर मुझे मालूम हुआ कि जनरलिसिमोको जब तक मैं चीनमें था, मेरी रक्षाके लिये जो चिन्ता थी, उसपर ध्यान रखते हुए उनको राजी करके इस सम्बन्धमें कुछ किया जा सकता था। इसलिये इस कार्यको करनेके लिये डा० हालिंगटनको समयकी जरूरत थी। आखिर इस यात्राका प्रबन्ध किया गया, और यद्यपि अपने ऊपर जितने खतरेकी हमें आशंका थी, उससे कम खतरा हमें मालूम हुआ, फिर भी इस यात्रामें एक दूसरा सबक हमें यह मिला कि चीनवासियोंने अपने इस पंच वर्षव्यापि युद्धमें बहुत-सी बातें सीख ली हैं।

हम उड़कर सियान गये, जो किसी समय चीनकी प्राचीन राजधानी थी। यह पीत नदीके उस बड़े मोड़के पास है, जहाँसे वह पूर्वकी ओर समुद्रमें मिलनेके लिये बहना शुरू करती है। हम मोटरपर सवार होकर शहरसे कई मील बाहर गये और फिर चीनी लालटेनोंके सहारे एक पहाड़ी मार्गके ऊपरसे होकर दूसरे सैनिक विद्यालयके पास पहुँचे। यह वही स्कूल है, जहाँ च्यांग-काई-शेक सन् १९३६ में सियानमें उनका जो इतिहास-प्रसिद्ध अपहरण हुआ, उससे ठीक पहले रहा करते थे। उसी संध्याको हम लोग बहुत ही सुखप्रद मोटर गाड़ियोंपर, जिनपर सोनेका भी प्रबन्ध था—यद्यपि यह बहुत ही असंगत जैसा लगता था—स्वतंत्र चीनमें जो इनी-गीनी सड़कें बच गई थीं, उनमें से एक सड़कसे होकर मोर्चेपर जानेके लिये रवाना हुए।

दूसरे दिन उषाकालमें ही हमने ट्रेन छोड़ दी और हाथ गाड़ियोंपर चढ़कर पन्द्रह मील और आगे गये। नदीसे कुछ मील दूर जो इस विभागका युद्ध-मोर्चा है, हम लोगके साथ जो सेनानायक थे, उनमें

एकने कहा कि हम लोग नदीके उस पारके जापानियोंकी दृष्टिमें बहुत कुछ बैठे हुए कबूतर जैसे मालूम पड़ते होंगे। बाकी कई मील सड़कके एक मोड़से होकर, जो खाई जैसा मालूम पड़ता था, पैदल चलते हुए हम मध्य-चीनके अन्दर उस स्थानमें पहुँचे, जहाँकी मिट्टी लाल रक्तके कीचड़से सनी हुई थी।

युद्धका यह मोर्चा एक गाँव था, जो बहुत-सी झाड़ियोंके जालसे घिरा हुआ था। इस स्थानपर नदी इस पारसे उस पार तक बारह सौ गज चौड़ी थी, किन्तु निरीक्षण करनेके स्थानसे टेलीस्कोपके जरिये हम जापानी बन्दूकोंके अग्रभागको अपनी ओर निशाना किये हुए और साथ ही इसके जापानी सैनिकोंको भी उनके शिविरोंमें देख सकते थे। जब तक हम लोग वहाँ रहे, सब कुछ शान्त था, किन्तु यह स्पष्ट था कि वह शान्ति वहाँ बराबर कायम नहीं रहती थी; और सच तो यह था कि हम लोगोंके वहाँ पहुँचनेके ठीक पहले ही गोले दागे गये थे।

इसी मोर्चेपर मेरी मुलाकात कैप्टेन च्यांग-चीह-काउसे हुई, जो जनरलिसिमोके पहली कौंसि पुत्र हैं। कैप्टेन च्यांग—जो बहुत अच्छी तरह अंगरेजी बोल लेते हैं—मुझे तमाम दिन उन सब कारणोंको दिखाते रहे, जिनकी वजहसे जापानी लोग वहाँ नदीको पार करनेमें असमर्थ थे। वहाँ पहाड़ोंमें एक दर्रा है। यह वही दर्रा है, जिससे होकर प्राचीन कालसे ही दक्षिण-चीनपर आक्रमण होता आ रहा है।

हमने गोलन्दाज सैन्य, पैदल सेना, कवचयुक्त गाड़ियाँ और पहाड़ियोंके अन्दर बने हुए किले देखे। ये किले पहाड़ियोंके अभ्यन्तरमें इस तरह बने हुए थे कि जापानियोंको उन्हें बारूदसे उड़ाकर नष्ट कर देना पड़ता। हमने २०८ वें सैन्यदलका पर्यवेक्षण किया। यह जनरलिसिमोका एक क्षिप्र सैन्यदल है, जो खूब सधा हुआ सैनिक, साज-

शस्त्रोंसे सुसज्जित और आधुनिक अस्त्रोंसे अच्छी तरह लैस हैं। जलती हुई धूपमें वे सैनिक—जिनकी संख्या लगभग ९ हजार थी—खड़े थे। मैंने उनके साथ बातचीत की। लकड़ीके एक छोटेसे मंचकी ओर, जो मुझे खड़ा होनेके लिये दिया गया था, वे देख रहे थे, और मुझे ऐसा लगा कि जब तक मेरा बोलना खतम नहीं हुआ—यद्यपि मैं अंगरेजीमें बोल रहा था—उनमें से एक आदमीका भी ध्यान विचलित नहीं हुआ। मैंने जो कुछ कहा था, उसका अनुवाद करके जब उन्हें सुनाया गया, तब उन्होंने इतने जोरसे हर्षध्वनि प्रकट की कि जापानियोंने अवश्य उसे सुना होगा और इस बातपर आश्चर्य किया होगा कि उनकी इस उत्तेजनाका कारण क्या है।

वहाँसे लौटकर जब हम अपनी ट्रेनपर आये और खाना खानेके लिये बैठे, तब कैप्टेन च्यांगने असन्दिग्ध रूपमें सिद्ध करके मुझे दिखा दिया कि अभी तुरत मैंने जिस मोर्चेको देखा था, वह तमाशेकी जगह ही नहीं था, बल्कि और कुछ भी था। भोजन करनेकी उस गाड़ीमें वह अपने दोनों हाथोंमें बहुत सी जापानी तलवारें और बहुत बढ़िया फरांसीसी शराब हमारी पार्टीको उपहार देनेके लिये ले आये। रातमें आक्रमण करनेवाली टोलियोंने नदी पार करके बड़ी फुर्तीसे जापानी सैन्य-पंक्तियोंके पश्चात् भागमें आघात करके इन दोनों चीजोंको तथा इन्हीं तरहके और भी अनेक महत्त्व-पूर्ण विजयसूचक चिह्नोंको बतौर लूटके मालके प्राप्त किया था। इसके साथ-साथ बहुतसे बन्दी और युद्ध-सम्बन्धी कागज-पत्र भी पकड़े गये थे। कैप्टेन च्यांगने मुझे बताया कि इस प्रकारके आक्रमणकारी दल कभी-कभी हफ्तों तक शत्रुकी सैन्य-पंक्तियोंके पीछे ठहर जाते थे और नदीके पश्चिम-तटपर अवस्थित अपने सदर दफ्तरमें लौटनेके पूर्व यातायातके

साधनोंको काट डालते थे और कल-कारखानोंके मजदूरोंको तोड़-फोड़का काम करनेके लिये उसकाते थे।

चीनमें मुद्रास्फीति

चीनमें इस समय आर्थिक और मुद्रास्फीति (Inflation) के फलस्वरूप जो समस्यायें उपस्थित हो गई हैं, उनसे कुछ-कुछ घबराहट जैसी मालूम करता हुआ मैं वहाँ से विदा हुआ। यह स्पष्ट ही मालूम पड़ता था कि मुद्रानीतिकी दृष्टिसे चीनको यह स्फीति वहाँकी आर्थिक व्यवस्थाके लिये अबसे बहुत पहलेसे ही घातक सिद्ध हुई होती, फिर भी आर्थिक विपत्ति चीनके ऊपर पूर्ण रूपसे कभी नहीं आई है। किन्तु वहाँकी स्थिति देखकर मनमें यह धारणा उत्पन्न हुए बिना नहीं रहती कि चीन बहुत दिनोंसे इस आर्थिक संकटके सम्मुखीन हो रहा है।

मुद्रास्फीतिके परिणाम-स्वरूप जो विषम समस्या उत्पन्न हो गई है, उसका समाधान क्या हो सकता है, इस सम्बन्धमें किसी प्रकारका निर्णय करनेसे पूर्व एक अमेरिकन बैंकर केवल चीनके मूल्य-निर्देशक आँकड़े ही नहीं चाहेगा, बल्कि और कुछ। चीनके जिन कई नगरोंका हमने निरीक्षण किया, उनमें वस्तुओंके मूल्यमें विशेष रूपसे विभिन्नता पाई जाती थी। और जब तक मैं वहाँ रहा, प्रतिदिन मुझे यह स्पष्ट होता गया कि चीनवासियोंकी एक बहुत बड़ी संख्या अपने देशकी

मुद्रास्फीति सम्बन्धी आर्थिक व्यवस्थाके प्रभावसे बहुत कुछ परे रहा करती है। तन ढाँकनेके लिये थोड़ेसे कपड़े और चन्द बहुत जरूरी तैयार मालके सिवा वस्तुओंके मूल्यसे उनका कोई वास्ता नहीं होता। किन्तु इन सब विशेषताओंको ध्यान लेनेके बाद भी मुद्रास्फीतिके जो लक्षण हमें चारों तरफ दिखाई पड़े, वे एक अमेरिकनके लिये बहुत ही उद्वेगजनक थे।

मुझे बताया गया कि चुंकिंगमें वस्तुओंका थोक दाम युद्धके पहलेकी अपेक्षा कम-से-कम पचास गुना अधिक बढ़ गया है। बहुत-सी चीजोंका खुदरा दाम भी पहलेकी तुलनामें साठ गुना बढ़ गया है। अक्टूबरमें जिस समय मैं वहाँ पहुँचा था, उससे पहलेके कई महीनोंमें वस्तुओंके मूल्यमें प्रतिमास सैकड़े दसके हिसाबसे वृद्धि हो रही थी। वहाँकी सारी जनसंख्याके लिये—और खासकर उन लोगोंके लिये, जो निश्चित आयपर जीवन निर्वाह करते हैं—इसका अर्थ यह होता है कि जिन बहुत-सी चीजोंका वे पहले व्यवहार करते थे, वे अब उनके लिये अप्राप्य जैसी हो गई हैं।

चेंगतूमें दो युवती शिक्षिकाओंने, एक दिन जब मैं बहुत कार्यव्यस्त था, दुभाषियेका काम करके मेरी सहायता की। वे दोनों शिक्षित महिलायें थीं और अच्छी अंग्रेजी बोलती थीं। एक तरुण प्रजातंत्रके लिये, जिसमें अब भी सुशिक्षित कार्यकुशल व्यक्तियोंका शोचनीय रूपसे अभाव है, वे आदर्श नागरिक थीं। उन्होंने मुझे बताया कि रहन-सहनका खर्च इतना अधिक बढ़ गया है कि वे पहले जैसा अच्छा खाना नहीं खा सकतीं। दृष्टान्तके लिये बोझ ढोनेवाले साधारण कुली जो निश्चित आयपर नहीं, बल्कि मजदूरीपर निर्भर करते हैं, सिक्कोंकी बाढ़के परिणाम-स्वरूप कष्टका अनुभव कर रहे हैं।

इसी शहरमें, जहाँ मैंने चीनके अधिकांश बड़े-बड़े विश्वविद्यालयोंके प्रधानोंसे चीनकी शिक्षा-सम्बन्धी समस्याओंके विषयमें वाद-विवाद किया

था, मुझे यह पता लगा कि अनेक विश्वविद्यालयोंकी आय या तो पहले के समान ही है अथवा बढ़ गई है। विश्वविद्यालयोंके आय-व्ययके हिसाबको युद्धके पूर्वके आँकड़ेके लगभग कायम रखनेमें यूनाइटेड चाइना रिलिफ (United China Relief) द्वारा अत्यधिक सहायता पहुँची है। किन्तु एक ओर जहाँ मूल्यमें पचास गुना वृद्धि हुई है, वहाँ दूसरी ओर अमेरिकन सिक्काका मूल्य चीनके सिक्केकी तुलनामें सिर्फ तीन गुनाके लगभग बढ़ा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि विश्वविद्यालयोंको आज उसी प्रकार विषम संकटका सामना करना पड़ रहा है, जिस प्रकार उनके अध्यापकों और छात्रोंको।

इस मुद्रास्फीतिके, जैसा कि मुझे अनुभव हुआ, कई कारण हैं। पहला कारण यह है कि चीनको कागजका सिक्का जारी करके युद्धका खर्च जुटानेके लिये विवश होना पड़ा है। सन् १९४२में कुल सरकारी खर्चका केवल एक-चौथाई भाग करोंके ऊपर निर्भर करता था। इस समय सरकारका नमक, चीनी, दियासलाई, तम्बाकू, चाय और शराब आदि चीजोंकी खरीद-बिक्रीपर जो एकाधिकार हो गया है, उससे राजस्वमें वृद्धि हुई है सही, किन्तु वह पर्याप्त नहीं कही जा सकती। चीनकी सर्वसाधारण जनता अपनी आमदनीमें इतनी बचत नहीं कर पाती, जिससे वह सरकारी ऋणके कागजोंको खरीद सके। इसलिये युद्धको जारी रखनेके लिये सरकारको छापेखानेका उपयोग करते रहनेके लिये विवश होना पड़ा है। माल ढोनेवाले वायुयानोंके चालकोंसे मुझे मालूम हुआ कि हिमालय पर्वतश्रेणीके ऊपरसे होकर जो माल चीन पहुँचते हैं, उनमें अधिकांश कागजी सिक्के होते हैं, जिनसे युद्धके क्रमशः बढ़ते हुए खर्चको पूरा किया जाता है।

इसके लिये चीनकी सरकार भी कुछ अंशोंमें दोषी है। सुदृढ़ राजस्व-नीति, मुद्रानीति एवं मूल्यपर नियंत्रण रखनेकी व्यवस्था तथा पर्याप्त आयकी पद्धति और दूसरे प्रकारके कर जिससे सिक्कोंकी बाढ़के कारण कुछ लोगोंको जो अधिक आय और मुनाफा हो रहा है वह उनसे धीरे-धीरे खींच लिया जा सके, इन सब कामोंको करनेमें वहांकी सरकार असफल रही है। आधारभूत पण्यद्रव्यों (Basic Commodities)का फाटका (Speculation)रूपमें बन्द करनेके लिये कठोर नीतिका अवलम्बन करनेमें भी सरकार असफल रही है। चीनके कुछ स्वतंत्र विचारवाले पत्र-संपादकोंने जोर देकर मुझसे कहा कि खुद सरकारी अफसर लोग भी फाटका किया करते हैं। प्रत्येक व्यक्तिने मुझे बताया कि जनरल च्यांग-काई-शेक समस्त अनियमितताओंका उच्छेद करने, किसी न किसी रूपमें आर्थिक सुव्यवस्था कायम करने और दोषोंका परिहार करनेके लिये भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। किन्तु जनरलिसिमो ऐसे व्यक्ति नहीं हैं, जो अर्थनीति अथवा राजस्वनीतिकी जटिलताओंका पूरा-पूरा ज्ञान रखते हों। उनकी शिक्षा और उनके मनका झुकाव दूसरी ही दिशाओंमें है।

सिक्कोंकी इस बाढ़का दूसरा कारण है स्वाधीन चीनमें मालकी नितान्त कमी, और इस कमीका कारण कुछ अंशोंमें तो चीनमें कम लोगोंका माल भेजनेमें असफल होना है, और दूसरा यह है कि जापानने चीनके उन सब प्रदेशोंमेंसे अधिकांशको जीतकर अपने अधिकारमें कर लिया है, जिनमें उद्योगधन्धोंकी उन्नति बहुत पहलेसे ही हो रही थी और रूस तथा हिमालय पर्वतश्रेणीके ऊपरसे होकर चीन पहुँचनेके जो मार्ग हैं, उन मार्गोंको छोड़कर बाकी सभी मार्गोंका सम्बन्ध विच्छिन्न कर डाला है। स्वाधीन चीनकी सीमाओंके अन्दर बड़े पैमानेपर

उत्पादन करनेके लिये चीनको कच्चा माल और चन्द बहुत जरूरी कलपूर्जों की जरूरत है। ये दोनों ही चीजें प्राप्त करना इस समय चीनके लिये अत्यन्त कठिन हो रहा है।

मैंने जो कुछ अपनी आँखोंसे देखा, उसपर विचार करनेसे यही मालूम पड़ता है कि चीनने आर्थिक संकटका सामना करनेके लिये जो कुछ किया है, वह बहुत ही चमत्कारपूर्ण है; किन्तु केवल चमत्कारोंसे ही काम नहीं चल सकता। अर्थ-सचिव डा० ओंग वेन-हाओने मुझे चुंकिंगमें सूती कपड़ेकी एक मिल, जो होनान प्रान्तसे जेनचावसे हटाकर लाई गई थी, और कागज बनानेकी एक मील, जो सन् १९३८ में शांघाईसे हटाकर वहाँ स्थापित की गई थी, दिखलाई। उन्होंने मुझे बताया कि सब मिलाकर सरकार लगभग १२०,००० टन कल-पुर्जे वगैरह चीनके अन्दर होकर लानेमें सफल हुई है, जिनमें अधिकांश वहाँके लोहा, इस्पात और खुदाईके व्यवसायोंमें लगे हुए हैं।

दोनों ही कारखाने काफी बड़े और सुचारु रूपसे परिचालित जान पड़ते थे। कागजकी मिलमें बैंक नोट-पेपर तैयार करनेका काम अभी तुरत शुरू होने जा रहा था। डा० ओंगने मुझे बताया कि इस समय इस मिलकी क्षमता प्रतिदिन पाँचसे लेकर नौ टन तक इस प्रकारका कागज तैयार करनेकी है। इस आँकड़ेकी तुलना यदि स्वाधीन चीनमें रहनेवाले १० करोड़ मनुष्योंकी आवश्यकताओंसे की जाय, तो इस एक दृष्टान्तसे ही यह स्पष्ट हो जायगा कि युद्धकालमें एक नूतन आर्थिक आधार कायम करनेकी जो कोशिश चीन कर रहा है, उसमें उसे कितनी गम्भीर समस्याका सामना करना पड़ता है।

चीनकी औद्योगिक सहयोग-समितियोंने, जिन्हें मैंने लानचाउमें देखा था, इस समस्याका सामना करनेमें सहायता पहुँचाई है; किन्तु

उन समितियोंपर किसका नियंत्रण होना चाहिये, इस सम्बन्धमें जो मतभेद उपस्थित हो गया है, उसको लेकर उनको कठिनाइयाँ हो रही हैं। जो लोग इन समितियोंको चला रहे हैं, उनका यह विश्वास है कि चीनमें ऐसी कुछ आर्थिक एवं औद्योगिक शक्तियाँ हैं, जो इन्हें नष्ट कर देना चाहती हैं। किन्तु जनरलिसिमो--जिनके साथ मैंने इन समितियोंकी समस्याओंपर व्योरेवार रूपमें विचार किया---इन संस्थाओंके दृढ़ एवं अटल पक्षपाती हैं। किसी भी हालतमें इन संस्थाओंके लिये निकट भविष्यमें युद्धकी उत्पादन-सम्बन्धी माँगोंको, बिना मौलिक व्यवसायोंके आधारके और बिना मालको एक जगहसे दूसरी जगह होकर ले जानेका समुचित प्रबन्ध हुए, पूरा करना बहुत कठिन होगा। स्वाधीन चीनमें कुल मिलाकर एक हजार मीलसे भी कम रेल-मार्ग रह गया है। रूसका जो राजमार्ग है, जिसका उल्लेख मैं पहले ही कर चुका हूँ--वही एकमात्र स्थल-मार्ग खुला रह गया है, जिससे होकर चीनके अन्दर माल भेजा जा सकता है और वहाँ से बाहर चालान किया जा सकता है। हिमालय पर्वतश्रेणीके ऊपरसे होकर जो आकाश-मार्ग है और जापानी रेल मार्गोंसे होकर गुप्त रीतिसे माल भेजनेके जो मार्ग हैं, वे बहुत ही सीमित हैं।

यही वह समस्या है, जिसके समाधानका मार्ग वहाँके श्रेष्ठ बुद्धिवाले देशी और विदेशी विचारशील व्यक्ति ढूँढ़ रहे हैं। यह समाधान किस रूपमें होगा, यह मैं तब तक नहीं कह सकता, जब तक कि मैं इस समस्याका और भी विशेष रूपमें अध्ययन न कर लूँ। किन्तु मुझे यह विश्वास है कि इसका एक विशेष रूप अवश्य ही यह होना चाहिये कि चीनके आर्थिक जीवनपर और उत्तराधिकार-रूपमें प्राप्त संपत्तिपर जो इस समय कठोर नियंत्रण हैं, वे कुछ शिथिल कर दिये जायँ और इस समय जिस पैमानेपर मालके उत्पादनके लिये और देशकी सेवाओंके लिये वहाँके विशाल

मानवीय साधनोंका उपयोग किया जा रहा है, उससे बहुत बड़े पैमानेपर उनका उपयोग किया जाय।

मेरे विचारसे चीनमें सिक्कोंकी जो बेहद बाढ़ हो गई है, उसे वहाँके बहुतसे अमेरिकन, जिनके साथ मैंने बातें की थीं, जैसा भयावह समझते हैं, उसकी अपेक्षा वहाँके सरकारी अफसरोंने मुझे बताया कि चीनके केवल मध्यवित्त वर्गको ही निश्चित रुपयों आय होती है, और इस मध्यवित्त वर्गमें वहाँके बहुत थोड़े लोग हैं। उनका यह दावा था कि कुली लोग और आम तौरसे शारीरिक परिश्रम करनेवाले मजदूर तथा बहुतसे किसान, जिनकी कोई निश्चित आय नहीं है, अपने परिश्रमकी कमाईके बदले अधिक मूल्य पा रहे हैं और सिक्कोंकी बाढ़से वे वस्तुतः मुनाफा उठा रहे हैं।

इस विचार दृष्टिके सम्बन्धमें इतनी बात-तो अवश्य कही जा सकती है कि हमारे देशमें जिस प्रकारकी आर्थिक व्यवस्था प्रचलित है, उसमें इसी तरहकी जो समस्यायें उपस्थित हो रही हैं, उन्हें मद्देनजर रखते हुए जो कोई चीनकी मुद्रास्फीति-सम्बन्धी समस्याओंका अन्दाजा लगानेकी कोशिश करेगा, वह अवश्य ही बहुत ही गलत परिणामोंपर पहुँचेगा। चीनकी अर्थनीतिके एक श्रेष्ठ विद्वानने, जिसके साथ मेरी मुलाकात हुई थी, मुझे हिसाब करके बताया कि चीनकी जनतामें सैकड़े अस्सी लोग अपने लिये खाद्य-पदार्थ स्वयं उपजाते हैं और उन्हें रुपयेकी बहुत कम जरूरत होती है। रुपयेके द्वारा उनकी क्रयशक्ति बराबरसे बहुत कुछ नगण्य जैसी रही है।

किन्तु इस युक्तिको विशेष महत्त्व नहीं देना चाहिये। यद्यपि इसको मान लेनेसे वर्तमान स्थिति कुछ कम निराशाजनक मालूम पड़ती है, फिर भी इससे भविष्यके लिये बहुत कम आशा मिलती है। जैसमान

प्रान्तके गवर्नर चांग-लुनने, जो चीनके एक बहुत ही सदक्ष एवं विचार-शील शासक हैं, मुझे बताया कि उनके प्रान्तमें जो लोग अनाज पैदा करते हैं, उनमें सैकड़े ७० ऐसे हैं, जो अपनी जोत जमीनके या तो पूर्ण रूपमें या आंशिक रूपमें रियाया हैं। ये लोग अपना लगान, उन्होंने कहा, नगदके रूपमें नहीं बल्कि, जिन्सके रूपमें चुकाते हैं, और इसलिये खाद्य-पदार्थके मूल्यमें वृद्धि होनेपर भी उन्हें बहुत कम ही लाभ होता है। दूसरी ओर उन चन्द चीजोंके मूल्यमें वृद्धि होनेसे जिन्हें खरीदनेकी उन्हें जरूरत पड़ती है, चीनके किसानोंके लिये वह थोड़ी, सी रकम भी नहीं रह जाती जिसपर वे जिन्दगी बसर करते हैं।

किन्तु सबसे बढ़कर महत्वपूर्ण तो यह कुत्सित बात है कि चीनकी आर्थिक स्थिति अब भी दयनीय है, निराशाजनक रूपमें दयनीय। उसे युद्धका खर्च चलाना है अथवा युद्धके बाद पुनर्निर्माण-कार्यके लिये धन जुटाना है, जिससे उसके प्राकृतिक साधनोंका और भी वृहत्तर रूपमें उत्पादन-सम्बन्धी कार्योंमें उपयोग किया जा सके। मनुष्य और कच्चा मालके रूपमें चीनके इन साधनोंको जिसने देखा है और जिसने इन साधनोंको काममें लानेके लिये खुद चीनी जनताके गम्भीर एवं प्रचण्ड संकल्पको समझा है, वह इस सत्यमें सन्देह नहीं कर सकता।

मेरे विचारसे औद्योगिक दृष्टिसे चीनमें जिस हद तक उत्पादन करनेकी क्षमता है, उस हद तक पण्यद्रव्योंका उत्पादन और देशकी सेवाओंमें अधिकाधिक मनुष्योंका योगदान चीनमें सिक्कोंकी बाढ़के कारण जो विषम समस्या उपस्थित हो गई है, उसका सम्भवतः सबसे अच्छा समाधान होगा। अब चीनवासियोंको इस बातका निर्णय करना है कि वे किस प्रकार पण्यवस्तुओंके लिये अधिकाधिक मनुष्योंके योगदानका संगठन करना चाहते हैं और उसके लिये अर्थ जुटाना चाहते हैं। जमीनपर

मालिकाना हक इस समय जिस रूपमें चीनमें है, उससे अधिक व्यापक रूपमें वह होना चाहिये। इससे वहाँकी आर्थिक समस्याके समाधानमें सहायता पहुँच सकती है। इसी तरह सियान और लानचाउमें तरुण चीनी बैंकर और फैक्टरियोंके मैनेजरसे बातचीत करके मेरा यह ख्याल हुआ कि आर्थिक नियंत्रणके विशेष रूपमें विकेन्द्रीकरणसे भी इस कार्यमें सहायता पहुँच सकती है। अवश्य ही इस कार्यमें वहाँकी सरकारको भी महत्वपूर्ण भाग लेना पड़ेगा। फिर भी मुझे ऐसा लगा कि इसमें विशेष रूपसे जनताको भाग लेने देना बुद्धिमानीका काम होगा। किन्तु ये सब प्रश्न ऐसे हैं, जिनका निर्णय खुद चीनवासी ही कर सकते हैं।

किन्तु इस बीचमें भी इस कार्यमें सहायता प्रदान करनेके लिये अमेरिका बहुत कुछ कर सकता है। पहली बात जो यह है कि मेरा यह पक्का विश्वास है कि हम लोगोंको चीनके साथ मैत्री-सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये, क्योंकि वे हमारे पक्षमें वास्तव और प्रत्यक्ष रूपमें युद्ध कर रहे हैं। हमें रूससे होकर, हिमालय पहाड़के ऊपरसे होकर या बर्माको फिरसे जीतकर अथवा तीनों ही मार्गोंसे उन्हें मशीन, वायुयान, गोला-गोली, बारूद और कच्चा माल, जिनकी उन्हें आवश्यकता हो, भेजना चाहिये।

किन्तु हमें स्वयं भी चीनके साथ इस मैत्री-सम्बन्धके विषयमें सोचना चाहिये और यह निर्णय करना चाहिये कि इसका वास्तविक अर्थ हमारे लिये क्या हो सकता है। हमें यह निर्णय करना होगा कि पूर्व-एशियामें चीनसे बढ़कर अच्छा मित्र हमारा क्या कोई और राष्ट्र हो सकता है, और यदि इस प्रश्नका उत्तर नहीं हो, जैसा कि मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि ऐसा ही होगा, तो एक मित्रके प्रति हमारे जो कर्तव्य हैं, उनको पूरा

करनेके लिये हमें तैयार हो जाना चाहिये। इन कर्त्तव्योंके अन्दर आर्थिक सहयोग तथा वर्त्तमानकालिक सामरिक सहायता भी शामिल हैं। और इसके साथ ही हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम चीनवासियोंको और उनकी समस्याओंको समझें। केवल महत् उदार वाक्यों और अन्यायके विरुद्ध प्रतिवादमें अब चीनवासियोंकी आस्था कुछ-कुछ क्षीण हो चली है।

सद्भावनाका स्रोत

९ अक्टूबरको हमने चेंगतूसे प्रस्थान किया। अपनी इस यात्रामें हमने चीनमें लगभग एक हजार मीलकी यात्रा की, गोबीकी विशाल मरुभूमि और मंगोलियाके प्रजातंत्र राज्यको पार किया, साइबेरियामें हजारों मील, बेहरिंग समुद्र, अलास्काकी पूरी लम्बाई और कनाडाकी पूरी चौड़ाईको पार किया, और १३ अक्टूबरको अमेरिका वापस आये। अन्तर्राष्ट्रीय डेट लाइनको पार करनेसे हमें एक दिनकी बचत हुई।

जब आप ४९ दिनोंमें उड़कर विश्वकी परिक्रमा करते हैं, तब आपको यह मालूम होता है कि संसार केवल मानचित्रमें ही नहीं, बल्कि लोगोंके मनमें भी छोटा बन गया है। संसारमें सर्वत्र कुछ ऐसे भाव पाये जाते हैं, जिनको लाखों-करोड़ों मनुष्य समान रूपमें अपने मनमें इस प्रकार धारणा किये हुए हैं, मानो वे एक ही नगरके रहनेवाले हों। इस प्रकारके

एक भावका—जिसका मैं बिना किसी हिचकिचाहटके उल्लेख कर सकता हूँ—हम अमेरिकनोंके लिये बहुत बड़ा महत्व है; और वह भाव है अमेरिकाके प्रति सारी दुनियाका सम्मान एवं आशापूर्ण दृष्टिसे देखना।

मैंने जिस किसी व्यक्तिसे बातचीत की, चाहे वह नेलेस या नेटाल या ब्रेजिलका निवासी था, या सिरपर बोझ ढोनेवाला नाइजेरियाका मजदूर, या मिस्रका प्रधान-मंत्री अथवा वहाँका राजा, या प्राचीन बगदादकी बुर्का धारण करनेवाली स्त्री, या काल्पनिक फारसका—जो अब ईरान नामसे प्रसिद्ध है—कालीन बुननेवाला जुलाहा या वहाँका शाह, या अंकाराकी सड़कोंपर—जो हमारे मिडिल वेस्टके नगरोंकी सड़कें जैसी बहुत-कुछ मालूम होती हैं—अतातुर्कका कोई अनुयायी, या रूसके किसी कारखानेमें काम करनेवाला कोई हट्टा-कट्टा मजदूर अथवा खुद स्टालिन, या चीनके महान् नेता जनरल च्यांग-काई-शेककी मनको मुग्ध करनेवाली पत्नी, या युद्धके मोर्चेपर का चीनी सैनिक, या रोयेंदार टोपी पहने हुए साइबेरियाके घने जंगलका शिकारी—इनमें मैंने जिस किसी व्यक्तिसे या दूसरोंसे बातचीत की, सबमें मैंने एक ही सहयोग-सूत्र पाया, और वह यही था कि उनके हृदयमें अमेरिकाके प्रति गम्भीर मैत्रीका भाव वर्त्तमान है।

वे सभी मैत्री भावसे अमेरिकाकी ओर देख रहे हैं, और उनका यह मैत्री भाव उनके सच्चे स्नेहका द्योतक है। मैं एक स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण बातके सम्बन्धमें निश्चित धारणा लेकर स्वदेश लौटा: और वह बात यही है कि हम अमेरिकन लोगोंके प्रति इस समय संसारमें सद्भावनाका विशाल स्रोत विद्यमान है।

इस विशाल स्रोतकी सृष्टि करनेमें बहुत-सी बातोंने काम किया है। इनमें सबसे पहला स्थान है अस्पतालों, स्कूलों और कालेजोंका, जिन्हें

अमेरिकाके पादरियों, अध्यापकों और डाक्टरोंने संसारके सुदूर कोने-कोनेमें स्थापित किया है। प्राचीन देशोंके बहुतसे नये नेताओंने—जो इस समय इराक या टर्की या चीनका शासन-सूत्र-संचालन कर रहे हैं—अमेरिकन अध्यापकोंके अन्दर अध्ययन किया है—उन अध्यापकोंके, जिनका एकमात्र स्वार्थ ज्ञानका प्रचार करना रहा है। वर्त्तमान संकट-कालमें हम लोग अपने देशके इन स्त्री-पुरुषोंके ऋणी हैं, जिनके कारण हम लोगोंके प्रति मैत्री भाव इन देशोंमें फैला है।

जिस प्रकार लोग बैंकके खातेमें रुपया जमा करके रखते हैं, उसी प्रकार हम लोगोंके लिये सद्भावना संचित करके उन अमेरिकनोंके द्वारा रखी गई है, जिन्होंने नई सड़कों, नये आकाश-मार्गों और नये समुद्री मार्गोंको खोलनेमें पथ-दर्शकका काम किया है। इन्हीं लोगोंके कारण संसारके लोग हमें एक ऐसी जातिके रूपमें समझते हैं, जिनके द्वारा वस्तुओं और विचारोंका शीघ्र संचालन होता है। इसीलिये वे लोग हमें मानते हैं, और वे हमारा आदर करते हैं।

मैत्रीके इस स्रोतको कायम करनेमें हमारे चलचित्रोंका भी महत्त्व-पूर्ण स्थान रहा है। ये चलचित्र सारे संसारमें प्रदर्शित होते हैं। प्रत्येक देशके मनुष्य अपनी आँखोंसे देख सकते हैं कि हम लोग कैसे हैं, और हमारी आवाजको सुन सकते हैं। नेटालसे लेकर चुंकिंग तक सब जगह मुझसे अमेरिकाके सिनेमा-स्टारोंके सम्बन्धमें प्रश्न-पर-प्रश्न पूछे जाते थे, और इन प्रश्न पूछनेवालोंमें दुकानोंमें काम करनेवाली या मुझे काफी परसनेवाली लड़कियाँ जितनी उत्कण्ठा प्रकट करती थीं, उतनी ही उत्कण्ठा प्रधान-मंत्रियों की पत्नियाँ और राजाओंकी रानियाँ भी।

देशके बाहर हमारे प्रति जो सद्भावना संरक्षित है, उसके और भी कारण हैं। प्रत्येक देशके लोग—चाहे वह देश उद्योग-धन्धोंमें उन्नति-

शाली हो अथवा पिछड़ा हुआ—अमेरिकाके श्रमजीवियोंकी महत्त्वाकाँक्षाओं एवं गुणोंकी, जिनके विषयमें उन्होंने सुना है, प्रशंसा करते हैं और उनके समतुल्य बननेकी कामना करते हैं। अमेरिकामें कृषि, व्यवसाय एवं उद्योग-धन्धोंकी जो पद्धतियाँ हैं, उनसे भी वे प्रभावित हुए हैं। प्रायः जिन देशोंमें मैं गया, उनमें एक भी ऐसा नहीं है, जिसमें अमेरिकनों द्वारा बनाया गया कोई बहुत बड़ा बाँध, या सिंचाईका कोई आयोजन, या बन्दरगाह अथवा कारखाना न हो। मैंने देखा कि लोग हमारे कार्योंको पसन्द करते हैं, और यह केवल इसीलिये नहीं कि उनसे अपने जीवनको सुखपूर्ण एवं समृद्ध बनानेमें उन्हें सहायता मिलती है, बल्कि इसलिये भी कि हम लोगोंने अपने व्यवहारसे दिखला दिया है कि अमेरिकन लोग अपने कारबारके लिये जहाँ उद्यम करते हैं, वहाँ उनके उस उद्यमका अवश्यम्भावी परिणाम राजनीतिक नियंत्रण ही नहीं होता।

विदेशी नियंत्रणका यह भय मैंने सर्वत्र पाया। लोगोंके मनमें जो यह धारणा है कि हम अमेरिकनोंका इस नियंत्रणसे कोई सम्बन्ध नहीं है, उसके कारण वे हमारा अनुमोदन करनेमें जितना आगे बढ़े हुए हैं, उतनेकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि संसार इस बातके सम्बन्धमें कितना सतर्क है कि हम किसी भी भूभागमें कहीं भी न तो दूसरोंपर अपना शासन लादना चाहते हैं और न अपने लिये बलपूर्वक विशेष सुविधायें प्राप्त करना चाहते हैं।

संसारके सब लोग यह जानते हैं कि उनके प्रति हमारा कोई बुरा मतलब या दुष्ट अभिप्राय नहीं है। और एक मिथ्या आत्म-संतोषकी भावनासे यदि अबसे पहले हमने अपनेको अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारोंसे अलग रखा है, तो उसमें भी हमारा कोई बुरा मतलब नहीं था। और वे यह भी जानते हैं कि हम इस युद्धमें संलग्न हैं, और हम दूसरी जातियोंके

जीवन या उनकी सरकारोंपर किसी प्रकारका नियंत्रण रखनेके अथवा लाभके लिये या लूटका माल प्राप्त करने अथवा राज्य-विस्तारके लिये नहीं लड़ रहे हैं। मेरे खयालसे यही एक सबसे बढ़कर महत्त्वपूर्ण कारण है, जिसकी वजहसे संसारमें सर्वत्र हम लोगोंके प्रति सद्भावनाका स्रोत वर्त्तमान है।

संसारमें जहाँ कहीं मैं गया, मैंने सर्वत्र अमेरिकाकी सेनाके अफसरों और आदमियोंको पाया। कहीं-कहीं वे बहुत छोटी टुकड़ियोंमें थे और कहीं बहुत बड़े-बड़े सैन्य-शिविरोंमें भरे हुए थे। चाहे जिस स्थितिमें मैंने उन्हें पाया, वे उस सद्भावनामें कुछ वृद्धि ही कर रहे थे, जो सद्भावना अमेरिकाके प्रति विदेशी लोग धारण करते हैं।

इसका एक उल्लेखयोग्य दृष्टान्त है हमारे सैनिक वायुयानका चालकदल। इनमें कोई भी युद्धके कामके सिवा इससे पहले और कभी अपने देशसे बाहर नहीं गया था। वे विदेशोंकी राजनीतिसे भी पूर्ण परिचित नहीं थे। उनमें अधिकांश कोई विदेशी भाषा नहीं बोल सकते थे। मगर जहाँ-जहाँ हमने अवतरण किया, उन लोगोंने अमेरिकाके मित्र बनाये। मैं उस दृश्यको बहुत समय तक याद रखूँगा, जब कि ईरानके शाहने, पहले-पहल अपने जीवनमें हमारे वायुयानपर एक चक्कर लगानेके बाद, हमारे चालक मेजर काइटके साथ हाथ मिलाया और उनकी ओर विस्मययुक्त प्रशंसा एवं ईर्षाके भावसे देखते रहे।

अमेरिकन सैनिकोंको जहाँ कहीं मैंने देखा, उनके लिये मैंने गर्व अनुभव किया। मुझे इस बातका विश्वास हुआ कि हमारी नागरिक सेना—जिसका पेशेवर सेनाके रूपमें कोई स्वार्थ नहीं है—आप-से-आप उस सद्भावनाके स्रोतको सुरक्षित रखनेमें सहायक होगी, जो उत्तराधिकारके रूपमें हमें प्राप्त है, और इसके साथ ही वह प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा इस बातका भी पता लगायगी कि यह युद्ध अमेरिकाका युद्ध क्यों है।

क्योंकि, जैसा मैं देख रहा हूँ, इस सद्‌भावनाका अस्तित्व हमारे समयका सबसे बड़ा राजनीतिक तथ्य है। दूसरे किसी भी पाश्चात्य राष्ट्रके पास सद्‌भावनाका यह स्रोत नहीं है। इसलिये हमारे इस स्रोतका उपयोग स्वतंत्रता एवं न्यायके लिये मनुष्यका जो सन्धान है, उसके प्रति दुनियाकी जातियोंको संघबद्ध करनेकी दिशामें होना चाहिये। इसको कायम रखना होगा, ताकि पूर्ण विश्वासके साथ उन दुष्ट आसुरी शक्तियोंके विरुद्ध, जो हमारे संपूर्ण शुभ उद्देश्यों एवं आशाओंको नष्ट कर डालनेपर तुली हुई हैं, वे हमारे साथ संग्राम कर सकें और कार्य कर सकें। सद्‌भावनाके इस स्रोतको सुरक्षित रखना हमारा एक पवित्र दायित्व है, और यह दायित्व केवल संसारकी महत्त्वाकांक्षी जातियोंके प्रति ही नहीं है, बल्कि हमारी उन देश-सन्तानोंके प्रति भी है, जो पृथिवीके प्रत्येक महादेशमें युद्ध कर रहे हैं। क्योंकि इस स्रोतका जल स्वतंत्रताका स्वच्छ एवं प्राणदायक जल है।

हिटलर, मुसोलिनी या हिरोहितो कोई भी अपने प्रचार-कार्य या शस्त्र-बल द्वारा हम लोगोंसे सद्‌भावनाकी इस एकताबद्ध करनेवाली शक्तिको ले नहीं सकता, और न हम लोगोंको आपसमें या हमारे मित्रोंसे तब तक विभक्त कर सकता है, जब तक कि जिन आदर्शोंके लिये युद्ध करनेकी हम घोषणा करते हैं, उनका हम मखौल न उड़ावें। सुविधा देखकर स्वार्थ सिद्ध करनेकी नीति हमारे लिये असुविधाजनक सिद्ध होगी। क्योंकि इससे हम उन आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक पूँजीको खो बैठेंगे, जो हमें दुनियाके लोगोंकी हमारे आदर्शों एवं कार्य-प्रणालियोंके प्रति श्रद्धासे प्राप्त होती है।

यदि हम लोग अपनेको पुरानी दुनियाके षड्यंत्र और धार्मिक राष्ट्रीयतावादी तथा जातिगत विभागोंके कुचक्रोंमें अपनेको विजड़ित होने देंगे,

तो सचमुच हम अपनेको अधकचरे पायँगे। और यदि हम अपने मौलिक सिद्धान्तोंके प्रति सच्चे बने रहेंगे, तो हम अपनेको उस तरहकी दुनियाके लिये सर्वथा उपयुक्त पायँगे, जिसके लिये सब देशोंके लोग आकाँक्षा प्रकट कर रहे हैं।

हम किस लिये लड़ रहे हैं

यह कहना एक सामान्य बात जैसी हो गई है कि यह युद्ध सारे संसारमें लोगोंके विचारमें, उनकी रहन-सहनके ढंगमें एक क्रान्तिके रूपमें उपस्थित हुआ है। किन्तु वह क्रान्ति किस प्रकार आज कार्य-रूपमें परिणत हो रही है, इस बातको लोग सामान्यतः नहीं देखते। और मैंने इस क्रान्तिको ठीक इसी रूपमें देखा है। यह क्रान्ति उद्दीपक है और कुछ-कुछ भयावह भी। यह उद्दीपक इसलिये है कि मनुष्योंमें अपनी परिस्थितिको बदलने और स्वतंत्रता प्राप्त करके वे सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं, इस सहज एवं जाग्रत विश्वासके साथ स्वतंत्रताके लिये युद्ध करनेकी जो बहुत बड़ी शक्ति है, उसका यह एक ताजा प्रमाण है। और भयावह इसलिये कि संयुक्त-राष्ट्रोंकी विभिन्न जातियाँ, उनके नेता तो दूर रहे, अब तक इस बातको लेकर आपसमें सहमत नहीं हो सकी हैं कि वे किस लिये युद्ध कर रही हैं, और वे कौन-से विचार हैं, जिनसे हमें अपने योद्धाओंको सबल बनाना पड़ेगा।

क्योंकि मानव-जातिके विकासमें संगीनों और बन्दूकोंका चाहे कितना ही महत्त्वपूर्ण स्थान क्यों न रहा हो, किन्तु विचारोंका स्थान उनसे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण रहा है—और अन्ततः अधिक निश्चयात्मक भी। कम-से-कम ऐतिहासिक कालमें तो मनुष्योंने केवल एक दूसरेको हत्या करके आनन्द प्राप्त करनेकी भावनासे युद्ध नहीं किया है। उन्होंने एक निश्चित उद्देश्यको लेकर युद्ध किया है। कभी-कभी यह उद्देश्य विशेष रूपमें अनुप्राणित करनेवाला नहीं रहा है। कभी-कभी यह बिलकुल स्वार्थमूलक रहा है। किन्तु बिना किसी उद्देश्यके जीता गया युद्ध ऐसा जीतना है, जिसमें कुछ भी सफलता हाथ न आये।

किसी उद्देश्य-विशेषको लेकर युद्ध जीतनेका एक अत्यन्त प्रसिद्ध दृष्टान्त हम लोगोंकी अमेरिकन क्रान्ति है। हम इस क्रान्तिमें इसलिये नहीं शरीक हुए थे कि हम अंगरेजोंसे घृणा करते थे और उन्हें मार डालना चाहते थे, बल्कि इसलिये कि हम स्वतंत्रतासे प्रेम करते थे और उसे प्रतिष्ठित करना चाहते थे। मैं समझता हूँ कि अमेरिकाकी इस स्वाधीनता का अर्थ दुनियाके लिये क्या हुआ है, इस बातपर खयाल रखते हुए यह कहना उचित होगा कि यार्कटाउनमें जो विजय प्राप्त की गई थी, वह शस्त्रास्त्रोंके बलसे प्राप्तकी गई सबसे बड़ी विजय थी। किन्तु यह विजय इसलिये नहीं हुई थी कि हमारी सेना बहुत बड़ी और भयंकर थी, बल्कि इसलिये कि हमारा उद्देश्य बहुत ही स्पष्ट, महत् एवं सुनिश्चित था।

अभाग्यवश सन् १९१४-१८ के युद्धके सम्बन्धमें यह बात नहीं कही जा सकती। यह कहना एक स्वतःसिद्ध सत्य जैसा हो गया है कि वह युद्ध बिना विजयका युद्ध था। हाँ, यह सच है कि जब तक हम लोग उस युद्धमें संलग्न रहे, हमने ऐसा खयाल किया या कहा था कि हम एक उच्च उद्देश्यको लेकर युद्ध कर रहे हैं। हमारे प्रधान सेनापति उड्रो

विलसनने ओजस्वी शब्दोंमें हमारे उद्देश्यका वर्णन किया था। हम संसारमें लोकतंत्रकी प्रतिष्ठाके लिये लड़ रहे थे। और इसके लिये हम केवल नारा लगाकर ही चुप नहीं रह जाना चाहते थे, बल्कि इसके साथ-साथ हमने कुछ निश्चित सिद्धान्तोंको भी स्वीकार किया था, जो राष्ट्रपति विलसनकी चौदह शर्तोंके नामसे विख्यात हैं और राष्ट्रसंघके नामसे एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाकी भी प्रतिष्ठा की थी। अवश्य ही यह एक उच्च उद्देश्य था। किन्तु सन्धिकालमें जब इसे कार्य-रूपमें परिणत करनेका समय आया, इसमें एक घातक त्रुटिका पता चला। हमें मालूम हुआ कि हम और हमारे सहायक मित्र-राष्ट्र उस उद्देश्यको लेकर सहमत नहीं हैं। एक ओर तो हमारे कुछ मित्रोंने अपनेको गुप्त सन्धियोंमें विजड़ित कर लिया था, और मि० विलसनने जिस नूतन हृदयकी परिभाषा की थी, उसको प्रकाशित करनेकी अपेक्षा वे उन गुप्त सन्धियोंको कार्यान्वित करने और परम्परागत शक्तिमूलक कूटनीतिका अनुसरण करनेके लिये ही अधिक व्यग्र थे। और दूसरी ओर हम लोगोंने भी अपने घोषित उद्देश्यके प्रति उस गम्भीर रूपमें अपनेको उत्सर्ग नहीं कर दिया था, जिस रूपमें हमने संसारको विश्वास होने दिया था। चूँकि उन उद्देश्योंका परित्याग कर दिया गया, इसलिये हमारी पीढ़ीने उस युद्धको एक भीषण एवं निरर्थक नर-संहारके रूपमें निन्दनीय ठहराया। लाखोंने अपने प्राण गँवाये। किन्तु उनके बलिदानके चिताभस्मसे किसी विचारका या नूतन लक्ष्यका उत्थान नहीं हुआ।

अब मैं यह सोचता हूँ कि इन सब विचारोंपर ध्यान देनेसे हम अपरिहार्य रूपमें एक ही परिणामपर पहुँचते हैं। मेरा खयाल है कि हमें अन्तिम रूपमें यह निर्णय कर लेना चाहिये कि कोई भी ऐसी महत्त्वपूर्ण बात सन्धिमें नहीं प्राप्त की जा सकती, जो युद्धमें ही प्राप्त न कर ली गई हो।

मैंने यहाँ महत्वपूर्ण शब्दका व्यवहार किया है। यह बिलकुल ठीक है कि बहुत-सी ब्योरेवार बातोंका निर्णय सन्धिकालमें और उसके बादकी कांफ्रेन्सोंमें ही हो सकता है। इस प्रकारकी ब्योरेवार बातोंका युद्ध-कालमें विचारपूर्वक निर्णय नहीं हो सकता। उदाहरणके लिये हम—हम और हमारे साथी मित्र-राष्ट्र भी—इस बातकी कोई विवरणयुक्त योजना बनानेके लिये कि युद्ध जीत लेनेके बाद हम बर्माके सम्बन्धमें क्या करना चाहते हैं, जापानियोंके साथ लड़ना बन्द नहीं कर सकते। इसी प्रकार पोलैण्डके भविष्यके सम्बन्धमें सारी बातोंका अभी ही निर्णय कर लेनेके लिये हम हिटलरके विरुद्ध संग्राम करनेमें किसी प्रकारकी ढिलाई नहीं कर सकते।

इस समय युद्धकालमें हमें अपने सिद्धान्तोंपर विजय पानी है। हमें यह जानना होगा कि हम किस रूपमें समस्याओंका समाधान करेंगे। एक बार फिर मैं बतौर दृष्टान्तके अमेरिकाकी क्रान्तिका व्यवहार करता हूँ। जिस समय हमने वह संग्राम किया था, हमें इस बातका कुछ भी आभास नहीं था कि संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाका वास्तविक गठन किस रूपमें होने जा रहा है। किसीने शासन-विधानके सम्बन्धमें सुना तक नहीं था। संघ-शासन-पद्धति, सरकारकी तीन शाखायें, दो व्यवस्थापिका परिषदोंके सम्बन्धमें एक उत्कृष्ट समझौता, जिसके द्वारा छोटे-छोटे राष्ट्रोंको संघमें सम्मिलित होनेके लिये प्रवृत्त किया गया—ये सब नवप्रवर्त्तन उस समय तक भविष्यके गर्भमें ही थे। केवल थोड़े से राजनीतिक मनीषी अपने मस्तिष्कमें इन सब विचारोंको पोषण कर रहे थे, जो स्वयं भी इनके सम्बन्धमें निश्चिन्त नहीं थे। फिर भी उस महान् राजनीतिक शासन-विधान—मौलिक सिद्धान्त, जो विधान आगे चलकर संयुक्त-राष्ट्रका रूप ग्रहण करनेवाला था, स्वाधीनताकी घोषणामें, उस समयके गानों

और भाषणोंमें, सैन्य-शिविरोंमें सैनिकोंकी आपसकी बातचीतमें, रात्रिके भोजनके बादके वार्त्तालापोंमें तथा अटलाण्टिक सागर तटवर्त्ती प्रदेशोंमें सर्वत्र विद्यमान् थे। यद्यपि मसेचूसेटस् Massachusetts और वर्जिनिया बहुत ही अस्पष्ट घोषणाओं और क्षीणतम राजनीतिक सम्बन्धों द्वारा सम्बद्ध थे, फिर भी उनके नागरिक इस बातको लेकर बहुत-कुछ एकमत थे कि वे किस लिये लड़ रहे हैं और उनका लक्ष्य क्या है।

यदि युद्धकालमें वे एकमत नहीं हुए होते, तो निश्चय ही मसेचूसेटस् और वर्जिनिया सन्धिके सिद्धान्तोंके सम्बन्धमें सहमत होनेमें असफल होते। युद्धकालमें उन्होंने जो कुछ विजयके रूपमें प्राप्त किया था, शान्ति-कालमें भी ठीक उतना ही प्राप्त किया—न उससे कम, न अधिक। यह सत्य यदि स्वतःसिद्ध नहीं हो, तो एक बहुत बड़ी विपत्तिका दृष्टान्त देकर इसे सिद्ध किया जा सकता है। उन राष्ट्रोंकी जनता हब्शी जाति की स्वतंत्रता या दासताके सम्बन्धमें एकमत नहीं हो सकी। इसका परिणाम यह हुआ कि दक्षिणमें दास बनाये गये हब्शियोंको लेकर उत्तरकी अर्थनीतिसे एक संपूर्ण भिन्न अर्थनीति विकसित हो गई और इसका परिणाम हुआ एक दूसरा युद्ध, जो पहलेकी अपेक्षा भी अधिक रक्तपातपूर्ण था।

क्या इस सीधे सबकसे और इतिहासके इसी प्रकारके दूसरे सबकोंसे हम यह नहीं सीख सकते कि हमारा कर्त्तव्य आज क्या है? हमें इससे अवश्य शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। हमें यह जानना चाहिये कि इस समय युद्धमें हम लोग जो कुछ विजयके रूपमें प्राप्त कर रहे हैं, भावी सन्धिमें भी हम उतना ही प्राप्त करेंगे—न उससे अधिक, न कम।

पहली बात तो यह है कि यह निश्चय करनेके लिये कि हम क्या जीतना चाहते हैं, यह आवश्यक है कि हम अपने मित्र-राष्ट्रोंके साथ वास्तविक रूपमें एकमत हो जायँ। इस विषयमें, जैसा कि हमारे देशकी

क्रान्तिमें हुआ था, ब्योरेवार बातोंको लेकर एकमत होनेकी जरूरत नहीं है, और यह वाञ्छनीय भी नहीं है। किन्तु यदि हम गत महायुद्धके दुर्भाग्यपूर्ण इतिहासकी पुनरावृत्ति करना नहीं चाहते हैं, तो युद्धके सिद्धान्तोंके सम्बन्धमें हमें एकमत होना ही पड़ेगा। इसके सिवा, मित्र-राष्ट्रोंके नेताओंमें ही केवल यह एकता नहीं होनी चाहिये। जिस मौलिक एकताके सम्बन्धमें मैं सोच रहा हूँ, उसकी प्रतिष्ठा मित्र-पक्षकी जनतामें होनी चाहिये। हमें इस बातके सम्बन्धमें सुनिश्चित हो जाना चाहिये कि हम सब वस्तुतः एक ही वस्तुके लिये युद्ध कर रहे हैं।

अच्छा, इसका अभिप्राय क्या है? इसका अभिप्राय यह है कि हममें से प्रत्येकका यह कर्तव्य है कि अपने मनके स्पष्ट भावको व्यक्त करें, अबाध रूपमें दिल खोलकर प्रशान्त और अटलाण्टिक महासागरोंके पारके लोगोंसे तथा यहाँ अपने देशमें भी विचार-विनिमय करें। जब तक अंगरेज लोग यह नहीं जान जायँगे कि हम लोग अमेरिकामें किस ढंगसे सोच रहे हैं और यह जानकर इसे अपने हृदयमें धारणा नहीं कर लेंगे और जब तक हम लोगोंको भी इस बातकी धारणा नहीं हो जायगी कि ब्रिटेनके और उसके साम्राज्यान्तर्गत देशोंके लोग क्या सोच रहे हैं, तब तक समझौतेकी कोई आशा नहीं हो सकती। हमें यह जानना चाहिये कि रूस और चीनका लक्ष्य क्या है, और हमें भी अपने उद्देश्योंकी जानकारी उन्हें करा देना आवश्यक है।

यह बहुत बड़ी मूर्खता होगी—आत्म-हत्यासे कुछ ही कम—यदि हम इस बातको मान लें कि किसी देशके नागरिकोंको इस भयसे अपनी जबानोंपर ताला लगाये रहना चाहिये, ताकि उनके कुछ बोलनेसे उनके नेताओंकी तात्कालिक और कभी-कभी कुटिलतापूर्ण नीति विपन्न न हो जाय।

उदाहरणके लिये हमसे यह कहा गया है कि नागरिक—खासकर वे लोग, जो सामरिक विषयोंके विशेषज्ञ नहीं हैं या जिन लोगोंका सरकारके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है—युद्धके संचालनके सम्बन्धमें—उसके सामरिक, औद्योगिक, आर्थिक या राजनीतिक पहलूके सम्बन्धमें किसी प्रकारका सुझाव पेश करनेसे बाज आवें। यह कहा जाता है कि हम लोगोंको चुप रह जाना चाहिये और अपने नेताओं एवं विशेषज्ञोंको बिना किसी विघ्न-बाधाके इन समस्याओंका समाधान करने देना चाहिये।

मेरा विश्वास है कि इस स्थितिको यदि हम स्वीकार लें, तो इससे यह आशंका उत्पन्न हो सकती है कि यह एक मजबूत दीवार जैसी बन जायगी, जो सत्यको अन्दर घुसने नहीं देगी और अपने अन्दर असत्य कथन एवं मिथ्या निरापदताको बंद रखेगी। गत शरद्‌कालमें जब मैं स्वदेश लौटा, मैंने अमेरिकन जनताको यह सूचित कर दिया कि बहुतसे महत्त्वपूर्ण विषयोंमें हम लोग अच्छे ढंगसे कार्य नहीं कर रहे हैं। हम युद्धमें विजय प्राप्त करनेके मार्गपर अग्रसर हो रहे हैं सही, मगर हमारे सामने इस बातका बहुत बड़ा खतरा है कि कहीं ऐसा न हो कि मनुष्य और सामग्रीका उपयोग करनेकी जितनी जरूरत है, उससे हम अधिक उपयोग कर डालें। मेरी वह सूचना तथ्योंपर निर्भर करती थी। इस प्रकारके तथ्योंपर सरकारकी ओरसे नियंत्रण नहीं रखा जाना चाहिये। उनकी जानकारी हम सबको होनी चाहिये। क्योंकि हम जब तक अपने सूत्रोंको पहचानेंगे नहीं और उनका सुधार नहीं करेंगे, यह संभव है कि युद्ध समाप्त होनेके पहले ही हम अपने मित्र-राष्ट्रोंमें से आधेकी मैत्रीको खो बैठें और फिर शान्ति भी।

यह स्पष्ट है कि इस युद्धको जीतनेके लिये हमें इसे अपना युद्ध—हम सबका युद्ध—बनाना पड़ेगा। इसके लिये हम सब लोगोंको युद्धके

सम्बन्धमें जहाँ तक संभव हो, जानकारी हासिल करनी पड़ेगी। हाँ, शर्त इतनी ही रहेगी कि सामरिक दृष्टिसे जो बात गोपनीय है, वह प्रकट होने न पावे। किन्तु इसके लिये गलत ढंगसे सेन्सरका पहरा बैठानेसे काम नहीं चल सकता।

फ्रान्सका एक सामरिक नेता था, जिसका नाम था मैजिनो। जब वहाँके एक दूरदर्शी नागरिकने प्रसंगवश उसके सामने यह सुझाव पेश किया कि आधुनिक युद्धकी जैसी अवस्थायें हो गई हैं, उसमें शायद इस तरहकी जमीनके नीचेकी किलेबन्दी वायुयानों और टैंकोंके आक्रमणके विरुद्ध पर्याप्त नहीं हो सकती, तब उसे यह याद दिलाई गई कि इन सब विषयोंको वह विशेषज्ञके लिये छोड़ दे।

किन्तु इस युद्धका आज तकका रेकर्ड ऐसा नहीं है कि वह हममें अपने राजनीतिक, सामरिक एवं नौ-सेना-सम्बन्धी विशेषज्ञोंकी निभ्रान्ततामें गभीर विश्वास रखनेके लिये अनुप्राणित कर सके। सामरिक विशेषज्ञों और हमारे नेताओंको गणतंत्रकी जो सबसे बड़ी परिचालिका शक्ति है—लोकमतका चाबुक और जिसका विकास ईमानदारीके साथ स्वतंत्ररूपमें वाद-विवाद द्वारा होता है—उसके आघातोंको सहन करनेके लिये बराबर तैयार रहना चाहिये।

उदाहरणके लिये, उत्तर-अफ्रिकामें जिस समय रोमेलकी महान् विजयके समय हम लोगोंकी बार-बार जो असफलतायें हो रही थीं, उनके सम्बन्धमें सर्वसाधारण जनताकी टीका-टिप्पणीका ही यह परिणाम हुआ कि वहाँके सेनापति बदल दिये गये। जब मैं मिस्रमें था, उस नये सेनापतिने रोमेलकी अग्रगतिको रोक दिया था। इसके बाद वह अफ्रिकासे खदेड़ दिया गया। मेरे खयालसे इस विजयका कुछ श्रेय ब्रिटिश लोकमतको भी मिलना चाहिये।

अमेरिकाकी जनता ऐसा अनुमान कर सकती है कि जिन देशोंमें अनियंत्रित शासन-पद्धति प्रचलित है, वहाँ न तो लोकमतका अस्तित्व पाया जाता है और न उसकी शक्तिका प्रयोग किया जाता है। किन्तु सच बात तो यह है कि अनियंत्रित शासनवाले जिन सब देशोंमें मैं गया, उन प्रत्येकमें वहाँकी सरकारने इस बातको ठीक-ठीक जाननेका पूरा प्रबन्ध कर रखा था कि लोग क्या सोच रहे हैं। यहाँ तक कि स्टालिनने भी लोकमतका पता लगानेके लिये एक प्रकारके 'Gallup poll'का प्रबन्ध कर रखा है। और इतिहासमें इस बातका उल्लेख पाया जाता है कि जिस समय नेपोलियन अपनी शक्तिकी पराकाष्ठापर पहुँचा हुआ था और वह मास्कोके धूमायित ध्वंसावशेषोंके बीच अपने सफेद घोड़ेपर पाँवोंको दोनों तरफ फैलाये हुए बैठा रहता था, उस समय भी वह पेरिसकी सर्वसाधारण जनता क्या सोच रही है, इसको जाननेके लिये प्रतिदिन अपने दूतकी रिपोर्टकी उत्कण्ठापूर्वक प्रतीक्षा करता था।

संसारके प्रत्येक देशमें जहाँ मैं गया, मैंने किसी-न-किसी रूपमें वहाँके लोकमतको युद्धकी गति और शान्तिके सम्बन्धमें क्रमशः उत्पन्न होनेवाले विचारोंपर शक्तिशाली रूपमें प्रभाव डालते पाया। बगदादमें मैं वहाँके हरएक काफी-घरमें लोगोंकी बातचीतमें इसे पाया। और वहाँ इस प्रकारके काफी-घरोंकी संख्या बहुत ज्यादा है। रूसमें वहाँके कारखानोंकी बड़ी-बड़ी सभाओंमें और सब जगह रूसियोंकी बातचीतमें यह लोकमत व्यक्त होता है। सोवियेट रूसके सम्बन्धमें हमारी जो धारणा है, उसके विपरीत होनेपर भी यह बात सही है कि वहाँके लोग अपनी निजी बातचीतमें उसी तरह खुलकर विचारोंका आदान-प्रदान करते हैं, जिस तरह हम लोग। चीनके समाचारपत्र यद्यपि हम लोगोंके समाचारपत्र जैसे स्वतंत्र नहीं हैं तथापि आश्चर्यजनक स्वतंत्रताके साथ

लोकमतको प्रतिफलित करते हैं और उसे परिचालित करते हैं। चीनमें मैंने जिस किसीसे भी बातचीतकी, चाहे कम्यूनिस्ट दलके नेतासे या कारखानेके मजदूर या कालेजके अध्यापकसे या एक सैनिकसे, सबने बिना किसी हिचकिचाहटके अपने विचार व्यक्त किये, और उनके बहुतसे विचार सरकारकी कुछ नीतियोंके विरुद्ध भी थे।

प्रत्येक देशमें मैंने युद्धके मोर्चोंकी पृष्ठभूमिमें जनताके हृदय एवं मनमें सन्देह एवं उद्वेगका भाव पाया। वह एक समान उद्देश्यकी खोजमें थी। युद्धके बाद अमेरिकाके सम्बन्धमें, इंग्लैण्डके सम्बन्धमें, और जब मैं चीनमें था, रूसके सम्बन्धमें वह जो प्रश्न करती थी, उनसे ही उसका यह मनोभाव स्पष्ट हो जाता था। मुझे ऐसा लगा कि सारा संसार चाहे जितना बलिदान करनेके लिये समुत्सुक, आग्रहशील, क्षुधित एवं आकाँक्षा-युक्त है, यदि उसे इस बातकी कुछ भी आशा हो जाय कि उसके वे बलिदान सार्थक सिद्ध होंगे।

यह बहुत संभव है कि सन् १९१७में भी यूरोपका बहुत-कुछ ऐसा ही मनोभाव था। रक्तपात एवं युद्ध-क्लान्तिका यह एक अवश्यम्भावी परिणाम है। उस समय, सन् १९१७ में, लेनिनने दुनियाके सामने एक विशेष प्रकारका सुझाव रखा था। कुछ समय बाद विलसनने दूसरे ढंगका। किन्तु इन दोनों प्रकारके उत्तरोंमें से एक भी कभी युद्धका सार भाग नहीं बन सका। बल्कि शान्तिके सम्बन्धमें जो विभिन्न सन्धियाँ हुई थीं, उनपर वे ऊपरसे लाद दी गई थीं। इसलिये दोनों प्रकारके उत्तरोंमें से किसीने भी युद्धकी क्षतिपूर्ति नहीं की, जिससे यह युद्ध प्रभुत्वके लिये एक अत्यन्त क्षयकारी संग्रामके सिवा और कुछ न रह सका। इसका अन्त एक क्षणिक सन्धिके रूपमें हुआ, एक वास्तविक सन्धिके रूपमें नहीं।

मैं यह विश्वास नहीं करता कि इस युद्धका परिणाम भी ऐसा ही होगा। इस समय युद्ध-कालमें भी ग्रेट ब्रिटेन और उसके अन्तर्गत स्वतंत्र राष्ट्रोंके नागरिकों अमेरिकनों, रूसियों और चीनियोंमें युद्धके उद्देश्यको लेकर एकता है, यद्यपि वे एक दूसरेसे बहुत दूर रहते हैं। किन्तु हमें अपने इस समान-उद्देश्यको स्पष्ट एवं वास्तविक रूप प्रदान करना होगा।

युद्धकालमें ही जनताको अपने उद्देश्योंकी यथार्थ रूपमें व्याख्या करनी चाहिये। मैंने संसारके विभिन्न देशोंकी जनतामें इन उद्देश्योंके सम्बन्धमें वाद-विवाद करनेकी प्रवृत्तिको उसकानेकी जान-बूझकर कोशिश की है। क्योंकि मुझे बराबर इस बातका भय बना रहता है कि कहीं ऐसा न हो कि इस युद्धका अन्त हो जाय और संसारके लोग इस बातको समझ ही न सकें कि वे किस लिये लड़ रहे हैं और युद्धके समाप्त होनेपर वे किस बातकी आशा करते हैं। गत युद्धमें मैं एक सैनिक था, और उस युद्धके समाप्त होनेपर मैंने अपने आशापूर्ण उज्ज्वल स्वप्नोंको विलीन होते और अपने उत्तेजनापूर्ण नारोंको कुटिल प्रकृतिके व्यक्तियोंके व्यंगके विषय बनते देखा था। और यह सब इसलिये हुआ कि जो सब जातियाँ युद्धमें संलग्न थीं, वे युद्धकालमें ही युद्धपरवर्त्ती उद्देश्योंके सम्बन्धमें एक साथ मिलकर किसी निश्चित सिद्धान्तपर नहीं पहुँच सकी थीं। हम लोगोंका यह दृढ़संकल्प होना चाहिये कि अब हम फिर ऐसा नहीं होने देंगे।

इस युद्धमें लाखों मनुष्योंकी मृत्यु हो चुकी है, और इसके समाप्त होनेके पूर्व और भी हजारों मौतके घाट उतार दिये जायँगे। जब तक अंगरेज, कनाडियन, रूसी, चीनी और अमेरिकन तथा हमारे साथ मिलकर लड़नेवाले अन्य राष्ट्र जो इस समय युद्धकालमें सहयोगपूर्वक कार्य कर रहे हैं, युद्धके बाद भी सहयोगमूलक प्रयत्न करनेके साधन और

तरीकोंको न जान जायँ, तब तक यही समझना होगा कि हम लोग न तो अपने समयका उपयोग कर सके और न अपनी पीढ़ीको कुछ भरोसा दे सके।

हमारे नेताओंने एक साथ मिलकर और अलग-अलग भी हम सब लोगोंकी जो महत्वाकाँक्षायें हैं, उनमें कुछको व्यक्त किया है। इस प्रकारकी एक बहुत ही सुन्दर अभिव्यक्ति च्यांग-काई-शेकके उस सन्देशमें हुई है, जो सन्देश उन्होंने पश्चिमी दुनियाको लक्ष्य करके गत सितम्बरमें 'न्यूयार्क हेराल्ड ट्रीब्यून' नामक पत्र द्वारा दिया था। अपने उस सँदेसेका उपसंहार करते हुए उन्होंने कहा था :

"चीन इस बातकी इच्छा नहीं रखता कि वह एशियामें पाश्चात्य साम्राज्यवादके स्थानपर प्राच्य साम्राज्यवादकी प्रतिष्ठा करे या अपनेको अन्य सब राष्ट्रोंसे पृथक करके रखे। हम इस बातको दृढ़ रूपमें मानते हैं कि हमें स्वार्थमूलक मैत्रि-सम्बन्ध और प्रादेशिक विभाग-सम्बन्धी गुटबन्दियों (Regional blocs) के संकीर्ण विचारसे—जो अन्ततः बृहत्तर युद्धोंका कारण बनते हैं—विश्व-राष्ट्रसंघके संगठनकी ओर कदम बढ़ाना होगा। परस्पर निर्भरशील स्वाधीन राष्ट्रोंकी जो नई दुनिया बनने जा रही है, उसमें जब तक राष्ट्रोंकी अन्यान्य देशोंकी राजनीतिमें अपनेको पृथक् रखनेकी नीति (Isolationism) का तथा साम्राज्यवादका, चाहे उसका रूप कुछ भी हो, अन्त नहीं हो जायगा, तब तक आप अमेरिकनोंके लिये भी स्थायी शान्ति एवं सुरक्षा नहीं हो सकती।"

इसके साथ स्टालिनके उस उद्देश्य-सम्बन्धी वक्तव्यको मिलाकर पढ़िये, जिसे मैं पहले ही उद्धृत कर चुका हूँ। अक्टूबर-विप्लवके पचीसवें वार्षिकोत्सवके अवसरपर ६ नवम्बर सन् १९४२ को यह वक्तव्य उन्होंने दिया था। यह एक बहुत ही स्पष्ट एवं यथार्थ वक्तव्य है : "जातिगत

पृथकताकी भावनाका परित्याग, राष्ट्रोंकी समानता और उनके राज्योंकी अखण्डता, दास जातियोंकी मुक्ति और उनके स्वशासन-सम्बन्धी अधिकारोंकी पुनः प्रतिष्ठा, प्रत्येक राष्ट्रका यह अधिकार कि वह चाहे जिस रूपमें अपने देशके कार्योंका संचालन कर सकता है, क्षतिग्रस्त राष्ट्रोंकी आर्थिक सहायता तथा भौतिक उन्नति प्राप्त करनेमें उन्हें सहायता प्रदान, गणतांत्रिक स्वतंत्रताओंकी पुनः प्रतिष्ठा तथा हिटलरी शासनका विनाश।"

फ्रेंकलिन रूजवेल्टने चार प्रकारकी स्वतंत्रताओंकी घोषणा की है और विन्सटन चर्चिलने रूजवेल्टके साथ मिलकर अटलाण्टिक चार्टर नामक समझौतेकी घोषणा दुनियाके सामने की है।

मि० स्टालिनके वक्तव्य और अटलाण्टिक चार्टर दोनोंमें मुझे एक ही प्रकार की भ्रमात्मक युक्ति मालूम पड़ती है। वे जिस पश्चिमी यूरोपके पुनर्निर्माणकी भविष्यवाणी करते हैं, उसमें छोटे-छोटे राष्ट्रोंके पहले जैसे ही विभाग बने रहेंगे और प्रत्येकका अपना पृथक्-पृथक् राजनीतिक, आर्थिक एवं सामरिक एकाधिपत्य कायम रहेगा। इसी पद्धतिके कारण यूरोपके लाखों मनुष्य हिटलरकी प्रस्तावित नूतन व्यवस्थापर मुग्ध हो गये थे। क्योंकि हिटलरके क्रूर शासनके होते हुए भी उन्हें कम-से-कम इस बातकी आशा तो जरूर थी कि उसकी प्रस्तावित नूतन व्यवस्थाके अनुसार एक इतने बड़े अञ्चलकी सृष्टि हो सकती है, जिसमें आधुनिक जगतकी अर्थनीति सफलतापूर्वक कार्य कर सके। अपने कटु अनुभव द्वारा वे इस बातको महसूस कर चुके हैं कि प्रत्येक राष्ट्रकी अलग-अलग राष्ट्रीयताके कारण वाणिज्य-क्षेत्रोंके बीच जो ऊँची दीवारें खड़ी कर दी गई हैं, उनसे वाणिज्यके क्षेत्र बहुत संकुचित हो गये हैं, और इसके फलस्वरूप राजनीतिक शक्तियोंके जो हाथकण्डे काम कर रहे हैं, उनसे जनताकी दरिद्रता और युद्ध अवश्यम्भावी बन जाते हैं।

यदि हम यूरोपकी भलाईके लिये और साथ ही विश्वकी शान्ति एवं आर्थिक सुरक्षाके लिये पश्चिमी यूरोपमें स्थायित्व कायम करनेकी सचमुच आशा करते हैं, तो हमें यूरोपके छोटे-छोटे देशोंका राजनीतिक इकाइयोंके रूपमें पुनर्निर्माण करना होगा, आर्थिक एवं सामरिक इकाइयोंके रूपमें नहीं।

इसमें सन्देह नहीं कि जनरल च्यांग-काई-शेकका वक्तव्य, मि० स्टालिनकी घोषणा, अटलाण्टिक चार्टरकी शर्तें और चार प्रकारकी स्वतंत्रताओंकी स्पष्ट विवृत्ति—इनमें से प्रत्येक और सब मिलाकर महान प्रगतिके लक्षण हैं, और इनके कारण दुनियामें सर्वत्र लोगोंके मनमें बहुत बड़ी आशायें उत्पन्न हो गई हैं।

किन्तु यदि इन सब घोषणाओंके अनुसार कार्य नहीं हो, या राष्ट्रोंकी व्यक्तिगत महत्त्वाकाँक्षाओंके व्यवधानके कारण घोषणाओंके अनुसार कार्य होना असम्भव हो जाय, तो संसारके लोगोंमें इस प्रकारका एक क्षयकारक मनहूसपन आ जायगा, जिससे विश्व शान्ति एवं सुव्यवस्थाके सारे संयोग नष्ट हो जायँगे।

लोग सर्वत्र व्यक्त या अव्यक्त रूपमें इस बातकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि जिन नेताओंने घोषणापत्रोंके सिद्धान्तोंकी घोषणा की है, वे मनसा-वाचा एक हैं या नहीं।

इस यात्राके लिये मेरे प्रस्थान करनेके पूर्व मि० चर्चिलने अटलाण्टिक चार्टरके सम्बन्धमें दो वक्तव्य दिये थे: एक तो यह कि "इसके रचयिताओंके मनमें मुख्यतया यूरोपके उन सब राष्ट्रोंके प्रभुत्व, स्वायत्त शासन एवं राष्ट्रीय जीवनकी पुनर्स्थापना, जो इस समय नात्सीवादके चंगुलमें हैं।" और दूसरा यह कि "समयपर भारत, बर्मा तथा ब्रिटिश साम्राज्यके अन्य भागोंके वैधानिक शासनके विकासके सम्बन्धमें जो नीति-निर्देश हुए हैं, उनमें अटलाण्टिक चार्टरकी शर्तें किसी प्रकारका

संशोधन नहीं कर सकतीं।" जिन सब देशोंमें मैं गया, वहाँके प्रायः प्रत्येक प्रधान-मंत्री और परराष्ट्र-सचिवने तथा असंख्य जनताने मुझसे यह प्रश्न किया कि क्या मि० चर्चिलके उपर्युक्त वक्तव्यका यह अर्थ होता है कि अटलाण्टिक चार्टर केवल पश्चिमी यूरोपके प्रति ही लागू होगा? मैंने उनसे कहा कि मि० चर्चिलका क्या अभिप्राय है, यह तो मैं नहीं जानता, किन्तु इतना स्पष्ट है कि जिस समय मि० चर्चिलने यह कहा था कि चार्टरके रचयिताओंके मनमें मुख्यतया यूरोपके देशोंका खयाल था, उन्होंने अवश्य ही दूसरे देशोंको इससे वर्जित नहीं समझा था। मेरे श्रोताओंने निश्चित रूपमें मेरे उत्तरको कानूनी और तुच्छ बताकर अधीरताके साथ ठुकरा दिया।

यह भी एक कारण था, जिससे मैं बहुत दुःखित हो उठा, जब कि बादमें मि० चर्चिलने दुनियामें खलबली मचा देनेवाला अपना यह वक्तव्य प्रकट किया—"हमारा मतलब हम लोगोंका अपना जो कुछ है, उसपर अपने अधिकारको कायम रखना है। मैं सम्राट्का प्रधान-मंत्री इसलिये नहीं बना हूँ कि मेरे अमलमें ही ब्रिटिश साम्राज्यका अन्त हो जाय।" किन्तु इसके बाद अमेरिकामें रहनेवाले बहुतसे अंगरेजोंसे विचार-विमर्श करके, ब्रिटिश समाचारपत्रोंके मन्तव्योंको पढ़कर तथा इंग्लैण्ड और सारे ब्रिटिश साम्राज्यके लोगोंके लगातार प्रकाशित बहुतसे पत्रोंसे यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि इस विषयमें ब्रिटिश जनताका लोकमत अमेरिकन जनताके लोकमतसे भी आगे है। ब्रिटिश जनताका यह निश्चित मत है कि पुराने साम्राज्यवादका अन्त हो जाना चाहिये और ब्रिटिश स्वतंत्र राष्ट्र-संघ (British Free Commonwealth of Nations)के सिद्धान्तोंका ब्रिटिश साम्राज्यके हरएक कोनेमें द्रुतगतिसे विस्तार होना चाहिये—और मेरी समझमें उन्हें इसके लिये कुछ खेद भी नहीं होगा।

हमारे नेताओंने जो वक्तव्य दिये हैं, उनके अनुसार वे कार्य करनेके लिये प्रस्तुत हैं या नहीं, इसकी परीक्षाका यही समय है। और इस दृष्टिसे ही उत्तर-अफ्रिकामें हमारी जो नीति रही है, वह मुझे एक दुःखजनक घटनाके रूपमें प्रतीत हुई है। इस नीतिका आरम्भ उस समय हुआ, जब कि राष्ट्रपतिने अमेरिकन सेनाओंके उत्तर-अफ्रिकामें विजयोल्लासपूर्वक प्रवेशके समय अपनी घोषणामें हमारे उस प्रवेशाधिकारके सम्बन्धमें कोई स्पष्ट कारण उपस्थित न करके वही पुराने जमानेका जीर्ण कूटनीतिक नुस्खा पेश किया, जिससे कभी किसीको ठगा नहीं जा सकता। हिटलरने जब बेलजियम और हालैण्डमें प्रवेश किया था, तब उसने भी इसी प्रकारका कारण उपस्थित किया था; किन्तु अवश्य ही वहाँके लोग इतने मूर्ख नहीं थे कि उससे धोखेमें आ जाते। राष्ट्रपतिकी वह घोषणा इस प्रकार थी: "अफ्रिकापर जर्मनी और इटली यदि आक्रमण कर बैठें और वे सफल हो जायँ, तो इससे पश्चिम-अफ्रिकाके अपेक्षाकृत संकीर्ण समुद्र-मार्गसे अमेरिकापर प्रत्यक्ष खतरा पहुँच सकता है, इसलिये एक शक्तिशाली अमेरिकन सेना...अफ्रिकामें फरासीसी उपनिवेशोंके भूमध्यसागर और अटलाण्टिक सागरके उपकूलोंमें अवतरण कर रही है।"

इसके बाद दारलाँके साथ—वह दारलाँ जो स्वाधीन मनुष्योंने जिन सब बातोंसे घृणा करना सीखा है, उनका प्रतीक है—'क्षणिक सामरिक सुविधा'का खयाल करके व्यवहार करना शुरू हुआ। इस कैफियतसे एक श्रेष्ठ सेनापतिके कार्योंकी—जिसने अभी तुरत ब्रिटिश बेड़ेके साथ एक उत्कृष्ट संगठनमूलक समर-कौशल सम्पन्न किया था—उसके प्रति प्रत्यक्ष रूपमें विश्वासघातक हुए बिना समालोचना करना कठिन था। किन्तु इस बातसे उन लोगोंको संतोष नहीं हुआ, जो यह विश्वास करनेके लिये तैयार नहीं थे कि किसी सैनिकके दिमागसे व्यवहार

करनेकी यह बात निकली होगी, और उन्होंने यह अनुभव किया कि जिन सिद्धान्तोंकी हमने दुनियाके सामने घोषणा की है, उनपर एक बार फिर घुमा-फिराकर वे कूटनीतिकी विजय होते हुए देख रहे हैं।

बादमें चलकर पेराउटनकी नियुक्तिसे उनकी आशंकाओंकी और भी पुष्टि हो गई। हममें से जो लोग इस घटनासे उद्विग्न हो रहे हैं, उन्हें यह आशा है कि अभी जैसी स्थिति है, उससे कुछ अच्छी स्थिति प्रकट होगी। किन्तु यदि ऐसा हो भी, तो यह निश्चित है कि यदि अमेरिकाके प्रति सद्भावनाका स्रोत काफी पूर्ण नहीं होता, तो इस भारी बोझको सहन करना उसके लिये असंभव हो जाता। क्योंकि रूस और ब्रिटेन तथा यूरोपके विजित देशोंकी जनताने इसे विश्वासघातके रूपमें समझा है और उसे इसके कारण बड़ी घबराहट हुई है। सुदूर चीनमें भी वहाँकी जनताके विश्वासपर यह एक दूसरा आघात था, जो विश्वास इससे पहले ही फरासीसी साम्राज्यको इण्डो-चीन वापस कर देनेकी हमारी मनमानी प्रतिज्ञासे हिल चुका था। और खास अमेरिकामें जो लोग सचाईके साथ यह विश्वास करते थे कि हम लोग केवल रक्षणात्मक युद्ध लड़ रहे हैं, उनके मनमें इससे यह भावना फिरसे उत्पन्न हो गई कि युद्ध समाप्त हो जानेके बाद हम लोगोंको फिर अपने देशमें लौट जाना चाहिये।

विन्सटन चर्चिल और फ्रैंकलिन रूजवेल्ट ही ऐसे नेता नहीं हैं, जिनके वाक्यों और कार्योंकी उनकी घोषणाओंके आधारपर आशापूर्वक प्रतीक्षा की जा रही है। पूर्वी यूरोपके सम्बन्धमें रूसकी निर्दिष्ट आकाँक्षायें क्या हैं, इस सम्बन्धमें दुनियाकी परेशानीको दूर करनेके लिये स्टालिनने अभी तक कुछ नहीं किया है, जिससे नेताओंके घोषित अभिप्रायोंका पलड़ा एक बार फिर हलका हो जाता है।

न तो नेताओंकी घोषणायें और न संसारका लोकमत, चाहे वह कितना ही व्यक्त क्यों न हो, तब तक कुछ कर सकता है जब तक कि युद्धकालमें ही हम कोई योजना तैयार न कर लें और अपनी योजनाओंको वास्तव रूप जब तक हम प्रदान न करें।

जिस समय संयुक्त-राष्ट्रोंके बीच समझौता होनेकी घोषणा की गई थी, उस समय दक्षिण-अमेरिका, अफ्रिका, रूस, चीन, ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत देश, संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका और यूरोपके विजित देशों और सम्भवतः जर्मनी और इटलीके करोड़ों मनुष्योंने यह खयाल किया था कि वे एक ऐसा दृश्य देख रहे हैं, जिसमें समझौतेपर हस्ताक्षर करनेवाले राष्ट्र मानव-जातिको मुक्त करनेके लिये एक ही संग्रामके साझीदारके रूपमें एक साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। उनका खयाल था कि युद्धकालमें ही वे सब राष्ट्र एक साथ मिलकर रणकौशल, आर्थिक युद्ध तथा भविष्यके लिये योजना बनानेके सम्बन्धमें विचार-विमर्श करेंगे। क्योंकि वे जानते थे कि इस प्रकार कार्य करनेसे युद्धका शीघ्र अन्त किया जा सकता है। वे यह भी समझते थे कि अभीसे यदि संयुक्त-पक्षके राष्ट्र एक साथ मिलकर कार्य करना सीख जायँ, तो यह इस बातकी सबसे बढ़कर गारण्टी होगी कि भविष्यमें भी ये राष्ट्र एक साथ मिलकर रहना सीख जायँगे।

समझौतेपर हस्ताक्षर हुए एक सालसे अधिक हो गया। आज संयुक्त-पक्षके राष्ट्र मेल-मिलाप और सन्धिके एक महान् प्रतीक हो रहे हैं। किन्तु हमें इस तथ्यको स्वीकार करना ही पड़ेगा कि लाखों मनुष्य अपने मनमें जिस आशाको धारण किये हुए हैं, वह आशा निराशामें परिणत न हो जाय, जिस भावी जगतका हम लोग स्वप्न देख रहे हैं वह, आंशिक रूप में ही सही, वास्तव हो जाय, इसके लिये कल नहीं, आज ही संयुक्त-राष्ट्रोंको एक समितिके रूपमें केवल युद्धमें विजय प्राप्त करनेके लिये ही

नहीं, बल्कि मानव-जातिके भावी कल्याणके लिये भी गठित होना पड़ेगा।

जब तक हम युद्ध कर रहे हैं, उस समयके अन्दर ही एक साथ मिलकर काम करनेकी कुशलता हमें इस रूपमें प्राप्त कर लेनी होगी, जो युद्धके समाप्त होनेपर भी कायम रहे। राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय शासनके सफल साधनोंका क्रमशः विकास हुआ करता है। एक दिनमें ही उनकी सृष्टि नहीं की जा सकती। युद्धके बाद जिस समय राष्ट्रीय भावनाओंकी, स्वार्थपरता, नैतिक अधःपतन और आर्थिक एवं सामाजिक विशृङ्खलाओंकी पुनः प्रबलता दिखाई पड़ेगी, उस समय उन साधनोंकी सृष्टिकी बहुत आशा नहीं की जा सकती। उनकी सृष्टि इस समय ही होनी चाहिये, जब कि हम लोगोंके सामने हमारे समान खतरेके कारण हमें परस्पर सम्बद्ध करनेवाली शक्ति काम कर रही है। आज जब कि हम अपनी समस्याओंके समाधानके लिये दिन-प्रति-दिन एक साथ मिलकर प्रयत्न कर रहे हैं, उस समय ही उन शक्तियोंको हम कार्यकर एवं सहज गतिशील बना सकते हैं।

युद्ध समाप्त होनेके बाद आर्थिक युद्धका निवारण करने और राष्ट्रोंके बीच शान्तिकी भावनाको बढ़ानेके लिये किसी साधन-यंत्रकी सृष्टिकी चर्चा करना तब तक व्यर्थ है, जब तक कि उस यंत्रके हिस्से इसी समय—जब कि हम अपने शत्रुको पराजित करनेके समान उद्देश्यको लेकर परस्पर मिलित भावसे प्रयत्न कर रहे हैं—एकत्र न कर लिये जायँ। युद्धके बाद अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और अन्यान्य क्षेत्रोंमें उन्नति होनेसे सब लोगोंको काम मिल जायगा, इस बातकी चर्चा करना भी तब तक व्यर्थ है, जब तक कि इस समय, जब कि हम एक साथ मिलकर युद्ध कर रहे हैं, परस्पर सामञ्जस्य, सम्मान और समझदारीकी भावना धारण करते हुए हम एक साथ काम

करना न सीख जायँ। क्या हम, जैसा कि हमारे कुछ नेताओंने भविष्य-वाणी की है, चीन और सुदूर-पूर्वके साथ विशेष रूपमें अपने वाणिज्य-सम्बन्धको तब तक विकसित कर सकते हैं, जब तक कि चीनके साथ मिलकर हम एक संयुक्त सामरिक रणकौशलकी योजनाको विकसित करनेमें समर्थ नहीं हो जाते ? भविष्यमें जो एक समान स्थितिवाली आर्थिक दुनिया बनने जा रही है, उसके कक्षके अन्तर्गत क्या हम रूसको उसकी चकित कर देनेवाली सम्भावनाओंके साथ लानेकी आशा कर सकते हैं, जब तक कि हम उसके सामरिक रणनीति-विशारदों और राजनीतिक नेताओंसे राय-मशविरा करके एक साथ काम करना न सीख जायँ ?

आज हमें आवश्यकता है संयुक्त-पक्षके राष्ट्रोंकी एक समितिकी—ऐसी समितिकी, जिसमें सब मिलकर योजना तैयार करें, न कि कुछ-एक राष्ट्रोंकी समिति जो अपनी समझके अनुसार दूसरे राष्ट्रोंको परिचालित करे अथवा केवल सहायता प्रदान करे। हमें सामरिक रणकौशलकी एक बृहत् समिति-की आवश्यकता है, जिसमें युद्ध-संलग्न समस्त राष्ट्रोंके प्रतिनिधि हों। हम चीनवासियोंसे भी इस सम्बन्धमें कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं, जिन्होंने इतने अल्प साधनोंके होते हुए भी अब तक इतनी अच्छी तरह युद्ध किया है। या रूसियोंसे भी, जिन्होंने ऐसा मालूम पड़ता है कि हालमें ही युद्धकी कलाके सम्बन्धमें कुछ जानकारी प्राप्त की है।

युद्धके लिये सामग्री-उत्पादन करनेकी दिशामें संयुक्त-राष्ट्रोंकी आर्थिक शक्तिको सम्मिलित करने और भविष्यमें आर्थिक सहयोगकी सम्भावनाओंपर सम्मिलित रूपमें अध्ययन करनेके लिये हमें संयुक्त-पक्षके राष्ट्रोंकी एक समितिका प्रयोजन है।

और संयुक्त-पक्षके राष्ट्रोंके लिये सबसे बढ़कर महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि अभीसे हम उन सिद्धान्तोंको सूत्र-रूपमें प्रकट करने लग जायँ,

जिनके द्वारा, ज्यों-ज्यों हम विजित राष्ट्रोंको मुक्त करनेके मार्गमें अग्रसर होते जायँगे, हमारे कार्य परिचालित होंगे। और हमारी विजयिनी सेनाओंकी अग्रगतिमें पग-पगपर जो अनेक जटिल समस्यायें उपस्थित होंगी, उनका समाधान करनेके लिये भी हमें एक सम्मिलित साधन-यंत्र स्थापित करना होगा। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे, तो इसका परिणाम यही होगा कि स्वार्थ-साधनके लिये एक सुविधासे दूसरी सुविधाकी ओर बढ़ते हुए हम भावी असंतोष—जातीय धार्मिक और राजनीतिक—के बीजको केवल उन जातियोंमें ही नहीं, जिन्हें हम मुक्त करना चाहते हैं, बल्कि संयुक्त-राष्ट्रोंमें भी बोते चलेंगे। इसी प्रकारके असंतोषोंने ही युग-युगमें सद्भाव धारण करनेवाले मनुष्योंकी आशाओंपर पानी फेर दिया है।

यह मुक्ति-संग्राम है

जिस युद्धको मैंने सारे संसारमें चलते हुए देखा, वह मि० स्टालिनके शब्दोंमें मुक्ति-संग्राम है। यह कुछ राष्ट्रोंको नात्सी या जापानी सेनाके कवलसे और दूसरोंको उन सेनाओंकी विभीषिकासे मुक्त करनेके लिये है। यहाँ तक तो हम सब लोग सहमत हैं। किन्तु क्या हम अब तक इस बातपर सहमत हो सके हैं कि मुक्तिका अर्थ केवल इतना ही नहीं है, बल्कि और कुछ? खासकर जो ३१ राष्ट्र इस समय संयुक्त-पक्षकी ओरसे युद्ध कर रहे हैं, क्या वे इस बातपर एकमत हैं कि मुक्तिका जो हमारा

कार्य है, उसमें सब जातियोंको ज्योंही वे योग्य हो जायँ, आत्म-शासनकी स्वतंत्रता और आर्थिक स्वतंत्रता—जिसपर सभी स्वायत्त शासनका स्थायित्व अनिवार्य रूपमें निर्भर करता है—प्रदान करना भी शामिल है ?

मेरा विश्वास है कि स्वतंत्रताके ये ही दो पहलू इस युद्धमें हमारी नेकनीयतीकी कसौटी हैं। मेरा विश्वास है कि हम लोग स्वतंत्रताकी जिस भावनाको लेकर युद्ध कर रहे हैं, उसमें हमें इन दोनोंको शामिल करना होगा। अन्यथा यह निश्चित है कि हम लोग शान्तिको प्राप्त नहीं कर सकेंगे, और इसमें मुझे सन्देह है कि हम लोग युद्धको जीत सकेंगे।

चुंकिंगमें ७ अक्टूबर सन् १९४२ को मैंने चीनी और विदेशी पत्र-प्रतिनिधियोंको एक वक्तव्य दिया था, जिसमें मैंने अपने उन सिद्धान्तोंमें से कुछका वर्णन करनेकी चेष्टा की थी, जिन सिद्धान्तोंपर मैं अपनी विश्व-परिक्रमाकी यात्रामें पहुँचा था। मेरे उस वक्तव्यका कुछ अंश इस प्रकार है :

मैंने तेरह देशोंकी यात्रा की है। मैंने राज्यों, सोवियटों, प्रजातंत्रों, मेण्डेटेड (Mandated) क्षेत्रों, उपनिवेशों और अधीनस्थ देशोंको देखा है। मैंने लोगोंकी रहन-सहनके तथा शासन करने और शासित होनेके इतने विविध ढंग देखे हैं कि उनसे घबराहट जैसी होने लग जाती है। किन्तु कुछ बातें ऐसी हैं, जिन्हें मैंने उन सब देशोंमें, जहाँ-जहाँ मैं गया, और उन देशोंके जन-साधारणमें, जिनके साथ मैंने बातचीत की, समान रूपमें पाया।

वे सब यह चाहते हैं कि संयुक्त-राष्ट्र इस युद्धमें विजयी हों।

वे सब यह चाहते हैं कि इस युद्धका अन्त हो जानेपर उन्हें स्वतंत्र एवं स्वाधीन बनकर जीवन यापन करनेका सुयोग मिले।

उन सभीको न्यूनाधिक मात्रामें इस बातमें सन्देह है कि युद्धके समाप्त होनेपर संसारके प्रमुख गणतंत्रवादी राष्ट्र अन्य जातियोंकी स्वतंत्रताका

समर्थन करनेके लिये तैयार होंगे। उनका यह सन्देह हमारे पक्षमें पूर्ण उत्साहके साथ योगदान करनेकी उनकी भावनाकी हत्या कर डालता है।

इन सर्वसाधारण जनोंके वास्तविक समर्थनके बिना इस युद्धको जीतना अत्यधिक कठिन हो जायगा। और शान्तिका जीतना तो असम्भवतुल्य हो जायगा। यह युद्ध केवल सेनाओंके लिये ही एक सीधीसी समर-कौशल-सम्बन्धी समस्या नहीं है। यह मनुष्योंके मनके लिये भी युद्ध है। हमें अपने पक्षमें संसारकी लगभग तीन-चौथाई जनताकी—जो दक्षिण-अमेरिका, अफ्रिका, पूर्वी यूरोप और एशियामें वास करती है—सहानुभूतियोंको ही संगठित करना नहीं है, बल्कि उनके सक्रिय, आक्रमण-शील एवं विरोधी भावको भी। हमने अब तक यह नहीं किया है, और इस समय ऐसा कर भी नहीं रहे हैं। मगर हमें यह करना ही होगा।

लोगोंको इस प्रकारके युद्धमें विजय प्राप्त करनेके लिये अस्त्र-शस्त्रोंके सिवा और चीजोंकी भी जरूरत है। उन्हें भविष्यके लिये उत्साहकी जरूरत है और इस दृढ़ विश्वासकी भी कि जिन झंडोंके नीचे वे लड़ रहे हैं, उनका पक्ष उज्ज्वल एवं विशुद्ध है। सच बात तो यह है कि एक राष्ट्रके रूपमें हमने अब तक अपने मनमें यह निश्चय किया ही नहीं है कि विजय प्राप्त होनेपर हम किस प्रकारकी दुनियाके लिये बोलना चाहते हैं।

खासकर यहाँ एशियामें साधारण जनोंकी यह धारणा है कि हम लोगोंने उन्हें अपने पक्षमें शामिल होकर युद्ध करनेके लिये जो कहा है, उसका इससे अच्छा और दूसरा कोई कारण नहीं है कि जापानियोंका शासन पाश्चात्य साम्राज्यवादकी अपेक्षा भी खराब होगा। यह एक ऐसा महादेश है, जहाँ पश्चिमी गणतांत्रिक राज्योंके कारनामे लम्बे और अच्छे तथा बुरे दोनों रहे हैं और जहाँके लोग—यह स्मरण रहे कि उनकी संख्या करोड़ों

है—अब विदेशी शासनके अधीन नहीं रहनेके लिये कृतसंकल्प हैं। एशियाके लोगोंके लिये स्वतंत्रता और सुयोग ऐसे शब्द हैं, जो जादूका काम करते हैं, और हम लोगोंने जापानियोंको—जो आधुनिक जगतके सबसे बढ़कर निष्ठुर साम्राज्यवादी हैं—हमसे इन शब्दोंको चुराकर अपने स्वार्थ-साधनके लिये उनका दुरुपयोग करने दिया है।

एशियाके अधिकांश लोगोंका गणतंत्र शासनसे कभी परिचय नहीं रहा है। हम लोगोंके यहाँ जिस ढंगका गणतंत्र शासन प्रचलित है, उसे वे चाह सकते हैं या नहीं भी चाह सकते हैं। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट है कि उनमें सब-के-सब इसके लिये तैयार नहीं हैं कि उन्हें कल ही एक चाँदीके परातमें गणतंत्र रखकर प्रदान कर दिया जाय। किन्तु वे इस बातके लिये कृतसंकल्प हैं कि अपने देशकी निर्वाचित सरकारके अन्दर वे अपने भाग्यका निर्माण कर सकें।

जिन विचारशील स्त्री-पुरुषोंसे मैं बातचीत करता रहा हूँ, उनके मनमें अटलाण्टिक चार्टरका नाम तक सन्देह उत्पन्न कर देता है। ये लोग प्रश्न करते हैं—"क्या जिन लोगोंने इसपर हस्ताक्षर किये हैं, वे सब इस बातसे सहमत हैं कि यह प्रशान्त महासागरके प्रति भी लागू होता है?" हमें इस प्रश्नका उत्तर एक स्पष्ट और सरल वक्तव्यके रूपमें देना पड़ेगा कि हमारी स्थिति क्या है। और इस प्रकारके वक्तव्यको योजनाओंके रूपमें —जो योजनायें ठोस हों और जिनका उन लाखों मनुष्योंके जीवनमें, जो हमारे सहायक मित्र हैं, पूर्ण अर्थ हो—परिणत करनेकी हमारी जो समस्या है, उसके समाधानके लिये प्रयास करना हमें अभीसे आरम्भ कर देना चाहिये।

मेरा यह गम्भीर विश्वास है कि कुछ योजनायें, जिन्हें इस प्रकारका वक्तव्य परिचालित करेगा, अधिकांश अमेरिकनोंको स्पष्ट हो चुकी हैं।

हम लोग यह विश्वास करते हैं कि इस युद्धका अर्थ होना चाहिये अन्य राष्ट्रोंके ऊपर राष्ट्रोंके साम्राज्यका अन्त। उदाहरणके लिये चीनकी एक फुट जमीनपर भी आजसे उस देशकी जनताके सिवा और किसीका शासन नहीं होना चाहिये और न शासन किया जा सकता है। और हमें इसकी घोषणा अभी ही कर देनी चाहिये, युद्धके बाद नहीं।

हम यह विश्वास करते हैं कि संसारका यह कार्य है कि वह उपनिवेशोंमें बसनेवाली जातियोंको, जो संयुक्त-राष्ट्रोंका पक्ष ग्रहण करती हैं, स्वतंत्र एवं स्वाधीन राष्ट्र बननेमें सहायता पहुँचानेके लिये कोई व्यवस्था ढूँढ़ निकाले। हमें सुदृढ़ कार्यक्रम कायम करना होगा, जिसके अनुसार वे अपनी पसन्दकी सरकारोंका निर्माण कर सकें और उन्हें सञ्चालित कर सकें, और हमें समस्त संयुक्त-राष्ट्रोंकी ओरसे इस बातकी पक्की गारण्टी देनी होगी कि वे पुनः औपनिवेशिक सत्ताकी ओर नहीं मुड़ेंगे।

कुछ लोग कहते हैं कि जब तक युद्धमें विजय प्राप्त नहीं कर ली जाती, तब तक इन विषयोंकी चर्चा बन्द रहनी चाहिये। किन्तु सत्य इसके ठीक विपरीत है। अभीसे यदि समस्याओंके समाधानके लिये सच्चे प्रयत्न आरम्भ कर दिये जायँगे, तो इससे हम लोगोंका पक्ष बलवान होगा। यह स्मरण रखना चाहिये कि सामाजिक परिवर्त्तनके जो शत्रु हैं, वे बराबर किसी-न-किसी वर्त्तमान संकटके कारण देर करनेपर जोर दिया करते हैं। युद्धके बाद ये परिवर्त्तन बहुत कम या समयके लिये अनुपयुक्त सिद्ध हो सकते हैं।

हमें राष्ट्रोंके बीच वाणिज्य और वाणिज्य-मार्गोंको पर्याप्त रूपमें विकसित करना होगा, जिससे संसारकी सब जातियोंको हम अमेरिकनों जैसा ही शान्ति भोगनेका अधिकार प्राप्त हो।

अमेरिकामें हमसे कहा जाता है कि धुरी-राष्ट्रोंको कुचल डालनेके लिये स्थायी रूपमें हमें अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रताका परित्याग करना चाहिये।

युद्धके बाद हमें इस स्वाधीनता एवं स्वतंत्रताको पुनः प्राप्त करना होगा। अमेरिकन ढंगके जीवनको, जिसमें सब लोगोंके लिये रहन-सहनके मान-दण्डको ऊँचा उठानेकी व्यवस्था हो, प्राप्त कर रहे हैं, इस बातको निश्चित करनेका तरीका यही हो सकता है कि एक ऐसी दुनियाकी सृष्टि की जाय, जिसमें सब जगह सब लोग स्वतंत्र रह सकें।

इस वक्तव्यको लेकर बहुत-कुछ टीका-टिप्पणी हुई। इनमें कुछ क्रोध-पूर्ण थी, किन्तु अधिकांशमें इसकी जो प्रतिक्रिया हुई, उससे मुझे प्रसन्नता हुई। क्योंकि उससे मेरे इस अनुभवकी पुष्टि हुई कि लोकमतका गम्भीर झुकाव, जो शान्त भावसे किन्तु शक्तिशाली रूपमें काम करता है, इन सब प्रश्नोंके सम्बन्धमें हमारे बहुतसे नेताओंसे बहुत आगे बढ़ा हुआ है, और शीघ्र ही यह हम लोगोंको दुनियाके सामने अपने उन विश्वासोंको—जिन्हें हम दृढ़तापूर्वक धारण किये हुए हैं—प्रकाश्य रूपमें स्वीकार करनेके लिये विवश करेगा।

युद्धके उद्देश्योंको सीमित कर देनेका हम सब लोगोंमें बहुत बड़ा प्रलोभन है। सनकीकी तरह हम यह आशा कर सकते हैं कि जिन बड़े-बड़े शब्दोंका हमने व्यवहार किया है, उनका अर्थ सन्धिकालमें बहुत संकुचित हो जायगा, और सब जातियोंके लिये वास्तविक स्वतंत्रताकी स्थापना करने और उसकी रक्षा करनेके लिये जिन बहुमूल्य पुनर्व्यवस्थाओं-की आवश्यकता है, उनको हम टाल सकते हैं।

अफ्रिकासे लेकर अलास्का तक बहुतसे स्त्री-पुरुषोंने, जिनके साथ मैंने बातचीत की, मुझसे प्रश्न किया—जो प्रश्न सारे एशियाके लिये प्रायः प्रतीक जैसा हो गया है : भारतका क्या होगा? मैं भारत नहीं गया। मैं इस जटिल प्रश्नकी आलोचना करना नहीं चाहता। किन्तु पूर्वमें इस प्रश्नका एक पहलू है, जिसका उल्लेख मुझे यहाँ करना चाहिये। कैरोसे

आगे जहाँ कहीं मैं गया, सर्वत्र इसका सामना मुझे करना पड़ा। चीनके सबसे बढ़कर बुद्धिमान मनुष्यने मुझसे कहा : "स्वतंत्रताके लिये भारतकी जो आकाँक्षा है, उसे जब भविष्यके लिये टाल दिया जाता है, तो इससे सुदूर-पूर्वमें ग्रेट-ब्रिटेनकी प्रतिष्ठा लोगोंकी दृष्टिमें कम नहीं होती, बल्कि अमेरिकाकी।"

इन बुद्धिमान मनुष्यने जब ब्रिटिश साम्राज्यवादको एक उदार साम्राज्यवाद कहा, उस समय भारतमें ब्रिटिश साम्राज्यवादसे उनका कोई झगड़ा नहीं था। वह इसमें विश्वास नहीं करते, किन्तु वह इसके सम्बन्धमें कोई चर्चा भी नहीं कर रहे थे। वह मुझसे बता रहे थे कि भारतके सम्बन्धमें हम लोग जो मौन धारण किये हुए हैं, उससे पूर्वमें हमारे सद्भावनाका जो स्रोत है, वह बहुत-कुछ क्षुण्ण हो चुका है। पूर्वके लोग जो हमपर निर्भर करना चाहते हैं, हमारे प्रति सन्देहपूर्ण बन गये हैं। भारतकी समस्याके प्रति हमारा जो मनोभाव है, उससे वे इस बातका निश्चय नहीं कर पाते कि युद्धके अन्त होनेपर पूर्वकी अन्यान्य जातियोंके सम्बन्धमें हमारी भावना क्या होगी। हम लोगोंकी अस्पष्ट और हिच-किचाहटपूर्ण बातचीतसे वे यह निश्चय नहीं कर सकते कि क्या हम सचमुच स्वतंत्रताके पक्षका समर्थन करते हैं, अथवा स्वतंत्रतासे हमारा अभिप्राय क्या है।

चीनमें छात्रोंने—जो अपने घरोंसे हजारों मील दूर शरणार्थी थे—मुझसे पूछा कि क्या युद्धके बाद हम लोग शांघाई वापस लेनेकी कोशिश करेंगे। बेरुतमें लेबानियोंने मुझसे पूछा कि ब्रुकलिनमें उनके जो सम्बन्धी लोग रहा करते हैं—संसारमें जितने लेबानी पाये जाते हैं, उनका एक तृतीयांश अमेरिकामें रहते हैं—वे क्या अंगरेज और फरासीसी सेनाओंको युद्धके बाद सीरिया और लेबानन छोड़ देने और वहाँके लोगोंको अपने देशका शासन आप करने देनेके लिये प्रवर्त्तित करनेमें सहायता करेंगे?

अफ्रिकामें, मध्य-पूर्वमें, सारे अरबमें और चीन तथा संपूर्ण सुदूर-पूर्वमें स्वतंत्रताका अर्थ है सुव्यवस्थित रूपमें किन्तु सूचीक्रमसे औपनिवेशिक पद्धतिका विलोप-साधन। हम चाहे इसे पसन्द करें या नहीं, मगर यह सत्य है।

इस प्रकारकी सुव्यवस्थित कार्य-प्रणालीका संसारमें सबसे बढ़कर दर्शनीय दृष्टान्त है ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत राष्ट्रोंका प्रजातन्त्र राज्य। और इस महान प्रयोगकी सफलतासे संयुक्त-पक्षके राष्ट्रोंको आगे चलकर उनके सामने स्वायत्त शासनकी जो समस्या उपस्थित होनेवाली है, उसे सम्पन्न करनेमें असीम उत्साह मिलना चाहिये। क्योंकि संसारके बहुतसे विभाग *इस समय भी औपनिवेशिक शासन-पद्धति द्वारा शासित हो रहे हैं।* प्रजातंत्र राज्य होनेपर ग्रेट-ब्रिटेनके अन्तर्गत अब भी बहुतसे उपनिवेश हैं, जो उसके साम्राज्यके अवशिष्टांश हैं। उनमें स्वशासन या तो बिलकुल नहीं है अथवा नाम-मात्रका है, यद्यपि अपने देशमें और सारे ब्रिटिश राष्ट्रसंघमें लाखों अंगरेज निःस्वार्थ भावसे और बड़ी निपुणताके साथ उन अवशिष्टांशोंको कम करने और औपनिवेशिक शासन-पद्धतिके स्थानपर प्रजातंत्रका विस्तार करनेके लिये कार्य कर रहे हैं।

उपनिवेशोंपर शासन करनेवाले केवल अंगरेज ही नहीं हैं। फरांसीसी अब भी अफ्रिकामें, दक्षिण-अमेरिकामें और सारे संसारके द्वीपोंमें अपने साम्राज्यका दावा कर रहे हैं। डच लोग अब भी अपनेको डच इंडीजके बृहत् भागों और पश्चिममें प्रदेशोंके शासकके रूपमें समझते हैं। पोर्तगीज, बेलजियम तथा अन्य राष्ट्रोंके अधिकारमें भी उपनिवेश हैं। और खुद हम लोगोंने भी वेस्ट इंडीजके सभी लोगोंको, जिनका उत्तरदायित्व हमने ग्रहण किया है, पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करनेकी प्रतिज्ञा नहीं की है। इसके अलावा हम लोगोंकी अपनी घरेलू समस्यायें अलग हैं।

मगर दुनिया अब इस बातको अच्छी तरह जान गयी है कि एक जातिके द्वारा दूसरी जातिपर शासन स्वतंत्रता नहीं है, और न इसे सुरक्षित रखनेके लिये हमें लड़ना चाहिये।

आगे चलकर हमारे सामने बहुत-सी कठिन समस्यायें उपस्थित होंगी। और विभिन्न आदेश-प्राप्त स्थानों (mandates) और विभिन्न उपनिवेशोंमें उनके भिन्न-भिन्न रूप होंगे। संसारकी सब जातियाँ स्वतंत्रताके लिये तैयार नहीं हैं और न स्वतंत्रता प्राप्त कर लेनेपर कलसे ही उसकी रक्षा कर सकती हैं। किन्तु आज वे सब इतना ही चाहती हैं कि कोई समय निर्दिष्ट कर दिया जाय, जिसमें वे उस ओर अग्रसर होनेका प्रयत्न करें, और उन्हें इस बातका विश्वास दिलाया जाय कि उस निर्दिष्ट समयपर उन्हें स्वतंत्रताका अधिकार प्राप्त होगा। भविष्यके लिये वे यह नहीं चाहते कि उनके लिये उनकी समस्याओंका समाधान हम करें। वे न तो इतने मूर्ख हैं और न इतने भीरु। उनकी माँग केवल इतनी ही है कि हम लोगके आर्थिक एवं राजनीतिक सहयोगके साथ उन्हें अपनी समस्याओंका समाधान करनेका सुयोग मिले। क्योंकि संसारकी जातियाँ केवल अपने राजनीतिक संतोषके लिये ही मुक्त होना नहीं चाहती हैं, बल्कि अपनी आर्थिक उन्नतिके लिये भी।

"हमारे घरेलू साम्राज्य"

संसारके साम्राज्यवादोंमें मैंने अमेरिकाके घरेलू साम्राज्यवादोंका जिक्र किया है। इस युद्धने हम लोगोंके लिये नूतन क्षितिज—नूतन भौगोलिक क्षितिज एवं नूतन मानसिक क्षितिज—के द्वार खोल दिये हैं। अब तक हम अमेरिकन लोग अपने देशके धन्धोंमें ही विशेष रूपसे लगे रहे हैं। किन्तु अब हम लोग एक ऐसी जाति बन गये हैं, जिसके प्रधान स्वार्थ समुद्र-पारके देशोंमें हैं। रूस, बर्मा, ट्युनिसिया या चीनके शहरोंके नामोंको हमारे समाचारपत्रोंमें अब प्रमुख स्थान दिया जाने लगा है। बाहरसे जितने पत्र हमारे देशमें आते हैं, उनमें आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी, गुडाल कनाल, आयर्लैण्ड या उत्तर-अफ्रिकासे हमारे नौजवानोंके आये हुए पत्रोंको जितने चावसे पढ़ा जाता है, उतने चावसे अन्य पत्रोंको नहीं। हमारे स्वार्थ उन-लोगोंके स्वार्थके साथ सम्बद्ध हैं और हमें यह निश्चित जानना चाहिए कि जब उन लोगोंने सारे संसारमें युद्ध किया है, तब वे केवल प्रान्तीय अमेरिकनोंके रूपमें स्वदेश नहीं लौटेंगे। और न हम लोगोंको वे इस रूपमें पायँगे। इन सब बातोंका अभिप्राय क्या है? इसका अभिप्राय यही है कि यद्यपि इससे पहलेके महायुद्धके साथ हम लोगोंका विकास होने लगा था, फिर भी अपने घरेलू विषयोंमें संलग्न रहनेवाले एक तरुण राष्ट्रसे अन्तर्राष्ट्रीय स्वार्थ एवं विश्वव्यापी दृष्टिकोण धारण करनेवाले वयस्क राष्ट्रके रूपमें पूर्णतया परिवर्त्तन हमारा इस समय ही होने लगा है।

वास्तविक रूपमें विश्वव्यापी दृष्टिकोण धारण करनेके साथ विदेशी साम्राज्यवादका मेल कभी हो ही नहीं सकता, चाहे शासन करनेवाला देश कितना ही उदारचित्त क्यों न हो। उसी प्रकार एक राष्ट्रके भीतर विकसित होनेवाले साम्राज्यवादके साथ भी उसका मेल नहीं हो सकता। स्वतंत्रता एक ऐसा शब्द है, जिसका विभाजन नहीं किया जा सकता। यदि हम इसका उपभोग करना चाहते हैं और इसके लिये लड़ना चाहते हैं, तो हमें ऐसा करना होगा, जिससे इसकी पहुँच प्रत्येक व्यक्ति तक हो जाय—चाहे वह धनी हो या गरीब, वह हमसे सहमत हो या नहीं, उसकी जाति या वर्ण चाहे कुछ भी क्यों न हो। हम विशुद्ध अन्तःकरणसे तब तक अंगरेजोंसे यह आशा नहीं कर सकते कि वे भारतकी मुक्तिके लिये कोई सुव्यवस्थित तालिका तैयार करेंगे, जब तक कि हम स्वयं अमेरिकामें रहनेवाले सब लोगोंको मुक्त करनेका निर्णय न कर लें।

इस युद्धमें हम चीनकी चालीस करोड़ जनताके साथ मित्रताके सूत्रमें आबद्ध हैं, और तीस करोड़ भारतवासियोंको हम अपना मित्र समझते हैं। हमारे साथ फिलीपाइन, जावा, ईस्टइंडीज और दक्षिण-अफ्रिकाके निवासी युद्ध कर रहे हैं। ये सब मिलाकर संसारकी कुल जनसंख्याके प्रायः आधे हैं। इनमें किसीके साथ भी अधिकांश अमेरिकनोंका किसी प्रकारका जातीय सम्बन्ध नहीं है। किन्तु इस युद्धसे हम लोग यह शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं कि मनुष्योंको न तो जातीय विभाजन और न वंश-विषयक विचार-परस्पर सम्बद्ध करते हैं, बल्कि उनके समान भाव एवं समान उद्देश्य।

हम लोग यह सीख रहे हैं कि किसी जातिकी परीक्षा उसके लक्ष्यसे होती है, उसके रंगसे नहीं। यहाँ तक कि हिटलरने भी विशुद्ध आर्य जातिकी जो ऊँची दीवार खड़ी की थी, वह भी उन 'सम्माननीय आर्य'

जापानियोंके साथ समान उद्देश्य मान लेनेसे भंग हो चुकी है। हम लोगोंके भी अपने स्वाभाविक मित्र हैं। इसलिये अबसे हम लोगोंको एक राष्ट्रके रूपमें अपने भाग्यको उन सब लोगोंके साथ, चाहे वे किसी जाति या वर्णके हों, सम्मिलित कर देना चाहिये, जो स्वतंत्रताके एक नैसर्गिक स्वत्वके रूपमें अपने लिये और दूसरोंके लिये भी मूल्यवान समझते हैं। हम लोगोंको अभीसे उन सब जातियोंके साथ मिलकर साम्राज्यवादके सिद्धांतको अग्राह्य कर देना चाहिये, जिसके कारण संसारको अविराम युद्धका दण्ड भोगना पड़ता है।

एक बार मैं फिर इस बातपर जोर देना चाहता हूँ कि इस संग्राममें कौन लोग मित्र हैं और कौन शत्रु, इसका निर्णय जाति और वर्णसे नहीं होता। पूर्वमें इसका हमें स्पष्ट दृष्टान्त मिलता है। दुर्बल राष्ट्रोंपर लोलुप एवं बर्बर आक्रमण करनेके कारण तथा अपने साम्राज्यवादी सिद्धान्तके कारण, जिससे वह दुनियापर शासन करना चाहता है और उसे गुलाम बनाना चाहता है, जापान हमारा शत्रु है। वह हमारा शत्रु इसलिये है कि उसने अपनी विजयकी योजनाको अग्रसर करनेके लिये विश्वासघातपूर्वक बिना किसी उत्तेजनाके आघात द्वारा अपना प्रत्येक आक्रमण आरम्भ किया है।

चीन हम लोगोंका मित्र है, क्योंकि हम लोगोंके समान ही वह अपने मनमें विजयका कोई स्वप्न पोषण नहीं करता और स्वतंत्रताको मूल्यवान् समझता है। वह हम लोगोंका मित्र है, क्योंकि राष्ट्रोंमें सबसे पहले उसीने प्रथम आक्रमण एवं क्रीतदासत्वका प्रतिरोध किया है।

ये दोनों ही प्राच्य जातियाँ हैं। एक हम लोगोंका शत्रु है और दूसरा हमारा मित्र। हम लोग आज जिसके लिये युद्ध कर रहे हैं, उसके साथ जाति और वर्णका कोई सम्बन्ध नहीं है। जाति और वर्ण

इस बातका निर्णय नहीं करते कि हम किसके पक्षमें लड़ेंगे। ये ही सब बातें हैं, जिन्हें इस युद्धके द्वारा श्वेत जाति सीख रही है। ये ही सब बातें हैं, जिन्हें सीखनेकी हमें आवश्यकता है।

हमारा शत्रु जापान भी हमारी जातीय संतोष-भावनापर आघात पहुँचानेमें समर्थ हुआ है। उसने ठोकर मारकर हमें इस तथ्यसे अवगत करा दिया है कि श्वेताङ्ग जाति सर्वश्रेष्ठ जाति नहीं है और केवल अतीत-कालीन प्रगति एवं प्रभुत्वके कारण ही संग्राममें वह किसी श्रेष्ठ अधिकारका उपभोग नहीं करती हैं। जब कि आजसे डेढ़ साल पहले हम जापानके शत्रु होनेकी सम्भावनापर नाक-भौं सिकोड़ा करते थे, अब हमने यह मान लिया है कि उससे हमारा एक भयानक शत्रुके रूपमें मुकाबिला हुआ है, जिसके विरुद्ध हम लोगोंको अपनी सारी शक्ति लगा देनी पड़ेगी।

हमारे मित्र चीनने हमें उसी चिह्नके द्वारा नम्रताकी एक नई शिक्षा दी है। हमने पाँच सालसे अधिकसे उसे अकेले आधुनिक युद्धके किसी भी साधनके बिना उसी भयानक शत्रुका सामना करते देखा है। और आज भी जब कि हम जापानके विरुद्ध संग्राममें पूर्णरूपसे भाग लेनेके लिये तैयार ही हो रहे हैं, वहाँकी जनता उसका प्रतिरोध कर रही है। जिस नैतिक वातावरणमें श्वेताङ्ग जाति इस समय है, उसमें परिवर्त्तन हो रहा है। और यह परिवर्त्तन केवल सुदूर-पूर्वकी जनताके प्रति हमारे मनोभावमें ही नहीं हो रहा है, बल्कि अपने देशमें भी।

बहुत दिनोंसे संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाका अपने देशसे बाहरकी दुनियामें किसी प्रकारका साम्राज्यवादी अभिप्राय नहीं रहा है। किन्तु अपने देशके अन्दर हमारी जैसी कारवाई रही है, उसे हम कुछ अंशोंमें जातिगत साम्राज्यवाद कह सकते हैं। अमेरिकाके श्वेताङ्ग नागरिकोंका हबशियोंके प्रति जैसा मनोभाव रहा है, निस्सन्देह उसमें विदेशी साम्राज्यवादके

कुछ अशोभन लक्षण पाये जाते हैं। वे लक्षण हैं—अपनेको श्रेष्ठ जाति समझनेका गर्व और एक अरक्षित जातिका शोषण करनेकी इच्छा। और हमने अपने मनमें यह समझकर इसके औचित्यको मान लिया है कि इसका लक्ष्य परोपकारपूर्ण है। और कभी-कभी यह ऐसा रहा भी है। किन्तु साम्राज्यवादके उद्देश्य भी तो कभी-कभी इसी प्रकार परोपकारपूर्ण रहे हैं। और जिस नैतिक वातावरणमें इस साम्राज्यवादका अस्तित्व रहा है, वह उससे अभिन्न है, जिसमें लोग—अच्छे अभिप्रायवाले लोग—श्वेताङ्ग जातिके भार-वहन '(the white man's burden)' की चर्चा करते हैं।

किन्तु वह वातावरण अब बदल रहा है। आज विचारशील अमेरिकनों को यह बात स्पष्टसे स्पष्टतर होती जा रही है कि हम अपने देशके बाहर तो साम्राज्यवादकी शक्तियों एवं विचारोंके विरुद्ध संग्राम करें और स्वदेशमें साम्राज्यवादकी किसी-न-किसी रूपमें कायम रखें, यह दोनों बातें एक साथ नहीं हो सकतीं। युद्धने हमारे विचारमें यह परिवर्त्तन ला दिया है।

युद्धके कारण अमेरिकाकी रंगीन जातिके लिये मुक्तिका द्वार खुल गया है। सामरिक प्रयोजनके कारण ऐसा हुआ है। यह स्पष्ट है कि युद्ध यदि नहीं होता, तो भी मानवीय सुधार एवं सामाजिक संस्कारकी मन्दगामी प्रक्रिया में यह होकर ही रहता। किन्तु मानवीय स्वतंत्रताके इस प्रश्नको सन्धि-क्षणमें लानेके लिये एक दुर्भाग्यपूर्ण एवं परस्पर विनाशकारी युद्धकी आवश्यकता हुई, और गुलामीकी जंजीरोंपर आघात करनेकी क्रिया एक वेगमें ही सम्पन्न हो गई। हम लोग वर्त्तमान संघर्षके कारण यह महसूस करने लगे हैं कि बहुत दिनोंसे जाति-जातिके बीच जो भेद-भाव एवं दुराग्रह चले आ रहे थे, वे छिन्नभिन्न हो रहे हैं। बाहरसे जो शक्तियाँ हमारे गणतंत्रको सशंकित कर रही हैं, उनके विरुद्ध उसकी रक्षा करनेमें हमारे

सामने देशके अन्दर कार्य सम्पन्न करनेमें उसकी कुछ असफलतायें अत्यन्त स्पष्ट रूपमें प्रकट हो गई हैं ।

हम किस लिये युद्ध कर रहे हैं, इस सम्बन्धमें हमारी ओरसे जितनी घोषणायें की गई हैं, उनसे ही हमारे अन्याय-आचरण आपसे आप प्रत्यक्ष हो जाते हैं । जब हम सब राष्ट्रोंके लिये स्वतंत्रता एवं सुयोगकी चर्चा करते हैं, उस समय हमारे अपने समाजके अन्दर जो व्यंगपूर्ण असत्याभास पाये जाते हैं, वे इतने स्पष्ट हो उठते हैं कि उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती । यदि हम स्वतंत्रताके विषयमें चर्चा करना चाहते हैं, तो हमारी उस स्वतंत्रताका अर्थ होना चाहिये अपने लिये और दूसरोंके लिये भी स्वतंत्रता ; हमारे देशके अन्दर और उसके बाहर जो लोग रहते हैं, उनमें प्रत्येकके लिये स्वतंत्रता । युद्धकालमें यह विशेष रूपसे आवश्यक है ।

युद्धकालमें जातिगत और धार्मिक तथा राजनीतिक अल्पसम्प्रदायोंके लिये भी दो बातोंसे आशंका उत्पन्न होती है—पहली बात है सर्वसाधारण जनताकी ओरसे इस बातके लिये अत्यधिक आग्रह प्रकट किया जाना कि सब लोग बहुमतके साथ चलें, और दूसरी बात है युद्धकालमें भावावेशके कारण अति प्राचीन जातीय एवं धार्मिक अविश्वासका फिरसे जीवित हो उठना । उस समय युद्धके लिये और युद्धजनित समस्त विश्रृङ्खलाओं एवं कष्टोंके लिये अल्पसम्प्रदायोंको ही उत्तरदायी ठहरानेकी प्रवृत्ति देखी जाती है । और उनकी गति-विधियोंकी सन्दिग्ध दृष्टिसे छान-बीन इसलिये की जाती है कि उन्हें विशेष सुविधायें तो प्राप्त नहीं हो रही हैं ।

हम सब लोग उस प्रक्रियासे परिचित हैं, जिससे जिस समय देशमें युद्ध-जनित मनोभाव फैला हुआ होता है, किसी भी असाधारण बातको देखकर कुछ लोग उसके प्रति सन्देह प्रकट करने लगते हैं और प्रचलित मतवादके विरुद्ध किसी मतवादको देखकर उसका सम्बन्ध शत्रुके षड्यंत्रके

साथ जोड़ लिया जाता है। किसी भी जातिमें ऐसे लोग पैदा हो सकते हैं, जो अपने उत्कट देशप्रेमके कारण अन्धे बन जाते हैं। सन् १८१२ ई० के हमारे युद्धमें इस प्रकारका एक दृष्टान्त पाया जाता है कि एक नौजवान सन्देहपर इसलिये गिरफ्तार कर लिया गया और शत्रु-पक्षकी ओरसे जासूसी करनेके अभियोगपर कैद कर लिया गया कि "वह एक बहुत बड़ा चाबुक अपने साथ लिये फिरता था और उसके पतलूनमें असाधारण संख्यामें बटन लगे हुए थे।" जब देशकी अवस्था बुरी हो जाती है, उस समय जनता पुरानी रीतिके अनुसार किसी ऐसे व्यक्तिकी माँग करने लगती है, जिसको उसके दोस्तोंके लिये बलि दिया जा सके, और सबसे पहले अल्पसम्प्रदायमें ही इस प्रकारके व्यक्तिकी तलाश होने लगती है,।

जो देश किसी समय सभ्य एवं सुशिक्षित समझे जाते थे, उनमें धर्मान्धता एवं उत्पीड़नके जो दृष्टान्त पाये जाते हैं और उससे भी बढ़कर अपने देशमें यहूदी आदि जातियोंके विरुद्ध द्वेषमूलक भावनाको क्रमशः फैलना जो देख रहे हैं, उनका अस्तित्व यदि नहीं पाया जाता, तो आजके इस आधुनिक युगमें उपर्युक्त बातें हास्यास्पद समझी जातीं। हमें बराबर यह स्मरण रखना होगा कि हम लोग आज असहिष्णुता एवं अत्याचारके विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं, और इस युद्धमें यदि हम हार जायँगे, तो हमारे देशमें भी असहिष्णुता एवं अत्याचारकी प्रवृत्ति अत्यधिक मात्रामें फैल जायगी। जिस समय हम अपने देशसे बाहर शत्रुके साथ युद्ध कर रहे हैं, उस समय यदि हम अपने देशमें असहिष्णुता एवं उत्पीड़नकी प्रवृत्तिको विकसित होने देंगे, तो हमारा पक्ष बहुत निर्बल हो जायगा।

हमारे राष्ट्रकी गठन किसी एक जाति, एक धर्म-विश्वास अथवा उत्तराधिकार-रूपमें प्राप्त सांस्कृतिक संपत्तिके अधिकारी लोगोंको लेकर नहीं हुई है। यह तीस जातियोंका एक समुदाय है, जिनके धार्मिक भाव,

दर्शन तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भिन्न-भिन्न हैं हमारी स्वाधीनताकी घोषणामें गणतांत्रिक संस्थाओंके सम्बन्धमें जो भाव व्यक्त किये गये थे और जिनकी गारण्टी उनके लिये और उनके बच्चोंके लिये शासन-विधानमें की गई थी, उसके प्रति दृढ़विश्वास धारण करनेके कारण ही वे परस्पर सम्बद्ध हैं।

हमारे राष्ट्रोंकी एकताका आधारस्तम्भ है स्वतंत्रता—प्रत्येक व्यक्तिको अपने इच्छानुसार उपासना करने, कार्य करने, जीवन-यापन करने और अपने बच्चोंका पालन-पोषण करनेकी स्वतंत्रता। स्वतंत्रता यदि सबके लिये प्राप्य हो, तो उसकी रक्षा कतिपय आधारभूत संरक्षणों द्वारा करनी होगी, और उन आधारभूत संरक्षणोंका अर्थ होगा स्वतंत्रताका सर्व-साधारण जनतामें अधिकाधिक प्रचार करना और किसीको इस प्रकारकी विशेष सुविधायें प्राप्त नहीं होने देना, जिनसे दूसरेके अधिकारोंमें हस्तक्षेप हो। हमारे अधिकारी-वर्गके कार्य दुष्टतापूर्ण और हमारी व्यवस्थापिका परिषदोंके कभी-कभी अत्यधिक साहसी होनेपर भी, और भीड़के उपद्रवके शोचनीय किन्तु भाग्यवश छिट-फुट दृष्टान्त होनेपर भी, डेढ़ सौ सालसे कुछ अधिकके अनुभव एवं सुव्यवस्थाके फलस्वरूप हम लोगोंने अमेरिकामें अपने भावोंको समुचित रूपमें व्यक्त करनेकी जो स्वतंत्रता प्राप्त की है, वैसी स्वतंत्रताका इतिहासमें अबसे पहले अस्तित्व नहीं पाया जाता।

एक राष्ट्रके रूपमें अब तक हम लोगोंने जो सफलता प्राप्त की है, वह इसलिये नहीं कि हमने बड़े-बड़े शहरों और कारखानोंका निर्माण किया है और विशाल क्षेत्रोंको कृषिभूमिमें परिणत कर दिया है, बल्कि इसलिये कि हमने स्वतंत्रताकी इस मौलिक निश्चयताको, जिसपर हमारी समस्त भौतिक उन्नति निर्भरशील रही है, वृद्धि की है, और अपने देशके अन्दरकी विभिन्नताओंको सहन किया है और उनका उपयोग करना सीखा है।

हम लोग अपेक्षाकृत एक नूतन राष्ट्र हैं। आजसे सिर्फ पचास साल पहले हमारी खानोंका आधासे अधिक भाग और हमारे कुल शिल्प-कार्यका एक-तिहाई भाग उन लोगोंके हाथमें था, जो दूसरे देशोंसे आकर इस देशमें बस गये थे। हमारे कुछ प्रमुख कृषि-प्रधान राष्ट्रोंके कृषिक्षेत्रोंकी आबादी की आधीसे अधिक संख्या ऐसी थी- जिसका जन्म इस देशमें न होकर विदेशोंमें हुआ था। सन् १८२० और १८९० ई० के बीच, जब कि राष्ट्रका गठनकाल था, १९,०००,००० से अधिक नवागन्तुक हमारे देशमें आये थे और गत महायुद्धके छिड़नेके पूर्व २४ सालके अन्दर और भी अधिक संख्यामें आनेवाले थे। दूसरे शब्दोंमें दो सौ सालोंके अन्दर विदेशोंसे हमारे देशमें बार-बार लोग आते रहे, जिससे हमारे रक्तमें नूतन शक्तिका संचार हुआ और हमें नये अनुभव एवं नये भाव प्राप्त हुए। इस प्रकार अल्पसंख्यक दलोंकी एक विशाल परिषद् परस्पर सम्बद्ध होकर एक राष्ट्रके रूपमें परिणत हो गई। हम लोगोंने जो एक शक्तिशाली राष्ट्रकी सृष्टि की है, इसका कारण यह है कि बाहरसे जो लोग इस देशमें आये, उन्हें हमारी शासन-प्रणालीके अन्तर्गत रहते हुए बराबर विरोध करते रहने और परस्पर लड़ते रहनेके लिये आकुल नहीं होना पड़ा, बल्कि सारे राष्ट्रके गठन एवं एकीकरणके कार्यमें साझीदार बनकर उन्होंने हमारे देशमें प्रवेश किया। मेरे खयालसे हमारी सभ्यताकी उच्चताका कारण हम लोगोंकी परिषद् आविष्कार या हमारी कोई महान् भौतिक उन्नति नहीं है, बल्कि इसका कारण विभिन्न जाति एवं विभिन्न धर्म-विश्वासवाले लोगोंकी संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकामें समान बुद्धि, सम्मान और सहयोगिताकी भावना लेकर एक साथ मिलकर रहनेकी योग्यता है।

यदि हम अमेरिकाकी इस शासन-पद्धतिका प्रतिकूल स्वरूप देखना चाहते हैं, तो हमें हिटलरके सैनिक अधिनायकतंत्र (डिक्टेटरशिप), जापानके

निरंकुश शासनतंत्र और फासिस्ट इटलीके क्षयिष्णु अधिनायकतंत्रकी ओर देखना चाहिये। पिछले दस सालके अन्दर जर्मनीका इतिहास जातीय एवं धार्मिक असहिष्णुताका रहा है, जिसकी आड़में शान्तिका बहाना करनेवाले एक डिक्टेटरने पहले लोगोंको फुसलाकर अल्पसम्प्रदायको निपीड़ित करनेके लिये और बादमें युद्धके लिये राजी किया। इस असहिष्णुताने ही जर्मन जातिको संपूर्ण रूपसे सैनिक बननेकी क्षणिक शक्ति प्रदान की है। किन्तु यथार्थमें इसने सामाजिक संगठनके आधारको क्षीण और दुर्बल बना दिया है, जिससे युद्धके रुखमें जब परिवर्त्तन होगा, उस समय यह बहुत सम्भव है कि उस राष्ट्रका सहसा एवं संपूर्ण रूपमें पतन हो जाय।

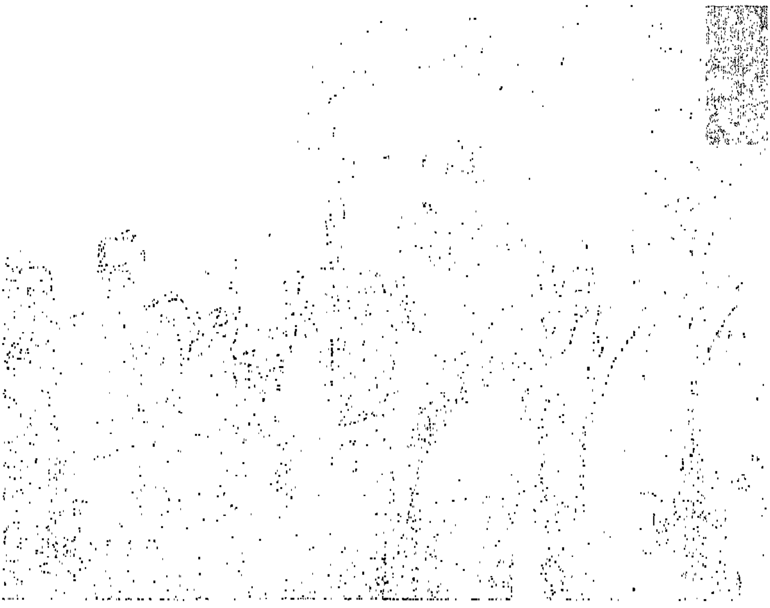
मैंने बराबर यह महसूस किया है कि मानवता या न्याय या बलवान् द्वारा दुर्बलकी रक्षा करनेके किसी भाव-सम्बन्धी कारणोंके अलावा भी हमारी साधारण बुद्धि हमें यह बताती है कि अल्पसम्प्रदायोंके हकोंकी हमें पूरे यत्नके साथ रक्षा करनी चाहिये। क्योंकि अल्पसम्प्रदाय ही किसी गणतंत्रकी मूल्यवान पूँजी हैं—ऐसी पूँजी, जिसको कोई भी totalitarian सरकार प्राप्त नहीं कर सकती। अधिनायकतंत्रोंको अवश्य ही उनसे भय करना पड़ेगा और उन्हें दबा देना पड़ेगा। किन्तु गणतांत्रिक शासनकी सहिष्णुताके अन्दर अल्पसम्प्रदाय बराबर नये-नये भाव उद्दीपित करनेवाले नये विचार और कार्यके स्रोत तथा नूतन शक्तिके निश्चित साधन बने रहते हैं।

अल्पसम्प्रदायके विचार और उसकी अभिव्यक्तिको दबा देनेका परिणाम होगा समाजको निश्चल बना देना और उसकी प्रगतिको बंद कर देना। क्योंकि स्वयं बहुसंख्यक सम्प्रदाय भी अल्पसम्प्रदायके अस्तित्वके कारण ही उद्दीपित होता रहता है। मानव-मनको प्रतिकूल विचारोंकी

अभिव्यक्तिकी आवश्यकता होती है, जिसके विरुद्ध वह अपनी परीक्षा कर सके। क्योंकि इस समय सबसे बढ़कर हमें यह बात अपने मनमें अच्छी तरह धारण कर लेनी चाहिये कि जब कभी हम उन लोगोंकी स्वतंत्रता छीन लेते हैं, जिनसे हम घृणा करते हैं, तो इसका अर्थ यह होता है कि जिन्हें हम प्यार करते हैं, उनकी स्वतंत्रताके खो जानेका मार्ग हम खोल देते हैं।

अमेरिकामें हम लोगोंका साथ मिलकर रहनेका ढंग एक मजबूत मगर नरम वस्त्रके समान है। यह बहुतसे धागोंसे बना हुआ है। असंख्य स्वाधीनता-प्रेमिक नर-नारियोंके धैर्य एवं त्यागके द्वारा अनेक शताब्दियोंमें यह बुनकर तैयार हुआ है। धनी और गरीबोंकी, श्वेताङ्ग और कृष्णाङ्गों को, यहूदी और उनसे भिन्न अन्य जातियोंकी, विदेशोंमें और इस देशमें जन्म ग्रहण करनेवालोंकी रक्षाके लिये वह आवरणका काम करता है।

हम इसे छिन्न-भिन्न न कर डालें। क्योंकि कोई नहीं जानता कि एक बार इसके नष्ट हो जानेपर कहाँ और कब मनुष्य इसकी रक्षणात्मक उष्णताको फिर प्राप्त कर सकेगा।



मि० विल्की—संयुक्तराष्ट्रके चार बड़े प्रेसीडेन्टके स्मृतिस्वरूप माउन्ट रसमोर मेमोरियल'-"श्राइन आफ डेमोक्रेसी"-के तले सभामें भाषण दे रहे हैं। पश्चिम संयुक्तराष्ट्रके दक्षिणी डेकोटाकी काली पहाड़ीके एक हिस्सेमें चार प्रेसीडेन्टोंके मुखमंडल खुदे हुये हैं—जार्जवाशिंगटन, थियोडर रूजवेल्ट, थामस जेफरसन, अब्राहम लिनकोन। ये स्वर्गीय कटजन बार्ग्लमके द्वारा १९४१ ईस्वीमें निर्माण की गई जो कि १४ वर्षोंका फल है।

एक ही दुनिया

U.S.O.W.I.की सौजन्यसे

एक ही दुनिया

अभी थोड़े दिन हुए—एक शताब्दीका चतुर्थांश भी नहीं—जब कि मित्र-राष्ट्रोंने साम्राज्यवादी जर्मनी द्वारा देश-विजयके लिये परिचालित आक्रमणशील सेनाओंके ऊपर एक उल्लेखनीय विजय प्राप्त की थी।

किन्तु इस युद्धके बाद जो शान्तिकी स्थापना नहीं हो सकी, इसका मुख्य कारण यह था कि मित्र-राष्ट्रोंकी जनता अपने मनमें किसी ऐसे सम्मिलित उद्देश्यपर नहीं पहुँच सकी थी, जिसके आधारपर शान्तिकी स्थापना हो सकती, और इसीलिये विश्व-शान्ति सम्भव नहीं हो सकी। राष्ट्र-संघकी सृष्टि पूर्ण विकसित रूपमें की गई; और अपने शत्रुको पराजित करनेके सिवा और कोई दूसरा सम्मिलित उद्देश्य नहीं होनेसे लोग उसकी रूप-रेखाके सम्बन्धमें मनमाने ढंगसे वाद-विवाद करने लग गये। और यह इसलिये भी असफल हुआ कि यह खासकर इंग्लैण्ड, फ्रान्स और अमेरिकाकी ओरसे समस्याका समाधान था, जिसमें पुराने औपनिवेशिक साम्राज्यवादोंको नये और मनोहर शब्दोंमें कायम रखा गया था। इसने सुदूर-पूर्वके अत्यावश्यक प्रयोजनोंपर यथोचित रूपमें खयाल नहीं किया और न इसने संसारकी आर्थिक समस्याओंके समाधानके लिये पर्याप्त रूपमें चेष्टा की। संसारकी समस्याओंके समाधानके लिये इसके जो प्रयत्न थे, वे मुख्यतया राजनीतिक थे। किन्तु बिना आर्थिक अन्तर्राष्ट्रीयताके राजनीतिक अन्तर्राष्ट्रीयता कायम करनेकी चेष्टा करना बालूके ऊपर घर बनाना है। क्योंकि कोई भी राष्ट्र अकेला रहकर अपने चरम विकासको प्राप्त नहीं हो सकता।

मैं विश्वास करता हूँ कि राष्ट्रसंघकी असफलताके कारणोंका एक दूसरा सन्धान हमें अमेरिकाके इतिहास द्वारा मिलता है। आज जो कुछ हो रहा है, उसको सामने रखते हुए हमारी एक अत्यन्त स्पष्ट कमजोरी है हमारी परराष्ट्र नीतिमें एकसमानताका अभाव। पिछले पैंतालीस सालके अन्दर कोई भी बृहत राजनीतिक दल इस बातका दावा नहीं कर सकता कि उसने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगके लिये किसी स्थायी अथवा सुदृढ़ कार्य-क्रमका अनुसरण किया है। प्रत्येक दलने कभी साम्राज्यवादी दृष्टिकोण लेकर विश्वको देखा है और कभी अमेरिकाको यूरोपके राजनीतिक वाद-विवादोंसे संपूर्ण पृथक रखनेकी नीतिका अनुसरण किया है। और कांग्रेसमें जिस दलका बहुमत नहीं रहा है, उसने अमेरिकाकी स्वीकृत राजनीतिक प्रणालीके अनुसार क्षमताशाली दलके कार्यक्रमका विरोध किया है, चाहे वह कार्यक्रम कुछ भी क्यों न हो।

वर्षोंसे दोनों दलके बहुतसे लोग इस बातको मानने लगे हैं कि यदि शान्ति, आर्थिक उन्नति और स्वतंत्रताको भी इस दुनियामें कायम रखना है, तो संसारके राष्ट्रोंको आर्थिक स्थायित्व एवं सहयोगमूलक प्रयत्नकी कोई पद्धति ढूँढ़ निकालनी होगी।

प्रथम विश्वव्यापी महासमरके अन्तमें इन महत्त्वाकाँक्षाओंके कारण ही राष्ट्रपति उडरो विल्सनकी अध्यक्षतामें अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगका एक कार्यक्रम तैयार किया गया था, जिसका उद्देश्य था सब राष्ट्रोंकी सामरिक आक्रमणशीलतासे रक्षा करना, अल्पसंख्यक सम्प्रदायोंकी रक्षा करना और आनेवाली पीढ़ीको इस बातका कुछ विश्वास दिलाना कि युद्धके विनाशकारी उत्पातसे निश्चिन्त होकर वह अपने कारबारमें लग सकती है। उस कार्यक्रमके विवरणके सम्बन्धमें चाहे जैसा हम खयाल करें, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वह विश्व-शान्तिके लिये एक स्पष्ट एवं निश्चयात्मक

कार्य था। इस समय हम निश्चित रूपमें यह नहीं बता सकते कि यह कार्यक्रम कितना सफल सिद्ध हुआ होता, यदि संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाका उसे समर्थन, प्रभाव एवं सक्रिय सहयोग प्राप्त होता।

किन्तु इतना हम जानते हैं कि हमने इसके विपरीत मार्गका अवलम्बन किया और इसे सम्पूर्ण निरर्थक पाया। हमने दुनियाके मामलों से अपनेको बिलकुल पृथक् रखा। डिमोक्रैटिक और रिपबलिक दलोंके हमारे बहुतसे नेता देशमें घूम-घूमकर इस बातकी घोषणा करने लगे कि गत युद्धमें हमको धोखा दिया गया, हमारे आदर्शोंके प्रति विश्वासघात किया गया और अब हम फिर कभी विश्वकी राजनीतिके साथ अपनेको विजड़ित नहीं करेंगे, क्योंकि इसका अवश्यम्भावी परिणाम होगा दूसरा सशस्त्र युद्ध। उनका कहना था कि प्राकृतिक अवरोधों द्वारा हमारा देश सुरक्षित है, और इसलिये हमें अपने देशसे बाहरकी पुरानी दुनियाके जटिल एवं नीरस व्यापारोंके साथ कोई सम्पर्क रखनेकी आवश्यकता नहीं।

बाहरसे आनेवाले माल पर अत्यधिक कर लगाकर हमने विश्व-वाणिज्यसे अपनेको संपूर्ण पृथक् कर लिया। यूरोप महादेशके साथ हमने अपना कोई वास्ता नहीं रखा और उसके भाग्यके प्रति किसी तरहकी दिलचस्पी नहीं दिखलाई, जब कि जर्मनी अपनेको शस्त्रास्त्रोंसे पुनः सज्जित कर रहा था। फ्रान्स जिस समय पीछे पड़ गया था और यूरोपके अन्य गणतांत्रिक राष्ट्र अभी उस आर्थिक मन्दीके रुग्न प्रभावसे—जिसने उनकी जीवनी शक्तिको क्रमशः क्षीण कर दिया था—मुक्त ही होने लगे थे, और जब कि विदेशी विनिमयकी अस्थिरता पूर्णरूपसे आर्थिक पुनरुत्थानके मार्गमें प्रधान बाधा हो रही थी, ऐसे समयमें ही हमने लंडनमें होनेवाली आर्थिक कांफ्रेन्सकी सारी व्यवस्थाको विनष्ट कर डाला। और ऐसा करके हमने गणतांत्रिक राष्ट्रोंको शक्तिशाली बनाने और उन्हें पुनः प्रतिष्ठित करने और

आक्रमणशील शक्तियोंके—जो शक्तियाँ उसी क्षणसे एकत्रित होने लग गई थीं—आघातके विरुद्ध उन्हें सुदृढ़ करनेके लिये उनका नेतृत्व करनेका जो हमें बहुत ही सुन्दर सुयोग प्राप्त हुआ था, उसका हमने परित्याग कर दिया।

राष्ट्रसंघमें मेरा विश्वास था। किन्तु इस समय संघकी योजनाओंके नियमोंके पक्ष या विपक्षमें तर्क-वितर्क न करके मैं यहाँ उन कारणोंका उल्लेख कर देना चाहता हूँ, जिनसे संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकामें राष्ट्रसंघ विफल हुआ। क्योंकि वह संग्राम इस बातका एक बिलकुल पूर्ण दृष्टान्त है कि एक स्वतंत्र संसार, एक न्याय्य संसार और एक शान्तिकामी संसारमें विश्वास रखनेवाले एक राष्ट्रके रूपमें यदि हम अपने दायित्वोंको पूर्ण करना चाहते हैं, तो हमें अपने देशमें उस प्रकारके नेतृत्वसे बचना होगा।

राष्ट्रपति विलसनने अमेरिकाकी राष्ट्र-परिषद् सिनेटके रिपबलिक दलके नेतासे राय-सलाह या उनके सहयोगके बिना ही वर्सेलाईमें सन्धिके प्रस्तावोंके सम्बन्धमें—जिनमें राष्ट्रसंघका नियम-पत्र भी शामिल था—बातचीत तक की। उन्होंने इस विचारणीय विषयपर एकमात्र अपने डिमोक्रेटिक दलका ही एकाधिपत्य समझ लिया, जिससे रिपब्लिक दलके बहुतसे सदस्य—यहाँ तक कि अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण रखनेवाले सदस्य भी—दलगत कौशलके खयालसे उनके विरोधी बन गये। राष्ट्रपतिके लौटनेपर सन्धि और राष्ट्रसंघका नियम-पत्र सिनेट-सभाके सामने समर्थनके लिये उपस्थित किया गया। और इस अवसरपर अमेरिकाके इतिहासमें एक अत्यन्त नाटकीय काण्ड उपस्थित हुआ। मैं यहाँ उस संग्रामके विवरणोंको अंकित नहीं कर सकता, जिसके परिणाम-स्वरूप अमेरिकाने संसारका नेतृत्व करना अस्वीकार कर दिया। फिर भी हम लोगोंके लिये आज यह आवश्यक है कि हम उस घटनाकी मुख्य-मुख्य बातोंको स्मरण रखें।

पहले सिनेट-सभाके विभिन्न दलोंपर विचार कीजिए। इनमें एक दल था तथाकथित 'battalion of death,' अर्थात् 'मृत्यु-सैन्यदल,' 'irreconcilables' अथवा 'bitter-enders'-इस दलपर किसी दल विशेषकी छाप नहीं थी। इस दलके नेता थे डिमोक्रेटिक वक्ता जेम्स ए० रीड। रिपबलिक दलके नेता बोराके समान ही अपने दलके ये एक प्रमुख नेता थे। दूसरी ओर थे युद्धकालीन राष्ट्रपति उडरो विलसन, जो किसी प्रकार भी झुकनेके लिये तैयार नहीं थे और इस बातपर डटे हुए थे कि सन्धि-पत्रको अक्षरशः स्वीकार कर लिया जाय। इन दोनों दलोंके बीच विभिन्न मत धारण करनेवाले स्वतंत्र दलके सदस्य थे, जो 'रिजर्वेसनिस्ट्स' (Reservationists)-कहलाते थे। इनमें रिपबलिकन और डिमोक्रेटिक दोनों ही दलके लोग थे।

आज हम यह नहीं जानते, और शायद कभी भविष्यमें भी न जान सकें, कि हेनरी कैबट लाज नामक व्यक्ति जो उस समय सिनेट-सभाके रिपबलिकन दलका नेता था, और इस समय जिसके नामके साथ राष्ट्रसंघ-सम्बन्धी प्रस्तावकी अस्वीकृतिको हम संयुक्त करते हैं, उसका वास्तविक अभिप्राय क्या था। क्या वह सचमुच यह चाहता था कि राष्ट्रसंघ-सम्बन्धी प्रस्ताव कुछ शर्तोंके साथ स्वीकृत किया जाय अथवा राष्ट्रसंघका अन्त कर डालनेकी नीयतसे ही उसने वे शर्तें पेश की थीं? उसके घनिष्ठ मित्र और उसके परिवारके लोगोंने भी इस विषयपर विपरीत मत प्रकट किये हैं।

किन्तु इतना हम अवश्य जानते हैं कि जब यह प्रश्न सिनेटसे सन् १९२० की दो बृहत् राजनीतिक प्रतिनिधि-परिषदोंके समक्ष उपस्थित किया गया, तो उनमें एकने भी उस सन्धिका, जिस रूपमें वह राष्ट्रपति द्वारा हृदयङ्गम कराई गई थी, न तो संपूर्णतया समर्थन किया और न उसका विरोध किया। डिमोक्रेटिक परिषदने अपनी बैठकमें प्रस्ताव

की शर्तोंका विरोध नहीं किया। रिपबलिकन दलने अपनी बैठकमें एक समझौतामूलक प्रस्ताव पास किया, जो इतना व्यापक था कि उसमें दलके जो लोग राष्ट्रसंघके दृढ़ समर्थक थे, उनका भी समावेश हो जाता था। उसमें राष्ट्रसंघ-विरोधी प्रतिनिधियोंके लिये भी काफी गुंजाइश थी।

दोनों ही दलवालोंका रुख सन्दिग्ध था। उनके सामने संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाके अन्य राष्ट्रोंके साथ सहयोगका कोई संगतिपूर्ण ऐतिहासिक दृष्टान्त नहीं था। रिपबलिकन दलके उमीदवार वारेन हारडिंगका—जो एक सुशील एवं प्रियदर्शन व्यक्ति होनेपर भी दृढ़विश्वास धारण करनेवाले नहीं थे—जैसा ढंग था, उससे गड़बड़ी और भी ज्यादा बढ़ गई। इसमें सन्देह नहीं कि डिमोक्रेटिक दलके उमीदवार काक्सकी जैसी स्थिति थी, उससे विलसनकी सन्धिको सुनिश्चित रूपमें समर्थन मिलता था, यद्यपि उसकी पार्टीकी ओरसे शर्तोंकी संभावना बनी ही हुई थी, और डिमोक्रेटिक दलके बहुतसे नेता सन्धिके साफ विरोधी थे। किन्तु किसीको इस बातकी निश्चयता नहीं थी कि हारडिंग केवल राष्ट्रसंघके विरुद्ध अपनी शक्तिकी परीक्षा कर रहे थे या उनका इरादा चुने जानेपर उसका संशोधित रूपमें समर्थन करनेका था। जो कुछ स्पष्ट था, वह इतना ही कि वह समझता था कि उसे राष्ट्रसंघका विरोध केवल इसलिये करना है कि डिमोक्रेटिक दलवालोंने उसे एक राजनीतिक विचारणीय विषयका रूप दे डाला है। खानगी बातचीतमें वह प्रत्येक व्यक्तिको जैसा उत्तर चाहता था, देता था। चुनावका फल, प्रकाशित हो जानेके बाद ही हारडिंगने स्पष्ट रूपमें राष्ट्रसंघको 'मृतकतुल्य' बताया।

दुर्भाग्यवश निर्वाचन प्रधानतः भिन्न प्रश्नोंको लेकर ही हुआ। दोनों दलोंके दोषसे जिस चुनावमें स्थानीय प्रश्नोंकी प्रधानता थी,

उसमें ही संसारके साथ अमेरिकाके सहयोगका महान प्रश्न परीक्षाके रूपमें रखा गया। डिमोक्रेटिक पार्टी और उसके नेताओंने एक ओर जहाँ बुद्धिहीनतापूर्वक अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिपर अपना एकाधिकार करना चाहा, वहाँ दूसरी ओर डिमोक्रेटिक पार्टी और उसके नेताओंने भी उसी प्रकार बुद्धिहीनताके साथ अपनेको विरोधी पक्षमें जाने दिया। अब वह समय आ रहा है, जब कि हमें एक बार फिर इस बातका निर्णय करना पड़ेगा कि अमेरिका दुनियाके मामलोंमें अपना समुचित स्थान ग्रहण करेगा या नहीं, और इस निर्णयपर पहुँचनेमें हमें इस बातका खयाल रखना पड़ेगा कि हम केवल दलबन्दियोंके फेरमें पड़कर इसपर विचार न करें।

मुझे इस बातका सन्तोष है कि अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगके किसी कार्य-क्रमसे अमेरिकाकी जनताने कभी जान-बूझकर इच्छापूर्वक अपना मुँह नहीं मोड़ा है। यह बहुत संभव है कि वर्सैलाई-सन्धिपत्रकी शर्तोंमें वह परिवर्त्तन करना पसन्द करती, न कि अन्य राष्ट्रोंके प्रयत्नोंसे अपनेको संपूर्ण पृथक रखना। उनके नेताओंने—जिनका कोई निजका दृढ़विश्वास नहीं था और जो केवल अपने पक्षमें वोट प्राप्त करने और दलगत सुविधाकी दृष्टिसे इस प्रश्नपर विचार करते थे—उन्हें गुमराह किया था।

गत महासमरके बाद दुनियाके मामलोंसे हम लोगोंका अलग रहना यदि वर्त्तमान महायुद्ध और गत बीस वर्षोंकी आर्थिक अस्थिरताके उत्पादक कारणोंमें से एक कारण था—और यह स्पष्ट है कि यह ऐसा था—तो इस युद्धके बाद संसारकी समस्याओं एवं दायित्वोंसे अपनेको अलग रखना एक विपत्तिके सिवा और कुछ नहीं होगा। भौगोलिक दृष्टिसे अपने देशको हम दुनियासे जो विच्छिन्न समझते आ रहे थे, वह भी अब नहीं रह गया है।

गत महायुद्धके अन्तमें एक भी वायुयानने उड़कर अटलाण्टिक महासागरको पार नहीं किया था। आज वह समुद्र महज एक पतला फीता जैसा रह गया है और उसके ऊपरसे होकर नियमित रूपमें वायुयानोंका आवागमन हो रहा है। प्रशान्त महासागर आकाशरूपी समुद्रमें उससे कुछ ही बड़ा एक फीता जैसा रह गया है, और यूरोप तथा एशिया महादेश हमारे बहुत समीपस्थ हो गये हैं।

इस युद्धके बाद अमेरिकाको तीन मार्गोंमें से एक मार्गको चुनना पड़ेगा—संकीर्ण राष्ट्रीयता, जिसका निश्चित अर्थ है अन्ततः हमारी अपनी स्वतंत्रताकी हानि; अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद, जिसका अर्थ है किसी अन्य राष्ट्रकी स्वतंत्रताका बलिदान; अथवा एक ऐसे संसारकी सृष्टि, जिसमें प्रत्येक जाति और प्रत्येक राष्ट्रके लिये समान सुयोग होगा। मेरा यह दृढ़विश्वास है कि अमेरिकन जनता बहुत बड़े बहुमतसे अन्तिम मार्ग को ही चुनेगी। और इस चुनावको कारगर बनानेके लिये हमें केवल युद्धको ही नहीं, बल्कि शान्तिको भी जीतना पड़ेगा, और जीतनेके इस कामको अभीसे आरम्भ कर देना पड़ेगा।

इस शान्तिको जीतनेके लिये तीन बातें मुझे आवश्यक जान पड़ती हैं। पहली बात यह है कि सारे संसारको लेकर शान्तिकी योजना हमें अभीसे तैयार कर लेनी चाहिये। दूसरी, सारी दुनियाको उसके अन्दर रहनेवाले राष्ट्रों एवं मनुष्योंके लिये राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टिसे स्वतंत्र कर देना पड़ेगा, ताकि उसमें शान्तिकी स्थापना हो सके। तीसरी, अमेरिकाको दुनियाको स्वतंत्र करने और उसकी शान्तिको कायम रखनेमें सक्रिय एवं रचनात्मक भाग ग्रहण करना पड़ेगा।

जब मैं यह कहता हूँ कि सारी दुनियाको लेकर शान्तिकी योजना बननी चाहिये, तो वस्तुतः मेरा अभिप्राय होता है उसके अन्तर्गत सारी पृथ्वीका

समावेश हो जाना। महादेश और महासागर संपूर्ण पृथ्वीके अंशके रूपमें ही देखे जाते हैं, जैसा कि मैंने उन्हें आकाश मार्गसे देखा है। इंग्लैण्ड और अमेरिका पृथ्वीके भाग हैं; रूस और चीन, मिस्र, सीरिया और टर्की, इराक और ईरान भी उसके भाग हैं, और यह अनिवार्य रूपमें सत्य है कि संसारके किसी भी भागके लिये तब तक शान्ति नहीं हो सकती, जब तक संसारके सब भागोंमें शान्तिकी नींवको सुरक्षित न कर दिया जाय।

यह कार्य हमारे नेताओंकी केवल घोषणाओंसे ही संपन्न नहीं हो सकता, जैसी कि अटलाण्टिक चार्टरमें की गई थी। संसारकी सब जातियोंकी स्वीकृतिपर ही इस कार्यकी सिद्धि मुख्यतया निर्भर करती है। क्योंकि गत महायुद्धके बाद संसारके विभिन्न राष्ट्र जो किसी अन्तर्राष्ट्रीय समझौतेपर पहुँचनेमें असफल रहे, उनकी उस असफलतासे यदि हमने कोई सबक सीखा है तो यह कि जिस समय युद्ध चल रहा हो, उस समय यदि युद्धके नेता प्रत्यक्ष रूपमें साधारण सिद्धान्तों एवं आदर्श-वाक्योंको लेकर एकमत हो भी जायँ, तथापि सन्धिपत्रकी रचना करनेके लिये जब वे एकत्र होते हैं, तब वे पूर्वमें की गई अपनी घोषणाओंको मनमानी व्याख्या करने लग जाते हैं। इसलिये जब तक आज ही, जब कि युद्ध चल रहा है, संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका और इंग्लैण्डकी, रूस और चीनकी तथा संयुक्त पक्षके अन्य राष्ट्रोंकी जनता अपने उद्देश्योंके सम्बन्धमें मूल रूपमें एकमत नहीं होगी, तब तक ललित एवं आदर्शपूर्ण वाक्योंमें चाहे जितनी ही आशाकी अभिव्यक्ति की जाय, जिस प्रकार अटलाण्टिक चार्टरमें की गई है, वह उसी तरह हमारा उपहास करती रहेगी, जिस तरह मि० विलसनकी चौदह शर्तों द्वारा हुआ है। जिन लोगोंके हाथोंमें क्षण-भरके लिये सत्ता है, उनकी घोषणाओंसे ही चार प्रकारकी स्वतंत्रतायें प्राप्त नहीं की जा सकतीं।

वे वास्तविक तभी होंगी, जब कि संसारकी जनता उन्हें वास्तव रूपमें परिणत करनेकी चेष्टा करेगी।

जब मैं यह कहता हूँ कि शान्तिकी स्थापनाके लिये संपूर्ण संसारको स्वतंत्र करना होगा, तो इसका मतलब यही होता है कि एक महान् प्रक्रिया आरम्भ हो गई है, जिसका मैं उल्लेख कर रहा हूँ, और इस प्रक्रियाको कोई रोक नहीं सकता—अवश्य ही हिटलर भी नहीं। सारे संसारके स्त्री-पुरुष प्रगतिके पथपर—भौतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिसे—अग्रसर हो रहे हैं। शताब्दियोंकी अज्ञानतापूर्ण जड़ स्वीकृतिके बाद पूर्वी यूरोप और एशियाके करोड़ों मनुष्योंने आँखें खोली हैं। पुराने भय अब उन्हें भीत नहीं करते। अब वे पश्चिमवालोंके लाभके लिये पूर्वी जगतके क्रीतदास बनकर रहना नहीं चाहते। वे अब इस बातको समझने लगे हैं कि सारे संसारमें मनुष्यका कल्याण परस्पर आश्रित है। वे इस बातका निश्चय कर चुके हैं—जैसा हम लोगोंको भी करना चाहिये—कि जिस प्रकार उनके अपने समाजके अन्दर साम्राज्यवादके लिये स्थान नहीं है, उसी प्रकार राष्ट्रोंके समाजके अन्दर भी नहीं। पहाड़ीके ऊपर जो बड़ा मकान है और जिसके चारों तरफ मिट्टीकी बनी झोपड़ियाँ हैं, वह अब अपने महिमान्वित जादूको खो चुका है।

हमारी पश्चिमी दुनिया और हमारी मानी हुई श्रेष्ठताकी इस समय परीक्षा हो रही है। हमारी दाम्भिकता और हमारी लम्बी-चौड़ी बातोंका अब एशियापर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। रूस और चीन तथा मध्य-पूर्वके स्त्री-पुरुष अब अपनी संभावनापूर्ण शक्तिके सम्बन्धमें सचेतन हो रहे हैं। वे इस बातको जानने लगे हैं कि संसारके भविष्यके सम्बन्धमें बहुतसे निर्णय उनके हाथमें हैं। और उनका इससे यह अभिप्राय है कि ये निर्णय

प्रत्येक राष्ट्रके लोगोंको विदेशी प्रभुत्वसे मुक्त कर देंगे, जिससे स्वतंत्र रूपमें उनका आर्थिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास हो सकेगा।

आर्थिक स्वतंत्रता उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी राजनीतिक स्वतंत्रता। दूसरे देश जिन चीजोंको पदा करते हैं, उनकी ही पहुँच केवल सब लोगों तक नहीं होनी चाहिये, बल्कि उनकी अपनी जो पैदावार है, उसकी पहुँच भी संसार-भरके लोगों तक होनी चाहिये। विभिन्न देशोंके बीच अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्यके मार्गमें जो अनावश्यक बाधायें खड़ी कर दी गई हैं, जिनके कारण मालका यातायात अबाध रूपमें नहीं हो पाता, उन बाधाओंको नष्ट कर डालनेके लिये जब तक हम कोई उपाय नहीं ढूँढ़ निकालते तब तक न तो शान्तिकी स्थापना हो सकती है, न वास्तविक उन्नति और न आर्थिक स्थिरता। यह स्पष्ट है कि युद्धके बाद एकाएक दुराग्रहपूर्ण भावसे यदि विदेशी वस्तुओंपर कर उठा दिया जायगा, तो इसका परिणाम एक विपत्तिके सिवा और कुछ नहीं हो सकता। किन्तु इसके साथ ही यह भी स्पष्ट है कि जिन स्वतंत्रताओंके लिये हम लड़ रहे हैं, उनमें एक स्वतंत्रता है वाणिज्य करनेकी स्वतंत्रता। मैं यह जानता हूँ कि ऐसे बहुतसे आदमी हैं, खासकर अमेरिकामें, जहाँ हमारी रहन-सहनका मानदण्ड संसारकी और सब जातियोंके मानदण्डसे ऊँचा है, जो सचमुच इस प्रकारकी वाणिज्यगत स्वतंत्रताकी सम्भावनापर आतंकित हो उठते हैं और यह विश्वास करते हैं कि इस प्रकारकी किसी प्रक्रियासे हमारी रहन-सहनका मानदण्ड कम हो जायगा। किन्तु सत्य इसके विपरीत है।

संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाकी आश्चर्यजनक आर्थिक उन्नतिके पक्षमें बहुतसे कारण दिये जा सकते हैं। हमारे राष्ट्रीय समृद्धि-साधनोंकी प्रचुरता, हमारी राजनीतिक संस्थाओंकी स्वतंत्रता और हमारी जनताके विशिष्ट गुण—अवश्य ही इन सबने भी हमारी आर्थिक उन्नतिमें सहायता पहुँचाई है।

किन्तु मेरे विचारसे इस बातका सबसे बड़ा कारण यह हुआ है कि सौभाग्यवश संसारके सबसे बड़े क्षेत्र अमेरिकामें वस्तुओं और विचारोंके आदान-प्रदानमें कभी कोई रुकावट नहीं रही है।

और जो लोग भयभीत हो रहे हैं, उन्हें मैं एक ऐसी बात बता देना चाहता हूँ, जिससे हम किसी प्रकार बच नहीं सकते। इस युद्धके अन्त होने तक हमारा राष्ट्रीय ऋण जिस विपुल परिमाणपर पहुँच जायगा और उद्योग-धन्धों तथा यातायातके साधनोंमें विकास होनेसे दुनिया आकार-प्रकारमें जितनी संकुचित हो जायगी, उससे हम लोगोंके लिये भी अमेरिकामें अपनी रहन-सहनके वर्त्तमान मानदण्डको कायम रखना कठिन हो जायगा, जब तक कि सारे संसारमें वस्तुओंका विनिमय अधिकतर अबाध रूपमें होने न लग जाय। और यह बात भी अनिवार्य रूपमें सत्य है कि संसारमें कहीं भी किसी एक मनुष्यकी रहन-सहनके मानदण्डको ऊँचा करनेका अर्थ है संसारमें सर्वत्र प्रत्येक मनुष्यकी रहन-सहनके मानदण्डको किञ्चित अंशमें ऊँचा कर देना।

अन्तमें जब मैं यह कहता हूँ कि संसारकी यह माँग है कि आत्मविश्वासी अमेरिका उनके कार्योंमें पूर्णरूपसे भाग ले, उस समय मैं केवल उस निमंत्रणको आगे बढ़ा रहा हूँ, जो निमंत्रण पूर्वकी जातियोंकी ओरसे हम लोगोंको दिया गया है। पूर्वकी जातियोंकी यह अभिलाषा है कि संयुक्त-राष्ट्र तथा संयुक्त-पक्षके अन्य राष्ट्र इस महान् साहसिक कार्यमें उनके साथ साझीदार बनें। वे चाहती हैं कि स्वतंत्र राष्ट्रोंके एक नूतन समाजकी—जो समाज पश्चिमके आर्थिक अन्यायोंसे और पूर्वके राजनीतिक दुराचारोंसे समान रूपमें मुक्त हो—सृष्टि करनेमें हम लोग उनके साथ सहयोग करें। किन्तु वे चाहती हैं कि उस महान् नूतन सम्मिलित उद्योगके साझीदारके रूपमें न तो हम संदेह-